संशोधन ग्रन्थमाळा-ग्रन्थांक ८ मो
शेठ पूनमचंद करमचंद कोटावाळा-ग्रंथमाळा ग्रं १
शेठ भोळाभाई जेशिंगभाई अध्ययन-संशोधन विद्याभवन

जैन आगमसाहित्यमां गुजरात

लेखक

डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा, एम. ए, पीएच डी
अध्यक्ष, गुजराती विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा,
गुजराती अने अर्धमागधीना भूतपूर्व अध्यापक, भो जे विद्याभवन,
गुजरात विद्यासभा, अमदावाद

गुजरात विद्यासभा : अमदावाद

निवेदन

गुजरात विद्यासभाना भो जे. अध्ययन-संशोधन विद्याभवनमां जे संशोधन-ग्रंथो तैयार करी प्रकट करवामां आवे छे तेनुं एक अंग जुदा जुदा धर्मो अने सम्प्रदायोनुं साहित्य संशोधननी शास्त्रीय दृष्टिए तैयार कराववानु छे आ कार्यमा **शेठ पूनमचंद करमचंद कोटावाळा ट्रस्टना** वहीवटदारो शेठश्री प्रेमचंद क. कोटावाळा अने शेठश्री भोळाभाई जेशिंगभाई एमणे आ संस्थाने नीचे जणावेली शरते जैन साहित्यना ग्रंथो तैयार करी प्रकट करवा दान कर्युं छे ए माटे भो. जे. विद्याभवन ट्रस्ट एमनुं आभारी छे

शरत

"जैन संस्कृतिना तमाम अंगोनु-जेमके द्रव्यानुयोग आदि
"चार अनुयोगोनु, तेमज काव्य शिल्प कळा इतिहास आदिनु
"साहित्य तैयार करावी प्रकट करवु. आमां मूळ संस्कृत
"प्राकृतादि ग्रथोना शिल्प आदिना सचित्र इतिहास वगेरेनो
"समावेश करवो"

उच्च अभ्यास अने संशोधन विभाग अगे सशोधननी योजना विचाराती हती त्यारे गुजरातना इतिहासने महत्त्वनुं स्थान आपवामां आव्युं हतु उपलब्ध साधनोने आधारे इतिहासने फलित करवानुं काम अने नवां साधनोने उपलब्ध करवानु काम-ए बे कार्यदिशाओ स्पष्ट हती. पहेली दिशामां थयेला कामनी नोंध लेतां जणायुं के ई. स. १८५६ मा प्रकट थयेल रासमाळा अने ई स १८९६ मां प्रकट थयेला बोम्बे गेझेटियर ग्रंथ १-खंड ए १ वे अग्रेजीमा लखायेला ग्रंथोनुं हजी पण महत्त्व छे रासमाळानो गुजराती अनुवाद गुजरात विद्या-सभाए १८६९-७० मां प्रकट कर्यो हतो. गेझेटियर उपरथी गुजरातनो

विशेष स्वरूपे विचारणा करवामां आवी हती. श्री रत्नमणिराव भीमराव गुजरातनो सांस्कृतिक इतिहास लखतां काईपण ज्ञानसाधन रही न जाय एनी तकेदारी राखे छे. प्रो अबुझफर नदवीए पण मुस्लिम बधा साधनोनो उपयोग करी सांस्कृतिक इतिहास लखी राख्यो छे.

सामग्री उपरथी इतिहासने फलित करवानी दिशामां पिष्टपेषण करतां विशेष प्रगति करवी होय तो हवे नवा साधनोनी शोध करवानो अने एने उपलब्ध करवानो प्रयत्न थवो जोईए एम लागवाथी संशोधन विभागे प्रारंभमां आ बीजी दिशामां कार्यक्रम योज्यो. १९३३ मा आचार्यश्री मुनि जिनविजयजीए गुजरात साहित्य सभाना मानार्ह सभ्य तरीके प्राचीन गुजरातना सांस्कृतिक इतिहासनी साधनसामग्री उपर विचारप्रेरक अने वृत्तिप्रेरक व्याख्यान आप्युं हतुं. ए मार्गे पोते असाधारण श्रम उठावी कार्य करे छे अने सिंघी जैन ग्रंथमाळामां अने ए पूर्वेना एमनां प्रकाशनोमां पोते संशोधित संगृहीत सामग्री प्रकट कर्ये जाय छे संशोधन विभागनी योजनामां बे खाणोमांथी साधनो बहार काढवानो अमारो कार्यक्रम ए ज दिशामां बीजो फाटो छे एक खाण ते पुराणो अने बीजी जैन आगमो—निर्युक्तिओ—भाष्यो—चूर्णिओ. आ बने आकरोमां इतिहासना साधनो माटे जे 'खोदकाम' थवुं जोईए ते थयेलुं नहि, एथी आ दिशामां भो जे. विद्याभवन तरफथी आदरवामां आवेली प्रवृत्तिना प्रथम फळ तरीके अध्यापक उमाशंकर जोषीए तैयार करेल **पुराणोमां गुजरात** ए ग्रंथ १९४६ मा प्रसिद्ध करवामां आव्यो, त्यारे बीजुं फळ ते आ **जैन आगमसाहित्यमां गुजरात** प्रसिद्ध थाय छे.

जैन आगम साहित्यमांनुं लगभग पांच लाख श्लोक पूर संस्कृत प्राकृत साहित्य जोई वळी स्थळप्रतीको तारववानुं भिन्न भिन्न आगमो—अने ए उपरना साहित्यमांना उल्लेखोने एकत्रित करवानुं,

इतिहास रेखारूपे आ ज संस्थाए १८९८ मां प्रकट कर्यो हतो आ अरसामां जे नवी सामग्री एकठी थती हती तेनो उपयोग करी अने पहेलां संगृहीत थयेली सामग्रीना नवेसरथी विचार करी इतिहास लखवाने अवकाश हतो, अने तेथी आ संस्थाए १९३७-३८ मां 'गुजरातनो मध्यकालीन राजपूत इतिहास' बे भागमां प्रकट कर्यो अने १९४५ मां 'गुजरातनो सांस्कृतिक – इतिहास '–इस्लामयुग– पहेलो भाग प्रकट कर्यो ए पछी १९४९ मां प्रो अबुजफर नदवीना उर्दूमां लखेला गुजरातना इतिहासना १ ला खंडनो भाषांतर अनुवाद २ भागमां प्रसिद्ध कर्यो

प्रो कोमिसेरियेट अंग्रेजीमां गुजरातनां मुस्लिम राज्योनो इतिहास १९३८ मां स्वतंत्र रीते प्रकट कर्यो

गुजरातनां साधनोना शोधी अने एना उपरथी मुस्लिम राज्य पहेलांना इतिहासना पहेलो खरडो तैयार करवानो यश स्व डॉ भगवानलाल इन्द्रजीने छे अने मुस्लिम राज्योनो इतिहास लखवामां मुस्तफासी खा सा फजलुल्लाह लुत्फुल्लाह फरीदीनी मोटी मदद हती, पण गॅझेटियर उपरथी जणाय छे स्व रणछोडभाई उदयरामे रासमाळा 'नो अनुवाद करतां अनेक सुधारावधारा अने पूर्तिओ मूळ ग्रंथमां उमेर्यां हतां प्रो होडीवाल्ला अने प्रो. कोमिसेरियटे मुस्लिम राज्योना समयना इतिहास माटे घणी सामग्री संशोधित करी छे श्री दुर्गाशंकर शास्त्रीए गुजरातनो राजपूत युगनो इतिहास लखतां तमाम सामग्रीनो यथाशक्य उपयोग कर्यो छे; अने हमणां ज नवी आवृत्तिनी तैयारी करी अत्यार सुधीनां नवां संशोधनोनो पण समावेश करी आप्यो छे जे हवे पछी थोडा ज समयमां प्रसिद्ध थशे "कथ्यानुशासन" नो उपोद्‌घात लखती वेळा पुराणकाळथी लई सोलंकीओना समय सुधीनां यावदुपलभ्य साधनोना बळ उपर मारा तरफथी पण

विशेष स्वरूपे विचारणा करवामां आवी हती. श्री. रत्नमणिराव भीमराव गुजरातनो सांस्कृतिक इतिहास लखतां कांईपण ज्ञानसाधन रही न जाय एनी तकेदारी राखे छे. प्रो. अबुझफर नदवीए पण मुस्लिम ग्रंथ साधनोनो उपयोग करी सांस्कृतिक इतिहास लखी राख्यो छे

सामग्री उपरथी इतिहासने फलित करवानी दिशामां पिष्टपेषण करता विशेष प्रगति करवी होय तो हवे नवा साधनोनी शोध करवानो अने एने उपलब्ध करवानो प्रयत्न थवो जोईए एम लागवाथी संशोधन विभागे प्रारंभमा आ बीजी दिशामां कार्यक्रम योज्यो १९३३ मां आचार्यश्री मुनि जिनविजयजीए गुजरात साहित्य सभाना मानार्ह सभ्य तरीके प्राचीन गुजरातना सांस्कृतिक इतिहासनी साधनसामग्री उपर विचारप्रेरक अने वृत्तिप्रेरक व्याख्यान आप्युं हतुं. ए मार्गे पोते असाधारण श्रम उठावी कार्य करे छे अने सिंघी जैन ग्रंथमाळामा अने ए पूर्वेना एमना प्रकाशनोमा पोते संशोधित संगृहीत सामग्री प्रकट कर्ये जाय छे संशोधन विभागनी योजनामां बे खाणोमांथी साधनो बहार काढवानो अमारो कार्यक्रम ए ज दिशामां बीजो फांटो छे. एक खाण ते पुराणो अने बीजी जैन आगमो—निर्युक्तिओ—भाष्यो—चूर्णिओ आ बने आकरोमां इतिहासना साधनो माटे जे 'खोदकाम' थवु जोईए ते थयेलुं नहि, एथी आ दिशामां भो. जे. विद्याभवन तरफथी आदरवामा आवेली प्रवृत्तिना प्रथम फळ तरीके अध्यापक उमाशंकर जोषीए तैयार करेल **पुराणोमां गुजरात** ए ग्रंथ १९४६ मा प्रसिद्ध करवामा आव्यो, त्यारे बीजुं फळ ते आ **जैन आगम-साहित्यमां गुजरात** प्रसिद्ध थाय छे.

जैन आगम साहित्यमांनुं लगभग पाच लाख श्लोक पूर संस्कृत प्राकृत साहित्य जोई वळी स्थळप्रतीको तारववानुं भिन्न भिन्न आगमो—अने ए उपरना साहित्यमाना उल्लेखोने एकत्रित करवानुं,

एक स्थळनी अने एक ज व्यक्तिनां जुदां जुदां नामोने एक स्थाने समाववानुं, अने एक ज नाम धरावतां जुदां जुदां स्थळो अने व्यक्ति-ओने अलग अलग पाडवानुं इत्यादि काम घणी धीरज चीवट अने खंत मागी ले छे. आ दुष्कर अवतरण प्रमाणोथी पुष्ट करी प्रत्यक्ष निगतथी एना आप्त प्रामाणिक स्वरूपमां नाखवानुं विपुल-श्रमसाध्य कार्य श्री डॉ. भोगीलाल सांडेसराए साध्युं छे. आम करतां वेळाए भिन्न भिन्न विद्वानोए रजू करेला मतो अने प्रमाणोनी विवेचनपूर्वक समालोचना करी शक्य होय त्यां पोतानो मत आ विद्वान संशोधके प्रमाणपुरःसर रजू कर्यो छे.

आ कोश श्री पूनमचंद क. कोटावाला ट्रस्टनी सहायथी प्रसिद्ध थाय छे. तेथी अहीं एनी सविशेष साभार नोंध घटे छे.

ता. १-१
अमदावाद

रसिकलाल छो. परीख
अध्यक्ष, भो. जे. विद्याभवन
गुजरात विद्यासभा

प्रास्ताविक

गुजरातना इतिहासने लगती सामग्रीना साधनग्रन्थो तैयार करावनानी गुजरात विद्यासभानी योजना अनुसार, 'पुराणोमां गुजरात'-ना अनुसंधानमां आ 'जैन आगमसाहित्यमां गुजरात' तैयार थयेल छे जैन साहित्य अने तेमां ये जैन आगमसाहित्यनुं शास्त्रीय दृष्टि-कोणथी अध्ययन अने संशोधन हजी बाल्यावस्थामां छे, ए साहित्यनी तथा एनी साथे संबंध धरावती परंपराओ तथा अनुश्रुतिओनी अनेक रीते तपास हजी हवे करवानी छे, अने ते कारणे, प्राचीन भारतीय संस्कृतिना अभ्यास माटे विविध दृष्टिए नवीन लागती माहिती तथा संशोधनना अनेक कोयडाओना उकेल माटे प्रयत्न करवा प्रेरे एवा रसप्रद मुद्दाओ एमांथी प्राप्त थाय छे. आ ग्रन्थमां आगमसाहित्यमांथी मळती प्राचीन गुर्जर देशना राजकीय अने सांस्कृतिक इतिहासना अभ्यासमां उपयोगी थाय एवी, भौगोलिक स्थळो, व्यक्तिविशेषो तथा अन्य विषयो—'नेम्स ॲन्ड सब्जेक्ट्स'—ने लगती सामग्री सूचिना रूपमां संकलित करी छे.

प्रारंभमां आपणे ए जोवुं जोईए के 'जैन आगमसाहित्य' एटले शुं साहित्यरसिकोमां पण केटलीक वार 'जैन साहित्य' अने 'जैन आगमसाहित्य' ए बन्नेनी भेदरेखा परत्वे एक प्रकारनो सभ्रम प्रवर्ते छे एम जोवामां आव्युं छे 'जैन साहित्य' एटले जैनो द्वारा रचायेलुं साहित्य, जेमां जैन धार्मिक विषयो उपरांत विविध बिनधार्मिक विषयो उपर पण जैनोए संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तथा प्रादेशिक भाषाओमां रचेला साहित्यनो समावेश थाय छे. प्राचीन भारतीय वाङ्मयना ललित तेमज शास्त्रीय तमाम प्रकारोना नमूनाओ आपणने जैन साहित्य-मां प्राप्त थाय छे 'जैन आगमसाहित्य' एटले जैनोना मूळ धार्मिक ग्रन्थो—'स्क्रिप्चर्स' अथवा 'कॅनन'—तथा ते उपरनुं भाष्यात्मक अने

टीकात्मक साहित्य अर्थात् 'जैन आगमसाहित्य'नो समावेश 'जैन साहित्य'मां थई जाय छे

११ अंग (मूळ १२ अंग, पण पैकीनुं बारमुं अंग 'दृष्टिवाद' लुप्त थई गयेलुं होवाथी ११ अंग) १२ उपांग, ६ छेदसूत्र ४ मूलसूत्र, १० प्रकीर्णक, तथा 'अनुयोगद्वार सूत्र' अने 'नंदिसूत्र' ए २ छूटां सूत्रो मळी कुल ४५ आगमग्रन्थो गणावामां आवे छे बीजी एक गणतरी अनुसार ८४ आगमो पण छे अहीं ४५ आगमवाळी गणतरी अनुसारना ग्रन्थो लीधा छे

उपर कह्युं ते प्रमाणे, 'आगमसाहित्य'मां मूळ आगमग्रन्थो उपरांत ते उपरना तमाम टीकात्मक साहित्यनो समावेश थाय छे टीकात्मक साहित्य चार प्रकारनुं छे निर्युक्ति भाष्य, चूर्णि अने वृत्ति मूळ ग्रन्थो तथा ते उपरनां आ चतुर्विध विवरणोनो अर्थ एकसामटो व्यक्त करवा माटे केटलीक वार 'पंचांगी' शब्दनो प्रयोग करवामां आवे छे मूळ आगमग्रन्थो आर्ष प्राकृत भाषामां छे, जे सामान्य व्यवहारमां 'अर्धमागधी' कहेवाय छे आगमोने वीतराग—तीर्थंकरनी वाणी गणवामां आवे छे अने परंपरा प्रमाणे, ते गणधरभाषित अर्थात् सुधर्मास्वामी जेवा महावीरना गणधर अथवा पट्टशिष्य वडे व्याकृत छे छतां भाषा निरूपणपद्धति, शैली, गद्यपद्यना भेदो वगेरे अनेक रीते आगमोमां अनेक थरो मालूम पडे छे 'नंदिसूत्र', 'दशवैकालिक सूत्र', 'अनुयोगद्वार सूत्र' अने 'प्रज्ञापना सूत्र' जेवां आगमो तो जैन परंपरा प्रमाणे ज अनुक्रमे देवर्धिगणि क्षमाश्रमण, शय्यंभवसूरि, आर्य रक्षितसूरि अने आर्य श्याम जेवा व्यक्तिविशेषोनी रचनाओ गणाय छे भाषाकीय पृथक्करणना धोरणे 'उत्तराध्ययन सूत्र' 'आचारांग सूत्र' 'दशवैकालिक सूत्र' जेवा आगमग्रन्थोने सौथी प्राचीन गणवानुं विद्वानोनुं वलण छे अने एवा ग्रन्थोनो रचनासमय भगवान महावीरना निर्वाणथी

झाझो अर्वाचीन नहि होय एवुं अनुमान थाय छे पण एकंदरे जोतां, कोई निश्चित प्रमाण न होय तो आगमग्रन्थोने अमुक चोक्कस शता-ब्दीमां ज मूकवानु मुश्केल छे वळी मगधमा, मथुरामां अने वलभीमा एम त्रण वार आगमोनी संकलना थई हती अने छेवटे ई स. ४५४ मां वलभीमा बधां आगमो लेखाधिरूढ थया हतां-ए बधा समय दरमियान थयेला भाषाकीय अने बीजा परिवर्तनो ध्यानमां राखवाना छे (जुओ आ ग्रन्थमां **देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, नागार्जुन, वलभी, स्कन्दिल आर्य,** इत्यादि). आगमो अत्यार सुधीमा अनेक वार छपायां छे, पण तेओनी शास्त्रीय, समीक्षित वाचनाओ हजी तैयार थई नथी, ए पण एक मुश्केली छे. आगमसाहित्य अने प्राचीन ग्रन्थभंडारोना आजीवन अभ्यासी पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीए ए माटेना महाभारत कार्यनो प्रारंभ थोडांक वर्ष पहेलां कर्यो छे अने आपणे आशा राखीए के आपणने नजदीकना भविष्यमा आगमोनी तथा ते उपरना तमाम टीकात्मक साहित्यनी समीक्षित वाचनाओ मळशे.

निर्युक्ति अने भाष्य ए मूल आगमग्रन्थो उपर प्राकृत गाथामां थयेलां सक्षिप्त विवरणो छे. मुद्रित वाचनाओमां तेमज हस्तलिखित प्रतोमां पण घणी वार निर्युक्ति अने भाष्यनी गाथाओ एटली भेळसेळ थयेली होय छे के तेमने निर्युक्ति अने भाष्य तरीके अलग करवानुं काम घणुं मुश्केल छे चूर्णि ए प्राकृत गद्यमा-कोई वार सस्कृत अने प्राकृतना मिश्रण जेवा गद्यमा[1]-मूळ ग्रन्थोनु विवरण छे वृत्ति अथवा टीका ए संस्कृत गद्यमा थयेला विवरणो छे जूनामां जूनी उपलब्ध संस्कृत टीकाओ आठमा सैकामा थयेला आचार्य हरिभद्रसूरिनी छे त्यारपछी शीलांकदेव, शान्तिसूरि, अभयदेवसूरि, द्रोणाचार्य, मलधारी हेमचंद्र अने मलयगिरि जेवा महान आचार्योए प्रमाणभूत संस्कृत

१ अत्यारे केटलाक शिक्षितो वातचीतमां अर्धुं देशी भाषामां अने

टीकाओनी आ परंपरा चालु रही हती आ परंपरा ओछामां ओछुं अढारमा सैका सुधी चालु रहेली छे, अने कोई कोई शास्त्रोमां ठेठ अर्वाचीन काळमां पण जैन आचार्योए आगमग्रन्थो उपर संस्कृत टीकाओ रचेली छे संस्कृत टीकाओमां पण दृष्टान्तो कथानको अने बीजां अवतरणो प्राकृतमां आपे छे ए प्राचीनतर रचनाओमांथी उद्धृत थयेलां हशे एवुं अनुमान थाय छे मुकाबले अर्वाचीन काळमां रचायेली संस्कृत टीकाओ पण आ रीते बीजी अनेक रीते प्राचीनतर परंपराओनी ऋणी छे अने ए कारणे एमनुं मूल्य ते ते समयमां रचायेला बीजा सामान्य ग्रन्थोनी तुलनाए घणुं वधारे छे ।

बत्रीस अक्षरनो एक श्लोक ए गणतरी प्रमाणे समस्त उपलब्ध जैन आगमसाहित्य आशरे साडाछ लाख श्लोकप्रमाण छे अने १९४२ मां जुलाईमां गुजरात विद्यासभाना अनुस्नातक अने संशोधन विभागमां (हवे शेठ भो. जे. विद्याभवनमां) अध्यापक तरीके हुं जोडायो त्यारथी आगमसाहित्यमांथी प्राचीन भारतना सांस्कृतिक अभ्यास माटेनी सामग्री एकत्रित करवानुं कार्य आरंभ्युं हतुं लगभग तमाम मुद्रित आगमसाहित्य—जेनुं प्रमाण आशरे सवापांच लाख श्लोकप्रमाण करतां कंईक वधारे थाय छे—अने १९५० सुधीमां वंचाई गयुं एमांथी प्राचीन गुर्जर देश तथा ते साथे संबंध धरावता विषयोनी माहिती अलग तारवीने आ ग्रन्थ तैयार कर्यो छे

आशरे सवा लाख श्लोकप्रमाण जेटलुं आगमसाहित्य हजी अप्रसिद्ध छे एमां केटलीक महत्त्वनी चूर्णिओ, टीकाओ अने थोडाक मौलिक ग्रन्थोनो पण समावेश थाय छे एमांथी मळती सामग्रीनुं प्रकाशन आ पुस्तकनी पूर्तिरूपे करी शकाय

भगवान महावीरनुं जन्मस्थान तेमज प्रवृत्तिक्षेत्र मगध हतुं, जैन श्रुतनी संकलना माटे सौ पहेलो परिषद् पण मगधना पाटनगर पाटलि-

; पुत्रमा वीरनिर्वाण पछी बीजी शताब्दीमां मळी हती जैन आगमनी मूल ग्रन्थो पण स्वाभाविक रीते ज मगधमां रचायेला छे. मुख्यत्वे आ कारणे आगमना मूल ग्रन्थोमां गुजरात विशे थोडा अछडता उल्लेखो मळे छे, अने ते पण मुख्यत्वे बावीसमा तीर्थंकर नेमिनाथना जीवन अने यादवोना इतिहास साथे सबन्ध धरावे छे प्राचीन गुर्जर देशमां रचायेली टीकाचूर्णिओमांथी ज आपणने विशेष माहिती प्राप्त थाय छे

वळी आ पुस्तकमां संकलित थयेली सामग्री जेम प्राचीनतम मूल ग्रन्थोमाथी छे तेम १७ मा–१८ मा सैकामां रचायेली टीकाओ-माथी पण छे. अमुक वस्तु जे रचनामांथी मळे छे ते रचना (मात्र मूल आगमोना अपवादने बाजुए राखता) कया समयनी छे तेनी नोध संदर्भसूचिमा करी छे, जेथी वाचकने काळानुक्रमनो ख्याल आवे, ज्या चोक्कस साल नथी मळती, पण अनुमाने समय नक्की थई शके छे त्यां ए प्रकारनो उल्लेख कर्यो छे.

जैन आगमसाहित्यमा गुजरात "पण गुजरात एटले ? गुज-रातनी सीमाओ तो समये समये बदलाती रही छे वळी एक चोक्कस प्रदेशने आपणे अभ्यासविषय बनावीए तोपण तेने पूरी रीते समजवा माटे आजूबाजूना प्रदेशोनो पण परिचय आपणने होवो जोईए एटले, आ पुस्तकमां, आजे आपणे जेने गुजरात नामे ओळखीए छीए ते प्रदेशनी सीमा उपर ध्यान केन्द्रित करवानी साथे साथे, आसपासना प्रदेशोना . . उल्लेखोनो पण समावेश कर्यो छे

"टूंकामां सूचवी शकाय के गिरनारना, ई स. १५० ना, क्षत्रप राजा रुद्रदामाना, शिलालेखमां जे प्रदेशो गणावाया छे ते बधा ज प्रदेशोने आवरी लेवानो ख्याल राख्यो छे. अलबत्त, लंबाण टाळवा माटे प्रधानगौणविवेक जाळववो पड्यो छे आजना गुजरातमा परिसीमित थता प्रदेशोने अपायुं छे तेटलु महत्त्व पडोशना ने दूरना

प्रदेशोने हमेशां मापी शकाय नथी."[1]

प्रत्येक अगत्यना विधान माटे मूळ साहित्यनो आधार आप्यो छे, जेथी अभ्यासीने ते ते स्थान जोवानुं सरळ पडे. ग्रन्थनुं शीर्षक सूचवे छे ते प्रमाणे निरूपण मुख्यत्वे जैन आगमसाहित्यमांथी प्राप्त थती सामग्रीने अनुलक्षीने कर्युं छे, अने ए ज विषयने स्पर्शती सामग्री अन्य साधनोमांथी अनायासे प्राप्त थई छे त्यां तेनो पण तुलनात्मक विनियोग कर्यो छे.

आ संकलनामां प्राचीन भारत तेमज प्राचीन गुर्जर देशना इतिहास परत्वे जे शास्त्रीय वस्तुओ छे ते मात्र जिज्ञासु वाचकने प्रस्तुत विषयोनां शीर्षको जोतां स्पष्ट थशे. पण एमांथी प्रधानपणे ऊपसी आवता केटलाक मुद्दाओ प्रत्ये आ प्रस्तावनामां ध्यान खेंचवानुं उचित गणाय छे.

सौ पहेलां आविभो देशनाम अने व्यक्तिनाम तरीके जातिओनां नाम उपरथी देशनाम पडेलां छे ए हकीकत अन्येने साथे कथामां एक प्रकारनुं औचित्य पण छे.

आभीर जातिनो वसवाट उत्तरोत्तर दक्षिण दिशामां खसतो जतो हतो एवा 'पुराणोमां गुजरात' (पृ. ४५) ना अनुमानने जैन आगमसाहित्यमांथी स्पष्ट अनुमोदन मळे छे. आभीर देश दक्षिणापथमां हतो एवुं विधान क्यांय छे एटलुं ज नहि, पण आभीर देशनां जे नगरो अचलपुर, बेन्नातट, तगरा इत्यादि गणाव्यां छे ए पण दक्षिणापथनां छे (पृ. २०). आम छतां अन्यत्र पण आभीरो हता; कच्छमां आभीरो जैनधर्मानुयायी होवानुं कह्युं छे (पृ. ५). 'सूत्रकृतांग सूत्र'नी शीलांकदेवनी टीका प्रमाणे शकने बीजमां आभीर,' शबिकने 'किराट' अने भाषामां होड करेला ए सूचवे छे के शीलांक

---

१ उमाशंकर जोशी। पुराणोमां गुजरात, प्रस्तावना, पृ. ११

देवना समय सुधीमां 'आभीर' शब्दनो अर्थ हलको बनी गयो हतो (पृ. २१).

मालव जाति प्राचीनतर अवंति जनपदने 'मालव' नाम आपवामां कारणभूत छे. ए जातिना लोको त्या लूटफाट माटे आक्रमण करता, मनुष्योनुं अपहरण करता, अने तेमने गुलाम तरीके वेची देता (पृ. १३८-४०). आगमसाहित्यमां क्वचित् 'मालव' अने 'बोधिक' जातिने अभिन्न गणी छे (पृ १३८). एमने विशेनी प्रकीर्ण माहिती टीकाओमांथी सारा प्रमाणमां मळे छे (पृ. १२०-२१). यादवो अने एमनी गणसत्ताक राज्यपद्धति विशे पण केटलुक जाणवा मळे छे (पृ ८७). कुशावर्त अने शौरिपुर बे हतां' एक उत्तरमां अने बीजुं पश्चिममा (पृ ४९) नवा स्थानोने जूनां नामो आपवानुं स्थळान्तर करती जातिओनुं वलण एमा जणाय छे. आ नामोनो संबंध यादवोना स्थळान्तर साथे छे.

'बृहत्कल्पसूत्र' (उद्देशक १, सूत्र ५०) अने 'निशीथसूत्र' जेवां छेदसूत्रोमाथी जाणवा मळे छे के भगवान महावीर ज्यारे साकेत नगरना सुभूमिभाग उद्यानमा निवास करता हता त्यारे तेमणे उपदेश कर्यो हतो के "निर्ग्रन्थो अने निर्ग्रन्थीओने पूर्वमा अग-मगध सुधी, दक्षिणमा कौशांबी सुधी, पश्चिममा स्थूणा सुधी अने उत्तरमा कुणाला (उत्तर कोसल) सुधी विहार करवो कल्पे छे एटलु ज आर्यक्षेत्र छे एनी बहार विहरवुं कल्पतुं नथी, पण एनी बहार ज्या ज्ञान दर्शन अने चारित्र्यनी वृद्धि थाय त्या विहरी शकाय"[1] ए पछी केटलोक

---

१ आ सूत्रना अतिम बे वाक्यो आ प्रमाणे छे 'एताव ताव आरिए खेत्ते णो से कप्पइ एत्तो बाहिं। तेण परं जत्थ नाण-दसण-चरित्ताइ उस्सप्पति त्ति बेमि।' उपर में करेलो अर्थ 'बृहत्कल्पसूत्र'ना टीकाकार आचार्य क्षेमकीर्त्तिने अनुसरीने छे डॉ जगदीशचन्द्र जैने एनो अर्थ जरा जुदी रीते कर्यो छे 'इतने ही क्षेत्र आर्य क्षेत्र है, बाकी नहीं, क्योंकि

शताब्दीओ बाद अशोकना पौत्र राजा संप्रतिना आश्रयथी जैन श्रमणो दूर दूरना प्रदेशोमां विचरवा लाग्या अने आन्ध्र, द्रविड, महाराष्ट्र अने कुडुक (कुर्ग) ज्यां पूर्वे साधुओ जता नहोता त्यां पण श्रमणोनो सुखविहार प्रवर्त्यो ए समयथी नीचे प्रमाणे साडीपचीस आर्यदेशो गणावा लाग्या जेनो मोघम उल्लेख पण आगमसाहित्यमां वारंवार मळे छे मगध (राजधानी राजगृह), अंग (चंपा), वंग (ताम्रलिप्ति) कलिंग (कांचनपुर), काशी (वाराणसी) कोशल (साकेत), कुरु (गजपुर–हस्तिनापुर) कुशावर्त (शौरिपुर) पांचाल (काम्पिल्यपुर), जांगल (अहिच्छत्रा) सुराष्ट्र (द्वारवती), विदेह (मिथिला), वत्स (कौशांबी) शांडिल्य (नंदिपुर), मलय (भद्दिलपुर) मत्स्य (वैराट) वरणा (अच्छा) दशार्ण (मृत्तिकावती), चेदि (शुक्तिमती) सिन्धु-सौवीर (वीतिभय), शूरसेन (मथुरा) भंगि (पावा) वट्टा (मासपुरी) कुणाला (श्रावस्ती), लाढ (कोटिवर्ष), केकयीनो अर्धभाग (श्वेतिका)

आ सूचिमां आन्ध्र महाराष्ट्रादि प्रदेशोनो उल्लेख नथी ए ध्यान खेंचे छे कोंकण के ज्यां जैन साधुओ विचरता हता परंतु आम पण एमां नथी. गुजरात अने राजस्थानना बे प्रदेशो पाछळथी जैन धर्मनां प्रमुख केन्द्रो बन्यां ए पण एमां नथी. पण एकंदरे एम कही शकाय के संप्रतिना राज्यकाळ पछीना समयमां भारतमां जैन धर्मना प्रभावनो सर्वसामान्य नकशो ए रजू करे छे

इन्हीं देशोंमें निग्रन्थ भिक्षु और भिक्षुणियों के ज्ञान-दर्शन और चारित्र अक्षुण्ण रह सकते हैं। (भारत के प्राचीन जैन तीर्थ पृ. १४) ज्ञान दर्शन अने चारित्रनी वृद्धि थती होय तो आर्यक्षेत्र नी बहार विहार थई शके एवो प्राचीन टीकाकारोनो अर्थ मने उचित लागे छे. आर्यक्षेत्र 'नी सामाजिक स्थिति जैन साधुओना कडक आचारपालनने अनुकूल हशे पण जेम जेम अन्य प्रदेशोमां जैन धर्मनो प्रचार थतो गयो तेम तेम विहारक्षेत्रनो विस्तार पण थयो

हिन्दुस्तान माटे 'हिन्दुग देश' एवुं नाम ई स. ना सातमा शतक आसपासनी 'निशीथ सूत्र'नी चूर्णिमा मळे छे (पृ २१८) अत्रत्य साहित्यमां आ नामना आटला प्राचीन उल्लेखो विरल छे

गृहस्थो रहेता होय एवा मकानोमां साधुओ रहे ए वस्तु कच्छमां दोषरूप गणाती नहोती (पृ ३२) ए बतावे छे के साधुओने रहेवा योग्य मकानो—उपाश्रयोनो त्यां अभाव हशे मरु देशमां खनिज तेल होवानो निर्देश (पृ. १२६) ठेठ भाष्य जेटलो जूनो होई खूब अगत्य धरावे छे[१]

पालि साहित्यमां निर्दिष्ट अरिष्टपुर उपरांत महाराष्ट्रमां बीजुं एक अरिष्टपुर हतु (पृ ५) अर्कस्थली अने कालनगर ए बे आनदपुरनां पर्याय नामो हतां (पृ १४, १९). आनंदपुर कोई काळे सूर्यपूजानुं केन्द्र हशे एवो तर्क करवाने 'अर्कस्थली' ए नाम प्रेरे छे. आनंदपुर नामे बीजु एक नगर विन्ध्याटवी पासे हतुं (पृ. १९). ते उत्तर गुजरातना आनंदपुर—वडनगरथी भिन्न होवुं जोईए. शूरसेन जनपदना पाटनगर मथुरानुं बीजुं नाम इन्द्रपुर हतुं (पृ. २३); जो के मथुराथी भिन्न एवु इन्द्रपुर नामनुं अन्य नगर पण हतुं (ृ २४) उत्तर मथुरा अने दक्षिण मथुरानो पृथक् निर्देश छे (पृ १२२, १९२) उत्तर मथुरा ते शूरसेन जनपदनी अने दक्षिण मथुरा ते मदुरा. क्षेमपुरी ए सौराष्ट्रनुं नगर छे (पृ ५८), पण ए कयुं ते नक्की थई शक्युं नथी पादलिप्तपुर (पालीताणा)नी स्थापना 'तरंगवती' कथाना कर्ता आचार्य पादलिप्तना स्मरणार्थे थई होवानी अनुश्रुति छे (पृ ९९) श्रीकृष्णना चरित्रवर्णन साथे संबध धरावतु शंखपुर ए उत्तर गुजरातनुं शंखेश्वर संभवे छे (पृ. १७३–७४). 'सूत्रकृताग सूत्र'नो शीलाक-

---

१ ए तरफ केन्द्रीय सरकारना 'जियोलॉजिकल सर्वे'नु ध्यान खेंचवामा आव्युं छे अने ए खाताए आ माहितीनो साभार स्वीकार कर्यो छे ए नोंधवु अप्रस्तुत नहि गणाय.

देवनी वृत्तिमां उद्धृत थयेला एक प्राकृत दाखलामांनुं नगर सिंहपुर ए सौराष्ट्रनुं सिंहपुर–शीहोर हशे के बनारस पासेनुं सिंहपुरी (पृ २०१) ए विचारवा जेवो प्रश्न छे ए ज दाखलामां निर्दिष्ट हस्तकप्प के हस्तिकल्प ए नि शङ्कपणे भावनगर पासेनुं हाथब छे (पृ २१५), जे एक काळे विशेष राजकीय महत्त्व धरावतुं हशे एम जणाय कोसुंबा–रण्ण ए दक्षिण गुजरातमां कोसंबा आसपासनो समुद्र जंगलविस्तार छे (पृ ५६–५७) जेनी आसपास धूळना प्राकार होय एवा गामने 'खेट' (प्राकृत 'खेड') कहेता (पृ ६१–६२) समय जतां 'खेट' सामान्य नाममांथी विशेषनाम बनी गयुं, जेम के खेडा जो के गुजराती, मराठी अने हिन्दी–पंजाबीमां 'खेडुं', 'खेडें' अने 'खेडा' शब्द 'गाम'ना सामान्य अर्थमां पण छे 'खेट' अथवा एनो तद्भव जेमां अंगभूत होय एवां स्थळनाम पण अनेक स्थळे छे (पृ ६१–६२) खाड अने खाई एम बन्ने भागोथी ज्यां रक्षाय एवा नगरने 'द्रोणमुख' कहे छे एनां उदाहरण तरीके भरुकच्छ, ताम्रलिप्ति अने स्थानक–थाणा आपवामां आवे छे (पृ ७९, ११०, २११) कच्छमां 'दोण'नामे एक गाम छे एनो व्युत्पत्तिगत संबंध द्रोणमुखमांना 'द्रोण' साथे हशे? माळवाना दशपुर (मंदसोर) नगरनुं नाम सिन्धु–सौवीरना राजा उद्रायणना सहायक दश राजाओथी ए स्थळे पडाव नाख्यो हतो तथा प्राकार बांध्यो हतो ए उपरथी पड्युं एवी अनुश्रुति नोंधाई छे (८१–८२)

धर्मो अने संप्रदायो बौद्धो अने जैनो वच्चे थती स्पर्धा अने वादविवाद बाबतो (पृ ५९–६१, ९८–९९, १९५–९६) गुजरात अने राजस्थानमां जैनो उपरांत बौद्धोनी वसती सारा प्रमाणमां हती एवुं साधार अनुमान थई शके छे भरुकच्छमां एक बौद्ध स्तूप हतो ए नगरमां जैनोना सुप्रसिद्ध अश्वावबोध तीर्थनो कबजो बौद्धोए लीधो हतो ते खपुटाचार्ये छोडाव्यो हतो गोविन्दाचार्य नामे बौद्ध

भिक्षु जैन आचार्यने पराजित करवा माटे जैनोनी विद्या शीख्या हता, पण पछी पोते ज जैन थई 'गोविन्दनिर्युक्ति'नी रचना करी हती (पृ ६८-६९) मथुराना 'देवनिर्मित स्तूप' उपर बौद्धोए आधिपत्य जमाव्युं हतुं, एनो कबजो मथुराना राजाए जैनोने पाछो सोंप्यो हतो (पृ. १२०-२१)

बौद्ध उपरांत अन्य मतोनी पण वात आवे छे आर्य रक्षितना मामा गोष्ठामाहिले मथुरामा एक अक्रियावादीने पराजित कर्यो हतो, पण पछी तेओ पोते ज अबद्धिक नामे निह्नव थया हता (पृ. ६९)

प्राचीन भारतना लोकधर्मोमां यक्षपूजा घणी लोकप्रिय हती. आनंदपुरमां यक्षनी अने नागवल्लिकामां नागनो पूजा थती (पृ ९४). मथुरामां भूतगुहा नामे व्यंतरगृह-यक्षायतन हतु (पृ. १२२) अने द्वारका पासे नंदन उद्यानमां सुरप्रिय नामे यक्षनुं आयतन हतुं (पृ २०३) सुराम्बर नामे यक्षनुं आयतन शौरिपुरमां हतुं (पृ २०३) भरुकच्छ पासेना गुडशस्त्र नामे नगरमां यक्ष साधुओने उपद्रव करतो एने खपुटाचार्ये शान्त कर्यो हतो (पृ ५९) एक ब्राह्मणे 'भुल्लि-स्सर' नामे व्यंतरनी उपासना करी होवानी कथा मळे छे (पृ ११४) भरुकच्छथी उज्जयिनी जवाना मार्ग उपर आवेला नटपिटक गाममां नागगृह हतु (पृ ९१) अर्थात् त्यां पण नागपूजा थती अनेक नगरोना परिसरमां आवेलां उद्यानोमां यक्षायतनो हतां अने त्यां लोको यात्राए जता. एना थोडाक उदाहरणो आपणे आगळ नोंधीशुं.

भरुकच्छथी दक्षिणापथ जवाना मार्गमां 'भल्लीगृह' नामनु भागवतोनुं एक मन्दिर हतु अने एमां 'भल्ली'-बाणथी वींधायेली कृष्ण वासुदेवनी मूर्ति हती (पृ ५७, ११२-१४).

अग्निपूजकोनो उल्लेख पण क्वचित् आवे छे गिरिनगरमां एक अग्निपूजक वणिक दर वर्षे एक घरमा रत्नो भरीने पछी ए घर सळगावी

अग्निनुं संतर्पण करतो हतो एम करतां एक वार आखुं नगर बळी गयुं हतुं (पृ ६६)

जैन आचारना इतिहासनी दृष्टिए अगत्यना, पण एक बे उल्लेखो आ ग्रन्थमां छे शय्यातर–वसति आपनार कोने गणवो ए संबंधमां लाटाचार्यनो मत नोंधायेलो छे (पृ १६२–६३) लाटाचार्य, एमना नाम उपरथी, लाटना वतनी हशे एम अनुमान थाय छे दशपुरनो राजा कदाच आर्य रक्षितने दीक्षा नहि लेवा दे ए भयथी तोसलिपुत्राचार्य रक्षितने लईने अन्यत्र चाल्या गया हता ए जैन अनुश्रुति प्रमाणे पहेली शिष्यचोरी हती (पृ ८०)

उद्यानो जैन श्रमणो घणी वार नगरपरिसरमां आवेलां उद्यानोमां निवास करता एटले एवे उद्यानो विशेना थोडाक उल्लेखो जोईए इक्षुगृह उद्यान दशपुरमां आवेलुं हतुं त्यां रहीने आर्यरक्षित चातुर्मास कर्यो हतो (पृ २२) ए प्रदेशमां शेरडीनुं वावेतर थतुं हशे एवी अटकळ आ उद्याननां नाम उपरथी करी शकाय ! कोरंटक उद्यान भरुकच्छना ईशान खूणे हतुं (पृ ५१) कोरंटक अथवा कांटा सरियाना कमनीय छोडवाओ उपरथी आ उद्याननुं नामकरण थयुं हशे उज्जयिनीना स्नपन उद्यानमां पण साधुओ ऊतरता (पृ २११) 'स्नपन' नाम त्यां कोई स्नानागार हशे एवो, तर्क करवा प्रेरे छे द्वारका पास नंदन उद्यानमां सुरप्रिय यक्षनुं आयतन हतुं ए आपणे उपर जोई गया ए उद्यान द्वारकाने ईशान खूणे रैवतकनी पास हतुं (पृ ९१) केटलाक सूत्रोमां रैवतकनो उल्लेख पर्वत तरीके छे, ज्यारे एटीना समयनी केटलीक टीकाओमां एनो उल्लेख उद्यान तरीके छे (पृ १५७) सिन्धु–सौवीर देशना पाटनगर वीतिभयनी पूर्व दिशामां मृगवन नामे उद्यान हतुं (पृ १७०). सारनाथ पासेना उद्याननं पालि साहित्यमां 'मृगदाव' कहेल छे ते साथे आ नाम

सरखावी शकाय जैन तेम ज बौद्ध साहित्यमां बीजां अनेक उद्यानोनो उल्लेख छे

उत्सवो उद्यानोनी साथे उत्सवो पण संकळायेला हता 'संखडि' एटले उजाणी आनंदपुरना लोको शरदऋतुमां प्राचीनवाहिनी सरस्वती ना किनारे जई संखडि करता (पृ १९) प्रभासतीर्थमा अने अर्बुद पर्वत उपर यात्रामां संखडि थती (पृ १५, १०६) मथुरामां भंडीर यक्षनी यात्रामा लोको गाडां जोडीने जता (पृ. ३३, ११९). कुंडलमेंठ नामे व्यंतरनी यात्रामा भरुकच्छना लोको संखडि करता (पृ ४४, ११०-११) लाटदेशमा गिरियज्ञ अथवा मत्तवाल-संखडि नामे उत्सव थतो (पृ १६१). एनु बीजुं नाम भूमिदाह हतुं ए उत्सवनु वर्णन मळतुं नथी, पण कोंकणादि देशोमां गिरियज्ञ नामे उत्सव दररोज संध्याकाळे थतो होवानो उल्लेख अन्यत्र छे (पृ ५३), ते ए ज हशे एवु अनुमान थाय छे. महाराष्ट्रमां भादरवा सुद पडवाने दिवसे श्रमणपूजानो उत्सव थतो, एमा लोको साधुओने वहोरावीने अट्ठमना उपवासनु पारणु करता (पृ १३५). उज्जयिनी, माहेश्वरी, श्रीमाल वगेरे नगरोना लोको उत्सवप्रसंगोए एकत्र थईने मदिरापान करता ए मदिरापान करनाराओमां ब्राह्मणोनो पण समावेश थतो (पृ २०).

रीतरिवाजो जैन साधुओ आखा देशमां पगे चालीने पर्यटन करता. चोमासाना चार महिना बाद करतां बाकीना आखा ये वर्षमां मोटा भागना साधुओ सतत परिव्रजन करता 'बृहत्कल्पसूत्र'ना भाष्यमा 'जनपदपरीक्षा' प्रकरणमा कह्युं छे के जनपदविहार करवाथी साधुओनी दर्शनविशुद्धि थाय छे एमां साधुओने विविध देशोनी भाषाओमा कुशल बनवानुं कह्युं छे, जेथी तेओ लोकोने एमनी पोतानी

अ भाषामां उपदेश आपी शके वळी विविध प्रदेशोना रीतरिवाजो अने देशिक परिस्थितिथी माहितगार थवानुं पण सूचन एमां करेलुं छे आ बधां कारणे भारतवर्षना विविध प्रदेशोना रीतरिवाजोने लगती प्रकीर्ण पण मूल्यवान सामग्री आगमसाहित्यमांथी प्राप्त थाय छे ए प्रकारना थोडाक लाक्षणिक उल्लेखो अहीं जोइए कोंकणवासीओ पुष्प अने फळनो प्रचुर प्रमाणमां उपयोग करता उत्तरापथ अने बाल्हिकना लोको सक्तु खाय छे तेम कोंकणवासीओ 'पेज्जा' (सं पेया) अर्थात् चोखानी राब छे ए त्यां भोजनना प्रारंभमां ज राब अपाय छे (पृ ५२) अत्यारे पण कोंकणमां मुख्य खोराक भात छे ते आ साथे ध्यानमां राखवानुं छे सोपारकमां ए भावकोमां एक शाकटिक (गाडुं चलावनार) अने बीजो वैकटिक (दारू गाळनार) हतो (पृ १८५-८६) ए बतावे छे के वैकटिको बहिष्कृत मनाता पहोतना महाराष्ट्रमां पण कलालो बहिष्कृत गणाता नहोता; एटलुं ज नहि, पण एमनी साथे बीजाओ भोजन करी शकता (पृ १३५) जो के दक्षिणापथमां कलाल अने लोहकार अस्पृश्य गणाता (पृ १६०) महाराष्ट्रमां नटनी दुकानमां मद्य होय के न होय पण तेनी उपर ध्वज फरकाववामां आवतो जे जोईने भिक्षाचर आदि त्यां जता नहि (पृ १२४) ए प्रकारना स्त्रीओना परिवेषने लाटवासीओ 'कच्छ' कहेता एने महाराष्ट्रीओ 'भोयडा' कहेता स्त्रीओ बाल-पणथी मांडी लग्न थया बाद सगर्भा थतां सुधी कच्छ बांधती सगर्भा थया पछी भोजन करवामां आवतुं, स्वजनोने बोलावी वस्त्र पहेरवामां आवतुं, अने ए समयथी कच्छ बांधवानुं बंध थतुं (पृ १६०) मरुस्थल आदि रेताळ प्रदेशोमां मार्गो भूलो न थवाय माटे मार्गमां खीलिकाओ ठोकवामां आवती एवो उल्लेख छे (पृ १२४) मरुस्थलना परिवेषने लगती पण कटाक्षक रसिक माहिती मळे छे (पृ १२५). कोक्कसपतिओ महोत्सव प्रसंगे पोताना मकान उपर

कोटिपताका चडावता (पृ ६४). 'कोटिध्वज' तथा एमाथी व्युत्पन्न थयेला गुजराती शब्द 'कोटिधज' नो संबंध आ साथे जोडाय छे. सतीनो रिवाज कोई काळे चौलुक्योमा विशेष प्रचलित हशे एम एक सुभाषित उपरथी लागे छे (पृ ७१-७२) आ उपरांत आभीर, मालव आदि जातिओ, आनंदपुर, डिंभरेलक, ताम्र-लिप्ति, द्वीप, मथुरा आदि नगरो तथा कोंकण, वन्नासा (बनास नदी) आसपासनो भाग, महाराष्ट्र, लाट, सिन्ध, सुराष्ट्र आदि प्रदेशोनी विशिष्टताओ तथा लाक्षणिक रीतरिवाज माटे आ ग्रन्थनां ते ते शीर्षको जोवा विनंति छे.

वाणिज्य : वाणिज्य विशे पण केटलीक अगत्यनी माहिती मळे छे त्रिभुवननी सर्व वस्तुओ जेमां मळे एवा वस्तुभंडारो-'कुत्रिका-पण'-विशेना उल्लेखो खास ध्यान खेंचे छे. उज्जयिनी अने राजगृह जेवा प्राचीन भारतना महान नगरोमा एवा भंडारो हता एमां वस्तुनु मूल्य खरीदनार व्यक्तिना सामाजिक दरज्जा प्रमाणे लेवामा आवतु ए वात खूब रसप्रद छे (पृ २६-२७, ४४-४५) कुत्रिकापण साथे संबंध धरावती केटलीक लोककथाओ नोंधायेली छे (पृ ११२, ११५-१६) ए बतावे छे के लोकमानसे एनी स्मृतिने केवी रीते संघरी हती. भरुकच्छ पासेनु भूततडाग कुत्रिकापणमांथी खरीदायेला एक भूते बांध्युं हतुं एवी अनुश्रुति छे.

वेपारना एक मथक तरीके 'द्रोणमुख'नी व्याख्या उपर स्थळनामोनी चर्चा करता आपी छे वेपारनु केन्द्र होय एवा नगरने 'पत्तन' पण कहेवामा आवतु 'पत्तन' बे प्रकारना होयः ज्यां जलमार्गे माल आवे ते जलपत्तन, जेमके द्वीप (दीव) अने काननद्वीप, ज्यां स्थळमार्गे माल आवे ते स्थलपत्तन, जेमके मथुरा अने आनंदपुर केटलाक टीकाकारोए प्राकृत 'पट्टण' शब्दनां 'पट्टन'

अने 'पतन' शब्दो मे संस्कृत रूपो स्वीकारीने तेना जुदा अर्थ आप्या छे (पृ ९७)

मालव जातिना लुटारुओ मनुष्यनु हरण करीने एमने गुलामो तरीके वेचता ए उपर कह्युं छे गिरिनगरनी श्रेण कीओ उज्जयंत उपर गई हती त्यारे चोरो एमनु हरण करी गया हता अने पारसकूल –इरानी अखातना किनारा उपर तेमने वेची हतो (पृ ६६) भरुकच्छमां आवेला एक परदेशी वेपारीए कपटी श्रावकपणुं धारण करीने केटलीक रूपवती साध्वीओने वहाण उपर बोलावी एमनुं हरण कर्युं हतुं (पृ ११२) मथुरामां 'देवनिर्मित स्तूप'नो महिमा करवा माटे केटलीक श्राविकाओ साध्वीओनी साथे गई हती एमनु हरण करवानो प्रयास बोधिक जातिना लुटारुओए कर्यो हतो, पण एक साधु जेओ पूर्वाश्रममां राजपुत्र हता, तेओए एमने छोडावी हती (पृ १२१). आ बधा उल्लेखो गुलामोना वेपार उपर प्रकाश पाडे छे जैन सूत्रोमां अन्यत्र (दा त 'रायपसेणिय' सू ८२, पृ १४७) जुदा जुदा देशोमांथी आवेली दासीओनो यादी आपी छे एमांथी पण जगतभरमां व्यापेला गुलामोना वेपारनुं सूचन थाय छे

वेपारीओनी प्राचीन 'श्रेणी'ओ (guilds) ने स्पर्शता एक महत्त्वनी अनुश्रुति मळे छे सोपारक ए भारतना पश्चिम किनारे वेपारनुं मथक हतुं अने आ अनुश्रुति प्रमाणे, त्यां वेपारीओनां पांचसो कुटुंबो हतां ए वेपारीओनुं एक महाजन हतुं ए महाजन पासे पोतानी कचेरी अने एमां मोटुं समागृह हतुं, जेमां पांचसो पूतळीओ हती अर्थात् ए समागृह शिल्पकामनी दृष्टिए पण नोंधपात्र हशे एमना माफ थयेला कर राजाए लेवा धार्यो ए सामे विरोध करतां बधा वेपारीओ मरण पाम्या, ए वस्तु जूनां महाजनोना संगठनना प्रतीक जेवी छ (पृ २०८)

उज्जयिनीमां एक वार मोटी आग लागी हती अने नगरनो घणो भाग बळी गयो हतो त्यारे जे वेपारीओए नगरनी वहार वखारो राखी हती तेमणे पोताना मालना अनेकगणां नाणां उपजाव्यां हतां (पृ २८) ए वात पण ध्यान खेंचे एवी छे

त्रण दिशाए समुद्रथी वींटायेल सौराष्ट्रमां वहोळो वेपार चालतो हतो. (पृ २०४)

प्राचीन सिक्काओ विशे ठीक माहिती मळे छे सिक्काओनु नानुं सरखुं कोष्टक आपेलुं छे अने एक प्रदेशना सिक्कानी बीजा प्रदेशना सिक्कामा केटली कीमत थाय ए पण केटलाक दाखलामां जणावेलुं छे (पृ. ८९, १८०–८१) 'काकिणी' एक नानो सिक्को हतो अने एनु मूल्य वीस कोडी बराबर थतुं पण राजपुत्रोना संबंधमां प्रयोजाय त्यारे 'काकिणी' शब्दनो अर्थ 'राज्य' थतो ए नोंधपात्र छे (पृ ३४, ४३) चक्रवर्तीनां रत्नोमा काकिणीरत्ननो पण समावेश थतो ते उपरथी एम हशे ?

स्थापत्य अने कला · अर्धमागध ए स्थापत्यनो एक विशिष्ट–कदाच मिश्र–प्रकार हशे एम लागे छे (पृ १५) अर्धमागधी भाषानी जेम ? अभिनयने धंधा तरीके स्वीकारनार नटोना जुदां गाम हतां एम रोहकनी वार्ता बतावे छे (पृ २८) नटपिटक गाममा (पृ ९१) नटोनी वस्ती हशे एम एना नाम उपरथी कल्पना थाय छे कोकास अने एना यंत्रकपोतोनुं कथानक (पृ. ५०–५१) प्राचीन भारतमां यंत्रकलाना अभ्यास माटे जोवा जेवुं छे 'राजप्रश्नीय सूत्र'मां नृत्य अने संगीत विशे विस्तृत अने 'अनुयोगद्वार सूत्र'मा संगीत विशे संक्षिप्त निर्देशो छे ते आ विषयना अभ्यास माटे घणा उपयोगी छे, जो के आ पुस्तकनी मर्यादामां एनो समावेश थई शक्यो नथी.

विद्याध्ययन प्राचीन विद्याध्ययननी पण। आगमनी परंपराओ-खास करीने जैनोने संबंध छे त्यांसुधी—आगमसाहित्यमां सचवायेली छे वेदोना परंपरागत संक्रमणनी जेम आगमोना सरक्षण अने संगोपननी पाछळ स्मृति अने बुद्धिना महान पुरुषार्थो रहेला छे प्राचीन काळथी मांडी आगमवाचना (पृ ८३ ८४, ९४) ए गंभीर अध्ययनने पात्र विषय छे आगमोनी रचना पूर्व भारतमां थई पण ए लेखाधिरूढ पश्चिम भारतमां थयां ए पण जैन धर्मना इतिहास अने तेनां वृत्तान्तरो मात्र एक नोंधपात्र हकीकत छे मध्यकाळमां गुजरातनो संस्कारितानुं लेमज गुजरातमां जैन धर्मनुं प्रमुख केन्द्र अणहिलवाड पाटण हतुं. आचार्य हरिभद्रनी टीकाओ सिवाय आगमो उपरनी बधी मुख्य टीकाओ अणहिलवाड के आसपासना प्रदेशमां रचायेली छे (पृ ८–९) आगमोना विवेचनमां रोकायेला पंडितो परस्पर सहकारथी कार्य करता हता नवांगी वृत्तिकार अभयदेवसूरिनी टीकाओनी सहाय विना पछीना काळमां गमे तेवा प्रकांड पंडित माटे पण आगमोना अर्थो समजवानु मुश्केल थई पडत. एमनी ए टीकाओनुं शोधन द्रोणाचार्ये कर्युं हतुं (पृ १०–१२) द्रोणाचार्यनी सहायमां एक पंडित परिषद् हती द्रोणाचार्य ए पाटणना चौलुक्य राजा भीमदेव पहेलाना मामा हता अने तेमणे पोते 'ओघनिर्युक्ति' उपर टीका रची हती (पृ ८२) 'आचारांग सूत्र' अने सूत्रकृतांग सूत्र' उपर टीकाओ रचनार शीलाचार्य अथवा शीलांक ते पाटणना स्थापक वनराजना गुरु शीलगुणसूरि एवी एक अनुश्रुति छे, एटले अणहिल वाडमां आगमोनुं अध्ययन ओछामां ओछुं ए नगरनी स्थापना जेटलुं जूनुं छे अने एनो वारसो हरिभद्राचार्य आदि राजस्थानमां थयेला टीकाकारो तरफथी मळेलो छे पाटणमां थयेला आगमोना बीजा महान टीकाकारो मलधारी हेमचंद्र (कलिकालसर्वज्ञ हेमचंद्रथी भिन्न) अने आचार्य मलयगिरि छे मलधारी हेमचंद्रने मळवा माटे राजा

सिद्धराज जयसिंह वारंवार एमना उपाश्रये आवतो (पृ. २१९). एमना हस्ताक्षरवाळी एक ताडपत्रीय पोथी खंभातना भंडारमां मोजूद छे. आगमो उपर गुजरातमां प्रमाणभूत संस्कृत टीकाओ ठेठ अराढमा शतक सुधी रचाती रही छे अने आज सुधी आगमोना अध्ययननी प्राचीन परपरा अहीं अविच्छिन्नपणे चालु रहेली छे.

विद्याध्ययनने लगता बीजा पण केटलाक अगत्यना उल्लेखो अहीं संघराया छे. भरुकच्छना वज्रभूति आचार्य विशेनु कथानक गुजरातना एक प्राचीन कवि विशे थोडीक माहिती आपे छे (पृ, १६५–६६). कालकाचार्ये आजीवको पासे अष्टांग महानिमित्तनो अभ्यास कर्यो हतो (पृ ४०). आजीवको नियतिवादी हता, एटले निमित्तशास्त्रना अभ्यास प्रत्ये एमणे खास ध्यान आप्यु हशे, अने एथी ज कालकाचार्य जेवा महान आचार्य ए माटे एमनी पासे जवाने आकर्षाया हशे. मूळ आगमोमा (दा त 'उत्तराध्ययन सूत्र'नुं १५ मु अध्ययन) साधुओ माटे ज्योतिष तेमज वैद्यकनो अभ्यास वर्ज्य गणेलो छे, पण मध्यकाळमां चैत्यवासीओए ए बन्ने शास्त्रोने लगभग पोतानां करी लीधां हतां ए पण समयनी बलिहारी छे

उज्जयिनीनो विद्यार्थी अस्त्रविद्या शीखवा माटे कौशाबी जाय छे अने शंखपुरनो विद्यार्थी वाराणसीना कलाचार्य पासे शीखे छे (पृ. १) ए उल्लेखो विद्याभ्यास माटे देशान्तरोमा जवानी प्रमागमां व्यापक प्रवृत्तिना सूचक छे. अट्टण मल्लनु कथानक प्राचीन भारतमां मल्लविद्याना इतिहास उपर सारो प्रकाश पाडे छे (पृ. ६–८)

लुप्त ग्रन्थो . नष्ट थई गयेला अनेक प्राचीन ग्रन्थोना उल्लेखो अने क्वचित् एमाथी अवतरणो आगमसाहित्यमां मळे छे आ पुस्तक-

टीकाकारोए नोंध्युं छे (पृ १२८), परन्तु ए वृत्ति पण जेसलमेरना भंडारमाथी जडी छे.

भाषाशास्त्र भारतीय आर्य भाषानी द्वैतीयिक भूमिकाना अभ्यास माटे विपुल सामग्री आगमोमांथी मळे एमां कशुं आश्चर्य नथी नवा ज मूळ आगमग्रन्थो प्राकृतमां छे एटली हकीकत ए विषयमां एमनु महत्त्व बताववा माटे बस छे आ प्रस्तावनाना प्रारंभमां ज कह्युं छे ते प्रमाणे, जुदा जुदा सूत्रग्रन्थोनी भाषाना स्वरूपमा केटलोक नोंधपात्र तफावत छे. वळी आगमसाहित्यनी पहेली संकलना मगधमां थई अने त्यार पछीनी संकलनाओ ईसवी सननी चोथी शताब्दीमां एटले के वीरनिर्वाण पछी नवमी शताब्दीमा मथुरा अने वलभीमां थई अने सर्व आगमो एनी ये पछी एक सैका बाद देवर्धिगणिना अध्यक्षपणा नीचे वलभीमां एक-सामटा लिपिबद्ध थया, ए बधा समय दरमियान तेमज त्यार पछी एनी नकलो अने नकलोनी पण नकलोनी जे अनेक शाखाप्रशाखाओ थई तेने परिणामे ए ग्रन्थोनी भाषामां अनेकविध फेरफारो थया हशे, तोपण भारतीय आर्य भाषानी प्राकृत भूमिकाना अध्ययन माटे एक तरफ जैन आगमसाहित्य अने बीजी तरफ पालि साहित्य ए बन्ने मळी परम महत्त्वनी सामग्री पूरी पाडे छे मूळ आगमो तथा ते उपरना निर्युक्ति अने भाष्योनी आर्ष प्राकृत, चूर्णिओनी आ करता भिन्न तो पण आर्षनी कोटिमां ज गणत्री पडे तेवी प्राकृत—जेमां संस्कृतनु पण विलक्षण मिश्रण थयेलु घणी वार नजरे पडे छे, अने मध्यकाळनी संस्कृत वृत्तिओमानां प्राकृत कथानको, जेमनी भाषा केटलीक वार चूर्णिओनी लगोलग आवी जाय छे तो केटलीक वार स्पष्ट रीते प्रकृष्ट महाराष्ट्री प्राकृत होय छे—आ सर्वनु पूरुं अन्वेषण हजी थयु नथी. आगमसाहित्यनी समीक्षित वाचनाओ बहार पडे त्यारे ज ए कार्य थई शके

वळी आगमोनी संस्कृत वृत्तिओमां आवता शब्दो अने रूढि-

प्रयोगो जेने सामान्य रीते 'जैन संस्कृत' कहेवामां आवे छे—ए एक प्रकारनी 'मिश्र संस्कृत' होई बौद्धोनी 'गाथा संस्कृत' साथे एनी तुलना थई शके—जूना गुजरातीनी असरवाळी ए परिभाषित होई गुजरातीना सामान्य ज्ञान विना ए समजाय पण मुश्केल, ए कारणे हर्टेल जेवा विद्वाने जेने 'प्रादेशिक संस्कृत' (Vernacular Sanskrit) कही छे, एनो व्यवस्थित अभ्यास एक करवा जेवु स्वतंत्र भाषाकीय एवो विशाळ विषय छे, जेम जैन कथासाहित्य तेमज प्रबन्धसाहित्यमां पण ए ज प्रकारनो संस्कृतनो प्रयोग होई एनो अभ्यासमर्यादा आगमसाहित्यनी बहार पण विस्तरेली छे संस्कृत उपर प्रादेशिक भाषाओए करेली असरना दृष्टिकोणथी ए सर्व साहित्यनुं अवलोकन करवाथी नीवडसे संस्कृते लोकभाषाओ साथे केवुं समाधान साध्युं ए जेम एमांथी जणाशे तेम लोकभाषामां पण अनेक मुश्केल रूपो अने अर्थोनी तेमज ए रूपो तथा अर्थोनी पाछळ रहेलां मानसिक वलणोनी एमांथी भाळ मळशे

पण आ पुस्तकनी मर्यादामां आ बधी वस्तुओनो समावेश करवानुं अशक्य हतु नहीं तो राजकीय अने सांस्कृतिक अगत्यनी वस्तुओनी साथोसाथ भाषाकीय अगत्यना पण जे मुद्दा नोंधवा छे तेमांना केटलाक तरफ ध्यान दोर्युं छे

एकाग्रनुं मूळ स्थान (मुल्तान), सौराष्ट्रनुं स्थाम (थान), अने मुंबई पासेनुं स्थानक (थाणा), एमांना 'स्थाम' 'स्थानक' शब्दोनो संबंध भाषा अने सामाजिक इतिहासनी दृष्टिए विचारवा जेवो छे मुल्तान अने थान तो सूर्यपूजामां प्राचीन केन्द्रो छे, थाणा विशे वधु संशोधन आवश्यक छे (पृ २११) भारतनां प्राचीन नगरोने अंते आवतो संस्कृत 'कट' अने प्राकृत 'कड' प्रत्यय तथा आवा जेवी भारतनी प्राचीन वसाहतोनां केटलांक नगरोनां नामोनो

कर्ते ' पदान्त, ए सर्वनु साम्य पण ए ज रीते ध्यान खेंचे छे (पृ. ४६–४७). ' गिरनार ' अर्वाचीन भाषामा पर्वतवाची विशेषनाम छे, पण एनुं मूळ संस्कृत ' गिरिनगर 'मा छे (पर्वतनुं नाम तो उज्जयत छे), अने ' कोडिनार ', ' नार ' वगेरे अन्य स्थळनामोमानो ' नार ' पण संस्कृत ' नगर 'मांथी प्राकृत ' नअर ' द्वारा व्युत्पन्न थयेलो छे (पृ. ६६). आगमसाहित्यना प्राचीनतर अंशोमा, पुराणोनी जेम, अर्वाचीन भरूचने माटे, ' भरुकच्छ ' प्रयोगनी व्यापकता छे ए वस्तु सूचवे छे के ' भरूच 'नी व्युत्पत्ति, सामान्य रीते मनाय छे तेम, संस्कृत ' भृगु-कच्छ 'मांथी नहि, पण ' भरुकच्छ 'मांथी ' भरुअच्च ' द्वारा साधवानी छे (पृ ११०–१२). ' खेट ' अने तेनी साथे संबंध धरावता नामोनी चर्चा अगाउ करेली छे. कुडुक्क (पृ १५९), लाट (पृ. १५९–६०), कोंकण (पृ ५३), महाराष्ट्र (पृ. १३५) आदि प्रदेशोनो भाषाना लाक्षणिक शब्दप्रयोगोनी नोंध टीकाकारोए वारवार करेली छे एक प्रदेशनी भाषाना शब्दो वगर समज्ये बीजे बोलनार केवी रीते हास्यपात्र थाय छे ए पण वताव्युं छे (पृ १३५).

लोकवार्ता अने पुराणकथा · जैन साहित्यनो एक मोटो भाग कथाप्रधान छे आगमसाहित्यना चार अनुयोगो पैकी एक कथानुयोग छे. मूळ आगमो तथा ते उपरनी चूर्णिओ अने टीकाओमां अर्ध-ऐतिहासिक कथाओ अने लोककथाओनो विपुल भंडार छे. जैनोना कथासाहित्यना उद्भव अने विकासनो तुलनात्मक अभ्यास ए एक स्वतंत्र विषय छे. अहीं केवळ आ पुस्तकने अनुलक्षीने प्रस्तुत कथयितव्य रजू कर्युं छे.

अगडदत्त (पृ १–५), अट्टण (पृ. ६–८), इन्द्रदत्त (पृ. २३), कोकास (पृ. ५०–५२) आदिनी कथाओ लोक-वार्ताओ छे, जो के एमा ऐतिहासिक अनुश्रुतिओना अंशो रहेला छे

ए चोक्स अटकप्युनी रुपरे आवेल मूलदेवनगन लगती वार्ता (पृ ११५) तथा बौद्धो अने जैनोनी स्पर्धाने लगती केटलीक वार्ताओ (ज्ञा ध पृ १७२-७३) ए पण लोककथाओ ज छे पादलिप्ताचार्य (प ९८) अने नटपुत्र रोहकनी (पृ १५७-५८) हाजरजवाबीनी वातोमांनी केटलीक पछीना समयमां राजा भोज अने कवि कालिदास तथा अकबर अने बिरबलने नामे चडेली हाजरजवाबीनी वातो छे धोरशास्त्रना प्रणेता गणायेला मूलदेवने लगती भिन्न भिन्न कथाओ (पृ १४४-४८) पण लोकवार्ताओनी कोटिमां जशे, जो के मूलदेव पोते एक ऐतिहासिक व्यक्ति हशे एवुं केटलाक विद्वानोनुं मंतव्य छे गजसुकुमाल, अशकटापिता वासवदत्ता आदिनां कथानको ए खरेखर जैन पुराणकथा (*Mythology*)ना अंश बनी गयां छे एमां पण लोकवार्तानां तत्त्वो मिश्रित थयां हशे एवुं स्वाभाविक अनुमान थाय छे जैन अने बौद्ध साहित्यमां लोककथाओनुं ज धर्मकथाओमां रूपान्तर करवामां आव्युं छे ए सिद्ध हकीकत छे आगळ वधीने एम पण कही शकाय के दुनियाभरनी पुराणकथाओ अने देवकथाओनो अनादिकाळथी लोककथाओ साथे संबंध रहेलो छे

यादवकुळमां थयेला बावीसमा तीर्थंकर अरिष्टनेमि अथवा नेमिनाथ विशेना उल्लेखो आ पुस्तकमां अनेक स्थळे (पृ २४, ४९-५०, ८०-८१, ९६, इत्यादि) जोवामां आवशे तेओ श्रीकृष्णना काकाना दीकरा हता जैन साहित्यमां सर्वत्र यादवकुळनो इतिहास नेमिनाथना चरित्रनी आसपास गूंथायेलो छे ब्राह्मण पुराणोमां यादवोनो इतिहास मुख्य अंशोमां जैन साहित्यमां अपायेला वृत्तान्त साथे साम्य धरावे छे मात्र नेमिनाथनो वृत्तान्त, तेमनो नामोल्लेख पण एमां मळतो नथी! जैन धर्मनी स्थापना महावीरे करी नहोती, महावीर तो नवीन धर्मना प्रवर्तक करतां प्राचीन धर्मना सुधारक अने समुद्धारक हता तेमनी पूर्वेना त्रेवीसमा तीर्थंकर पार्श्वनाथ निःशंकपणे ऐतिहासिक

व्यक्ति पुरवार थया छे अने ए सिवायना बावीस तीर्थंकरो पैकी केटलाकनी ऐतिहासिकतानां प्रमाणो मळे तो नवाई जेवुं नथी बौद्ध ग्रन्थ 'महावग्ग' (१ २२. १३) अनुसार बुद्धना समयमां राजगृहमां सातमा तीर्थंकर सुपार्श्वनाथनु मन्दिर हतुं ए ज ग्रन्थ जणावे छे के आजीवक संप्रदायनो उपक नामे तपस्वी अनंतनाथनो उपासक हतो. जैनो अने आजीवकोना गाढ ऐतिहासिक संपर्कनो विचार करता आ अनंतनाथ ते चौदमा तीर्थंकर संभवे छे अलबत, आवां प्रमाणो तार्किक दृष्टिए सुपार्श्वनाथ के अनतनाथनी ऐतिहासिकता पुरवार करे के केम ए विशे मतभेद रहेवानो, पण महावीरना समयमां तेमज ए पूर्वे प्राचीनतर तीर्थंकरो पूजाता हता ए हकीकत तो एमाथी निर्विवादपणे फलित थाय छे नेमिनाथना विषयमां वात करीए तो, मात्र पछीना काळनां चरित्रोमां ज नहि, परन्तुं भाषा छंद तेमज अन्य दृष्टिबिन्दुए सौथी प्राचीन पुरवार थयेला मूल आगमग्रन्थोमा नेमिनाथ विशे तेमज यादवोना इतिहास विशे पुष्कळ सामग्री मळे छे 'वसुदेव-हिंडी' जेवा प्राचीन कथाग्रन्थनो ठीक मोटो गणी शकाय एवो अश ए वृत्तान्त वडे रोकायेलो छे, ज्यारे बीजी तरफ पुराणादिमां भागवत संप्रदायना कथयितव्यने रजू करवामा उपयोगी थाय एटले ज अंशे यादवकुळना वृत्तान्तनो विनियोग करवामां आव्यो छे आ बधुं जोतां नेमिनाथनुं इतिहासमां अस्तित्व नहि होय अने तेओ केवळ देवकथानी ज व्यक्ति हशे एवो तर्क भाग्येज साधार गणाशे पुराणकारोए श्रीकृष्णना चरित्रनी आसपास यादवकुळनो इतिहास गूंथवा माटे नेमिनाथना जीवनवृत्तान्तने जाणी जोईने पडतो मूक्यो हशे एवी कल्पना थाय छे.

जैन कथाओमा आवतां सावना तोफानो श्रीकृष्णनां बालचरित्रोनी याद आपे छे (पृ १८९-९२)

गुजरातना मध्यकालीन इतिहासने लगती एक अनुश्रुति प्रमाण-

मां अर्वाचीन कही शकाय एवी एक टीकामां नोंधायेली छे अमीष्ट स्त्रीनी कामना करतां मनुष्य दुःखी थाय अने स्त्रीनी प्राप्ति थया छतां पुत्रादिनी माथाथी दुःखी थाय, ए संबंधमां राजा सिद्धराज जयसिंहनुं उदाहरण टीकाकारे आप्युं छे (पृ १९५), ते सिद्धराज माटे आ प्रकारनी किंवदन्ती लोकप्रसिद्ध हशे एम सूचवे छे

अंते, मर्यादित समयमां एकले हाथे आवुं आगमसाहित्य संपादननो प्रयत्न ए दरियो डहोळवा जेवुं एक साहस हतुं साथे शिक्षण अने संशोधनना बीजां कार्यो पण चालु राखवानां हतां आ बधां कारणोए तेमज मारी अणसमज के सरतचूकने कारणे आ पुस्तकमां त्रुटीओ रही जवा पामी हशे ते विद्वानो बतावशे तो उपकृत थईश

आभारदर्शन

आ पुस्तक तैयार करवानुं काम तो पहेलां मारा विद्यागुरु पू मुनिश्री पुण्यविजयजीने सोंपायुं हतुं पण तेमणे आगमवाचनानुं भगीरथ काम हाथमां लीधुं तथा लगभग ए अरसामां गुजरात विद्या सभाना अनुस्नातक विभागमां मारी निमणूक थई एटले ए काम मने सोंपायुं. आ कामने अंगे वखते समय तेमना तरफथी सूचना तेम ज जोईतां पुस्तकोनी सहाय मळती रही हती ए बदल तेमनो ऋणी छुं भो ज विद्याभवनना अध्यक्ष श्री. रसिकलाल छो. परीखे आ आखुं पुस्तक छापवा आपतां पहेलां सांपन्त वांच्युं हतुं तेमनां सूचनाने परिणामे पुस्तकनुं मूल्य वध्युं छे एम कहेवामां हुं लेशमात्र अत्युक्ति करतो नथी. आचार्य श्री जिनविजयजी अने पं सुखलालजी साथे पण आ कार्य अंगे वखतोवखत चर्चा थई हती श्री. उमाशंकर जोशीकृत 'पुराणोमां गुजरात' आ पहेलां प्रसिद्ध थयेलुं छे एनी ग्रोसमर्थी भाषा व्याकरणे ढेरे, एकी भने घणां हतो, अने एकत्रित सामग्रीनी व्यवस्थानो श्रम प्रमाणमां हळवो थयो हतो

आ पुस्तकनी तैयारीनां प्रारभनां केटलाक वर्ष दरमियान अमे बन्ने भो. जे. विद्याभवनमां सहाध्यापको हता त्यारे एमनी साथे वारवार उपयोगी विचारविनिमय, अन्य उपरांत, आ काम अंगे पण थयो हतो. प्रूफ जोवाना तेमज मुद्रणनी व्यवस्थाना कार्यमां विद्यासभाना क्युरेटर अने गुजरातीनो अध्यापक श्री. केशवराम का. शास्त्रीनी सहाय घणी मूल्यवान हती तथा डॉ हरिप्रसाद शास्त्री अने अन्य सहाध्यापको साथे पण केटलाक अगत्यना मुद्दाओ अंगे चर्चा-विचारणा थई हती. तपस्वी मुनिश्री कान्तिविजयजीए केटलाक ग्रन्थो पूरा पाड्या हता तथा श्री धीरुभाई ठाकरे 'निशीथ चूर्णि'ना टाइप करेला पांच दुर्लभ ग्रन्थो उपयोग माटे मेळवी आप्या हता श्री. अंबालाल आशाराम जेतलपुरियाए केटलुंक आगमसाहित्य तपासवामा सहाय करी हती. वडोदरा युनिवर्सिटीमा मारा सहकार्यकर श्री इन्दुवदन अंबालाल दवेए आ पुस्तकनी सूचि काळजीपूर्वक तैयार करी आपी छे. ए सर्व सज्जनो प्रत्ये आ स्थळे हुं कृतज्ञभाव व्यक्त करुं छु

'अध्यापक निवास'
प्रतापगंज, वडोदरा
ता. ११-४-१९५२

भोगीलाल जयचंदभाई सांडेसरा

संक्षेप-सूचि

अनु अनुयोगद्वार सूत्र — मलधारी हेमचन्द्रनी वृत्ति समेत प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई स १९२४

अनुचू अनुयोगद्वार सूत्र—चूर्णि प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था रतलाम

अनुहा अनुयोगद्वार सूत्र—हारिभद्रीया वृत्ति (ई स नो ८ मो सैको) प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम

अनुहे अनुयोगद्वार सूत्र—मलधारी हेमचन्द्रनी वृत्ति (ई स नो १२ मो सैको) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई स १९२४ (उपर 'अनु' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

अरा अभिधान राजेन्द्र ग्रन्थ १ थी ७ संपादक विजयराजेन्द्रसूरि, रतलाम, ई स १९१३—२५

आचू आवश्यक सूत्र—चूर्णि पूर्वभाग अने उत्तरभाग प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम

आनि आवश्यक सूत्र—निर्युक्ति (नीचे 'आम' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

आम आवश्यक सूत्र—आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (ई स नो १२ मो सैको) भाग १ थी ३ प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई ई स १९२८—३२

आशी आचारांग सूत्र—शीलांकदेवनी वृत्ति (८ मा सैका आसपास), भाग १–२ प्रकाशक आगमोदय समिति सं १९७२–७३ एनुं पुनर्मुद्रण जैनानंद पुस्तकालय, सूरत तरफथी थयुं छे

आचू आचारांग सूत्र—चूर्णि कर्ता जिनदासगणि महत्तर (ई

स नो ७ मो सैको) प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं १९९८

आह : आवश्यक सूत्र–हरिभद्रसूरिनी वृत्ति (ई. स. नो ८ मो सैको) : प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई

आहेहा : मलधारी हेमचन्द्र (ई स. नो १२ मो सैको) सूत्रित हारिभद्रीय आवश्यकवृत्तिटिप्पण : प्रकाशक दे. ला. जैन पुस्तकोद्वार फंड, मुंबई, ई. स. १९२०

ओनिद्रो : ओघनिर्युक्ति–द्रोणाचार्यनी वृत्ति (ई. स. नो ११ मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७५

ओनिभा · ओघनिर्युक्ति–भाष्य,
(उपर 'ओनिद्रो' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

औसूअ · औपपातिक सूत्र–अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई स. नो ११ मो सैको) प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७२

अंद अंतकृतदशा सूत्र : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं. १९७६

अंदवृ अंतकृतदशा सूत्र–अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई स. नो ११ मो सैको)
(उपर 'अंद' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

उ : उत्तराध्ययन सूत्र
(नीचे 'उशा' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

उक उत्तराध्ययन सूत्र–उपाध्याय कमलसंयमकृत टीका (सं १५४४=ई स. १४८८) संपादक मुनि जयंतविजयजी

उचू उत्तराध्ययन सूत्र–चूर्णि · प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं. १९९८

उनि : उत्तराध्ययन सूत्र–निर्युक्ति
(नीचे 'उत्त' मां निर्दिष्ट संस्करण)

उने उत्तराध्ययन सूत्र–नेमिचन्द्रनी वृत्ति (सं ११२९=ई स १०७३) संपादक विजयउमंगसूरि, सं १९९३

उशा उत्तराध्ययन सूत्र–शान्तिसूरिनी वृत्ति (ई स नो ११ मो सैका) प्रकाशक दे ला जैन पुस्तकोद्धार फंड, भाग १ अने २, सं १९७२, भाग ३, सं. १९७३

कनि कल्पसूत्र–उपाध्याय धर्मसागरकृत किरणावली टीका (सं १६२८=ई स १५७२) संपादक पं दानविजय, भावनगर, सं. १९७८

कको कल्पसूत्र–उपाध्याय शान्तिसागरकृत कौमुदी टीका (सं १७०७=ई स १६५१) प्रकाशक ऋषभदेवजी केसरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, स १९९२

कदी कल्पसूत्र–जयविजयकृत दीपिका टीका (स १६७७=ई स १६२१) संपादक पं मफतलाल झवेरचंद, प्रकाशक महोपाध्याय यशोविजय पुस्तकालय, राधनपुर, सं १९९१

कसु : कल्पसूत्र–उपाध्याय विनयविजयकृत सुबोधिका टीका (स १६९६=ई स १६४०) प्रकाशक दे ला जैन पुस्तकोद्धार फंड, सूरत, सं १९६७

कसं कल्पसूत्र–खरतरगच्छीय जिनप्रभसूरिकृत संदेहविषौषधि टीका (स १३६४=ई स १३०८) संपादक पं हीरालाल हंसराज, जामनगर, स १९९९

पं पंन्यासविजय प्रकीर्णक (प्रकीर्णकदशक 'मां मुद्रित, प्रकाशक

आगमोदय समिति, मुंबई, सं. १९८३). अलग पण छपायुं छे · संपादक विजयक्षमाभद्रसूरि, पाटण, सं १९९७

जिरको · जिनरत्नकोश हरि दामोदर वेलणकर, भाग १, पूना, ई. स १९४४

जीकचू : जीतकल्पचूर्णि : सपादक मुनि जिनविजयजी, अमदावाद, सं १९८३

जीकचूव्या जीतकल्पचूर्णि : विषमपद व्याख्या–कर्ता श्रीचन्द्रसूरि (सं. १२२७=ई स ११७१)
(उपर 'जीकचू' वडे निर्दिष्ट सस्करण)

जीकभा : जीतकल्पभाष्य :
(नीचे 'जीकसू' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

जीकसू · जीतकल्पसूत्र–कर्ता जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण (ई. स. नो ७ मो सैको) · संपादक मुनिश्री पुण्यविजयजी, अमदावाद, स. १९९४

जीम · जीवाभिगम सूत्र–आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (ई स नो १२ मो सैको) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई

जेसू : जेसलमेर भाडागारीय ग्रन्थसूचि प लालचंद्र भगवानदास गांधी, वडोदरा, ई स. १९२३

जैसाइ जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास श्री. मोहनलाल दलीचंद देसाई, मुंबई, ई स १९३३

जंप्र · जबुद्वीपप्रज्ञप्ति
(नीचे 'जंशा' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

जंप्रशा · जबुद्वीपप्रज्ञप्ति–वाचक शान्तिचंद्रनी वृत्ति (सं. १६५० =ई. स. १५९४) प्रकाशक दे. ला जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई; सं १९७६

ज्ञाध ज्ञाताधर्मकथा सूत्र

(नीचे 'ज्ञाधअ' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

ज्ञाधअ ज्ञाताधर्मकथा सूत्र—अभयदेवसूरिनी वृत्ति (सं ११२० = ई स १०६४), प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई स १९१९

ज्योकअ ज्योतिष्करंडक—मलयगिरिनी वृत्ति (ई स नो १२ मो सैको) प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं १९८४

ज्योडि ज्योग्रोफिकल डिक्शनेरी ओफ एन्श्यन्ट एन्ड मिडीवल इण्डिया नंदलाल दे, लंडन, ई स १९२७

दशै दशवैकालिक सूत्र

(नीचे 'दशैहा' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

दशैचू दशवैकालिक चूर्णि—जिनदासगणि महत्तरकृत (ई स नो ७ मो सैको) : प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, सं १९८९

दशैस दशवैकालिक सूत्र—समयसुन्दरकृत टीका (सं १६९१ = ई स १६३५) जिनयश सूरि ग्रन्थमाळा, खंभात, सं १९७५

दशैहा दशवैकालिक सूत्र—हारिभद्रीया वृत्ति (ई स नो आठमो सैको) प्रकाशक दे ला जैन पुस्तकोद्धार फंड, सं १९७४

निचू निशीथ सूत्र—चूर्णि (टाइप करेली नकल) : संपादक आचार्य विजयप्रेमसूरि भाग १ थी ५ सं. १९९५–९६

निभा निशीथ सूत्र—भाष्य

(उपर 'निचू' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

नंचू · नंदिसूत्र चूर्णि–जिनदासगणि महत्तरकृत (ई. स. नो ७ मो सैको) · प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, ई. स. १९२८

नंम : नंदिसूत्र–आचार्य मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स नो १२मो सैको) · प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, ई. स. १९२४

नंसू : नंदिसूत्र

(उपर 'नम' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

नंहा · नंदिसूत्र–हारिभद्रीया वृत्ति (ई स नो ८ मो सैको) प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम, ई स १९२८

पाय : पाक्षिकसूत्र–यशोदेवसूरिनी वृत्ति (सं ११८०=ई स. ११२४) · प्रकाशक दे ला जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुबई, सं १९६७.

पिनिम : पिंडनिर्युक्ति–भाष्य अने मलयगिरिनी टीका (ई. स नो १२ मो सैको) सहित · प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं १९७४

पुगु पुराणोमां गुजरात · उमाशंकर जोषी, अमदावाद, ई स १९४६

प्रच : प्रभावकचरित (सं १३३४=ई स १२७८)–प्रभाचन्द्रसूरिकृत · सपादक मुनि जिनविजयजी, अमदावाद–कलकत्ता, ई. स १९४०

प्रम · प्रज्ञापना सूत्र–मलयगिरिनी वृत्ति (ई. स नो १२मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, पूर्वार्ध–उत्तरार्ध, सं १९७४–७५

प्रव्या · प्रश्नव्याकरण सूत्र

(नीचे 'प्रव्याअ' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

प्रश्नव्याअ प्रश्नव्याकरण सूत्र—अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई स नो ११ मा सैको) प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं १९७५

प्रज्ञा प्रज्ञापना सूत्र प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, पूर्वार्ध उत्तरार्ध स १९७४–७५

बृक बृहत्कल्पसूत्र संपादक मुनिश्री चतुरविजयजी अने मुनिश्री पुण्यविजयजी, भाग १ थी ५, भावनगर, ई स १९३३–३८; छठो ग्रन्थ हवे पछी प्रसिद्ध थशे.

बृकक्षे बृहत्कल्पसूत्र—आचार्य क्षेमकीर्तिनी वृत्ति (सं १३३२=ई स १२७६)

(उपर 'बृक' थी निर्दिष्ट संस्करण)

बृकभा बृहत्कल्पसूत्र—संघदासगणि क्षमाश्रमणकृत भाष्य (ई स ना ६ठा सैका आसपास)

(उपर बृक थी निर्दिष्ट संस्करण)

बृकम : बृहत्कल्पसूत्र—आचार्य मलयगिरिनी पीठिका वृत्ति (ई स नो १२मो सैको)

(उपर 'बृक' थी निर्दिष्ट संस्करण)

भप भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक ('प्रकीर्णकदशक'मां मुद्रित) प्रकाशक आगमोदय समिति मुंबई सं १९८२

भग भगवती सूत्र : प्रकाशक आगमोदय समिति भाग १–३, अमदावाद सं. १९८२–८५

भगअ भगवतीसूत्र—अभयदेवसूरिनी वृत्ति (सं ११२८=ई स १०७२)

(उपर 'मसू' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

मस . मरणसमाधि प्रकीर्णक ('प्रकीर्णकदशक'मा मुद्रित) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं १९८३

राप्रम . राजप्रश्नीय सूत्र–मलयगिरिनी वृत्ति (ई स नो १२ मो सैको) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं १९८१

विको विशेषावश्यक भाष्य–कोटयाचार्यनी वृत्ति (ई स. ना ८मा सैका आसपास) प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम

विभा : विशेषावश्यक भाष्य–कर्ता जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण (ई स ना ७ मा सैकानो प्रारंभ) प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था, रतलाम

विसूअ विपाक सूत्र–अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई स नो ११मो सैको) : प्रकाशक आगमोदय समिति, सं १९७६

वृद ' वृष्णिदशा (निर्यावलिका 'मां मुद्रित) प्रकाशक आगमोदय समिति, सं १९७८

ववृ ' वन्दारुवृत्ति–श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र उपर देवेन्द्रसूरिनी वृत्ति (इ स नो १३मो सैको) प्रकाशक दे ला जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं १९६८

व्यभा व्यवहार सूत्र–संघदासगणि क्षमाश्रमणकृत भाष्य (ई स ना छठ्ठा सैका आसपास)

(नीचे 'व्यम' वडे निर्दिष्ट संस्करण)

व्यम व्यवहार सूत्र–मलयगिरिनी वृत्ति (ई स नो १२मो सैको) : संपादक मुनि माणेक, अमदावाद

श्राप्र श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र- रत्नशेखरसूरिनी वृत्ति (सं १९४६=

ई स १४४०) प्रकाशक दे ला जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई सं १९६८

समसू समवायांग सूत्र—अभयदेवसूरिनी वृत्ति (सं ११२०=ई स १०६४) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, स १९७४

सूकचू सूत्रकृतांग सूत्र—जिनदासगणि महत्तरकृत चूर्णि (ई स नो ७ मो सैको) प्रकाशक ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबर संस्था रतलाम स १९९८

सूकशी सूत्रकृतांग सूत्र—शीलांकदेवनी वृत्ति (ई स ना ८ मा सैका आसपास) प्रकाशक आगमोदय समिति मेसाणा स १९७२

सूप्रम : सूर्यप्रज्ञप्ति—मलयगिरिनी वृत्ति (ई स नो १२मो सैको) प्रकाशक आगमोदय समिति, स १९७५

संप्र संस्तारक प्रकीर्णक ('प्रकीर्णकदशक'मां मुद्रित) प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई स १९८२

स्थासू स्थानांग सूत्र—अभयदेवसूरिनी वृत्ति (सं ११२०=ई स १०६४) प्रकाशक आगमोदय समिति भाग १–२, सं. १९७५

सन्दर्भसूचि

[आ पूर्वे निर्देशायेला उपरात उपयोगमा लेवायेला महत्त्वना ग्रन्थोनी सूचि]

आगमसाहित्य

अनुत्तरोपपातिकदशा सूत्र–अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई. स.नो ११मो सैको) समेत · प्रकाशक आगमोदय समिति, स. १९७६

उपासकदशा सूत्र–अभयदेवसूरिनी वृत्ति (ई. स नो ११ मो सैको) समेत प्रकाशक आगमोदय समिति, मेसाणा, सं. १९७६

दशाश्रुतस्कन्ध-संपादक उपाध्याय आत्मारामजी पंजाबी, जैन शास्त्रमाला नं १, लाहोर, स. १९९७

निर्यावलिका (कप्पिया, कप्पवडंसिया, पुप्फिया, पुप्फचूलिया, वह्निदसा ए पाच सूत्रो)–श्रीचन्द्रसूरिनी वृत्ति (सं. ११२८=ई स. १०७२) समेत प्रकाशक आगमोदय समिति, सं १९७८

प्रकीर्णकदशकम् (चउसरण, आतुरप्रत्याख्यान, महापरिज्ञा, भक्तपरिज्ञा, तदुलवेयालिय, संस्तारक, गच्छाचार, गणिविद्या, देवेन्द्रस्तव, मरणसमाधि ए दश प्रकीर्णको) · प्रकाशक आगमोदय समिति, मुंबई, सं १९८३

श्रमणप्रतिक्रमण सूत्र वृत्ति–पूर्वाचार्यकृत . प्रकाशक दे ला जैन पुस्तकोद्धार फंड, मुंबई, सं १९६७

इतर साहित्य

अर्ली हिस्टरी ओफ इन्डिया' विन्सेन्ट स्मिथ, ४ थी आवृत्ति, ओक्स्फर्ड, ई स १९३२

अलंकारसर्वस्व (रुय्यककृत) संपादक प. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, २ जी आवृत्ति, मुंबई, ई स १९३९

आबु, भाग १ मुनि जयंतविजयजी, उज्जैन, ई स १९३३

इतिहासनी केडी : भोगीलाल ज सांडेसरा, वडोदरा, ई स १९४५

इन्डिया ॲज डिस्क्राइब्ड इन धी अर्ली टेक्स्ट्स ऑफ बुद्धिझम ॲन्ड जैनिझम बिमलाचरण लॉ, लंडन, ई स १९४१

इन्डो-आर्यन ॲन्ड हिन्दी सुनीतिकुमार चेटर्जी, अमदावाद, ई स १९४२

उज्जयिनी इन ॲन्श्यन्ट इन्डिया बिमलाचरण लॉ, कलकत्ता, ई स १९४४

ए कम्पेरेटिव ॲन्ड इटिमोलोजिकल डिक्शनरी ऑफ धी नेपाली लॅंग्वेज राल्फ लीली टर्नर लंडन ई स १९३१

ए हिस्टरी ऑफ इन्डियन लिटरेचर वॉल्यूम २ जु ॲम विन्टरनित्स, कलकत्ता, ई स १९३३

ए हिस्टरी ऑफ इम्पोर्टन्ट ॲन्श्यन्ट टाउन्स ॲन्ड सिटीझ इन गुजरात ॲन्ड काठियावाड अनंत सदाशिव अल्टेकर मुंबई ई स १९२६

ऐतिहासिक संशोधन दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री, मुंबई, ई स १९४१

कनिंगहॅम्स ॲन्श्यन्ट ज्योग्रफी ऑफ इन्डिया : संपादक सुरेन्द्रनाथ मजमूदार शास्त्री कलकत्ता, ई स १९२४

करकंडचरिउ (कनकामरकृत) संपादक हीरालाल जैन, कारंजा ई स १९३४

कादंबरी (बाणभट्टकृत) (निर्णयसागर प्रेस) सातमी आवृत्ति, मुंबई ई स १९२८

काव्यानुशासन (हेमचन्द्रकृत), भाग २ जो, प्रस्तावना: रसिकलाल छो परीख, मुंबई, ई स १९३८

कुमार (मासिक)

कैम्ब्रिज हिस्टरी ओफ इन्डिया, वॉल्युम १ (ॲन्श्यन्ट इन्डिया) संपादक इ जे रॅप्सन, कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस, ई स १९२२

खंभातनो इतिहास : रत्नमणिराव भीमराव जोटे अमदावाद, ई स १९३५

गुजराती साहित्यसंमेलन · १२मु अधिवेशन अहेवाल अने निबंधसंग्रह, अमदावाद, ई स १९३७

गाथासप्तशती (सातवाहन हालकृत) संपादक पं मथुरानाथ शास्त्री, ३ जी आवृत्ति, मुंबई, ई स १९३३

गुजरातनो मध्यकालीन राजपूत इतिहास, भाग १–२ दुर्गाशंकर केवळराम शास्त्री, अमदावाद, ई स १९३७–३९

गुजरातना ऐतिहासिक लेखो, भाग १ . संपादक गिरिजाशंकर: वल्लभजी आचार्य, मुंबई, ई स १९३३

चतुर्भाणी : संपादक एम. रामकृष्ण कवि अने एस रमानाथ शास्त्री, पटणा, ई स १९२२

चत्वार: कर्मग्रन्था (देवेन्द्रसूरिकृत) : संपादक मुनि चतुरविजयजी, भावनगर, ई. स १९४७

जर्नल ओफ धी ओरियेन्टल इन्स्टिटयूट (त्रैमासिक)

जैन साहित्य और इतिहास : नाथुराम प्रेमी, मुंबई, ई. स. १९४२

जैन साहित्य संशोधक (त्रैमासिक)

जैनिझम इन नोर्थ इन्डिया . सी जे शाह, मुंबई, ई स १९३२

टाइम्स इन ऐन्शियन्ट इण्डिया : विमलाचरण लॉ, पूना, ई. स. १९४३

डाइनेस्टिज ऑफ धी कलि एज : ऐफ. ई. पार्जिटर, ऑक्स्फर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, ई. स. १९१३

डिक्शनरी ऑफ पालि प्रोपर नेम्स, भाग १–२ : जी. पी. मलालसेकर, लंडन, ई. स. १९३८

तत्त्वार्थसूत्र (वाचक उमास्वातिकृत) : संपादक प. सुखलालजी, २ जी आवृत्ति, अमदाबाद ई. स. १९४०

तंत्रोपाख्यान : संपादक साम्बशिव शास्त्री, त्रिवेन्द्रम्, ई. स. १९३८

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र (आचार्य हेमचन्द्रकृत) : भावनगर, ई. स. १९०६–११

दशकुमारचरित (दंडीकृत) : संपादक नारायण बालकृष्ण गोडबोले अने टी. वेंकटराम शास्त्री, ८ मी आवृत्ति, मुंबई, ई. स. १९१७

देवतामूर्तिप्रकरण अने रूपमंडन : संपादक उपेन्द्रमोहन सांख्यतीर्थ, कलकत्ता, ई. स. १९३६

द्वयाश्रय महाकाव्य (आचार्य हेमचन्द्रकृत), ग्रंथ १–२ : संपादक आबाजी विष्णु काथवटे, मुंबई १९१५–२१

धूर्ताख्यान (हरिभद्रसूरिकृत) : संपादक आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, मुंबई ई. स. १९४४

निघंटु भाष्य पूर्वार्ध–उत्तरार्ध : वैद्य बापालाल ग. शाह, हांसोट, ई. स. १९२७–२८

निर्वाणकलिका (पादलिप्ताचार्यकृत) · संपादक मोहनलाल भग-वानदास झवेरी, मुंबई, ई स १९२६

निह्नववाद . मुनि धुरंधरविजयजी, भावनगर, ई. स १९४७

न्यायावतारवार्तिक वृत्ति (पूर्णतलगच्छीय शान्तिसूरिकृत) · संपादक पं. दलसुख मालवणिया, मुंबई, ई. स १९४९

न्यू इन्डियन एन्टिक्वेरी (मासिक)

पाइअ–सद्द–महण्णवो . पं. हरगोविन्ददास त्रीकमचंद शेठ, कलकत्ता, ई. स. १९२३–२८

पुरातन प्रबन्धसंग्रह : संपादक जिनविजयजी मुनि, कलकत्ता, ई स. १९३६

पोलिटिकल हिस्टरी ऑफ ॲन्श्यन्ट इन्डिया · हेमचन्द्र राय-चौधरी, ३ जी आवृत्ति, कलकत्ता, ई स १९३२

पंचतंत्र : संपादक अने अनुवादक भोगीलाल ज सांडेसरा, मुंबई, ई स १९४९

प्रतिज्ञायौगन्धरायण (भासकृत) · संपादक टी गणपतिशास्त्री, त्रिवेन्द्रम, ई स. १९१२

प्रबन्धकोश (राजशेखरसूरिकृत) संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, ई स. १९३५

प्रबन्धचिन्तामणि (मेरुतुंगाचार्यकृत) · संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, ई स १९३३

प्रमेयकमलमार्तंड (प्रभाचन्द्राचार्यकृत) · संपादक पं महेन्द्र-कुमार शास्त्री, २ जी आवृत्ति, मुंबई, ई. स १९४१

प्रेमी अभिनंदन ग्रन्थ, टीकमगढ, ई. स १९४६

ट्राइब्स इन ऐन्श्यन्ट इण्डिया : विमलाचरण लॉ, पूना, ई स १९४३

डाइनेस्टिज ऑफ धी कलि एज : ऍफ ई पार्गिटर, ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी प्रेस ई स १९१३

डिक्शनरी ऑफ पालि प्रॉपर नेम्स भाग १–२ : जी पी. मलालसेकर, लंडन ई स १९३८

तत्त्वार्थसूत्र (वाचक उमास्वातिकृत) : संपादक प सुखलालजी, २ री आवृत्ति, अमदावाद, ई स १९४०

तंत्रोपाख्यान : संपादक सांबशिव शास्त्री त्रिवेन्द्रम्, ई स १९३८

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र (आचार्य हेमचन्द्रकृत) : भावनगर, ई स १९०६–१३

दशकुमारचरित (दंडीकृत) : संपादक नारायण बालकृष्ण गोडबोले अने टी वेंकटराम शास्त्री ८ मी आवृत्ति मुंबई, ई स १९१७

देवतामूर्तिप्रकरण अने रूपमंडन : संपादक उपेन्द्रमोहन सांख्यतीर्थ कलकत्ता ई स १९३६

द्वयाश्रय महाकाव्य (आचार्य हेमचन्द्रकृत), खण्ड १–२ : संपादक आबाजी विष्णु काथवटे, मुंबई १९१५–२१

धूर्ताख्यान (हरिभद्रसूरिकृत) : संपादक आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये मुंबई ई स १९४४

निघंटु आदर्श पूर्वार्ध–उत्तरार्ध : वैद्य बापालाल ग शाह, हासोट ई स १९२७–२८

वसुदेव-हिंडी · प्रथम खंड (संघदासगणि वाचककृत) · भाषान्तर : भोगीलाल ज. सांडेसरा, भावनगर, ई स १९४६

वसुदेव-हिंडी प्रथम खंड (संघदासगणि वाचककृत) मूल संपादक मुनि चतुरविजयजी अने मुनि पुण्यविजयजी, भावनगर, ई. स १९३०-३१

वसंत रजतमहोत्सव स्मारक ग्रन्थ, अमदावाद, ई. स १९२७

विविध तीर्थकल्प (जिनप्रभसूरिकृत) संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, ई स. १९३४

वीरनिर्वाण संवत् और जैन कालगणना · मुनि कल्याणविजय, जालोर, सं. १९८७

शंखेश्वर महातीर्थ · मुनि जयंतविजयजी, उज्जैन, सं. १९९८

श्रमण भगवान महावीर . मुनि कल्याणविजयजी, जालोर, सं. १९९८

श्रीकालककथासंग्रह संपादक पं अंबालाल प्रेमचंद शाह, अमदावाद, ई. स १९४९

सन्मतिप्रकरण (अनुवाद अने प्रस्तावना) पं सुखलालजी संघवी अने पं बेचरदास दोशी, अमदावाद, ई स. १९३२

सरस्वतीपुराण संपादक कनयालाल भाईशंकर दवे, मुंबई, ई. स १९४०

सिलेक्ट इन्स्क्रिप्शन्स बेरिंग ऑन इन्डियन हिस्टरी ॲन्ड सिविलाइझेशन, वॉ. १ संपादक दिनेशचन्द्र सरकार, कलकत्ता, ई स १९४२

बुद्धिस्ट इंडिया : र्‍हाइस डेविड्स, न्यूयोर्क, ई. स. १९०३

बृहत् कथाकोश (हरिषेणाचार्य कृत) : संपादक आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, मुंबई ई. स. १९४३

भारत के प्राचीन जैन तीर्थ : डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, बनारस, ई. स. १९५२

भारतीय विद्या (अंग्रेजी मासिक)

भारतीय विद्या (हिन्दी-गुजराती त्रैमासिक)

मराठी व्युत्पत्तिकोश : कृष्णाजी पांडुरंग कुलकर्णी, मुंबई, ई. स. १९४६

महावीर जैन विद्यालय रजत महोत्सव ग्रन्थ, मुंबई, ई. स. १९४१

मालवीया कोमेमोरेशन वोल्यूम, बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी, ई. स. १९३२

मेघदूत (कालिदासकृत) : संपादक वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री पणशीकर १४ मी आवृत्ति, मुंबई, ई. स. १९३५

मोढेरा : मणिलाल मूळचंद मिस्त्री, वडोदरा ई. स. १९३५

लाइफ इन एन्श्यन्ट इण्डिया एज डिपिक्टेड इन धी जैन केनन : जगदीशचन्द्र जैन, मुंबई ई. स. १९४७

लाइफ ओफ हेमचन्द्राचार्य : डॉ. ब्युहलर, अनुवादक डॉ. मणिलाल पटेल शान्तिनिकेतन, ई. स. १९३६

लीलावई कहा (कोऊहलकृत) : संपादक डॉ. ए. एन. उपाध्ये मुंबई, ई. स. १९४९

लेखपद्धति : संपादक सी. डी. दलाल, वडोदरा, ई. स. १९२५

वडनगर : कनैयालाल भाईशंकर दवे, वडोदरा, ई. स. १९३७

वसुदेव-हिंटी प्रथम खंड (सघदासगणि वाचककृत): भाषान्तर : भोगीलाल ज. साडेसरा, भावनगर, ई. स १९४६

वसुदेव-हिंडी प्रथम खंड (संघदासगणि वाचककृत) · मूल संपादक मुनि चतुरविजयजी अने मुनि पुण्यविजयजी, भावनगर ई. स १९३०-३१

वसंत रजतमहोत्सव स्मारक ग्रन्थ, अमदावाद, ई स १९२७

विविध तीर्थकल्प (जिनप्रभसूरिकृत) · संपादक जिनविजय मुनि, शान्तिनिकेतन, ई स १९३४

वीरनिर्वाण संवत् और जैन कालगणना मुनि कल्याणविजय, जालोर, सं १९८७

शखेश्वर महातीर्थ · मुनि जयंतविजयजी, उज्जैन, सं. १९९८

श्रमण भगवान महावीर . मुनि कल्याणविजयजी, जालोर, सं. १९९८

श्रीकालककथासंग्रह संपादक पं अबालाल प्रेमचंद शाह, अमदावाद, ई. स १९४९

सन्मतिप्रकरण (अनुवाद अने प्रस्तावना) पं सुखलालजी सघवी अने पं बेचरदास दोशी, अमदावाद, ई स. १९३२

सरस्वतीपुराण संपादक कनयालाल भाईशंकर दवे, मुंबई, ई स १९४०

सिलेक्ट इन्स्क्रिप्शन्स बेरिंग ओन इन्डियन हिस्टरी ॲन्ड सिविलाइझेशन, वॉ. १ सपादक दिनेशचन्द्र सरकार, कलकत्ता, ई स १९४२

बुद्धिस्ट इंडिया र्‍हीस डेविड्स, न्यूयार्क, ई स १९०३

बृहत् कथाकोश (हरिषेणाचार्य कृत) संपादक आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, मुंबई ई स १९४३

भारत के प्राचीन जैन तीर्थ डॉ जगदीशचन्द्र जैन, बनारस, ई स १९५२

भारतीय विद्या (अंग्रेजी मासिक)

भारतीय विद्या (हिन्दी-गुजराती त्रैमासिक)

मराठी व्युत्पत्तिकोश कृष्णाजी पांडुरंग कुलकर्णी मुंबई, ई स १९४६

महावीर जैन विद्यालय रजत महोत्सव ग्रन्थ, मुंबई, ई स १९४१

मालवीय कोमेमोरेशन वोल्यूम, बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी, ई स १९३२

मेघदूत (कालिदासकृत) संपादक वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री पणशीकर १४ मी आवृत्ति, मुंबई ई स १९१५

मोढेरा मणिलाल मूळचंद मिस्त्री, वडोदरा ई स १९२५

लाइफ इन एन्श्यन्ट इण्डिया एज डिपिक्टेड इन दी जैन केनन जगदीशचन्द्र जैन, मुंबई ई स १९४७

लाइफ ओफ हेमचन्द्राचार्य डॉ ब्यूलर, अनुवादक डॉ. मणिलाल पटेल शान्तिनिकेतन, ई स १९३६

लीलावई कहा (कोऊहलकृत) : संपादक डॉ ए. एन उपाध्ये, मुंबई, ई स १९४९

वसन्तविलास संपादक सी. डी दलाल, वडोदरा, ई स १९२१

वडनगर कनैयालाल भाईशंकर दवे, वडोदरा, ई स १९१७

शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	१८	मागी	मारी
२३	छेल्ली	नाग	नाग.
३८	८	पारमकुल	पारम कूल
४३	१०	ए	अ
५१	३	इर्ष्यालु	ईर्ष्यालु
६१	७	हती	हतो
७०	१४	टिकाकारोए	टीकाकारोए
१३०	११	'जंबुद्वीपप्रज्ञाप्ति'	'जम्बुद्वीपप्रज्ञप्ति'
१८२	५	तथा तथा	तथा
१८३	५	'वसुदेव विंडी'	'वसुदेव-हिंडी'
१९६	२०	अर्वाचीत	अर्वाचीन
१९९	१२	ताम्रलिप्ति	ताम्रलिप्ति

स्टोरी ऑफ काल्फ नॉर्मन ब्राउन, वोशिंग्टन, ई स १९३३

स्थविरावलिचरित अथवा परिशिष्ट पर्व (आचार्य हेमचन्द्रकृत) संपादक हर्मन याकोबी, २थी आवृत्ति कलकत्ता, ई स १९३२

स्याद्वादमंजरी (मल्लिषेणकृत) संपादक आनंदशंकर बापुभाई ध्रुव, मुंबई, ई स १९३३

हम्मीरमदमर्दन नाटक (जयसिंहसूरिकृत) संपादक चिमनलाल डाह्याभाई दलाल वडोदरा, ई स १९२०

हेमचन्द्राचार्य धूमकेतु मुंबई ई स १९४०

हैमसमीक्षा मधुसूदन मोदी, अमदावाद, ई स १९४२

जैन आगमसाहित्यमां गुजरात

अगडदत्त

अगडदत्तनी कथा उत्तराध्ययन सूत्र (अध्य. ४) उपरनी शान्तिसूरिनी वृत्ति (पृ २१३–१६)मा तथा ए ज सूत्र उपरनी नेमिचन्द्रनी वृत्ति (पृ ८४–९४)मा आवे छे. शान्तिसूरिकृत वृत्त्यन्तर्गत कथा प्रमाणे, अगडदत्त उज्जयिनीना जितशत्रु राजाना रथिक अमोघरथनो पुत्र हतो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, शंखपुरना राजा सुन्दरनो पुत्र हतो) पिताना मरण पछी अस्त्रविद्या शीखवा माटे ए पिताना एक मित्र पासे कौशाबीमा गयो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, अगडदत्तना स्वच्छंदाचारथी कंटाळी राजाए एने देशवटो आप्यो, वाराणसीमां पवनचंड नामे एक कलाचार्य साथे परिचय थतां एने त्यां रही अगडदत्त अभ्यास करवा लाग्यो). त्या विद्या शीख्या पछी गुरुनी आज्ञा लई पोतानी प्रवीणता दर्शाववा माटे ए राजकुलमा गयो, नगरमा अश्रुतपूर्व सन्धिच्छेद करता–खातर पाडता एक चोरने पकडी लाववानी राजाए सूचना करता एणे युक्तिपूर्वक ए चोरने तेम ज एणे एकत्र करेलो भंडार साचवनारी एनी बहेनने–बन्नेने पकडी लीधा

शान्तिसूरिनी वृत्तिमा अगडदत्तनी कथानो आटलो ज अंश आवे छे, पण नेमिचन्द्रवाळी कथामा प्रसगविस्तार लांबो छे. चोर पकडवाना एना पराक्रमथी प्रसन्न थईने राजाए अगडदत्तने पोतानी पुत्री कमलसेना परणावी कमलसेनाने तथा अगाउ कौशाबीमा अस्त्रविद्या शीखतां जेनी साथे पोताने प्रेम थयो हतो ते, श्रेष्ठी बंधुदत्तनी पुत्री मदनमंजरीने साथे लईने मार्गमा अनेक पराक्रम करतो अगडदत्त घेर जाय छे अने सुखपूर्वक रहे छे; पण एक वार पोतानी पत्नीनु दुश्चरित जाणवामा आवता निर्वेद पामी दीक्षा ले छे

अगडदत्त

अगडदत्तनी कथा उत्तराध्ययन सूत्र (अध्य. ४) उपरनी शान्तिसूरिनी वृत्ति (पृ २१३–१६)मां तथा ए ज सूत्र उपरनी नेमिचन्द्रनी वृत्ति (पृ ८४–९४)मां आवे छे. शान्तिसूरिकृत वृत्त्यन्तर्गत कथा प्रमाणे, अगडदत्त उज्जयिनीना जितशत्रु राजाना रथिक अमोघरथनो पुत्र हतो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, शंखपुरना राजा सुन्दरनो पुत्र हतो) पिताना मरण पछी अस्त्रविद्या शीखवा माटे ए पिताना एक मित्र पासे कौशाबीमां गयो (नेमिचन्द्र प्रमाणे, अगडदत्तना स्वच्छंदाचारथी कंटाळी राजाए एने देशवटो आप्यो, वाराणसीमां पवनचंड नामे एक कलाचार्य साथे परिचय थतां एने त्यां रही अगडदत्त अभ्यास करवा लाग्यो). त्या विद्या शीख्या पछी गुरुनी आज्ञा लई पोतानी प्रवीणता दर्शाववा माटे ए राजकुलमा गयो, नगरमा अश्रुतपूर्व सन्धिच्छेद करता–खातर पाडता एक चोरने पकडी लाववानी राजाए सूचना करता एणे युक्तिपूर्वक ए चोरने तेम ज एणे एकत्र करेलो भंडार साचवनारी एनी बहेनने–बन्नेने पकडी लीधा

शान्तिसूरिनी वृत्तिमा अगडदत्तनी कथानो आटलो ज अंश आवे छे, पण नेमिचन्द्रवाळी कथामा प्रसगविस्तार लाबो छे. चोर पकडवाना एना पराक्रमथी प्रसन्न थईने राजाए अगडदत्तने पोतानी पुत्री कमलसेना परणावी. कमलसेनाने तथा अगाउ कौशाबीमा अस्त्रविद्या शीखतां जेनी साथे पोताने प्रेम थयो हतो ते, श्रेष्ठी बंधुदत्तनी पुत्री मदनमंजरीने साथे लईने मार्गमा अनेक पराक्रम करतो अगडदत्त घेर जाय छे अने सुखपूर्वक रहे छे, पण एक वार पोतानी पत्नीनु दुश्चरित जाणवामा आवता निर्वेद पामी दीक्षा ले छे

स्पष्ट छे के बन्ने वृत्तिओमां आपेली अगडदत्तनी कथा बे भिन्न परंपराओने अनुसरे छे शान्तिसूरिनी वृत्तिमांनी कथा अति संक्षेपमां, सरळ गद्यमां रजू थयेली छे, ज्यारे नेमिचन्द्रनी टीकामांनी कथा ३२९ पद्योमां विस्तरेली होई एक स्वतन्त्र कृति बनी रहे छे बन्नेय संस्कृत टीकाओमां आ कथाओ तो प्राकृतमां ज छे ए दर्शावे छे के सुमनाए पहेलांना समयनी टीकाओमां बन्युं छे तेम, आ कथाओ प्राचीनतर मूळ ग्रन्थोमांथी यथावत् उद्धृत करेली छे उत्तराध्ययन सूत्र उपरनी चूर्णि (पृ ११६)मां चारक पंक्तिमां अगडदत्तनी कथानुं मात्र सूचन करवामां आवेलुं छे

बौद्ध अथवा ब्राह्मण साहित्यमां क्यांय अगडदत्तनी कथानुं स्पष्ट स्वरूपान्तर जाणवामां आवतुं नथी पण स्वरूपान्तर प्राप्त थाय तो मूळ कथानुं स्वरूप तेम ज समय नक्की करवामां ए अवश्य उपयोगी थाय, केम के ए तो स्पष्ट छे के जैन कर्ताए एक पराक्रमी क्षत्रिय युवकना साहसोनुं निरूपण करती लोककथाने धर्मकथानुं रूप आप्युं छे

जैन आगमेतर साहित्यमां अगडदत्तनी कथा एना सौथी प्राचीन स्वरूपे संघदासगणिकृत बृहत् प्राकृत कथाग्रन्थ 'वसुदेवहिंडी' (ई स ना पांचमा सैका आसपास) जे गुणाढ्यना लुप्त 'बृहत्कथा'नुं जैन रूपान्तर छे तेमां (पृ २७–३९) छे शान्तिसूरिए जे कथानक उद्धृत कर्युं छे तेनी उपर 'वसुदेव-हिंडी'नी स्पष्ट असर छे अने केटलेक स्थाने तो देखीतुं शाब्दिक साम्य छे, ज्यारे नेमिचन्द्रे उद्धरेलुं कथानक, पात्रो अने स्थानोनां भिन्न नामो तथा केटलाक भिन्न कथाप्रसंगो सूचवे छे ते प्रमाणे, कोई जुदी परंपराने अनुसरे छे

अगडदत्तनी कथा एक लोकप्रिय जैन धर्मकथा गणाई छे ए विशे संस्कृतमां एक 'अगडदत्त पुराण' रचायुं छे, अने जैन गुर्जर साहित्यमां अगडदत्त विशे अनेक नानी मोटी कृतिओ प्राप्त थई छे

१ उत्तराध्ययननी उपर्युक्त बे टीकाओमा सचवायेली अगडदत्तनी कथानी बे विभिन्न पाटपरपराओनो समावेश डा याकोबीए Erzahlungen in Maharastri ए ग्रन्थमा कर्यो छे, तथा ए बन्नेना केटलीक युरोपीय भाषाओमा अनुवाद पण थया छे 'वसुदेव–हिंडी'–अतर्गत कथाना अनुवाद माटे जुओ ए ग्रन्थनु में करेलु गुजराती भाषान्तर, पृ ४५–६० उत्तराध्ययन–टीकाओमांनी कथाओ साथे 'वसुदेव–हिंडी'माना कथानकनी तुलना माटे जुओ 'न्यू इन्डियन ॲन्टीक्वेरी,' वो १ (पृ २८१–९९) मा डॉ आल्सडॉर्फनो लेख 'ए न्यू वर्झन ऑफ धी अगडदत्त स्टोरी '

२ जिरको, पृ १

३ जुओ 'जैन गुर्जर कविओ,' भाग १–२–३

अचलग्राम

अचलग्रामना भद्रिक कौटुम्बिकोए यशोधरमुनिनी पासे दीक्षा लीधी हती. आ अचलग्राम ए ज आभीरदेशमा आवेलु अचलपुर के एथी भिन्न ए नक्की थई शक्यु नथी

१ मख, गा ४४९–५१

अचलपुर

आभीरदेशमां कृष्णा–वेणा नदीओना सगमस्थान पासे आवेलुं नगर कृष्णा–वेणाना संगम आगळ आवेला ब्रह्मद्वीप नामे द्वीपमा वसता पांचसो तापसोने आर्य वज्रना मामा आर्य समितसूरिअे प्रतिबोध पमाड्यो हतो, ए प्रतिबोध पामेल तापसोथी जैन साधुओनी ब्रह्मद्वीपक नामे शाखानो आरंभ थयो हतो.[१]

जुओ **आभीर**

१ आचू, पूर्व भाग, पृ ५४३, आम, पृ ५१५, कस, पृ १३२, कसु, पृ. १३४, ककि, पृ १७१, कदी, पृ १४८–५८, नसू, पृ ५१, पिनिम, पृ. १४४

अजमेरु

अजमेर अजमेर पासेना, राजा सुभटपाल–शासित गाम हर्षपुरमा ब्राह्मणा यज्ञमां बकराने मारता हत

मंत्रशक्तिथी मकराने थाभा अर्पी, ब्राह्मणोने बोध आप्यो हतो.

१ कथा. पृ. ५०९-१   वृत्ति पृ १६६   सुखी पृ १४८-४९.

अट्टण

अट्टण ए उज्जयिनीनो एक अजेय मल्ल हतो. सोपारकनो सिंहगिरि राजा मल्लोनी साठमारी करावतो अने जे जीते एने घणुं द्रव्य आपतो. अट्टण प्रतिवर्षे सोपारक जईने विजयचिह्न तरीके पताका लई आवतो. आथी सिंहगिरि राजाए एक माछीनुं बळ पारखीने एने पोष्यो, अने ए मात्स्यिक—माछी मल्ल तरीके ओळखायो. बीजे वर्षे अट्टण आव्यो त्यारे मात्स्यिक मल्ले एने हरावी दीधो. एक युवके पोताने हराव्यो तेथी मानभंग थयेलो अट्टण सुराष्ट्रमां एनी बराबरी करे एवो बीजो मल्ल छे एम सांभळीने एनी शोधमां सोपारकथी सुराष्ट्र तरफ जतो हतो त्यां मार्गमां भरुकच्छ पासे एणे एक खेडूत जोयो. ए एक हाथे हळ चलावतो हतो अने बीजे हाथे फलही–कपास चूंटतो हतो (एगेण हत्थेण हलं वाहेति, एक्केणं फलहीओ उप्पाडेइ) अट्टण सुराष्ट्र जवानो विचार मांडी वाळ्यो अने ए खेडूतने धनवान बनाववानी लालच आपी पोतानी साथ उज्जयिनी लई गयो अने एने मल्लविद्या शीखवी. ए मल्ल फलहीमल्ल तरीके प्रसिद्ध थयो. पछी एओ बन्ने सोपारक आव्या. त्यां फलहीमल्ल साथे मात्स्यिक मल्लनुं युद्ध थयुं. पहेला दिवसे मल्लयुद्धनो कंई निर्णय थई शक्यो नहि. ए रात्रे अट्टणे पोताना शिष्य फलहीने पूछ्युं के 'तारां क्यां अंग दुखे छे?' अने पछी तेम कह्युं त्यां एने खूब मर्दन करावीने ताजो कर्यो. बीजी बाजु, सिंहगिरि राजाए पोताना मात्स्यिक मल्लने एवो ज प्रश्न कर्यो त्यारे एणे गर्वथी उत्तर आप्यो के 'फलही बिचारो कोण छे? हुं एना बापने पण पराजय करी शकुं एम छुं.' आथी बीजे दिवसे बन्ने मल्लोनुं सम युद्ध थयुं अने त्रीजे दिवसे मात्स्यिक मल्ल हार्यो अने मरण

पाम्यो, तथा अट्टण सत्कार पामीने उज्जयिनी गयो (आवश्यकसूत्र उपरनी चूर्णिमां अहीं सुधीनुं ज कथानक आप्युं छे.)

उज्जयिनी गया पछी एणे मल्लयुद्धनो त्याग करी दीधो वळी वृद्ध थई गयो होवाथी संबंधीओ एनुं अपमान करवा लाग्या. आथी संबंधीओने समाचार आप्या विना ज ए कौशांबी चाल्यो गयो त्यां एक वर्ष आराम लईने रसायणो खाधां तथा बलिष्ठ थयो. पछी एक वार एणे कौशांबीना राजाना मल्ल निरगणनो मल्लयुद्धमा पराजय करीने एने मारी नाख्यो पोतानो मल्ल मरण पाम्यो एथी राजाए अट्टणनी प्रशंसा करी नहि, अने तेथी सभाजनोए पण न करी आथी अट्टणे राजानी जाण माटे कह्युं के —

साहह वण सउणाणं, साहह भो सउणिगा सउणिगाणं ।
णिहतो णिरंगणो अट्टणेण णिक्खित्तसत्थेणं ॥

[अर्थात् हे वन ! पक्षीओने कहे, अने हे पक्षीओ ! बीजां पक्षीओने कहो के जेणे शस्त्रो छोडी दीधां हता तेवा अट्टणे निरंगणने मारी नाख्यो छे]

आ उक्ति उपरथी राजाए एने अट्टण तरीके ओळख्यो अने एनो सत्कार कर्यो, तथा जीवन पर्यंत चाले तेटलु द्रव्य आप्युं. द्रव्यलोभथी संबंधोओ पण अट्टण पासे आव्यां परन्तु 'आ लोको फरी पण मारी पराभव करशे' ए समजीने तथा पोतानी जातने जराग्रस्त जाणीने 'सचेष्ट छुं त्यांसुधी ज धर्म थई शकशे' एवी समजपूर्वक अट्टणे दीक्षा लीधी.[२]

आ कथा, जेमा वास्तविक सामाजिक स्थिति लोकवार्तारूपे निरूपण पामी होय एवो संभव छे ते प्राचीन भारतमा मल्लविद्याना इतिहास माटे घणी अगत्यनी छे, केम के हरिवंश भागवतादिमा कृष्ण-बलरामना तथा कंसना चरित्रप्रसंगमा तथा महाभारतादिमां दुर्योधन

मन्त्रशक्तिथी वकरानि वाचा अर्पी, ब्राह्मणोने बोध आप्यो हतो.'

१ कथा, पृ. ५ १-१ कवि, पृ १११ कथी पृ १४८-४९.

अट्टण

अट्टण ए उज्जयिनीनो एक अजेय मल्ल हतो सोपारकनो सिंह गिरि राजा मल्लोनी साठमारी करावतो अने जे जीते एने घणु द्रव्य आपतो. अट्टण प्रतिवर्षे सोपारक जईने विजयचिह्न तरीके पताका लई आवतो आथी सिंहगिरि राजाए एक माछीनुं बळ पारखीने एने पोष्यो, अने ए मात्स्यिक-माछी मल्ल तरीके ओळखायो बीजे वर्षे अट्टण आव्यो त्यारे मात्स्यिक मल्ल एने हरावी दीधो. एक युवके पोताने हराव्यो तेथी मानभंग थयेलो अट्टण सुराष्ट्रमां पनी बराबरी करे एवो बीजो मल्ल छे एम सांभळीने एनी शोधमां सोपारकथी सुराष्ट्र तरफ जतो हतो त्यां मार्गमां भरुकच्छ पासे एण एक खेडूत जोयो ए एक हाथे हळ चलावतो हतो अने बीजे हाथे फळही-कपास चूंटतो हतो (एगेण हत्थेण हलं वाहेति, एक्केणं फलहीओ उप्पाडेइ) अट्टण सुराष्ट्र जवानो विचार मांडी वाळ्यो अने ए खेडूतने धनधान आपवानी लालच आपी पोतानी साथे उज्जयिनी लई गयो अने एने मल्लविद्या शीखवी ए मल्ल फलहीमल्ल तरीके प्रसिद्ध थयो पछी एवा अन्न सोपारक आव्या त्यां फलहीमल्ल साथे मात्स्यिक मल्लनु युद्ध थयु. पहेला दिवसे मल्लयुद्धनो कोई निर्णय थई शक्यो नहि ए सांजे अट्टण पोताना शिष्य फलहीने पूछ्यु के 'तारां क्यां अंग दुखे छे ?' अने पछी तेल चोळ्युं त्यां एने मृदु मर्दन करावीने ताजो कर्यो बीजी बाजु, सिंहगिरि राजाए पोताना मात्स्यिक मल्लने एवो ज प्रश्न कर्यो त्यारे एणे गर्वथी उत्तर आप्यो के फलही बिचारो कोण छे ? हुं एना बापनो पण पराजय करी शकु एम छुं' आथी बीजे दिवसे बन्ने मल्लोनुं सम युद्ध थयुं अने त्रीजे दिवसे मात्स्यिक मल्ल हार्यो अने मरण

पाम्यो, तथा अट्टण सत्कार पामीने उज्जयिनी गयो (आवश्यकसूत्र उपरनी चूर्णिमां अहीं सुधीनुं ज कथानक आप्युं छे.)

उज्जयिनी गया पछी एणे मल्लयुद्धनो त्याग करी दीधो वळी वृद्ध थई गयो होवाथी संबंधीओ एनुं अपमान करवा लाग्या. आथी संबंधीओने समाचार आप्या विना ज ए कौशाम्बी चाल्यो गयो त्यां एक वर्ष आराम लईने रसायणो खाधां तथा बलिष्ठ थयो. पछी एक वार एणे कौशांबीना राजाना मल्ल निरगणनो मल्लयुद्धमा पराजय करीने एने मारी नाख्यो पोतानो मल्ल मरण पाम्यो एथी राजाए अट्टणनी प्रशंसा करी नहि, अने तेथी सभाजनोए पण न करी आथी अट्टणे राजानी जाण माटे कह्युं के —

साहह वण सउणाणं, साहह भो सउणिगा सउणिगाणं ।
णिहतो णिरंगणो अट्टणेण णिक्खित्तसत्थेणं ॥

[अर्थात् हे वन ! पक्षीओने कहे, अने हे पक्षीओ ! बीजा पक्षीओने कहो के जेणे शस्त्रो छोडी दीधां हता तेवा अट्टणे निरंगणने मारी नाख्यो छे]

आ उक्ति उपरथी राजाए एने अट्टण तरीके ओळख्यो अने एनो सत्कार कर्यो, तथा जीवन पर्यंत चाले तेटलुं द्रव्य आप्युं. द्रव्यलोभथी सबंधीओ पण अट्टण पासे आव्यां परन्तु 'आ लोको फरी पण मारी पराभव करशे' ए समजीने तथा पोतानी जातने जराग्रस्त जाणीने 'सचेष्ट छुं त्यासुधी ज धर्म थई शकशे' एवी समजपूर्वक अट्टणे दीक्षा लीधी[२]

आ कथा, जेमा वास्तविक सामाजिक स्थिति लोकवार्तारूपे निरूपण पामी होय एवो संभव छे ते प्राचीन भारतमा मल्लविद्याना इतिहास माटे घणी अगत्यनी छे, केम के हरिवंश भागवतादिमां कृष्ण-बलरामना तथा कंसना चरित्रप्रसंगमां तथा महाभारतादिमां दुर्योधन

भीम आदिना चरित्रप्रसंगमां आवता मल्ल अने मल्लयुद्धना निर्देश बाद करीए तो ए प्रकारना उल्लेखो के कथानको प्राचीन साहित्यमां विरल छे मल्लविद्याविषयक स्वतंत्र रचनाओमां हमणां जाणवामां आवेलुं एक 'मल्लपुराण' तथा कल्याणना चौलुक्य राजा सोमेश्वरकृत सर्वसंग्रहात्मक संस्कृत ग्रन्थ 'मानसोल्लास' (ई स नो बारमो सैको)-मानुं 'मल्लविनोद' नामे प्रकरण गणावी शकाय प्राचीन गुर्जर देशमां मल्लविद्याना इतिहास माटे जुओ गुजरात विद्यासभा-प्रकाशित मारी पुस्तिका 'ज्येष्ठीमल्ल ज्ञाति अने मल्लपुराण.'

उपर टांकेली कथामां मल्लोनां वास्तविक अने फलही ए नामो जेम विशेष नामो नथी, पण अनुक्रमे जातिवाचक अने क्रियासूचक छे तेम अट्टण पण विशेष नाम लागतुं नथी, केम के 'अट्टण'नो अर्थ व्यायाम छे, अने ए उपरथी अहीं सतत व्यायाम करनार एक सुप्रसिद्ध मल्ल माटे 'अट्टण' नाम प्रचलित थयुं हशे एवुं अनुमान वधारे पडतुं नथी.

१ सर्वे पृ ७९ तथा पृ ११९

२ जाव, उत्तर भाग पृ १५२-५३ तथा पृ १११-११ जुओ पृ ७८-७९. वळी जुओ व्यास पृ १ ज्यां अट्टण ए अनुसरतो आ व्यायामनो पर आप्यो छे आ परथी आ व्यायाम वास्तविक मल्लनुं नाम थयुं छे त्यांथी ज आव्युं छे

अणहिलपाटक

अणहिलवाड पाटण उत्तर गुजरातमां सरस्वतीने किनारे आवेला लक्खाराम नामना प्राचीन गामने स्थाने चावडा वंशना वनराजे स ८०२=ई स ७४६मां पोताना मित्र अणहिल भरवाडना नाम उपरथी वसावेलुं नगर ए मध्यकालीन हिन्दु गुजरातनुं पाटनगर, तथा ईसवी सनना दसमाथी तेरमा सैकाना अंत सुधी पश्चिम भारतनुं प्रमुख नगर अने संस्कृतिकेन्द्र हतुं जैन आगमसाहित्यना

इतिहासमा पाटणनु विशिष्ट स्थान छे. आगमनां मूळ प्राकृत सूत्रो मगधमा रचाया तो ए उपरनी सौथी प्रमाणभूत विद्यमान संस्कृत टीकाओ, एक मात्र हरिभद्रसूरिकृत टीकाओना अपवादने बाद करीए तो, अणहिल-वाडमा अथवा आसपासना प्रदेशमां रचाई छे. आचाराग अने सूत्र-कृताग सूत्र उपरनी शीलाकाचार्यनी सुप्रसिद्ध टीकाओ पाटणथी थोडाक ज माइल दूर आवेला गंभूता (गांभू)मा लखाई हती. विक्रमना बारमा शतकना प्रारभमा अर्थात् ईसवी अगियारमी सदीना उत्तरार्धमा नवागीवृत्तिकार तरीके जाणीता थयेला अभयदेवसूरिए जैन आगमना नव अग उपर प्रमाणभूत टीकाओ पाटणमा रची अने ए ज नगरमा वसता बीजा एक प्रकांड पडित द्रोणाचार्ये त्या ज ए टीकाओनु संशोधन कर्यु. सं ११२९=ई. स १०७३मा दोहडि श्रेष्ठीनी वसतिमा रहीने रचायेली नेमिचन्द्रनी उत्तराध्ययन उपरनी वृत्ति, सं ११८०=ई स ११२४मां सौवर्णिक नेमिचन्द्रनी पौषधशाळामां रहीने रचायेली पाक्षिकसूत्र उपरनी यशोदेवसूरिनी वृत्ति, तथा सं १२२७=ई. स. ११७१मा जीतकल्पसूत्र उपरनी श्रीचन्द्रसूरिनी व्याख्यानी रचना पाटणमां थई शान्तिसूरिनी उत्तराध्ययन वृत्ति, आचार्य मलयगिरिनी सरल अने शास्त्रीय वृत्तिओ, द्रोणाचार्यकृत ओघनिर्युक्ति वृत्ति तथा मलधारी हेमचद्रकृत टीकाओ पण पाटणमा रचाई होवी जोईए एम एकंदरे पुरावाओनो विचार करता अनुमान थाय छे आगमेतर विषयोमां पण गुजरातनी जे सर्वागीण साहित्यप्रवृत्तिनु पाटण सैकाओ सुधी केन्द्र हतु तेनी चर्चा करवानुं आ स्थान नथी

वधु माटे जुओ **अभयदेवसूरि, द्रोणाचार्य, नेमिचन्द्र, मलयगिरि, यशोदेवसूरि, शान्तिसूरि, शीलाचार्य, श्रीचन्द्रसूरि, हेमचन्द्र मलधारी** इत्यादि

अन्धकवृष्णि

यदुकुळना शौरि राजाना पुत्र. एओ शौरिपुरमां राज्य करता

_ता अने पाछळथी एमणे द्वारकामां आवीने राज्य स्थाप्युं हतुं एमने सुभद्रा राणीथी समुद्रविजय वगेरे दश पुत्रो थया हता, जेओ दश दशार्ह तरीके ओळखाया एमण पोताना मोटा पुत्रने राज्य सोंपीने दीक्षा लीधी हती.

१ जुओ दशार्ह

१ अंध वर्ष १

अभयदेवसूरि

चैत्र (पाछळथी खरतर) गच्छना आचार्य जिनेश्वरसूरि तथा एमना भाई बुद्धिसागरसूरिना शिष्य आचार्य अभयदेवसूरिए जैन आगमग्रन्थो पैकी नव अंग उपर संस्कृत टीकाओ रची अने तथी तेओ नवांगीवृत्तिकार तरीके ओळखाया नीचे प्रमाण नव अंगो उपर एमनी टीकाओ छे ज्ञाताधर्मकथा (सं ११२०=ई स १०६४),' स्थानांग (सं ११२०), समवायांग (सं ११२०) भगवती (सं ११२८= ई स १०७२)', उपासक दशा अंतकृद्दशा, अनुत्तरोपपातिक दशा प्रश्नव्याकरण अने विपाक औपपातिक टीका अने प्रज्ञापना तृतीय पद संग्रहणी गाथा १३३ एमनी रचनाओ छे आ उपरांत अभयदेवसूरिए जिनेश्वरसूरिकृत षट्स्थानक उपर भाष्य, हरिभद्रसूरिकृत पंचाशक उपर वृत्ति तथा आराधनाकुलक नामे स्वतंत्र ग्रन्थ पण रच्यो छे वळी अभयदेवसूरिनी विनंतिथी एमना गुरुभाई जिनचंद्र सूरिए 'संवेगरंगशाळा' (सं ११२५=ई स १०६९) नामे ग्रन्थ रच्यो हतो

अभयदेवसूरिनी उपर्युक्त आगमग्रन्थो उपरनी वृत्तिओनी प्रश- स्तिमां उल्लेख मळे छे ते प्रमाणे ए वृत्तिओनुं संशोधन निर्वृतिकुलना द्रोणाचार्ये कर्युं हतुं वळी प्रशस्तिओ उपरथी अनुमान थाय छे के द्रोणाचार्य जेमां मुख्य हता तेवी एक पंडितपरिषद् आ वृत्तिओना

संशोधनमां रस लेती हती.[6] भगवतीवृत्तिना लेखनमां जिनभद्रना शिष्य यशश्चंद्रे अभयदेवने सहाय करी हती.[7]

स्थानांगवृत्तिनी प्रशस्तिमां अभयदेवसूरिए पोतानो वृत्तिरचनाना मार्गमा रहेली मुश्केलीओनो निर्देश करतां उत्तम संप्रदाय–अध्ययन-परपरानो अभाव, उत्तम ऊहनो अभाव, वाचनाओनी अनेकता, पुस्तकोनी अशुद्धि आदिनो उल्लेख कर्यो छे.[8] खास करीने भगवती सूत्र उपरनी वृत्तिमां एमणे पोताना पूर्वकालीन टीकाकारोना निर्देश कर्या छे, अने ए निर्देशोनु स्वरूप जोतां ए स्पष्ट छे के ए पूर्वकालीन टीकाओ पैकी अमुक तो एमनी सामे हती, एटलुं ज नहि पण चूर्णिथी ते भिन्न हती.[9]

आ संबधमा बीजी एक अनुश्रुतिनी नोंध करवा जेवी छे 'प्रभावकचरित' (सं. १३३४=ई स. १२७८)ना अभयदेवसूरि–चरित'मां शासनदेवी अभयदेवसूरिने कहे छे के 'पूर्वे निर्दोष एवा शीलांक अथवा कोटयाचार्य नामे आचार्ये अगियार अगो उपर वृत्ति रची हती, तेमां काळे करीने बे सिवाय बधा अंगोनो विच्छेद थयो छे, माटे सघ उपर अनुग्रह करवा माटे ए अगोनी वृत्ति रचवानो उद्यम करो' आ उपरथी अभयदेवसूरिए नव अंगो उपर वृत्ति रची.[10]

आ अनुश्रुतिमाना शीलांक आचार्य ते शीलाचार्य होवा जोईए एने आधारे कहीए तो शीलाचार्यनी आचाराग अने सूत्रकृतांग सिवाय बीजां ११ अंगो उपरनी वृत्तिओ अभयदेवसूरिना समय पहेलां नाश पामी गई हती आथी अभयदेवसूरिए सूचित करेली वृत्तिओ कोई बीजा विद्वाने रचेली होवी जोईए.

आगमसाहित्यना सौथी प्रमाणभूत टीकाकारोमां अभयदेवसूरिनी गणतरी थाय छे ए टीकाओनी सहाय विना अगसाहित्यना रहस्य समजवानु पछीना समयमां गमे तेवा आरूढ विद्वानो माटे पण लगभग

वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामशुद्धित ।
सूत्राणामतिगाम्भीर्यान्मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥
क्षूणानि सम्भवन्तीह केवल सुविवेकिभि ।
सिद्धान्तानुगतो योऽर्थ सोऽस्माद् ग्राह्यो न चेतर ॥
—भसूअ, प्रशस्ति, श्लो १-२

९ 'आयचणिओदएण'ति इह टीकाव्याख्या–आतन्यनिकोदक कुम्भकारस्य यद्भाजने स्थित तेमनाय (?) मृन्मिश्र जलं तेन । — ए ज, पृ ६८४

क्वचिट्टीकावाक्यं क्वचिदपि वचश्चौर्णमनघ
क्वचिच्छाब्दीं वृत्ति क्वचिदपि गम वाच्यविषयम् ।
क्वचिद्विद्वद्वाच क्वचिदपि महाशास्त्रमपर
समाश्रित्य व्याख्या शत इह कृता दुर्गमगिराम् ॥
—ए ज, २५मा शतकनी वृत्तिने अंते

यद्वाङ्मथामन्दरमन्थनेन शास्त्रार्णवादुच्छलितान्यतुच्छम् ।
भावार्थरत्नानि ममापि दृष्टौ यातानि ते वृत्तिकृतो जयन्ति ॥
—ए ज, ३०मा शतकनी वृत्तिने अंते

१० प्रच, १९–श्लो. १०४–१३

११ उदाहरण तरीके जुओ कसु, पृ २०–२१, ककि, पृ १२, जैप्रशा, पृ २०१

१२ जुओ जैसाइ

अभीचि

सिन्धु–सौवीरना राजा उदायननो पुत्र. उदायन राजाए महावीर पासे दीक्षा लेतां पोताना पुत्र प्रत्येनी श्रेयबुद्धिथी राज्य तेने नहि आपतां पोताना भाणेज केशीने आप्यु हतुं आथी रिसाईने अभीचि पोताना अंतःपुर साथे सिन्धु–सौवीरनु पाटनगर वीतभय छोडीने चपामां कूणिक राजा पासे चाल्यो गयो हतो[१]

आमा आवतो कूणिक ते महावीरनो समकालीन मगधनो राजा, जेने बौद्धो अजातशत्रु कहे छे एनु ऐतिहासिकत्व नि सदिग्ध छे,

आमां आवती बाजी व्यक्तिमा केशी, अभीचि वगेरे पण ऐतिहासिक होवा संभव छे

१ मसू खंड ११ श्लोक ६

अरिष्टपुर

महाराष्ट्रनुं एक नगर

पालि साहित्यमां शिविराजाना राज्यनी राजधानी तरीके एक अरिष्टपुरनो उल्लेख छे, पण ते मिथिलाथी पांचालना मार्ग उपर आवेलु होय एम जणाय छे' प्रश्नव्याकरणवृत्ति" अने 'वसुदेवहिंडी'मां' अनुक्रमे अरिष्टपुर अने रिष्टपुरनो उल्लेख छे, पण एनो स्थाननिर्णय ए उपरथी थई शकतो नथी अरिष्टपुर ते ज रिष्टपुर, एम पण एटला उपरथी निश्चितपणे कही शकाय नहि

कनिंघम मथुरानी जेम अरिष्टपुर पण बे होय—एक उत्तरमां अने बीजुं दक्षिणमां

जुओ रिष्टपुर

१ रम्यमस्ति महाराष्ट्रेष्वरिष्टपुरपत्तनम् ।
तत्र त्रिलोचनो राजा बभूव भुवि विश्रुत ॥

—वंद, पृ १७

२ मलालसेकर पालि प्रोपर नेम्स
३ प्रश्नव्या पृ ८८
४ वसुदेव हिंडी पृ ७

अर्कस्थली

आनंदपुरनुं बीजुं नाम अर्कस्थली नामनु निर्वचन एक ज रीते शक्य छे अने ते ए के कोई काळे अर्कस्थली पण कोटार्कनी जेम अर्क—सूर्यनी पूजानुं केन्द्र होय

जिनप्रभसूरिना 'विविध तीर्थकल्प'मां वर्णवेलो मथुरानां नोंध प्रमाणे पांच स्थळोमां एक अर्कस्थल छे—अर्कस्थल, वीरस्थल पद्म

स्थल, कुशस्थल अने महास्थल.[2] जो के आमांनु अर्कस्थल ए आपणुं अर्कस्थली नथी.

१ खेत्तविवज्जासो दुणामे कए, जहा–आणदपुर अक्कत्थलीं, अक्कत्थलिं आणदपुर, निचू, उद्दे० ११. जुओ **आनन्दपुर.**

२ 'विविध तीर्थकल्प,' पृ १८

अर्धमागध

अर्धमागध–थी जेम प्राकृत भाषानुं एक मिश्र स्वरूप छे तेम स्थापत्यनी पण एक पद्धति होय एम जणाय छे[1] अमुक प्रकारना मिश्र स्थापत्यने अर्धमागध नाम आपवामां आवतु हशे

१ जप्रनी वृत्तिमा उतारेलो वर्णक–धवलहर अद्धमागहविब्भमसेलद्ध-सेलसठिअ तथा ए उपर शान्तिचन्द्रनी वृत्ति- धवलगृह सौधं अर्धमागध-विभ्रमाणि–गृहविशेषा शैलसंस्थितानि पर्वताकाराणि गृहाणि, जप्रशा, पत्र १०७

अर्बुद

गुजरातनी उत्तर सरहदे आवेलो आबुनो पहाड, जैनोना मुख्य तीर्थो पैकी एक.

प्रभास तीर्थमा अने अर्बुद पर्वत उपर यात्रामां संखडि (उजाणी) करवामां आवती हती[1]

१ कोंडलमेंढ पभासे, अब्बुय० ॥३१५०॥ प्रभासे वा तीर्थे अर्बुदे वा पर्वते यात्राया सखडि क्रियते। बृक्षे, वि ३, पृ ८८४. "पभासे अब्बुए य पव्वए जत्ताए सखडी कीरति" इति चूर्णो विशेषचूर्णौ च।– ए ज, पृ. ८८३ टि

अवन्ति

उज्जयिनी जे जनपदनी राजधानी हतुं ते प्रदेशनुं–माळवानुं प्राचीन नाम[1] जो के जैनधर्मनु ए एक प्रमुख केन्द्र हतुं, पण जैन आगम साहित्यमां जे 'आर्यक्षेत्र' तथा एमांना साडीपचीस आर्यदेशोनो उल्लेख छे तेमां अवति नथी.[2]

जुओ उज्जयिनी, मालव

१ उत्तराध्ययन टीके—भगवतीसूत्र उज्जेणीए नयरीए खन्दगुणाणे साहुणो समोसरिआ उमे पृ. ४ भगवतीसूत्र पज्जोयस्स रण्णो संती कालक्ष्यो दाम श्याम पृ. ९१ अनाणं मोक्खं पत्ताणि अवत्थाणाणि सेसु हे कम्मा। अवस्सारन भाष्यी पृ. १११ एत्थवि सुयो पुत्र मां अवन्ति

१ जुओ कल्पसू. उद्दे १ सू. ५ तथा ए उपरनी क्षेमकीर्तिनी वृत्ति

अवन्तिवर्धन

उज्जयिनीना पालक राजानो पुत्र राजाए दीक्षा लेतां अवन्तिवर्धनने राज्य सोंप्युं हतुं अने बीजा पुत्र राष्ट्रवर्धन (राज्यवर्धन)ने युवराज बनाव्यो हतो अवन्तिवर्धने पोताना भाईनी स्त्रीने वश करवा माटे भाईने मारी नाख्यो हतो पण पाछळथी पश्चात्ताप थतां भाईना पुत्र अवन्तिसेनने राज्य सोंपीने पोते दीक्षा लीधी हती

महावीरना समकालीन, उज्जयिनीना राजा प्रद्योतने बे पुत्रो हता—पालक अने गोपालक. पालक अने अवन्तिवर्धन राजाना उल्लेखो पुराणोमां पण छे (जुओ केम्ब्रिज हिस्ट्री ओफ इन्डिया, वॉ १, पृ २११)

जुओ पालक, मणिप्रभ, राष्ट्रवर्धन

१ आव. उत्तर भाग पृ. १८९-९ मली भा., पृ. ५०-५२

अवन्तिसुकुमाल

उज्जयिनीनी भद्रा नामे शेठाणीनो पुत्र आर्य सुहस्ती विहार करता एनी यानशाळामां आवीने वस्या हता. एक वार संध्याकाळे अवन्तिसुकुमाल पोतानी बत्रीस पत्नीओ साथे रमण करतो हतो त्यारे नलिनीगुल्म अध्ययननुं आवर्तन करता आचार्यने एणे सांभळ्या आथी एने जातिस्मरण थयु अने ए आचार्यनो शिष्य थयो. पछी अवन्ति सुकुमाले आचार्यनी अनुज्ञा लई, स्मशानमां जई अनशनपूर्वक कर्यो

त्सर्ग कर्यो. एना सुकुमार पगमाथी लोही टपकतुं हतु तेनी वासथी पोताना बच्चां सहित आवेली एक शियाळणी अवंतिसुकुमालनु शरीर खाई गई अने ए कालधर्म पाम्या एक सगर्भा पत्नी सिवाय एमनी एकत्रीस पत्नीओए तथा माताए दीक्षा लीधी सगर्भा वधूथी जन्मेला पुत्रे पोताना पितानां मरणस्थान उपर एक देवमन्दिर कराव्युं, जे महाकाल तरीके ओळखाय छे¹

१ आचू, उत्तर भाग, पृ १५७ आगमसाहित्यमा अन्यत्र अवंतिसुकुमालना उल्लेखो माटे जुओ व्यम, पृ ८०, तथा मस (गा ४३५–३८), सप्र (गा ६५–६६) अने भप (गा १६०) हेमचन्द्रे आ प्रसगनुं वर्णन वधु विस्तारथी कर्युं छे, जुओ 'परिशिष्ट पर्व,' सर्ग ११, श्लो १५१–७७ अवन्तिसुकुमालना मृत्युनु स्थान आचूमां 'स्मशानमां कथारकुडग' अने मसमा 'वशकुडग' बतावेलुं छे आज पण ए स्थळे कुडगेश्वरनुं स्थान छे एम मस (गा ४३८) नोंधे छे कुडगेसर,' 'कुडगेश्वर' अथवा 'कुडुगेश्वर' एवां नामे आ स्थाननो निर्देश अनेक प्रबन्धात्मक ग्रन्थोमा छे 'विविधतीर्थकल्प' (१४मो सैको)नी कोई कोई प्रतोमा एनो 'कुटुम्बेश्वर' एवो पाठ छे (अरा, भाग ३, पृ ५७८). आ 'कुटुम्बेश्वर' नाम स्कन्दपुराणना आवन्त्यखंडमा पण छे ए सूचक छे (पुगु, पृ ३०) महाकाल अने कुडगेश्वरनी एकता संबधमा जुओ 'विक्रमस्मृतिग्रन्थ'मां डॉ शार्लोटे क्राउझेनो लेख 'जैन साहित्य और महाकाल मन्दिर'

अशकटापिता

आभीर जातिना एक साधु एमनु नाम अशकटापिता पड्युं ए विशे आवी कथा आपवामा आवे छे ज्यारे गृहस्थावस्थामां हता त्यारे एमने त्या अत्यत रूपवती पुत्री जन्मी हती ए मोटी थया पछी एने गाडानी आगळ बेसाडीने एओ जता हता, ते समये ए तरुणीने जोवा माटे पाछळ आवता आभीर तरुणोए आगळ पहोंची जवानी स्पर्धामा पोताना गाडा उत्पथ उपर लई जता गाडां भागी गयां आथी लोकोए ए तरुणीनुं नाम 'अशकटा' अने एना पितानुं 'अशकटापिता'

प्रख्यात हतुं.[६] आनंदपुरमां थती यक्षपूजा जाणीती हती[७] आनंदपुरना लोको शरदऋतुमां प्राचीनवाहिनी सरस्वतीना किनारे जईने संखडि –उजाणी करता हता[८] प्राचीनवाहिनी सरस्वती उत्तरगुजरातमां सिद्धपुर पासे छे, ज्यां हजी पण कार्त्तिकी पूर्णिमानो मोटो मेळो भराय छे अने आसपासना प्रदेशना लोको एकत्र थाय छे. वळी उपर्युक्त उल्लेख बतावे छे के आनंदपुर ए प्राचीनवाहिनी सरस्वतीथी अदूरवर्ती होवुं जोईए, जे हालना वडनगर साथे ठीक बंध बेसे छे

आनदपुरमा प्रचलित केटलाक धाराधोरणोनो पण निर्देश मळे छे, जेम के कोईना उपर खड्गनो प्रहार थवाथी ए मरी जाय तो मारनारनो अेंशी रूपक दंड थतो,[९] प्रहार थाय पण मरे नहि तो पांच रूपक, अने मोटो कलह करवा माटे साडातेर रूपक दंड थतो[१०]

आनदपुर संबंधमां केटलीक लोकवार्ताओ पण आगमसाहित्यनी टीकाचूर्णिओमा संघराई छे

आनदपुरमा एक ब्राह्मण पुत्रवधूनो सहवास करतो हतो अने पछी उपाध्यायने कहेतो के– आजे स्वप्नमां मने पुत्रवधूनो सहवास थयो हतो.[११] आनदपुरनो बीजो एक चतुर्वेदी ब्राह्मण कच्छमां गयानो उल्लेख छे[१२] आनंदपुर ब्राह्मणोनु केन्द्रस्थान हतुं ए वस्तु आमांथी पण फलित थाय छे.

आनदपुरनु 'कालनगर' एवु पर्याय नाम एक स्थळे आपेलुं[१३] छे.

सेंकडो अने हजारो हाथीओथी संकुल विन्ध्य नामे अरण्य आनंदपुरनी पासे आवेलु हतुं एवो एक उल्लेख 'पिंडनिर्युक्ति'नी टीकामां छे[१४] आ आनदपुर ए उत्तरगुजरातनुं वडनगर नहि पण विन्ध्याटवी पासेनुं बीजु कोई आनंदपुर होवु जोईए

१ एना स्थान विषेनी साधारण चर्चा माटे जुओ पुगु मां **आनन्दपुर.** विविध साधनो उपरथी संकलित करेला वडनगरना संक्षिप्त इतिहास माटे जुओ श्री कनैयालाल दवेकृत पुस्तिका 'वडनगर'

'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां जुदां जुदां राज्यो अने देशोना नामोनी एक सूचि छे तेमां 'आभीर' पण छे[६]

[२] वर्तमानकाळमां 'आभीर' प्रदेशनाम तरीके रह्यो नथी, 'आहीर' जातिमां टकी रह्यो छे जुदा जुदा वर्णो माटे खीजमां वप-राता शब्दोनो निर्देश करतां 'सूत्रकृतांग सूत्र' उपरनी शीलांकदेवनी वृत्तिमां कह्युं छे के— ब्राह्मणने 'डोड,' वणिकने 'किराट' तथा शूद्रने 'आभीर' कहेवामां आवे छे[७]

आभीर जातिमां प्रचलित दियरवटाना रिवाजनुं सूचन पण एक कथानकमां करवामां आव्युं छे सूरग्राममां यशोधरा नामे कोई आभीरी हती, तेनो योगराज नामे पति अने वत्सराज नामे दियर हतो दियरनी पत्नीनुं नाम योधनी हतुं एक वार दैवयोगे योधनी अने योगराज समकाळे मरण पाम्यां, एटले यशोधराए पोताना दियर वत्सराज पासे याचना करी के 'हुं तमारी पत्नी थाउं' पोतानी पत्नी मरण पामी हती ए विचारीने वत्सराजे पण एनो स्वीकार कर्यो[८] कुलाचारनी वात करतां आभीरोनी मंथनिकाशुद्धिनो खास निर्देश कर-वामां आव्यो छे, ए वस्तु एमनी गोपालनप्रधान जीवनप्रथानी द्योतक छे.[९]

कच्छमां जैन धर्म पाळतां आभीरो हतां एम एक स्थळे कह्युं छे आनंदपुरनो एक दरिद्र चतुर्वेदी ब्राह्मण कच्छमां गयो हतो अने त्यांना आभीरोए एने प्रतिबोध पमाड्यो हतो[१०]

१ आभीरदेशेऽचलपुरासन्ने कन्नावेन्नानद्योर्मध्ये ब्रह्मद्वीपे पञ्चशती तापसानामभूत्, कसु, पृ ५१२, सहेज जुदा शब्दोमां आ ज उल्लेख माटे जुओ ककि, पृ १७१ तथा कदी, पृ. १४९

२ जुओ वेणातट

३ जुओ तगरा

४. जुओ पुपु मां आभीर

१ व्यसूम, पृ ४१-४२

इन्द्रदत्त

चिरकाळप्रतिष्ठित मथुरा नगरीमां इन्द्रदत्त पुरोहित हतो प्रासाद-मां बेठेला एणे नीचे थईने जता जैन साधु उपर पग लटकतो राख्यो अने ए रीते एने माथे पग मूक्यानो संतोष मेळव्यो. एक श्रावक श्रेष्ठीए आ जोयुं, अने क्रोधायमान थईने एणे पुरोहितनो पग कापवानी प्रतिज्ञा करी ए माटे ए पुरोहितनां छिद्रो शोधवा लाग्यो, पण एमा सफळता नहि मळनां एणे साधुने वात करी साधुए कह्युं के 'आमां पूछवानु शुं छे ? सत्कार-पुरस्कार परीषह तो सहन करवो जोइए.' श्रेष्ठीए कह्युं 'पण में प्रतिज्ञा करी छे.' साधुए पूछ्युं 'पुरोहितने घेर अत्यारे शु चाले छे ?' श्रेष्ठीए उत्तर आप्यो 'प्रासाद कराव्यो छे, एना प्रवेशमहोत्सव वखते ए राजाने भोजन आपशे' आचार्य बोल्या: 'ज्यारे राजा प्रासादमां प्रवेश करतो होय त्यारे तमारे एने हाथ खेंचीने आघो करवो अने कहेवु के-प्रासाद पडे छे एटले ए समये हुं विद्याथी प्रासादने पाडी नाखीश.' पछी श्रेष्ठीए ए प्रमाणे कर्युं अने राजाने कह्यु. 'आ पुरोहित तो तमने मारी नाखवा इच्छतो हतो' क्रुद्ध थयेला राजाए पुरोहित श्रेष्ठीने सोंपी दीधो श्रेष्ठीए पुरोहितनो पग इन्द्रकीलमां मूक्यो अने पछी कापी नाख्यो १

विक्रमना तेरमा सैकामा गुजरातमा मंत्री वस्तुपाले एक जैन साधुनुं अपमान करनार, वीसलदेव राजाना मामानो हाथ कापी नाख्यो हतो-एवी प्रबन्धोमां मळती अनुश्रुति आ कथानक साथे सरखाववा जेवी छे

१ उशा, पृ १२५-२६, उने, पृ ४९

इन्द्रपुर

मथुरानं बीजं नाम जो के मथराथी भिन्न एनं [illegible]

एक नगर हतुं एवो उल्लेख पण अन्यत्र छे. आ बीजुं इन्द्रपुर ते उत्तर प्रदेशमां बुलन्दशहर जिल्लामां दिबाई पासे आवेलुं इन्दोर खेडा घटे, ज्यांथी स्कन्दगुप्तनुं गुप्त सं. १४६ (ई० स० ४६५)नुं ताम्रपत्र मळ्युं छे. ए ताम्रपत्रमां आ स्थाननुं इन्द्रपुर नाम आप्युं छे (जुओ दिनेशचन्द्र सरकार, सिलेक्ट इन्स्क्रिप्शन्स, नं. २७), जेमांथी प्रा. इन्दउर' द्वारा 'इन्दोर' व्युत्पन्न थाय.

१ ज्ञाता अनुवाद जैन तीर्थ भाग इन्दौर लि । आव० उत्तर भाग पृ. १५३

१ आव० पूर्व भाग पृ. ४४८-९ आव०, पृ. ४५१-५४

उग्रसेन

भोजवृष्णिना पुत्र अने कंसना पिता. एमनां बीजां संतानो अतिमुक्तक, राजीमती वगेरे हतां, एमणे दीक्षा लीधी हती. जरासंधना भयथी नासीने ए कृष्णनी साथे द्वारकामां आव्या हता. उग्रसेनना वृत्तान्त अनेक जैन चरित्र ग्रंथोमां आवे छे, पण आगमसाहित्यमां तो एमने विशेना केवळ प्रकीर्ण प्रासंगिक उल्लेखो ज प्राप्त थाय छे.

१ उदाहरण तरीके दस (पृ. १८-४१) आदिमां द्वारवतीनो वर्णन; कल्पसूत्री विविध टीकाओमां नेमिनाथनो चरित्रवर्णन इत्यादि

उज्जयन्त

गिरनार पर्वत. एना स्थान अने नाम विशेनी चर्चा माटे जुओ पुस्तकमां 'उज्जयन्त'.

जैन आगम साहित्य अनुसार उज्जयन्तनुं शिखर २२मा तीर्थंकर नेमिनाथनां दीक्षा, केवळज्ञान अने निर्वाणथी पवित्र थयेलुं छे. नेमिनाथना निर्वाणना समाचार सांभळीने दक्षिणनी पांडुमथुरा मांथी सुराष्ट्र बाजु आवेला पांडवो उज्जयन्त उपर आवी घणुं तप करीने सिद्धिमां गया हता.

उज्जयंत, वैभार वगेरे पर्वतोने क्रीडापर्वत कहेवामां आव्या छे.[3] उज्जयंत उपर घणा प्रपात–जळधोध हता[4] हाल तो गिरनार धोध माटे जाणीतो नथी, पण गिरनारनी तळेटीमां अशोके बंधावेलुं सुदर्शन तळाव पुष्कळ पाणी भरावाने कारणे वारवार फाटी जतु एमां जूना काळना आ धोधनो पण हिस्सो होय

उज्जयंतादि तीर्थोमां प्रतिवर्ष यात्राओ-उजाणीओ थती हती.[5]

जुओ **गिरिनगर** तथा **रैवतक**

१ ज्ञाध, पृ २२६–२७, वसु. पृ ३०, आम, पृ २१४, कसु, पृ ३९९ थी आगळ, कको, पृ १६९-७०, इत्यादि

२ ज्ञाध, पृ २२६–२७

३ भसूत्र, शतक ७, उद्दे. ६

४ वृकभा, भाग ३, पृ. ८२७, भाग ४, पृ. ९५७

५ उज्जेंत णायसडे सिद्धसिलादीण चेव जत्तासु ।
समत्तभाविएसु ण हुंति मिच्छत्तदोसा उ ॥३१९२॥

उज्जयन्ते ज्ञातखण्डे सिद्धशिलायामेवमादिषु तीर्थेषु या प्रतिवर्ष यात्रा-सङ्खडयो भवन्ति तासु गच्छतो मिथ्यात्वस्थिरीकरणादयो दोषा न भवन्ति। ए ज, भाग ३, पृ ८९३

उज्जयिनी

अवन्ति जनपदनुं पाटनगर सम्राट् अशोके पोताना पुत्र कुणालने उज्जयिनी कुमारभुक्तिमा आप्यु हतुं,[1] अने कुणालना पुत्र सम्प्रतिए त्यां रहीने आखा दक्षिणापथ तेम ज सुराष्ट्र उपर आधिपत्य जमाव्युं हतु[2]

उज्जयिनीमा जीवंतस्वामीनी प्रतिमा हती, तेने वंदन करवा माटे आर्य सुहस्ती उज्जयिनी आव्या[3] हता आ सिवाय आर्य महागिरि,[4] चण्डरुद्राचार्य,[5] आर्य रक्षित,[6] भद्रगुप्ताचार्य,[7] आर्य आषाढ[8] वगेरे अनेक आचार्यो उज्जयिनीमा आवता हता उज्जयिनीना

गर्दभिल्ल राजाए कालकाचार्यनी बहेन सरस्वतीनु हरण कर्यु हतु, तेथी कालकाचार्य शक लोकोने तेडी लाव्या हता, ए ऐतिहासिक अनुश्रुति पण जाणीती छे। उज्जयिनीमां स्नपन नामे उद्यान आवेलुं हतु, ज्यां साधुओ आवास करता। उज्जयिनीमां एक काळे पांचसो उपाश्रयो हता।

पण उज्जयिनी केवळ जैन धर्मनु केन्द्र हतु एम नहि। भारतवर्षना मध्यभागमा आवेलु होई ए जेम एक संस्कृतिकेन्द्र हतु तेम वेपारनु पण मोटु मथक हतु। दूर दूरना प्रदेशना लोको कार्यवशात् उज्जयिनी आवता। उज्जयिनीना प्रद्योत राजानो आण भरुकच्छ उपर पण हती, एटले आम उज्जयिनीनो संबंध तो स्वाभाविक छे। भरुकच्छमांथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिष्यने प्रयोजनवशात् उज्जयिनी मोकल्यो हतो। दुष्काळना समयमां सुराष्ट्रनो एक श्रावक उज्जयिनी जवा नीकळ्यो हतो अने मार्गमां एने रक्तपट (बौद्ध) भिक्षुओनो संगाथ थई गयो हतो। आभीर देशना अचलपुर अने उज्जयिनी वच्चे पण घणो ज संबंध हतो अने एक समुदायना साधुओ आभीर देशना नगरोमां तेम ज उज्जयिनी आसपासना प्रदेशमां विहरता। उज्जयिनी अने कौशांबी वच्चे पण अवरजवरनो घणो संबंध हतो (जुओ तथा, पृ १११) जो के मार्गमां गाढ अटवीमांथी पसार थवानु होवाथी प्रवासमां विघ्न घणां हतां एम 'उत्तराध्ययन'नी नेमिचन्द्रनी वृत्तिमां तथा 'वसुदेवहिंडी'मां आवता अगडदत्तना प्रवासवर्णन उपरथी जणाय छे।

कुत्रिक' अर्थात् त्रिभुवननी कोई पण वस्तु जेमां मळे एवा आपण' अर्थात् मोटा वस्तुभंडारो—'कुत्रिकापण' प्राचीन भारतमां बे महानगरो—उज्जयिनी तेम ज राजगृहमां हता। राजा प्रद्योतना राज्यकाळ दरमियान उज्जयिनीमां नव कुत्रिकापण हता। आ भंडारोमां वस्तुओ कीमत ते खरीदनारना सामाजिक दरज्जा प्रमाणे लेवामां

आवती. जे माणस दीक्षा लेवानो होय ते पोताना जरूरी उपकरण, पोते सामान्य माणस होय तो कुत्रिकापणमांथी पांच रूपियानी कीमते खरीदी शकतो, जो ते इभ्य (लक्षाधिपति) अथवा सार्थवाह होय तो तेने एक हजार आपवा पडता अने जो ते राजा होय तो तेने एक लाख रूपिया आपवा पडता एवी कथा छे के तोसलि नगरवासी एक वणिके उज्जयिनीना कुत्रिकापणमांथी ऋषिपाल नामे एक व्यंतर खरीद्यो हतो अने पछी तेने प्रसन्न करीने एनी पासे ऋषितडाग नामे एक तळाव बंधाव्युं हतुं [१६] ए ज प्रमाणे भरुकच्छ-वासी बीजा एक वणिके कुत्रिकापणमांथी एक भूत खरीद्यो हतो अने तेनी पासे भूततडाग नामे तळाव बंधाव्युं हतुं.[१७] त्रिभुवननी कोई पण सजीव के निर्जीव वस्तु—भूत सुद्धां—कुत्रिकापणमां अलभ्य नहोती एवु आ कथानको सूचवे छे अने लोकमानसमां उज्जयिनी अने राजगृह जेवा नगरोनी वाणिज्यसमृद्धिए केवुं स्थान जमाव्युं हतुं ए बतावे छे.

प्राचीन भारतना सार्थ मार्गो–'ट्रेड रूट्स'–ना एक महत्त्वना संगमस्थान उपर उज्जयिनी आवेलुं हतुं

एक मोळा पतिने तेनी पुंश्चली पत्नी ऊंटना लींडां वेचवा माटे उज्जयिनी मोकले छे अने पछी पोते विटसेवा करे छे एवुं कथानक पण मळे छे[१८]

ऐहिक समृद्धि साथे जोडायेला मोजशोख अने भोगविलास पण स्वाभाविक रीते ज उज्जयिनीमा प्रवर्तमान हता. 'बृहत्कल्पसूत्र'-वृत्तिमाना एक कथानक प्रमाणे–एक देवीए विधवानु रूप धारण कर्युं अने दासीओथी वींटायेली ते उपाश्रयमा आवी साधुने वंदन करीने बेठी साधुए पूछ्युं के 'श्राविका! तुं क्याथी आवी छे?' त्यारे ते बोली के 'पाटलिपुत्रमा हुं जन्मी छुं अने साकेतना एक

भेटी साथे मारुं मन थयुं हतुं पतिनुं मरण थतां तीर्थयात्राना मिषथी वडीलोनी रजा लईने भोगनी आकांक्षा करती हुं उज्जयिनी आवी छुं में सांभळ्युं छे के उज्जयिनीमां परीषहथी पराजित थयेला घणा साधुओ छे पण हवे तमने जोया पछी मारुं मन आगळ वधवानी ना पाडे छे ।"

सर्वगणिकाप्रधान देवदत्ता उज्जयिनीनी गणिका हती अने विटोमां प्रधान मूळदेव पण उज्जयिनीमां वसतो हतो.

उज्जयिनी, माहेश्वरी, श्रीमाल वगेरे नगरीओमां लोको उत्सव प्रसंगोए एकत्र थईने मदिरापान करता हता अने एवा लोकोमां ब्राह्मणोनो पण समावेश थतो हतो

उज्जयिनीमां अने तेनी आसपासमां राजाओ अने धनिकोनुं समाराधन करनारा वर्गोनी पण वस्ती हता उज्जयिनीनी पासे नटोनुं एक गाम हतुं उज्जयिनीवासी अट्टणमल्लनुं कथानक पण आ दृष्टिए रसप्रद छे

उज्जयिनीमां एक वार मोटी आग लागी हती अने नगरनो घणो भाग बळी गयो हतो आथी बे वेपारीओए नगरनी बहार पोतानो माल भर्यो हतो तेमणे अनेकगणां नाणां उपजाव्यां हतां

मालव जातिना आक्रमणकारो उज्जयिनी अने आसपासना प्रदेशो उपर घणी वार हुमला करता अने माणसोनुं हरण करी जता तथा तेमने गुलाम तरीके वेची नाखता समय जतां मालव जातिना लोको अवन्तिजनपदमां वस्या हशे अने तेथी ए प्रदेश पण पाछळथी 'मालव' नामथी ओळखायो हशे सातमा–आठमा सैकाथी अवन्ति मालव तरीके ओळखाय छे एवो केटलाक विद्वानोनो मत छे पण 'अनुयोगद्वारसूत्र' मांना एक उल्लेखनो विचार करतां आथी ये जूना समयथी अवन्ति माटे 'मालव' नाम प्रचारमां होवुं जोईए

नोंध —जुदा जुदा साधनो उपरथी रचायेला उज्जयिनीना कालानुक्रमिक इतिहास माटे जुओ विमलाचरण लॉ कृत 'उज्जयिनी इन एन्श्यन्ट लिटरेचर' जो के ए इतिहास मुख्यत्वे बौद्ध अने बीजा साधनोने आधारे लखायो छे जैन साधनग्रन्थो एमना ध्यानमां तुलनाए ओछा आव्या जणाय छे

१ बृकसे, भाग ३, पृ ९१७, अनुहा, पृ १०.

२ एज वळी निचू, भाग २, पृ. ४३८

३ बृकसे, भाग ३, पृ ९१८

४ जुओ **महागिरि आर्य.**

५ जुओ **चण्डरुद्राचार्य**

६ जुओ **रक्षित आर्य.**

७ जुओ **भद्रगुप्ताचार्य**

८ जुओ **आषाढभूति**

९ जुओ **कालकाचार्य**

१० उने, पृ ४

११ आचू, उत्तर भाग, पृ १५६

१२ एज, पृ २०९

१३ एज, पृ. २७८

१४ उशा, पृ १००

१५ बृकभा, गा ४२१९, बृकसे भाग ४, पृ ११४५ आ विशे जुओ सातमी ओरियेन्टल कोन्फरन्समां मारो लेख 'ए नोट ओन धी कुत्रिकापण'. एना गुजराती सार माटे जुओ 'इतिहासनी केडी'मां 'कुत्रिकापण–प्राचीन भारतना जनरल स्टोर्स' ए लेख, वळी जुओ **कुत्रिकापण.**

१६ बृकसे, भाग ४, पृ. ११४५–४६

१७ एज

१८ दवैहा, पृ ५७; स्याद्र्म, पृ. २६१

१९ बृकभा, गा ५७०५–६, बृकसे, भाग ५, पृ १५०९

२० उशा, पृ. २१८; जुओ **मूळदेव**

૨૧ એજ્ન, પૃ. ૧૧૨

૨૨ એજ, પૃ. ૧૧૧

૨૩ એજ પૃ ૧૪૫ ઉજ્જયિની પાસેના એક ગામના નાગરી રાજા અંગેની દંતકથા વિશે જુઓ પ્રજાબંધુ–ગુજરાત સમાચાર, દીપોત્સવી અંક ઈ ૨ ૬ માં મારો લેખ મહાદુમ ઉદક અને રાજા

૨૪ જુઓ અફ્સ

૨૫ જુઓ ભાગ ૫ પૃ. ૧૨૬૨–૬૨

૨૬ જોનિદ્દો પૃ. ૧૬, આપૂ પૃ ૧૮૬ ઉજ્જ પૃ. ૧૬૪ ઇત્યાદિ

૨૭ બુદ્દિસ્ટ ઇન્ડિયા પૃ. ૨૦ જ્યોર્ગ્રાફી પૃ. ૧૧

૨૮ જુઓ ભાસ

ઉદયન

વત્સદેશની રાજધાની કૌશાંબીનો રાજા સહસ્રાનીકનો પૌત્ર શતાનીક અને મૃગાવતીનો પુત્ર, વૈશાલીના ગણસત્તાક રાજ્યના નાયક ચેટકનો ભાણેજ અને જયંતી શ્રમણોપાસિકાનો ભત્રીજો.[1] વીણાવાદનમાં નિપુણતાને કારણે તે 'વીણાવત્સરાજ' તરીકે ઓળખાતો હતો. અવંતિના રાજા પ્રદ્યોત અથવા ચંડપ્રદ્યોતે પોતાની પુત્રી વાસવદત્તાને વીણા શીખવવા માટે ઉદયનને યુક્તિથી કેદ કર્યો હતો પરંતુ ઉદયન વાસવદત્તાને સાથે લઈ કેદમાંથી નાસી છૂટ્યો હતો.[2] 'ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર' ઉપરની શાન્ત્યાચાર્યની વૃત્તિમાં એક અંગવિલેપન બનાવવાનું પ્રમાણ આપેલું છે અને વાસવદત્તાએ ઉદયનનું ચિત્ત હરી લેવા માટે આ વિલેપનનો ઉપયોગ કર્યો હતો એમ કહ્યું છે.[3]

વત્સરાજ ઉદયન અને વાસવદત્તા અનેક સંસ્કૃત કાવ્યનાટકોમાં નાયક–નાયિકા તરીકે આવે છે ને સુપ્રસિદ્ધ છે. પુરાણોની રાજવંશાવલીઓમાં શતાનીક પછી ઉદયનનું નામ આવે છે (પાર્જિટર 'ડાયનેસ્ટિઝ ઓફ ધ કલિ એજ,' પૃ ૭, ૧૯ ૮૨) પાલિ સાહિત્યમાં પણ અનેક સ્થળે ઉદયન–વાસવદત્તા વિશેનાં કથાનક મળે છે

उदयन ए बुद्ध अने महावीरनो समकालीन ऐतिहासिक व्यक्ति तरीके पुरवार थयेल छे[6]

जुओ प्रद्योत

१ भसू, शतक १२, उद्दे. २

२ उशा, पृ १४२

३ आचू, उत्तर भाग, पृ १६१–६२

४ उशा, पृ १४२

५ जुओ मलालसेकर, 'पालि प्रोपर नेम्स'

६ जुओ 'केम्ब्रिज हिस्ट्री ओफ इन्डिया,' वो १, पृ १०८-१०

उदायन

सिन्धु–सौवीर देशनो बळवान राजा ते वैशालीना राजा चेटकनी पुत्री प्रभावतीने परण्यो हतो. ते सिन्धु–सौवीर आदि सोळ जनपदोनो, वीतभय आदि त्रेसठ नगरोनो अने महासेन (चंडप्रद्योत) आदि दश मुकुटबद्ध राजाओनो अधिपति हतो.[1] उदायने पोताना भाणेज केशीने राज्य आपीने महावीर पासे दीक्षा लीधी हती केटलाक समय पछी महावीरनी अनुज्ञा लईने ते पाछो वीतभय आव्यो त्यारे आ पोतानुं राज्य पाछुं लेवा आव्यो हशे एम मानीने केशीए तेने विष खवरावीने मारी नाख्यो हतो.[2]

१ भसू, शतक १३ उद्दे० ६, उने, पृ २५२–५५, कसु, पृ ५८७

२ आचू, उत्तर भाग, पृ. ३६–३७

एलकच्छपुर

दशार्णपुरनु बीजुं नाम दशार्णपुर एलकच्छ तरीके ओळखायुं एना कारणमां नीचे प्रमाणे कथानक आपवामां आवे छे–दशार्णपुरमां एक श्राविकानो पति मिथ्यादृष्टि हतो एना उपर कोपायमान थईने एक वार देवताए एनी आंखो फोडी नाखी, पण आथी श्राविकानो

अपयश थशे एम जाणीने घेटानी आंखो ('एलकाक्ष अच्छीणि') लावीने बेसाडी दीधी सवारे ए माणसो लोको कहेवा लाग्या के 'तारी आंखो एलक–घेटा जेवी छे' लोकोमा आवो पण प्रवाद थयो कोई पूछे 'क्यांथी आवो छो?' तो एने जवाब मळतो 'ज्यां एवो एलकच्छ ('घेटा जेवी आंखवाळो') छे त्यांथी.' आ प्रमाणे दशार्णपुरनुं एलकच्छ नाम थयुं

आ नगर वत्रगा नदीना किनारे आवेलुं हतुं[1] गजाग्रपद तीर्थ पण एलकच्छनी पासे हतुं[2] आर्य महागिरि विदिशामां जिनप्रतिमाने वंदन करीने गजाग्रपद तीर्थनी यात्रा माटे एलकच्छ गया हता[3]

झांसी जिल्लामां मोंठ तहेसीलमां आवेलु एरछ ते आ एलकच्छ हशे एवो केटलाकनो मत छे[4]

जुओ गजाग्रपद, दशार्णपुर, रथावर्त

१ आव० उत्तर भाग, पृ. १५६–५७ आवचू पृ. २२६

२ आव० उत्तर भाग पृ. १५६–१५७ आवचू पृ. २२६

३ तो वि वच्चा वइदिसि महा तत्थ जियपडिमं वंदिऊण अज्ज महागिरि एलकच्छं गता गयग्गपदं वंदगा आव०, उत्तर भाग पृ. १५६–५७

४ जगदीशचन्द्र जैन लाइफ इन एन्श्यन्ट इन्डिया पृ. २८१

कच्छ

भरत चक्रवर्तीना दिग्विजयवर्णनमां तेणे कच्छ देश उपर विजय कर्यो होवानो उल्लेख छे[1]

कच्छमां आभीरो जैन धर्मानुयायी हता आनंदपुरनो एक दरिद्र ब्राह्मण कच्छमां गयो हतो तेने ए आभीरोए प्रतिबोध पमाड्यो हतो. देशाचारनी नोंध करतां कह्युं छे के कच्छमां गृहस्थो रहेता होय एवा आवासमां साधुओ रहे ए दोषरूप गणातुं नथी

जुओ आभीर

१ जप्र, पृ २१८, जप्रशा, पृ २२०

२ आचू, उत्तर भाग, पृ. २९१

३ बृक (विशेषचूर्णि), भाग २, पत्र ३८८ टि 'कच्छ'नो मूळ अर्थ 'समुद्र अथवा नदीकिनारे आवेलो भीनाशवाळो प्रदेश' एवो छे प्राकृतमा पण एनो एवो अर्थ छे. सर० मालुयाकच्छ (ज्ञाध, श्रु १, अध्य १), भरुकच्छ आदि कच्छ विशेना पौराणिक उल्लेखो माटे जुओ पुगु

कमलसंयम उपाध्याय

खरतरगच्छना जिनभद्रसूरिना शिष्य कमलसयम उपाध्याये सं १५४४=ई स. १४८८मां 'उत्तराध्ययन सूत्र' उपर 'सर्वार्थसिद्धि' नामे वृत्ति रची छे.[1] कमलसंयमे स १५४९=ई. स. १४९३ मां 'कर्मस्तव' नामे कर्मग्रन्थ उपर विवरण रच्युं छे. आ सिवाय जूना गुजराती गद्यमां 'सिद्धांतसारोद्धार सम्यक्त्वोल्लास टिप्पन' ए तेमनी कृति छे[2]

१ जुओ उक, प्रत्येक अध्ययनने अते पुष्पिका

२ जैसाइ, पृ. ५१७

कम्बल-सम्बल

मथुराना जिनदास श्रावक पासे कंबल-संबल नामे बे उत्तम बळद हता एक वार मथुरामा भडीर यक्षनी यात्रा हती,त्यारे जिनदासनो एक मित्र तेने पूछ्या सिवाय ए बळदोने गाडे जोडवा लई गयो, अने तेणे वळी बीजाने आप्या ज्यारे पाछा लाववामां आव्या त्यारे कंबल-सबल खूब थाकी गया हता अने थोड़ा समय पछी तेओ अनशन करीने मरण पाम्या. तेओ मरीने नागकुमार थया हता; सुरभिपुर जती वखते गगा पार करतां महावीर जे नावमां बेठा हता तेने थयेलो उपद्रव ए नागकुमारोए टाळ्यो हतो एवुं कथानक छे.[1]

जुओ जिन[illegible]

१ भागू पूर्व भाग पृ २८१ भाभि भा ४६६-७१ बुदी माप ५ पृ. १४८९, भमू. पृ. २०६-७ कवि पृ १५ करी पृ १ बिनू भाग ४ पृ. ८२४ मां आ कवानक छे पण त्यां 'कंबल-संबल'नो नामनिर्देश नथी

कसेरुमती

ए नामनी नदी ए वणी प्रसिद्ध हशी पने विशेना एक मात्र उपलब्ध उल्लेख उपरथी अनुमान थाय छ के का तो एमां पाणी रहेतुं नहोतुं अथवा ए पाणी बेस्वाद हतुं[१]

आ नदीनो उल्लेख महाकच्छ्रासी यक्षमूर्ति आचार्यना संबंधमां आवे छे[२] एथी कच्छमां अथवा आसपासना प्रदेशमां ए आवेली हशे

राजशेखरनी 'काव्यमीमांसा' (त्रीजी आवृत्ति, पृ ९९ तथा परिशिष्ट पृ २८४)मां तेम ज अन्यत्र पौराणिक भूगोळ वर्णवतां भारतवर्षना नव भागोमां एक 'कसेरुमान्' प्रदेशनो उल्लेख छे, पण एने आ कसेरुमती नदी साथे कंई संबंध होय एम लागतुं नथी.

१ दिग्र वि कसेरुमती पीर्वे ते भाम्भिर्भ वर गुरु नाम न देवम्बं। अत्र कोई नाम नदी। तस्याः अधिष्ठितीय। नवरं च प्रतिस्यन्तुर्लं तस्याः पानीयमिति शेषः। भाष (भा. गा. ५८-५९ उपरनी वृत्ति).

२ जुओ यक्षमूर्ति आचार्य

काकिणी

एक नानो सिक्को. वीस कपर्दक—कोडी बराबर एक काकिणी थती.[१] ए सिक्को तांबानो हतो अने दक्षिणापथमां पण तेनो व्यवहार चालतो हतो एक भिखारीए रूपक भटाबीने काकिणीओ करी हती अने दररोज एक-एक काकिणी ते वापरतो हतो एवुं कथानक 'उत्तराध्ययन सूत्र'नी शान्तिसूरिनी वृत्तिमां छे आम त्यां राजपुत्रोनी वातमां 'काकिणी' शब्दनो अर्थ 'रत्न' एवो थतो हतो जैन

मान्यता प्रमाणे चक्रवर्तीनां रत्नोमां 'काकिणी' रत्ननो पण समावेश थाय छे.

काकिणीनी कीमत रूपकना ऐंशीमा भाग बराबर हती एम डॉ याकोबीए केटली टीकाओने आधारे कह्युं छे[5] 'काकिणी'नुं बीजुं नाम 'बोडी' हतुं एम सं १४४९=ई स. १३९३ मां पाटणमां लखायेला 'गणितसार'ना गुजराती अनुवादमा आपेला तोल, माप अने नाणानां कोष्टको उपरथी जणाय छे[6] हलकी कीमतना सिक्का तरीके आचार्य हेमचन्द्रनां अपभ्रंश अवतरणोमा 'बोड्डि'नो प्रयोग छे[7]

१ 'काकिणि' विंशतिकपर्दका, उशा, पृ २७२

२ ताम्रमय वा नाणक यद् व्यवह्रियते यथा दक्षिणापथे काकिणी। बृकभा, भाग २, पृ ५७४

३ उशा, पृ २७६

४ जुओ कुणाल

५ उ नो अंग्रेजी अनुवाद (सेक्रेड बुक्स ओफ ध इस्ट, ग्रन्थ ४५), पृ २८

६ '२० कउडे कागिणी ते भणीइ बोडी'—बारमु गुज साहित्य-समेलन, अहेवाल, इतिहास विभाग, पृ ४०

७ 'केसरि न लहइ बोड्डिअ वि गय लक्खेहिं घेप्पंति'—'प्राकृत व्याकरण,' ४. ३३५

कानणद्वीप

ज्या जुदी जुदी दिशाओमांथी जळमार्गे माल आवतो हतो एवा जलपत्तन तरीके काननद्वीपनो निर्देश छे[1] एमां बहारथी नावद्वारा आवतुं धान्य खवातुं हतुं[2] आ द्वीपनुं 'कालणद्वीप' एवु नाम पण पाठफेरथी मळे छे[3]

आ द्वीपनु स्थान निर्णीत थई शक्यु नथी

१ आसूचू, पृ २८१, उशा, पृ. ६०५ उशामां आ साथे स्थलपत्तन तरीके मथुरानो उल्लेख छे

१ मुनशी भाग १ पृ. १८३-८४
२ भाइपू पृ १८१

कान्यकुब्ज

कनोज शहेर कान्यकुब्ज नगरना राजा साथे एक जैन सूरिनो गोष्ठिप्रबंध 'आवश्यक सूत्र' उपरनी मलयगिरिनी वृत्तिमां छे [१] प्रस्तुत राजा ते कान्यकुब्जनो प्रतिहारवंशीय आम राजा अथवा नागभट बीजो (सं ८६४–८९०=ई स ८०८–८३४)[२] अने ए सूरि ते बप्पभट्टिसूरि होवा घटे. मोढेरानो कान्यकुब्ज अने कान्यकुब्जमां मोढेरानां बप्पभट्टिसूरिनां पर्यटनो तथा आम राजा साथेनी तेमनी गोष्ठि इत्यादिनुं वर्णन 'प्रभावकचरित'–अंतर्गत 'बप्पभट्टिसूरिचरित'मां प्राप्त थाय छे

कान्यकुब्ज ए निःशंक रीते मध्यकालीन भारतमां सौथी समृद्ध नगरो पैकी एक हतुं 'सूत्रकृतांग सूत्र' उपरनी शीलांकाचार्यनी वृत्तिमां उद्धृत करवामां आवेला एक श्लोकमां मथुरा हस्तकल्प गिरिपत्तन, सिंहपुर कुक्षिपुर, मायापुरी अने शौरिपुरनी साथे कान्यकुब्जनो पण निर्देश छे रडता बाळकने आ सर्व नगरोना राजा तरीके वर्णवीने अमुं राखवानो प्रयास थयो छे [३]

१ आम पृ ११–१२

२ मुनशी ग्लोरी धेट वॉझ गुर्जर देश वॉ १ पृ ५१ ७६ ओझा राजपूतानेका इतिहास खंड १ पृ. १८७

३ यथाऽसमुत्थितः कश्ची रुदन् दारकं यत्नेन तेस्तान्यप्यन्येः प्रकारैरापन्नैः तद्यथा— सामिओ सि मधुरस्स य कन्नउज्जस्स य हत्थकप्पगिरिपट्टणसीहपुरस्स य उज्जेणस्स सिंहपुरस्स य कुक्खिपुरस्स य कण्णकुज्ज मायापुरसोरियपुरस्से य शीलांकी पृ. ११५

कार्तवीर्य

हस्तिनापुरनो राजा जे पुराणो प्रमाणे माहिष्मतीना सहस्रार्जुन तरीके प्रसिद्ध छे

जमदग्नि ऋषिनी पत्नी रेणुकानुं हरण कार्तवीर्यनो पिता अनंतवीर्य करी गयो हतो, एथी जमदग्निना पुत्र रामे–परशुरामे एने मार्यो. आथी कार्तवीर्ये जमदग्निनो वध कर्यो, परिणामे परशुरामे सात वार पृथ्वी नक्षत्री करी, जेना बदलामां कार्तवीर्यना पुत्र सुभूमे एकवीस वार ब्राह्मणोनो संहार कर्यो.[1]

सुभूमे एकवीस वार ब्राह्मणोनो संहार कर्यो ए वस्तु पुराणोमां क्यांय नथी ए नोंधपात्र छे.

१ सूकृशी, पृ १७०

कालकाचार्य–१

तुरुमिणी नगरीमां रहेतो भद्रा नामे ब्राह्मणीना तेओ भाई हता. तेमनो भाणेज–भद्रानो पुत्र दत्त ए नगरना राजाने हांकीने गादी पचावी पड्यो हतो एणे घणा यज्ञो कर्या हता. तेनी समक्ष कालकाचार्ये यज्ञोनी निन्दा करवाथी दत्ते आचार्यने केद कर्या हता. आचार्यनी भविष्यवाणी अनुसार, राजा पाछळथी भूंडे हाले मरण पाम्यो हतो.[1] आ कालकाचार्ये इन्द्र समक्ष निगोदना जीवो संबधी व्याख्यान कर्युं होवानी पण कथा छे

आ कालकाचार्य गर्दभिल्लनो नाश करनार कालकाचार्यथी भिन्न तेम ज एमना पूर्ववर्ती होवानो मुनि कल्याणविजयजीनो मत छे.[2] आ प्रथम कालकाचार्यनो समय तेमणे वीरनिर्वाण स ३०० थी ३७६ (=ई. स पूर्वे २२६थी १५०)नो गण्यो छे.[3]

१ आम्चू, पूर्व भाग, पृ ४९५–९६; आम, पृ ४७८–७९
२ 'प्रभावकचरित,' प्रस्तावना, पृ २३–२४
३ एज

कालकाचार्य–२

उज्जयिनीना विषयी राजा गर्दभिल्लनो नाश करावनार तथा पर्युषणपर्वने भादरवा सुद पांचमने बदले चोथना दिवसे करावनार

तरीके आ आचार्य जैन इतिहासमां प्रसिद्ध छे प्रथम कालकाचार्य ब्राह्मणपुत्र हता, ज्यारे आ द्वितीय कालकाचार्य, 'प्रभावकचरित' अनुसार, धारावासनगरना क्षत्रिय राजा वीरसिंहना पुत्र हता ' एमनो जीवनकाळ मुनिश्री कल्याणविजयजीना मत प्रमाणे, वीरनिर्वाणनी पांचमी शताब्दीमां अर्थात् ईसवी सन पूर्वे १ली सदीना अरसामां छे

उज्जयिनीना गर्दभिल्ल राजाए कालकाचार्यनी युवान बहेन सरस्वती के पण साध्वी हती तेनुं हरण करीने एने अंतःपुरमां दाखल करी हती. आथी कालकाचार्य पारसकुल-ईरानने किनारे जईने शकोने हिन्दुकदेश-हिन्द (जुओ हिन्दुकदेश) उपर आक्रमण करवा माटे तेडी लाव्या हता पहेलां तो तेओ बधा सुराष्ट्रमां आव्या वरसादनो समय होवाथी त्यां रोकाई जवुं पड्युं. पछी चोमासुं पूरुं थतां कालकाचार्ये शकोने गर्दभिल्ल उपर आक्रमण करवा माटे प्रेर्या लाटना राजाओ जेमनुं गर्दभिल्ले अपमान कर्युं हतुं तेओ पण साथे भळ्या, अने बधाए मळी उज्जयिनीने घेरो घाल्यो आ बाजू गर्दभिल्ल राजा गर्दभीविद्यानी साधना करतो हतो गर्दभीना स्वरूपमां ए विद्या आवीने मोटो अवाज करती एटले शत्रुसैन्यमां जे कोई एनो अवाज सांभळे ते रुधिर ओकतो धरती उपर पडतो कालकाचार्ये आ रहस्य जाणीने अनेक बाणावळी योद्धाओने तैयार रहेवा कह्युं के गर्दभी पोतानुं मों पहोळुं करीने शब्द करे त्यारे पहेलां तमारे ते बाणवर्षाथी पूरी देवुं ' तेओए तेम कर्युं, एटले गर्दभी क्रोधायमान थई गर्दभिल्ल उपर विष्टामूत्र करी, तेने लात मारीने चाली गई अबळ बनेला गर्दभिल्लनो नाश करीने उज्जयिनी कबजे करवामां आवी, तथा कालकाचार्ये पोतानी बहेनने पाछी संयममां स्थापित करी.

पर्युषणपर्वना तिथिपरिवर्तन संबंधमां आगमोक्त कथानक आ प्रमाणे छे भरुकच्छमां बलमित्र राजा हतो, अने तेनो भाई भानुमित्र

युवराज हतो, तेमनी बहेन भानुश्री नामे हती, जेनो पुत्र बलभानु हतो कालकाचार्य एक वार विहार करता त्यां आव्या अने तेमनी देशना सांभळी बलभानुए दीक्षा लीधी आथी रुष्ट थयेला बलमित्र–भानुमित्रे कालकाचार्यने निर्वासित कर्या. वळी बीजी एक प्राचीन परंपरा प्रमाणे, बलमित्र–भानुमित्र कालकाचार्यना भाणेज हता. तेमणे पोताना पुरोहितनी शिखवणीथी तेमने निर्वासित कर्या हता. ज्यारे त्रीजा एक मत प्रमाणे, राजाए आखा शहेरमां अनेषणा करावी हती–एटले आचार्यने क्यांयथी भिक्षा मळती नहोती. आथी तेमणे नगर छोडी दीधुं वर्षाकाळमां ज आचार्य प्रतिष्ठान जवा नीकळ्या अने त्यांना संघने तथा श्रावक राजा सातवाहनने अगाउथी पोताना आगमननी खबर आपी त्यां जईने आचार्ये भादरवा सुद पांचमने दिवसे पर्युषण करवानु कह्युं, त्यारे राजाए कह्युं, 'ते दिवसे तो मारे लोकरूढि अनुसार इन्द्रमहोत्सव करवानो होय छे, माटे पर्व आपणे छठने दिवसे करीए' आचार्य बोल्या के 'पर्वनु अतिक्रमण न थई शके' आथी राजाए चोथनुं सूचन कर्युं अने ते आचार्ये स्वीकार्युं. त्यारथी चोथना दिवसे पर्युषणनी उजवणी शरू थई.

अविनीत शिष्यना परित्यागनुं एक कथानक पण कालकाचार्यना संबंधमां छे ए समये कालकाचार्य उज्जयिनीमां रहेता हता. तेमनो कोई शिष्य भणवा इच्छतो नहोतो, आथी नाराज थईने, एमना बहु-श्रुत प्रशिष्य सागरश्रमण सुवर्णभूमिमा विहरता हता त्यां, कोईने खबर आप्या सिवाय तेओ चाल्या गया हता सागरश्रमणे कालकाचार्यने ओळख्या विना गर्वथी व्याख्यान करवा मांड्युं पाछळथी बीजा साधुओ आवी पहोंचता रहस्यस्फोटन थयु अने कालकाचार्ये सागर-श्रमणने प्रज्ञापरीषह सहन करवा–ज्ञाननो गर्व नहि करवा' विशे उपदेश आप्या' कालकाचार्य आजीवको पासे अष्टाग महानिमित्तनो अभ्यास करवा माटे गया होवानो उल्लेख संघदासगणिना 'पंचकल्प'

मान्यता छे, एटले बीजा अनेक प्राचीन जैन आचार्योनी जेम तेओ नैमित्तिक–ज्योतिषी हता वळी निमित्तशास्त्रमां जैन आचार्यो करतां पण ए काळे आजीवको चढियाता हता एम आ उल्लेख पुरवार करे छे

कालकाचार्य एक ग्रन्थकार पण हता एनो पुरावो मळे छे सुप्रसिद्ध जैन कथाग्रन्थ 'वसुदेव–हिंडी'ना प्रारंभमां 'प्रथमानुयोग'नो आधार टांक्यो छे अने 'वसुदेव–हिंडी'नी कथानो सारांश 'प्रथमानुयोग' ग्रन्थमांथी उद्धृत थयो होवानुं सूचन त्यां करवामां आव्युं छे सङ्घदासगणिना 'पंचकल्प' भाष्य प्रमाणे 'प्रथमानुयोग'ना कर्ता आर्य कालक हता बारमा अंग 'दृष्टिवाद'–अंतर्गत 'मूळ प्रथमानुयोग' जेनो सविस्तर उल्लेख 'नंदिसूत्र'मां श्रुतज्ञाननुं स्वरूप वर्णवतां करेलो छे ते सुसंबद्ध ग्रन्थरूपे नष्ट थतां तेनो पुनरुद्धार आर्य कालके कर्यो होय एम अनुमान थाय छे पण आर्य कालकनो पुनरुद्धृत 'प्रथमानुयोग' पण आजे घणा सैका थयां नाश पामी गयेलो छे

कालकाचार्य विशेना प्रासंगिक उल्लेखो पण आगम साहित्यमां अनेक स्थळे छे

आगमेतर साहित्यमां पण कालकाचार्यनी कथा ए साहित्यरचना माटे एक खूब ज लोकप्रिय विषय रह्यो छे संस्कृत, प्राकृत तेम ज जूनी गुजरातीमां–गद्यमां तेम ज पद्यमां मोटी संख्यामां जुदा जुदा ज्ञात तेम ज अज्ञात लेखकोने हाथे कालकाचार्यनी कथाओ रचाई छे अने 'कल्पसूत्र' तेम ज 'उत्तराध्ययन' जेवा आगमसाहित्यना पवित्र ग्रन्थोनी जेम 'कालकाचार्य कथा'नी पण सचित्र हस्तप्रतो मळे छे"

प्रज्ञापना सूत्र'ना कर्ता आर्य श्यामने केटलाक विद्वानो कालकाचार्यथी अभिन्न गणे छे

उपर्युक्त बे कालकाचार्य उपरांत ए ज नामना बीजा एक

आचार्य पण थया होवानुं अनुमान जैन शास्त्रो अने स्थविरावलीओ उपरथी केटलाक विद्वानो करे छे[12]

१ प्रच, ४—श्लो ३—७

२ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना पृ २३—२४

३ निचू, भाग ३, पृ ५७१—७२

४ निचूनी टाइप करेली प्रतमा अहीं भरुकच्छने बदले उज्जयिनी छे, पण अन्य मूळ ग्रन्थोमां भरुकच्छ छे एटले निचूना पाठमा कंईक भ्रष्टता होवानु अनुमान थाय छे.

५ निचू, भाग ३, पृ. ६३३

६ उचू, पृ ८३—८४, उशा, पृ १२७ (नि गा १२०), उने, पृ ५०

७ प्रच (अनुवाद), पृ २३

८ 'वसुदेव-हिंडी' (अनुवाद) पृ ३६

९ व्यम (उद्दे १०), पृ ९४, बृकसे, भाग ५, पृ १४७८ तथा १४८०, बृक्क्म, भाग १, पृ ७३—७४; कसु, पृ ५२४—२५; करी, पृ ११३—१५, ककि, पृ १७३, १७६—७९, कदी, पृ ३—५, कसंवि, पृ ११८—१९, श्राप्र, पृ ७, इत्यादि

१० कालकाचार्य विशेनी जूनी कथाओ माटे जुओ साराभाई नवाब-प्रकाशित 'श्रीकालक-कथासंग्रह' एमां नथी संघराई एवी सोळमा सैकानी गुजराती गद्यमा लखायेली कथा माटे जुओ 'प्रस्थान,' फागण—चैत्र, सं १९८८ मा मारो लेख 'कालकाचार्यकथा' कालककथानी हाथप्रतोमा मळता चित्रोना अभ्यास माटे जुओ नॉर्मन ब्राउनकृत 'स्टोरी ऑफ कालक'

११ जुओ श्याम आर्य

१२ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ. २३, 'कालककथासंग्रह,' प्रस्तावना, पृ ५२—५३.

कालणद्वीप

जुओ काननद्वीप

कालनगर

आनंदपुरनुं बीजुं नाम. त्यां ध्रुवसेन राजानो पुत्रमरणनो शोक शमाववा माटे 'कल्पसूत्र'नी वाचना थई हती.[1]

जुओ आनन्दपुर

१ ध्रुवसेननृपस्य पुत्रमरणार्तस्य समाधिक्रियायामानन्दपुरे, संप्रति वडनगरमहास्थानमस्यथा स्वे सभासमक्षमस्य मयो वाचयितुमारब्ध इति। कल्पकि० पृ. ११८–१९. आ उल्लेखने समर्थक लोकवायकाए तो करेलिया; जिनप्रभसूरिना समयमां (१४ मो सैको) आनंदपुर वडनगर तरीके जाणीतुं हतुं. आ उल्लेख विचारणीय एटला माटे छे के जैन के अन्य साहित्यमां उपलब्ध थतां आनंदपुरनां अनेक नामोमां आ नाम नथी

कालवेशिक

मथुराना जितशत्रु राजाना काला नामे वेश्याथी थयेला पुत्र. दीक्षा लीधा पछी विहार करता तेओ मुद्गशैलपुर आव्या. हतशत्रु राजा साथे तेमनी बहेन परणावी हती त्यां गया हता. त्यां प्रतिमा[1]—कायोत्सर्ग ध्यानमां रहेला हता त्यारे एक शियाळणीए तेमने फाडी खाधा हता.[2]

भगवती सूत्र' (शतक १ उद्दे० ९)मां पार्श्वापत्य कालास्य वेशिपुत्र अणगारनो वृत्तान्त आवे छे ते आथी भिन्न छे के केम ए कहेवुं मुश्केल छे.

१ आ जैन पारिभाषिक शब्द छे अने मूर्तिवाचक सर्वसाधारण प्रतिमा शब्दथी भिन्न छे.

२ कथा पृ. १११ अने पृ ४७

कुङ्कण

जुओ कोङ्कण

कुंभरावर्त

कुंभरावर्त अने रथावर्त ए बे पर्वत पासे पासे आवेला हता

जुओ रथावर्त्तगिरि

कुडङ्गेश्वर

उज्जयिनीमा अवंतिसुकुमालना देहोत्सर्गना स्थान उपर तेना पुत्रे बंधावेलु मन्दिर. १

जुओ अवन्तिसुकुमाल

कुणाल

सम्राट् अशोकनो पुत्र अशोके तेने उज्जयिनी कुमारभुक्तिमां आप्यु हतुं. ते आठ वर्षनो थयो त्यारे अशोके तेना उपर एक पत्र पाठव्यो अने तेमा लख्युं के–'अधीयतां कुमार·' (कुमार विद्याभ्यास करे) पण कुणालनी अपर माताए ए उपर अनुस्वार मूकीने 'अंधीयतां कुमार·' (कुमारने अंध बनाववामां आवे) एम करी दीधुं. कुणाले तो पितानी आज्ञा शिरोधार्य गणीने तपावेली सळीथी आंखो आंजी अने अंध बन्यो आ वात जाणीने राजाए उज्जयिनी अन्य कुमारने आपी, अने कुणालने बीजां गामडा आप्यां. कुणाल संगीतविद्यामां निपुण हतो एक वार अशोक पासे आवीने पडदा पाछळथी गान करीने तेणे अशोकने प्रसन्न कर्यो अशोके पूछ्युं, 'तने शु आपु ?' त्यारे कुणाल बोल्यो

> चंदगुत्तपपुत्तो य बिंदुसारस्स नत्तुओ।
> असोगसिरिणो पुत्तो अंधो जायइ कागिणिं॥

(चंद्रगुप्तनो प्रपौत्र, बिन्दुसारनो पौत्र अने अशोकश्रीनो अंध पुत्र काकिणी मागे छे)

अशोके पुत्रने ओळख्यो अने आलिंगन कर्युं अमात्योए कह्युं के 'राजपुत्रोनी बाबतमा काकिणीनो अर्थ राज्य थाय छे.' पछी कुणालना पुत्र संप्रतिने राज्य आपवामा आव्युं [२]

आ वृत्तांतमानी बधी व्यक्तिओ ऐतिहासिक छे

लीधी त्यारे[४] तेम ज राजा श्रेणिकना पुत्र मेघकुमारे दीक्षा लीधी त्यारे[५] पण एटली ज कीमते पात्र अने रजोहरण कुत्रिकापणमांथी खरीदवामां आव्यां हतां

राजा चंडप्रद्योत ज्यारे अवन्तिजनपद उपर राज्य करतो हतो त्यारे उज्जयिनीमा आवा नव कुत्रिकापण हता, तथा राजगृहमा श्रेणिकना राज्यकाळमां पण कुत्रिकापण हतो[६] वळी कुत्रिकापण साथे केटलीक लोकवार्ताओ पण जोडाई छे, जेमां कुत्रिकापणमां भूत पण मळता एम कह्युं छे.[७] आ प्रकारनी लोकप्रसिद्ध वार्ताओ कुत्रिकापणना वृत्तान्त साथे वणाई गई छे ए वस्तु ज बतावे छे के कुत्रिकापण ज्यारे केवळ भूतकाळनी वस्तु बनी गयो हतो त्यारे पण लोकमानसे एनी स्मृति केवी रीते संघरी राखी हती.

कुत्रिकापण जेम त्रिभुवननी सर्व वस्तुओनो भंडार हतो तेम इच्छित वस्तु संपादित करवानी लब्धिवाळा अथवा सकल गुणना भंडार साधुने 'कुत्तियावणभूआ ('कुत्रिकापण जेवा') कह्या छे[८]

[**नोंध** —कुत्रिकापण विशेना आगमसाहित्यना केटलाक प्रासगिक उल्लेखो माटे जुओ 'अभिधानराजेन्द्र,' ग्रन्थ ३ वळी सातमी अखिल भारत प्राच्यविद्या परिषदना अहेवालमा मारो लेख 'ए नोट ओन धी कुत्रिकापण' तथा 'इतिहासनी केडी' मा ग्रन्थस्थ थयेली लेख 'कुत्रिकापण अर्थात् प्राचीन भारतना जनरल स्टोर्स' जोवो]

१ बृकभा, गा ४२१४ तथा ते उपरथी क्षेमकीर्तिनी वृत्ति; भसूअ, शतक १, उद्दे ३३

२ बृकभा, गा. ४२१५ तथा ४२२०–२२, बृकसे, भाग ४, पृ ११४५–४६.

३ एज

४ भसू, शतक ९, उद्दे. ३३

५ ज्ञाध, पृ ५३

६ बृकभा, गा. ४२२०, बृकसे, पृ ११४५–४६.

७ जुओ कयआवणी

८ से णं कुले णं से णं समये णं पालकभिक्खा वेरा अमकतो कुत्तियावणभूला, मडुखुण मडुगरियारा केवरि अमयारसएरि ... उवरियुक्त मधु ... २ उरे ५ जुओ एमांना ... ... उपरथी अमयदेवसूरिनी वृत्ति—× × कुत्तियावणभूय'त्ति कुत्रिक स्वर्ग मर्त्य पातालक्षणं भूमित्रयं तत्संभवं वस्तु अपि कुत्रिकम् तत्संपादक आपणो हट्ट कुत्रिकापण—तद्भूताः। ... ... वा तद्रूपा ।।

कुमारपाल

गुजरातनो प्रसिद्ध चौलुक्यवंशीय राजा (स ११९९–१२२९ वि स ११४२–११७३) जैनधर्म प्रत्येनु एनुं वलण जाणीतुं छे कुमारपालना वहेन अने बनेवी एकवार चूत रमतां हतां तेमां बनेवीए 'मुंडियाने मार' एम कहीने जैन साधुनी मश्करी करी हती एमांथी घोर वेरनां बीज ववायां हतां

१ भाग८, पृ. ११५.

कुम्भकारकट

चंपानगरीना (कटकाकना मत मुजब, श्रावस्तीना) स्कन्दक राजाए पोतानी बहेन पुरंदरयशा कुंभकारकटना राजा दंडकी साथे परणावी हती. केटलाक समय पछी स्कन्दके दीक्षा लीधी अने विहार करतां ते कुमकारकट आई पहोंच्या, त्यां दंडकीना आदेशथी एनो वध करवामां आव्यो. स्कन्दक मरीने अग्निकुमार देव थयो अने तेणे आखुं ये नगर बाळीने भस्म करी नाख्युं. आम कुंभकारकट नगरने स्थाने अरण्य थयुं अने दंडकना नाम उपरथी दंडकारण्य तरीके ओळखायुं '

दक्षिण गुजरातमां डांगथी शरू थता अने गोदावरी नदीनी आसपास सुधी विस्तरेला अरण्यने दंडकारण्य गणवामां आवे छे वळी कुंभकारकटने अंते आवतो 'कट' पदान्त नोंधपात्र छे जो के जैन संस्कृतमां ए प्रयोगाय छे अने प्राकृतमां एनुं 'कड' एवुं रूप अपाय

छे, छतां मूळे ते सस्कृत 'कृत'मांथी व्युत्पन्न थयेल छे. प्राचीन अने मध्यकालीन भारतमां संख्याबंध नगरोनां नामने अंते 'कट' पदान्त मळे छे, जेमके कोपकट,[2] भोगकट,[3] वशकट,[4] वेणाकटक,[5] इत्यादि पंचासरना जयशिखरी उपर आक्रमण करनार भुवड कल्याणकटकनो राजा हतो ए जाणीतु छे. ओरिसाना पाटनगर 'कटक'नुं नाम आवी रीते मूळ कोई आखा नामनो सक्षेप हशे–जेम 'अणहिलवाड पाटण'नो सक्षेप 'पाटण' छे तेम जावा वगेरे भारतनी प्राचीन वसाहतोमां 'जोग्यकर्त,' 'जकर्त' वगेरे नगरोमां नामोने अंते 'कर्त' पदान्त छे, ए संस्कृत 'कृत'मांथी छे,[6] जेमांथी उपर्युक्त 'कट' पण व्युत्पन्न थयेलो छे. गुजरातनां 'कडु' 'कडी' वगेरे स्थळनामोनी व्युत्पत्ति आ रीते कृतकम्7 7कटकम्7कडउ7कडु तथा *कृतिका7कडिआ7कडी एम साधी शकाय. सस्कृतमा 'कटक'नो एक अर्थ 'सैन्यनी छावणी' एवो थाय छे, ए आ साथे सरखावी शकाय जो के त्या पण ए शब्द प्राकृतमांथी संस्कृतमा लेवामा आव्यो होय ए ज संभवित छे

जुओ **दण्डकारण्य**

१ बृकमा, गा ३२७४, उचू, पृ ७३, उने, पृ. ३६, उशा, पृ ११४–१६, निचू, पृ १११३.

२ कवी, पृ ११८

३ उशा, पृ ८५

४ 'गुजरातना ऐतिहासिक लेखो,' भाग १, न. ५४, ६०, ८८

५ 'तंत्रोपाख्यान,' पृ १२, 'पचतत्र' (अनुवाद), उपोद्घात, पृ. ३९

६ चेटरजी, 'इन्डो-आर्यन ॲन्ड हिन्दी,' पृ ६९

कुम्भकारप्रक्षेप

वीतभय नगरनु बीजुं नाम ए सिनवल्लीमां आवेलुं हतु. सिन्धु-सौवीरनो उदायन राजा जे साधु बनी गयो हतो तेणे ——

कुंभकारना घरमां निवास कर्यो हतो. राजाना माणेज केशीए एने झेर आपी मारी नाख्यो हतो, आथी देवोए धूळवर्षा पेदा करी आखा नगरनो नाश करी नाख्यो एमांथी एक मात्र कुंभकारनुं घर ज बच्युं त्यारथी ए स्थळ कुंभकारप्रक्षेप (प्रा कुम्भयारपक्खेव) तरीके प्रसिद्ध थयुं १

'जातक' (नं ४६३)मां रेतीना तोफानथी कुंभवती नगरीनो नाश थयानो उल्लेख छे ते उपर्युक्त कथानक साथे सरखावी शकाय

जुओ उदायन, वीतभय नगर अने सिनपल्ली

१ आव. उत्तर भाग पृ. ३७

कुवलयमाला कथा

दाक्षिण्यांक उद्योतनसूरिए शक सं. ६९९ (ई स ७७७)ना छेल्ला दिवसे जाबालिपुर (जालोर)मां रचेली विस्तृत प्राकृत धर्मकथा भारतना बीजा प्रदेशोना वासीओनी जेम लाटवासीओ अने गुर्जरोनी भाषानी लाक्षणिकता पण एमां सूचनरूपे वर्णवेली छे जे खास तो एनी प्राचीनताने कारणे नोंधपात्र छे

अभयदेवसूरिए 'कुवलयमाला कथा'ना महेन्द्रसिंह नामे एक पात्रनो 'स्थानांगसूत्र' वृत्तिमां निर्देश कर्यो छे २

१ जुओ वसन्त रजत महोत्सव स्मारक ग्रन्थ मां आचार्य जिनविजयजीनो लेख 'कुवलयमाला' [illegible] एक जैनकथा.

२ सोवीरो य सोवीरराया [illegible] एष सामन्तयेन कथ्यते पुत्रवत् प्रतिपन्नो यथा कुवलयमालाकथायां महेन्द्रसिंहाभिधानो राजपुत्र इत्यादि स्थानांगसूत्र पृ ५११

कुशावर्त

जैन. सत्तुभेद, विहार कल्प, बोल्प साडीपचीस देशो—आर्यक्षेत्र—मांहेना एक देश जेनुं पाटनगर शौरिपुर हतुं १

'वसुदेव-हिंडी'ना कथन प्रमाणे आनर्त, कुशावर्त, सुराष्ट्र अने शुक्रराष्ट्र ए चार जनपदो पश्चिम समुद्रने किनारे आवेला हता, अने ए जनपदोनी प्रधान नगरी द्वारवती हती[२] हवे, प्राचीनतर शौरिपुर यमुना नदीना किनारे हतुं अने शौरि राजाए पोताना नाना भाई सुवीरने ते सोंपीने पश्चिममा कुशावर्तमा जईने शौरिपुर नामे नगर वसाव्यु हतुं अने यादवो पण जरासंधना भयथी पश्चिममां, द्वारवतीमा जईने वस्या हता[३] आ उपरथी अनुमान थई शके के कुशावर्त तेम ज शौरिपुर बे हता–एक उत्तरमा अने बीजुं पश्चिममा. स्थळान्तर कर्या पछी नवा स्थानोने जूनां नामो आपवानु जातिओनुं वलण जाणीतुं छे.

१- वृकभा तथा वृकक्षे, भाग ३, पृ ९१२–१४, सूकृशी, पृ १२३.

२ 'वसुदेव-हिंडी' (मूल), पृ ७७, अनुवाद, पृ ९२

३ जुओ **शौरिपुर**

कृष्ण वासुदेव

जैन पुराणकथा प्रमाणे, नव वासुदेवो पैकीना छेल्ला–नवमा वासुदेव, यादवोना नेता, बावीसमा तीर्थंकर नेमिनाथना काकाना दीकरा भाई एमने माटे देवोए पश्चिम समुद्रने किनारे द्वारवती नगरी वसावी हती कृष्ण वासुदेवनो प्रतिवासुदेव जरासंध हतो प्रद्युम्न, सांब, भानु, सारण, जालि, मयालि, उवयालि, पुरुषसेन, वीरसेन आदि कृष्णना पुत्रो हता

श्रीकृष्णनु संपूर्ण चरित्र आगमसाहित्यना एके ग्रन्थमा नथी 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' जेवा ग्रन्थना 'नेमिनाथचरित्र'माथी तथा अन्य नेमिनाथचरित्रोमाथी तेम ज दिगंबर परंपराना पण ए प्रकारना ग्रन्थोमाथी जैन परंपरा अनुसारनं एमनं चरित्र [illegible]

शके एम छे आगमसाहित्यमां तो कृष्ण विशेनां सम्यार्थम प्रासंगिक कथानको अने प्रसंगोपात्त उल्लेखो मात्र प्राप्त थाय छे[1]

१ ज्ञाता अध्य १६ आव॰ उत्तर भाग पृ. १६-१८ आम पृ. १५६-५९ अंत वर्ग १ ५ पृ पृ ४१ ४२ ... ... ११[1] ... ... १७८ ... पृ. ११८ ... पृ. ५ १४-१५ ११७-४१ ... पृ. १६, १२ -२१ ... पृ. ८ ११ १६१-७ ... ... १७ ७ -७१ १६६-४१४ ... पृ १४-१५, पाम पृ. १७ इत्यादि. कृष्णना केटलाक संबंधीओनां चरित्र माटे जुओ अह.

केशी

सिन्धु-सौवीरना राजा उद्रायणनो भाणेज उदायने महावीर पास दीक्षा लीधी त्यारे पोताना पुत्र अभीचि प्रत्यनी श्रेयबुद्धिथी तेने गादी नहि आपतां केशीने आपी हती पण पाछळथी केशीए उद्रायणने झेर आपीने मारी नाख्यो हतो[1]

जुओ अभीचि अने उदायन

१ भग॰ शतक १३ उद्दे॰ ६ अने पृ. ५५२-५५, ... पृ. ५८७ आव॰ उत्तर भाग पृ. ३६-३७

कोकास

एक निष्णात यांत्रिक सोपारकना एक रथकारनी दासीमां ब्राह्मणथी उत्पन्न थयेलो ते पुत्र हतो रथकारनी बधी विद्या तेणे शीखी लीधी हती एक वार सोपारकमां दुष्काळ पडतां ते उज्जयिनी आव्यो. ए वखते पाटलिपुत्रनो राजा जे काकवर्ण नामथी ओळखातो हतो, तेणे उज्जयिनी कबजे करी हती राजाने पोताना आगमननी जाण कराववा माटे कोकासे यंत्रकपोतो तैयार करावीने तेमनो द्वारा राज महेलमांथी गंधशालि अर्थात् ऊंची जातनी डांगर मेळवी राजाए कोकासने बोलाव्यो तथा तेना वृत्ति बांधी आपीने यांत्रिक गरुड तैयार कराव्यो. कोकास वडे हंकारातां ए गरुड उपर बेसीने राजा देवीनी

साथे आकाशमां फरतो. पछी बधा राजाओने पण तेणे आ रीते पोतानो प्रभाव बतावीने वश करी लीधा.

हवे, एक वार राजानी बीजी एक इर्ष्यालु राणीए यंत्रने पाछुं लाववा माटेनी खीली काढी नाखी. गरुड आकाशमां ऊडच्। पछी आ वातनी राजाने खबर पडी कलिंगदेशमां ऋषिप्राणित तळाव आगळ जोरथी ऊडता गरुडनी पाख भांगी गई, अने सौ नीचे पडयां. गरुडनी पांख सांधवा माटे सामग्री मेळववा माटे कोक्कास नीकळयो अने एक रथकार पासे जईने तेणे एनां उपकरणो माग्यां रथकार उपकरण लेवा गयो, एटलामां तो कोक्कासे तेना रथनुं चक्र तैयार करी आप्युं आ निपुणता उपरथी रथकारे अनुमान कर्युं के आ ज कोक्कास होवो जोईए तेणे जईने पोताना राजाने खबर आपी राजाए कोक्कासने तथा काकवर्ण राजा अने तेनी देवीने पकडयां. पछी कलिंगना राजाए कोक्कास पासे पोताने माटे अने पोताना पुत्र माटे प्रासाद तैयार कराव्यो. आ पछी कोकासे काकवर्णना पुत्रने पत्र लख्यो के 'हुं कलिंगना राजाने मारुं एटले तु मने अने तारां मातापिताने छोडाव' आ माटेनो नियत दिवस पण तेणे पत्रमां लख्यो. ए दिवसे कलिंगनो राजा पुत्र सहित प्रासादमां प्रवेश्यो, एटले कोकासे यंत्रनी खीली दबावता पुत्रसहित राजा मरण पाम्यो काकवर्णना पुत्रे नगर कबजे कर्युं तथा मातापिताने अने कोक्कासने छोडाव्यां.'

कोक्कासनु कथानक आगमेतर साहित्यमां सौथी प्राचीन स्वरूपे 'वसुदेव-हिंडी'मा छे. बाल्यावस्थामा ते खांडणिया पासे बेसतो अने डागरनी कुसकी ('कुक्कुसे') खातो, तेथी एनुं नाम कोक्कास पडयुं, एम 'वसुदेव-हिंडी'[१] नोंधे छे जो के उपर्युक्त कथानक साथे तुलना करता एना प्रसंगोमां कईक फेर मालूम पडे छे 'आवश्यक चूर्णि'-वाळा कथानकमा यांत्रिक गरुड कलिंग देशमा ऋषिप्राणित तळाव आगळ ऊतरे छे, ज्यारे 'वसुदेव-हिंडी'मा कोकासे बनावेला वायुयानने

चोखा मुख्य खोराक छे ए वस्तु आपणे ध्यानमां राखवी जोईए. कोंकणादि देशोमां गिरियज्ञ नामनो उत्सव दररोज संध्याकाळे थाय छे.[५] त्यां पाणीने 'पिच्च' कहेवामां आवे छे[६] संख्याबंध अर्वाचीन भारतीय भाषाओना 'पिचकारी,' 'पिच(क)दानी' जेवा शब्दोमांना 'पिच' अंगनुं संतोषकारक निर्वचन संस्कृतद्वारा थतुं नथी, एनो संबंध आ 'पिच्च' साथे हशे. संभव छे के रवानुकारी लागतो ए शब्द मूळे कोई आर्येतर भाषामांथी होय

कोंकणदेशोद्भव पुरुषो सह्य पर्वत उपरथी गोळ, घी, घउं, तेल, वगेरे माल उतारे छे अने त्यां चढावे छे[७] कोंकणदेशमां भारे वरसादने कारणे जैन साधुने छत्री राखवानी पण अनुज्ञा आपवामां आवेली छे[८] कोंकणनी नदीओमा तीणा पथ्थरो होवाने कारणे एमां चालवुं कष्टदायक छे.[९]

कोंकणने एक स्थळे 'असंदीनद्वीप' अर्थात् समुद्रनो भरतीथी परिप्लावित न थई जाय एवो प्रदेश कहेवामा आव्यो छे[१०]

'कोंकणार्य' अथवा 'कोंकणकक्षान्त'—कोंकणवासी साधुनु दृष्टान्त अनेक स्थळे आवे छे दीक्षा लीधा पछी पोताना पुत्रादि माटे तेओ चिन्ता करता हता, एमने आचार्ये समजाव्या हता.[११] एक कोंकणवासीनी पत्नी मरण पामी हती, परन्तु एने एक पुत्र होवाथी फरी वार लग्न माटे कन्या मळती नहोती, आथी तेणे पोताना पुत्रने कपट करी बाणथी वींधीने मारी नाख्यो हतो,[१२] एवी पण एक कथा छे. एक कोंकणवासी श्रावकना आदर्श सत्यभाषणनु दृष्टान्त 'आवश्यक चूर्णि'मां छे, जेमा तेणे पोताना पितानी सामे ज साक्षी पूरी हती

१ जुओ **कोङ्कणक**

२ बृकक्षे, भाग २, पृ. ३८४ वळी जुओ त्यां टिप्पणमा चूर्णि अने विशेषचूर्णिमाथी आपेलुं अवतरण.

३ आची. पं. ५१ टबैच . प . ३१८

कोटयाचार्य

जिनभद्रगणिकृत 'विशेषावश्यक भाष्य'ना विवरणकार. एमने 'आचारांग,' 'सूत्रकृतांग' आदि उपर वृत्तिओ लखनार शीलाचार्यथी अभिन्न गणवामां आवे छे.

जुओ शीलाचार्य

कोरण्टक उद्यान

भरुकच्छनु एक उद्यान. वीसमा तीर्थंकर मुनिसुव्रतस्वामी त्या घणी वार समोसर्या[1] हता. कोरटक आदि उद्यानोमां जईने देवतानी समक्ष आलोचना करी प्रायश्चित्त लेवानुं विधान छे.[2] वादी देवसूरिकृत 'स्याद्वादरत्नाकर'ना मंगलाचरण उपरथी जणाय छे के आ उद्यान भरुकच्छना ईशान खूणे आवेलुं हतुं.

कोरट अथवा कोरंटक एक वनस्पतिविशेष छे अने प्राकृत साहित्यमां एना उल्लेखो छे (जुओ 'पाइअ सद्द महण्णवो'). हेमचन्द्रना 'निघंटुशेप'मां गुल्मकांडमां, नरहरिकृत 'राजनिघंटु'मा तेम ज अन्य निघंटुओमां तेनो 'कुरंटक' तरीके उल्लेख छे आ 'कोरंटक' के 'कुरटक'ने गुजरातीमां 'कांटासेरियो' कहे छे एनी जुदी जुदी चार जातो छे.[3] 'निघंटु आदर्श'ना कर्ता श्री. बापालाल ग वैद्य ए विशे ता १४-१२-५० ना पत्रमां मने लखे छे "आप कोरंटक नामे उद्याननी वात करो छो ए मारे माटे नवी माहिती छे, परन्तु आवो उद्यान होय तो नवाई जेवुं न कहेवाय. आ छोड अने तेमां ये एनी चारे जातो उद्यानमां होय तो एनुं दृश्य खरेखर रमणीय लागे तेवुं छे ज परन्तु आ छोड छे. बहु सारुं पोपण मळे तो गुल्मनी कोटिमां आवे, परन्तु वृक्ष तो आ नथी ज—सघन छायादार वृक्ष तो नथी ज परन्तु भरूचना ईशान खूणामा कोरटक नामे उद्यान हतो ए माहिती मने खूब ज गमी छे. उद्यानमां बीजा वृक्षो तो होय ज, परन्तु आ

कमनीय छोडोए कोई रसिक कवि के चीत्तानी दृष्टि खेंची लागे छे अने एटले ज आ नाम उद्यानने आप्यु लागे छे"

१ तीर्थंकरना महाधर्मक आगमन माटे प्रवेशमां विभागद 'समोसरण' अथे गाम समोसरण छे ए जैन पारिभाषिक शब्द छे एनी व्युत्पत्ति संस्कृत सम् + अव + सृ उपरथी छे

१ श्रमण विभाग १ पृ ११७

१ त्रिषष्टि आदर्श उत्तरार्ध पृ. ११६-२४

कोसुंबारण्य

एक अरण्य, ज्यां जराकुमारनुं बाण वागवाथी कृष्ण वासुदेव मरण पाम्या हता.

द्वैपायन नामे परिव्राजक के जेने शांब आदि सुरामत्त यादवकुमारोने हाथे मरण पामी अग्निकुमार देव थयो हतो तेणे द्वारकानुं दहन कर्यां पछी बलराम अने कृष्ण सुराष्ट्र देश छोडीने पांडवो पासे दक्षिण मथुरा तरफ जता हता द्वारकाथी पूर्व तरफ नीकळी तेओ हस्तिकल्प नगरमां आव्या, त्यांना राजा अच्छदंतने हरावी दक्षिण तरफ जतां तेओ कोसुंबारण्य (प्रा कोसुंबारन्न) नामे अरण्यमां आव्या. त्यां कृष्णने तरस लागतां बलदेव पाणी लेवा गया, ए समये कृष्णना मोटा भाई जराकुमार, जेओ एमने हाथे कृष्णनुं मरण थशे एवी भविष्यवाणी नेमिनाथे भाखी होवाने कारणे द्वारकानो त्याग करीने अरण्यमां वसीने रह्या हता ते शिकारीरूपे आव्या अने ढींचण उपर एक पग राखीने सूतेला वासुदेवने मृग धारी तेमना पग उपर मर्मस्थाने बाण मारी तेमना मृत्युनुं कारण बन्या

हस्तिकल्प ए भावनगर पासेनुं हाथब होवा संभव छे कोसुंबारण्य ए उपर्युक्त वर्णन प्रमाणे सुराष्ट्रमांथी दक्षिण तरफ जतां आवे छे अने दक्षिण गुजरातमां आवेला कोसंबा आसपासनो विस्तार जे आजे पण गुजरातनो समृद्ध अरण्यप्रदेश छे ते ज ए होई शके

भरुकच्छथी दक्षिणापथ जवाना मार्गमां 'भल्लीगृह' नामथी ओळखातुं एक मन्दिर हतुं अने एमां भल्ली-बाणथी वींधायेला पगवाळी कृष्ण वासुदेवनी मूर्ति हती, एम 'निशीथचूर्णि' नोंधे छे, तेथी आ विधानने सबळ अनुमोदन मळे छे[3]

वळी आर्य महागिरि अने आर्य सुहस्ती एक वार विहार करता 'कोसबाहार'मां आव्या हता, एम संप्रति राजाना पूर्वजन्मना वर्णन-प्रसंगमा 'निशीथचूर्ण' (भाग २, पृ ४३७) नोंधे छे.[4] पण अहीं 'कोसबाहार' ए 'कोसबी आहार'–'कौशांबी आहार'नो अपभ्रष्ट पाठ छे, अने उपर्युक्त गुजरातना कोसंबा साथे एने संबध नथी, एम 'बृहत्कल्पसूत्र' (क्षेमकीर्तिनी वृत्ति, भाग ३, पृ ९१७–२१), 'परिशिष्टपर्व' (सर्ग ११) आदि ग्रन्थोमांना वर्णननी एनी साथे तुलना करता जणाय छे.

१ उने, पृ ४०–४१, वन्ह, पृ ६७–६९. वळी जुओ अद, पृ. १५–१६, स्यासूअ, पृ ४३३. अदमा आ स्थाननु नाम 'कोसबवणकाणण' (= कोसाबवनकानन) अने स्यासूअमा 'कोशावकानन' आप्यु छे

२ जुओ **हस्तिकल्प**

३ जुओ **भल्लीगृह.**

४ अन्नया ते दो वि विहरता कोसंबाहार गता । निचू, 'भाग २, पृ. ४३७

कौमुदिका

कृष्ण वासुदेवनी एक भेरी (.प्रा कोमुइआ) सामुदायिक उत्सवोनी घोषणा करवाना प्रसंगे वगाडवातुं ए उत्सववाद्य हतु[1]

पुराणोमा चतुर्भुज विष्णुना आयुधो पैकी एक कौमोदकी गदा छे, ए अहीं नोंधवुं जोईए

१ ज्ञाध, पृ १००–१०१, ज्ञाधअ, पृ १०१.

क्षेमकीर्ति

वृद्ध तपागच्छना स्थापक विजयचन्द्रसूरिना त्रण शिष्यो—वज्रसेन, पद्मचन्द्र अने क्षेमकीर्ति नामे आचार्यो हता ए पैकी क्षेमकीर्तिए 'बृहत् कल्पसूत्र' उपरनी वृत्ति जे पूर्वकालीन आचार्य मलयगिरिए अधूरी मूकी हती ते[1] सं १३३२ (ई स १२७६)मा वर्षमां पूर्ण करी ए वृत्तिनो प्रथमादर्श नयप्रभ आदि साधुओए लख्यो हतो[2]

१ जुओ मलयगिरि

२ जुओ विभाग ६ पृ १७१–१२ प्रशस्ति.

क्षेमपुरी

सुराष्ट्रनुं एक नगर त्यांना श्रावक राजा ताराचन्द्रना कुमार नरदेवनी धर्मकथा 'कल्पवृत्ति'मां छे[1]

क्षेमपुरीनो स्थाननिर्णय थई शक्यो नथी

१ क्षेमपुर्यां सुराष्ट्रासु ताराचन्द्रस्य भूभुजः ।
धर्मेण धर्मनामस्य प्रिया पद्मावतीत्यभूत् ॥
प्रजायेतां तयोः पुत्रौ [illegible] ।
तत्राद्यो नरदेवाख्यो देवचन्द्रो द्वितीयकः ॥ क. पृ. ४९

खण्डकर्णा

उज्जयिनीना राजा प्रद्योतनो मंत्री. एक सहस्रयोधी भट प्रद्योतना दरबारमां आव्यो हतो अने पोतानी सेवा बदल एक हजार योद्धाओने अपाय एटलु वेतननी तेणे मागणी करी हती खंडकर्णनी सूचनानुसार एना साहसनी परीक्षा कर्या पछी एनी मागणी मुजब वृत्ति बांधी आपवामां आवी हती.

१ व्यव, विभाग ३ पृ. ११

खपुटाचार्य

एक प्रभावक आचार्य 'आवश्यकसूत्र'नी चूर्णि अने वृत्तिमां

प्राप्त थता एमना वृत्तान्तनो सार आ प्रमाणे छे : खपुटाचार्य एक विद्यासिद्ध आचार्य हता तेमनो एक भाणेज तेमनो शिष्य हतो. ते सांभळवा मात्रथी विद्याओ शीखी जतो हतो. हवे, गुडशस्त्र नगरमा एक बौद्धाचार्य जैन साधुओ वडे वादमां पराजित थया पछी काळ करीने वृद्धकर नामे व्यंतर थयो हतो, ते साधुओने उपद्रव करतो हतो आथी खपुटाचार्य पोताना भाणेज शिष्यने भरुकच्छमां बीजा साधुओ पासे राखीने गुडशस्त्रमा गया. त्यां यक्षना मन्दिरमां प्रवेशी वस्त्र ओढी सूई गया. पूजारी आव्यो, पण तेओ ऊठ्या नहि पछी राजानी आज्ञाथी तेमना उपर अनुचरो लाकडीओनो प्रहार करवा मंडचा, तो ए प्रहारो ऊलटा अंत पुरमांनी राणीओने वाग्या आथी राजा आचार्यने करगरवा लाग्यो पछी आचार्य ऊठीने चाल्या अने यक्ष तथा बीजी मूर्तिओने पोतानी पाछळ चालवा कह्युं, एटले ते पण चालवा मांडी. बे मोटी पाषाणनी कूंडीओने पण ए रीते पाछळ चलावी. गामना सीमाडे आवीने यक्ष अने बीजा व्यंतरोने मुक्त कर्या, एटले तेमनी मूर्तिओ पोतपोताने स्थाने गई, परन्तु बे कूंडीओ त्या ज रहेवा दीधी

बीजी बाजू, आचार्यने खबर पडी के तेमनो शिष्य–भाणेज विद्याप्रभावथी श्रावकोने घेरथी स्वादिष्ठ खोराक आकाशमार्गे ऊडतां पात्रोमां मगावीने खाय छे तथा बौद्धोमां भळी गयो छे भरुकच्छना संघ तरफथी पण आचार्य उपर संदेशो आव्यो आचार्य भरुकच्छ गया पेलां ऊडतां पात्रोनी आगळ तेमणे एक शिला गोठवी, एटले बधां पात्रोनो तेनी साथे अथडाईने भूको थई गयो, अने शिष्य डरीने नासी गयो पछी आचार्य बौद्धो पासे गया बौद्धोए तेमने कह्युं के 'भगवान बुद्धने पगे पडो ' त्यारे आचार्य बोल्या, "आव वत्स, शुद्धोदनसुत ! मने वंदन कर !' एटले बुद्धनी मूर्ति तेमने पगे पडी त्या द्वार आगळ एक स्तूप हतो तेने पगे पडवा कह्यु, एटले ते पण नमी

पड्यो पछी बुद्धनी मूर्तिने ऊठवा कह्यु, एटले ते अर्धनत अवस्थामां रही, अने 'निर्ग्रन्थनामित' एवा नामथी प्रसिद्ध थई

'प्रभावकचरित' ना 'पादलिप्तसूरिचरित'मां खपुटाचार्यनो वृत्तान्त आप्यो छे त्यां तेमने भृगुकच्छना राजा बलमित्र—भानुमित्र तथा कालकाचार्यना समकालीन कह्या छे ' ए उल्लेखन जो ऐतिहासिक वस्तुसूचक गणीए तो, कालकाचार्य विशेनो मुनि कल्याणविजयनो समय निर्णय ध्यानमां लेता, तेओ वीरनिर्वाण पछी चोथा सैकामां थयेला गणाय 'प्रभावकचरित' अनुसार, बौद्धोए भृगुकच्छना अश्वावबोध तीर्थनो कबजो लई लीधो हतो ते तीर्थ खपुटाचार्ये विवादमा पाछेमी दूध मुकाबलामां आवे तेम ' छोडाव्युं हतुं ' 'आवश्यकसूत्र'नी चूर्णि अने वृत्तिमां बौद्धोना खपुटाचार्ये करेला पराजयनो जे निर्देश छे ते अश्वावबोधतीर्थ विशेनो हशे ' वळी 'प्रभावकचरित' कहे छे के आर्य खपुटनी पाटे तेमना शिष्य उपाध्याय महेन्द्र थया हता अने अश्वावबोधतीर्थमां तमनी परंपरा हजी पण (एटले के 'प्रभावकचरित'ना रचनाकाळ सं १३३४—नें सं १२७८ मां) विद्यमान छे

उपर्युक्त परंपरागत वृत्तान्तोमांथी चमत्कारनुं तत्त्व बाद करीए तो पण स्पष्ट छे के खपुटाचार्यनो विहारप्रदेश मुख्यत्वे लाट आसपासनो हतो, भरूचमां ए काळे बौद्धो अने जैनोनी मोटी वसती हती तथा तेमनी वच्चे स्पर्धा चालती हती एक बौद्ध स्तूप पण भरूचमां हतो, खपुटाचार्यनो एक शिष्य बौद्धो साथे भळी गयो हतो, बौद्धोए आचार्यनी गेरहाजरीमां जैनोना अश्वावबोध तीर्थनो कबजो लई लीधो हतो, पण आचार्ये युक्तिप्रयुक्तिथी बौद्धोने दूर कर्या हता अने पोतानी धर्मपरंपरा त्यां पुनःस्थापित करी हती.

१ भाग् ए१ भाग पृ. ५४१—४१ भाग पृ. ५५४ तुलना

(गा ५५९३) तथा गी (भाग ५, पृ १४८०) मां 'द्विपावली' तरीके खपुटाचार्यनो उल्लेख छे

२ प्रच, ५–श्लो १८३–४६. जुओ बलमित्र-भानुमित्र अने कालकाचार्य

३ प्रच, ५–श्लो २२८

४ शकुनिकाविहार, जेना उपर वस्तुपाल-तेजपाले सुवर्णना ध्वजदंडो कराव्या हता ते, अश्वावबोधतीर्थनो ... (जुओ ए प्रसंगना स्मारकरूपे रचायेली जयसिंहसूरिनी 'वस्तुपाल-तेजपालप्रशस्ति'). शकुनिकाविहारनी पाछळथी मस्जिद बनी गई छे, पण एनु आलेखन करता शिल्पो आबु उपरना तेजपालना मन्दिरमा छे (अश्वावबोधतीर्थ तथा शकुनिकाविहारना परपरागत इतिवृत्त तथा ए शिल्पोना चित्र माटे जुओ मुनि जयन्तविजयजीकृत 'आबु,' पृ १०९–१५ वळी 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' पर्व ७, तथा 'विविधतीर्थकल्प' मां 'अश्वावबोधकल्प')

५ टि ४ मा निर्दिष्ट जयसिंहसूरि (ई स नो तेरमो सैको), जेओ आ तीर्थमा आवेला मुनि सुव्रतचैत्यना अधिष्ठायक हता तेओ खपुटाचार्यनी परपरामां थयेला होवा जोईए

खेट

[१] जेनी आसपास धूळनो प्राकार होय एवा गामने खेट अथवा खेड कहेवामा आवे छे.[1]

[२] समय जता 'खेट' ए सामान्य नाममाथी विशेष नाम बनी गयुं. संख्याबंध टीकाग्रन्थोमां मळता एक कथानक प्रमाणे, खेटनो वतनी रुद्र नामे ब्राह्मण खेतर खेडतो हतो त्यारे तेनो एक बळद गळियो थई जवाथी तेणे बळदने निर्दयपणे मार मार्यो अने परिणामे बळद मरण पाम्यो, आथी तेनी ज्ञातिए तेने पंक्ति बहार कर्यो हतो[2]

आ खेट अथवा तेनो तद्भव शब्द जेना नाममां अगभूत होय एवां गामो अनेक स्थळे छे, जेमके गुजरातना खेडा,[3] खेडब्रह्मा, संखेडा, चानखेडा,

आदि महाराष्ट्रनां खेडेगाम, आदि आवी उपर्युक्त कथामांनु 'खेट' कयु गाम हशे ए कही शकाय नहि 'उत्कट खेडे वाग्यो ढोल' ए अखानी पंक्तिमां तथा 'उत्कट खेडा करी मसे निर्धनियां धन होय' ए सुभाषितमां 'खेडु' शब्द 'गामडा'ना अर्थमां छे मराठी 'खेडें,' तथा हिन्दी-पंजाबी 'खेडा' पण आ ज अर्थमां छे

१ पोड्डमम्मारम्भ खेड आदी पृ २५८ पूरुप्रकारोपेत खेट एक पृ. १९९ ग्य प्रकारना बीजा उल्लेखो माटे जुओ उदा पृ ६ ५ शासन पृ ५५ १४ वृहमा तथा बृहत्ते भाग १ पृ. १४१ इत्यादि

२ कयु पृ. ५ ५-८६ वळि, पृ. १९९ वळी पृ. २१ वळी पृ २३४

३ खेडा माटे जुओ पुष्ट मां खेटक

खेट आहार

खेटकाहारनो उल्लेख वलभीनां दानपत्रोमां अनेक वार आवे छे गुजरातना खेडा आसपासनो ए प्रदेश हतो आहार ए एक महोटी एकम छे वळी वलभीना लेखोमां आहार अथवा आहरणीनो उल्लेख पर्याप्त तरीके करेलो जणाय छे (जुओ हस्तकल्प टि. ६) 'आवश्यकचूर्णि' उत्तर भाग पृ १५२-५३ मां मरुकच्छ आहरणी'नो निर्देश छे ते आ दृष्टिए रसप्रद छे अहण भरूनो सहायक कनही मल्ल मरुकच्छ आहरणीना एक गामनो ('भरुकच्छाहरणीए गामे') हतो एम त्यां कह्युं छे उत्तराध्ययन'नी शान्तिसूरिनी (पृ १९२) तथा नेमिचन्द्रनी वृत्ति (पृ ७९)मां 'मरुकच्छहरणीगामे' एवो पाठ छे ते देखीती अशुद्धि छे

धान्य इन्धनादि पूरां पाडवा वडे जे प्रदेश ए नगरने माटे उपभोग्य बन ते एनो आहार गणाय एवो निर्देश आगमसाहित्यमां

छे आहारना उदाहरण तरीके मधुराहार, मोडेरकाहार, खेटाहार वगेरे आपेलां छे[2]

1 पुष्ठ, पृ ७१

२ क्षेत्राहारस्तु यस्मिन् क्षेत्रे आहार पियत उत्पद्यते व्याख्यायते (?) यदि वा नगरस्य यो देशो धान्येन्धनादिनोपभोग्य स क्षेत्राहार, तद्यथा —मथुराया समासन्ना देश परिभोग्यो मथुराहारो मोढेरकाहार खेटाहार इत्यादि, सूत्रशी, पृ २४३; खेत्ताहारो जो जस्स णगरस्स आहारो, आहार्यत इत्याहार, विसओ आहारोत्ति उच्चति, जहा मधुराहारो खेडाहारो, सूत्रचू, पृ ३७६ सूत्रकृतमां 'आहार' अने 'विषय' ने पर्याय गण्या छे ए सूचक छे

गजसुकुमाल

कृष्ण वासुदेवना नाना भाई तेमना लग्न द्वारकाना सोमिल नामे एक ब्राह्मणनी पुत्री साथे नक्की थया हता, पण गजसुकुमाले तीर्थंकर नेमिनाथनो उपदेश साभळीने दीक्षा लीधी, अने रात्रे स्मशानमां जई कायोत्सर्ग ध्यानमां रह्या. आ वातनी सोमिल ब्राह्मणने खबर पडता तेने गजसुकुमाल उपर घणो क्रोध चढ्यो अने रात्रे स्मशानमां जई गजसुकुमालना माथा उपर बळता लाकडा मूकीने तेणे तेमनो वध कर्यो. ए समये शुक्ल ध्यानमां रहेला गजसुकुमालने केवल ज्ञान थयुं श्रीकृष्णने आ वातनी खबर पडतां तेमणे सोमिल ब्राह्मणने देहान्त दंड कर्यो[1]

१ अंद पृ ५-१४, आचू, पूर्व भाग, पृ ३५५-५६, आम, पृ ३५६-५९ गजसुकुमाल विशेना प्रासगिक उल्लेखो माटे जुओ बृकभा, गा ६१९६ तथा बृकक्षे, भाग ६, पृ. १६३७, व्यभ, विभाग ४, पेटा विभाग १, पृ २८, इत्यादि

गजाग्रपद

दशार्णपुर पासेना दशार्णकूट पर्वतनुं आ बीजुं नाम छे एक वार त्या महावीर स्वामी समोसर्या त्यारे इन्द्रे ऐरावत उपर बेसीने,

१ शस्त्रपरिज्ञाविवरणमतिगहनमितीव किल वृतं पूज्यैः ।
श्रीगन्धहस्तिमिश्रैर्विवृणोमि ततोऽहमवशिष्टम् ॥ आशी, पृ ७४

२ यदाह तत्त्वार्थमूलटीकाकृद् गन्धहस्ती, जप्रशा, पृ ३८६

३ जीकभा, पृ ११

४ उशा, पृ ५१९, आहे, पृ १११

५ 'सन्मतितर्क,' प्रस्तावना, पृ ५९

६ एज, पृ. ५९–६०

गम्भूता

उत्तर गुजरातमा पाटण पासेनुं गांभू गाम त्यां रहीने शीलाचार्ये 'आचारांगसूत्र'नी वृत्ति रची हती[1]

जुओ **शीलाचार्य**

१ आशी, पृ २८८

गर्दभ

उज्जयिनीना यव राजानो युवराज. एणे पोतानी बहेन अडोलिकाने विषयसेवन माटे भोंयरामां पूरी हती.[1]

कालकाचार्यनी बहेन सरस्वतीनुं अपहरण करनार उज्जयिनीना राजा गर्दभिल्लनुं आ स्मरण करावे छे गर्दभ अने गर्दभिल्ल एक ज जणाय छे

जुओ **कालकाचार्य** अने **गर्दभिल्ल**

१ बृकक्षे, भाग २, पृ ३५९

गर्दभिल्ल

उज्जयिनीनो राजा एणे कालकाचार्यनी बहेन सरस्वतीनु अपहरण कर्युं हतुं, तेथी कालकाचार्ये शकोने बोलावी गर्दभिल्लनो उच्छेद कर्यो हतो.

जुओ **कालकाचार्य** अने **गर्दभ**

९

गिरिनगर

जूनागढ गिरिनी तळेटीमां आवेलुं होवाथी ते 'गिरिनगर' कहेवाय छे

गिरिनगरमां एक अग्निपूजक वणिक दरवर्षे एक घरमां रत्नो भरीने पछी ए घर सळगावी अग्निनुं संतर्पण करतो हतो एक वार तेणे घर सळगाव्युं, ए समये खूब पवन वायो, तेथी आखुं नगर बळी गयुं बीजा एक नगरमां एक वणिक आ प्रमाणे अग्निनुं संतर्पण करवानी तैयारी करे छे पण त्यांना राजाए सांभळ्युं, एटले गिरिनगरनी आगनो प्रसंग याद करीने तेणे एनुं सर्वस्व हरी लीधुं गिरिनगरनो श्रेण नव प्रसूता बीजी उज्जयंत उपर गई हती त्यारे चोरो तेमनुं हरण करी गया हता अने पारसकुल–ईरानी अखातना किनारा उपर तेमने वेची दीधी हती एवुं पण एक कथानक छे १

'सूत्रकृतांग'नी शीलाचार्यनी वृत्तिमां उद्धृत थयेला एक हास्यरसमां रहता बाळकम गिरिनगर आदि नगरोनो राजा करीने राजुं रासवानो प्रयास छे २

विशिष्ट पर्वतवाचो 'गिरनार' शब्द गिरिनगर > गिरिनयर > गिरनार ए क्रमे व्युत्पन्न थयेलो छे गुजरातमां 'नार' अन्त्यवाळां बीजां पण स्थळनामो छे जे आ साथे सरखावी शकाय जेम के नगर–नयर–नार (पेटभेद वाचेनुं) कोटिनगर–कोडिनयर–कोडिनार इत्यादि 'गिरनार'नी बाबतमां 'नगर' पदान्तवाळुं नाम पर्वत माटे रूढ थयुं एटलुं ज नहि पण 'उज्जयंत' 'रैवतक' आदि पर्यायोने तेणे स्थानभ्रष्ट करी दीधा ए वस्तु शब्दोनी अर्थसंक्रान्तिनी दृष्टिए नोंध पात्र छे

जुओ उज्जयन्त अने रैवतक

१ आव. पूर्व भाग पृ. ७१ आम पृ. ८८ निशी पृ. १०८ बृहत् पृ. १८, बृहद् पृ. १७

२ आचू, उत्तर भाग, पृ २८९

३ जुओ कान्यकुब्ज बीजा केटलाक उल्लेखो माटे जुओ अनु, पृ. १५९, आसूचू, पृ. ३३९, जीम, पृ ५६, इत्यादि

४ जुओ 'इतिहासनी केडी'मा ग्रन्थस्थ थयेलो 'गुजरातनां स्थळ-नामो' ए मारो लेख

गिरिनार

सौराष्ट्रमा आवेलो पर्वत, जेने प्राचीनतर साधनग्रन्थोमां 'उज्जयत' कह्यो छे ए माटे 'गिरिनार' एवुं तुलनाए अर्वाचीन नाम 'कल्प-सूत्र'नी 'कौमुदी' टीकामा मळे छे.[1]

जुओ **उज्जयन्त** अने **गिरिनगर.**

१ तत प्रभुरन्यत्र विहृत्य पुनरपि **गिरिनारे** समवसृत', तदा रथनेमिर्दीक्षां जग्राह । कको, पृ. १६९

गुडशस्त्र नगर

आ नगर लाटदेशमा भरुकच्छथी बहु दूर नहि एवे स्थळे आव्युं हशे, केमके खपुटाचार्य पोताना शिष्यने भरुकच्छमां राखीने वृद्धकर व्यतरनो उपद्रव शमाववा माटे गुडशस्त्रमा गया हता, अने पोतानो शिष्य शिथिलाचारी थईने बौद्धोमां भळी गयो होवाना समाचार मळतां पाछा भरुकच्छ आव्या हता[1]

वधु माटे जुओ **खपुटाचार्य**

१ आचू, पूर्व भाग, पृ ५४२, आम, पृ ५१४

गुर्जर

गुजरातनो वासी

जुदा जुदा प्रकारना वैपरीत्यनां उदाहरण आपतां गुर्जरो मध्य देशनी भाषा बोले एने भाषावैपरीत्य कह्युं छे. आवां वैपरीत्यथी हास्यरस निष्पन्न थाय छे.[1] 'कल्पसूत्र'नी टीकाओमां 'राज्यदेश-

आचार्य पासे दीक्षा लीधी त्या अभ्यास करतां एने सम्यक्त्व प्राप्त थयुं गुरु पासेथी व्रतो लीधां अने बधी वात निखालसपणे करी. पछी तेणे एकेन्द्रिय जीवनी सिद्धि करतो 'गोविन्दनिर्युक्ति' नामे ग्रन्थ रच्यो[1]

'गोविन्दनिर्युक्ति' उपलब्ध नथी 'बृहत्कल्पसूत्र'ना वृत्तिकार आचार्य क्षेमकीर्तिए शास्त्र तरीके 'सन्मतितर्क' अने 'तत्त्वार्थ'नी साथे 'गोविन्दनिर्युक्ति'नो सबहुमान उल्लेख कर्यो छे[2] 'आवश्यक-चूर्णि'मां पण 'गोविन्दनिर्युक्ति'ने दर्शनप्रभावक शास्त्र कह्युं छे.[3] 'गोविन्दनिर्युक्ति'नी रचना 'आचारागसूत्र'ना 'शस्त्रपरिज्ञा' अध्ययन-ना विवरणरूपे थई होवी जोईए तथा गोविन्दाचार्य विक्रमना पांचमा सैकामां विद्यमान हता एम पू मुनि श्री पुण्यविजयजीए साधार रीते प्रति-पादन कर्युं छे[4]

१ निचू, उद्दे० ११, आप्तर, पृ २७ आपर मां गोविन्दने 'वाचक' कह्या छे

२ बृक्षे, भाग ३, पृ ८१६, भाग ५, पृ १४५२

३ आचू, पूर्व भाग, पृ ३५३ 'गोविन्दनिर्युक्ति'मानी केटलीक दार्शनिक चर्चाना सक्षिप्त निर्देश माटे जुओ ए ज, पृ ३१

४ 'महावीर जैन विद्यालय रजत महोत्सव ग्रन्थ,' पृ १९९-२०१

गोष्ठामाहिल

आर्य रक्षितसूरिना मामा तेम ज तेमना परिवारना एक साधु एमणे मथुरामा एक अक्रियावादीने वादमा पराजित कर्यो हतो. आचार्ये गच्छाधिपति तरीके तेमने बदले दुर्बल पुष्पमित्रनो अभिषेक कर्यो तेथी विरुद्ध पडी ते सातमा निह्नव—साचा धर्मना सघमां तड पडावनार मिथ्यावादी बन्या.[1] वीर निर्वाण स ५८४=ई स ५८मा दशपुरमा आ निह्नव उत्पन्न थयो[2] एमनो मत 'अबद्धिक' तरीके जाणीतो छे.[3] 'कर्मोनो आत्मा साथे स्पर्श ज थाय छे, अने एथी आत्मा कर्मथी बधातो नथी' एम माननारो ए मत छे[4]

जुओ रक्षित आर्य

१ आव., पूर्व भाग पृ. ४११ भाष्य पृ. १५८-४ १ उत्तर पृ. १७३-८८

२ विशे गा १ १

३ ए च पा १ ९-५ तथा विशे पृ. ७९-२९४ आव., पूर्व भाग पृ. ४१३-१५ भाष्य पृ. ४१५-१८

४ ए च वळी अवचित मतना वरक गुजराती निरूपण माटे जुओ मुनि पुरंदरविजयजीकृत निह्नववाद पृ १६५-८१

गौरीपुत्र

गौरीपुत्रो ' तरीके ' भिक्षुको ' प्रसिद्ध छे एवो उल्लेख कल्पसूत्र 'ना टीकाकारो करे छे परन्तु ' गौरीपुत्र ' तरीके तमोने समाजनो कोई चोक्कस वर्ग उद्दिष्ट छे ' कल्पसूत्र 'नी टीकाओना रचयिताओ चौदमा सैकाथी मांडी गुजरातमां थया छे गुजरातमां मध्यकाळथी भाटचारणो ' देवीपुत्र तरीके प्रसिद्ध छे, तो टीकाकारोए भोजक गौरीपुत्रो ' भाट-चारणो केम न होय !

१ भिक्षव गौरीपुत्रक इति प्रसिद्धा कल्प पृ. ८६, कल्प पृ. ७१

चण्डमयोत

जुओ प्रयोत

चण्डरुद्राचार्य

एमने विषेनुं कथानक नीचे प्रमाणे छे उज्जयिनीमां उपवन उद्यानमां एक वार साधुओ समोसर्या हता एक उद्धतवेशी युवाने मित्रो सहित त्यां आवीने पोताने दीक्षा आपवा मागणी करी आ मश्करी परिहास करे छे एम मानीने साधुओए तेने चण्डरुद्राचार्य नामना कोपशील आचार्य पासे मोकल्यो. चण्डरुद्राचार्ये भस्म मंगावी, लोच करी तेने दीक्षा आपी मित्रो पाछा गया पछी परोढमां विहार करतां आचार्ये शिष्यने आगळ चालवा कह्युं मार्गमां

एक ठूंठा उपर आचार्य पडी गया, आथी क्रोध करीने तेमणे शिष्यना माथा उपर दडनो प्रहार कर्यो पोतानु माथु फूटी जवा छता शिष्ये सम्यक्‌पणे ते सहन कर्यु प्रभातमां शिष्यनुं लोहोथी खरडायेलुं माथुं जोईने आचार्यने पोताना दुर्वर्तननुं भान थयुं, अने क्षपकश्रेणि उपर आरूढ थतां तेमने केवल ज्ञान थयुं[1]

कोपशील गुरुने पण विनयशील शिष्य प्रसन्न करी शके ए विषयमा चडरुद्राचार्यनुं दृष्टान्त आपवामां आवे छे आ आचार्यनुं खरुं नाम रुद्र हशे, पण चड प्रकृतिना होवाथी तेओ चडरुद्र तरीके ओळखाया हशे—जेम अवंतिनो राजा प्रद्योत चंडप्रद्योत कहेवायो हतो तेम

१ आचू, उत्तर भाग, पृ ७७–७८; उचू, पृ ३१, उशा, पृ. ४९–५०, उने, पृ. ४–५, बृकभा, गा. ६१०३–४, बृकक्षे, पृ. १६१२–१३, पाय, पृ. ५६–५७

चित्रकूट

आ मेवाडनो चितोडगढ होवा संभव छे चित्रकूटमां तपश्चर्या करता सुकोशल मुनिने एक वाघणे फाडी खाधा हता.[1] वसतिवाळा पर्वतोमां गोपालगिरि, चित्रकूट आदिनो उल्लेख करेलो छे.[2] आगमोना पहेला संस्कृत टीकाकार याकिनी महत्तरासूनु हरिभद्रसूरि चित्रकूटना विद्वान ब्राह्मण हता[3]

१ मस, गा ४६६

२ गृणन्ति शब्दायन्ते जननिवासभूतत्वेनेति गिरय गोपालगिरि-चित्रकूटप्रभृतय । भसूअ, शतक ७, उद्दे० ६ उपरनी वृत्ति

३ जुओ **हरिभद्रसूरि**

चौलुक्य

एक क्षत्रिय जाति कुलकथाना उदाहरण तरीके ए विशे नीचेना

आशयनो एक श्लोक उद्धृत करवामां आवे छे–' अहो ! पौरुष्य पुत्रीओनुं साहस जगतमा सौथी विशेष छे, केम के प्रेमरहित होय तो पण तेओ पतिनुं मृत्यु थतां अग्निमां प्रवेश छे "

१ एव उमादिकुलोत्पन्नानामन्यतमाया वत् प्रसंघादि छ कुकथा, यथा— अहो पौरुष्यपुत्रीणां साहसं जगतोऽधिकम्। पत्युर्मृतौ विशन्त्यग्नौ या प्रेमरहिता अपि॥ स्थासूत्र पृ. ११ वली जुओ प्रश्नव्या सू. ११९ तथा पाय पृ. ४८

भवण

जुओ भवन

भयविजय

तपागच्छना विजयानंदसूरिना शिष्य वाचक विमलहर्षना शिष्य तेमणे सं १९७७=ई स १६२१ मां ' कल्पसूत्र ' उपर ' दीपिका ' नामे टीका रची हती. आ टीकानुं संशोधन भावविजयगणिए कर्युं हतुं अने तेनो प्रथमादर्श कर्ताए पोते पोताना शिष्य कुंवरविजयनी प्रार्थनाथी तैयार कर्यो हतो '

१ कपी प्रशस्ति.

जिनदत्त

सोपारकवासी श्रावक तेनी पत्नीनुं नाम ईश्वरी हतुं वज्रस्वामीना शिष्य वज्रसेन सोपारकमां आव्या त्यारे जिनदत्त अने ईश्वरी बन्नेए पोताना चार पुत्रो नागेन्द्र, चन्द्र निर्वृति अने विद्याधरनी साथे दीक्षा लीधी हती नागेन्द्र चन्द्र निर्वृति अने विद्याधर ए प्रमाणे साधुओनी चार शाखाओ आ चारथी प्रवर्ती

जुओ वज्रसेन

१ कल्प. पृ. १११ कल्पि पृ १०१ कपी पृ. १५१

जिनदास

मथुरानो श्रावक एनी पत्नीनुं नाम साधुदासी हतु तेमनी पासे कम्बल-संबल नामे बे उत्तम बळदो हता एक वार मथुरामा भंडीर यक्षनी यात्रा हती त्यारे जिनदासनो एक मित्र ए बळदोने गाडे जोडी लई गयो, अने तेणे वळी बीजाने आप्या. ज्यारे पाछा लाववामां आव्या त्यारे कंबल-संबल खूब थाकी गया हता, अने थोडा समय पछी तेओ अनशन करीने मरण पाम्या,[1] एवी कथा अनेक टीका-ग्रन्थोमा छे

जुओ कम्बल-सम्बल

१ आचू, पूर्व भाग, पृ २८१, आनि, गा ४६९-७१, बृक्षे, भाग ५, पृ १४८९, कसु, पृ ३०६-७; ककि, पृ. १०५, कदी, पृ ९०.

जिनदासगणि महत्तर

परंपरा प्रमाणे, आगमो उपरनी चूर्णि नामथी प्रसिद्ध संख्याबंध प्राकृत टीकाओना कर्ता. 'नंदिसूत्र' उपरनी तेमनी चूर्णि शक सं ५९८=ई स ६७६ मां रचायेली छे,[1] एटले तेमनो समय ईसवी सनना सातमा सैकामा निश्चित छे 'निशीथसूत्र' उपरनी विशेष नामे चूर्णि पण तेमनी कृति छे[2] 'अनुयोगद्वारसूत्र' चूर्णिनी प्रतोने अंते जिनदासगणिनो कर्ता तरीके नामोल्लेख छे[3] आ उपरांत 'आवश्यक' अने 'उत्तराध्ययन'नी चूर्णिओ पण तेमनी कृतिओ गणाय छे. 'उत्तराध्ययन' चूर्णिने अते कर्ताए पोतानुं नाम आप्युं नथी, पण पोताना गुरु तरीके गोवालिय महत्तरनो नामोल्लेख कर्यो छे 'उत्तराध्ययन' चूर्णिना कर्ता गोवालिय महत्तरना शिष्य जिनदासगणि महत्तर छे एम स्वीकारीए तो, चूर्णिमांना उल्लेख अनुसार तेओ वाणिज्य कुल, कोटिक गण अने वज्रशाखाना साधु हता एम मानवु प्राप्त थाय छे[4]

टीकाने अते स्पष्ट कर्युं छे के पोते एनी रचनामां जिनभटना अभिप्रायने अनुसर्या छे.[3] आनो अर्थ ए थयो के जिनभटाचार्ये 'आवश्यक सूत्र' उपर एक टीका रची हती, जे अत्यारे उपलब्ध नथी. 'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी कोट्याचार्यनी वृत्तिमा स्थळे स्थळे 'मूलटीका' अने 'आवश्यक मूलटीका'मांथी उद्धरणो आप्यां छे[4] ते जिनभटाचार्यनी टीकामांथी होवां जोईए

१ विको (भा गा ४९८ उपरनी वृत्ति), पृ १८६

२ प्रच, ९-श्लो २, ३०, १८१

३ समाप्ता चेयं शिष्यहिता नाम आवश्यकवृत्तिटीका । वृत्तिः सिताम्बराचार्यजिनभटनिगदानुसारिणो विद्याधरकुलतिलकाचार्यजिनदत्त-शिष्यधर्मतोयाकिनीमहत्तरासूनोरल्पमातुराचार्यहरिभद्रस्य । आह, अंतभाग.

४ आको, पृ ६०९, ६७४, ६७५, ७९३, ८४६, ८५५ इत्यादि जुओ प भगवानदासनी प्रस्तावना, पृ, १-४.

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण

'आवश्यक सूत्र'ना सामायिक अध्ययननी भद्रबाहुनी निर्युक्ति उपर गाथाबद्ध 'विशेषावश्यक भाष्य' तथा बीजा अनेक प्रौढ ग्रन्थो रचनार आचार्य ए महान भाष्यग्रन्थने अनुलक्षीने आचार्य मलयगिरिए जिनभद्रगणिने 'दुष्षमान्धकारनिमग्नजिनवचनप्रदीप' कह्या छे.[1] जेसलमेर भंडारनी एक प्राचीन ताडपत्रीय प्रतने आधारे आचार्य जिनविजयजीए 'विशेषावश्यक भाष्य'नो रचनाकाळ शकाब्द ५३१=ई. स ६०९ होवानु निश्चितपणे पुरवार कर्यु छे[2]

जिनभद्रगणिए पोते 'विशेषावश्यक भाष्य' उपर एक टीका रची हती ए अत्यारे उपलब्ध नथी, पण कोट्याचार्ये[3] तथा मलधारी हेमचन्द्रे[4] पोताना विवरणोमां एनो निर्देश कर्यो छे. पछीना समयमां थयेला आगमसाहित्यना अनेक टीकाकारोए जिनभद्रगणिना अभिप्रायो

२ अन्यदा कुङ्कणे जालपतनं श्रुत्वा महिरावणाधिपतिं मल्लिकार्जुनं प्रति दूतं प्राहिणोत् । पुरातनप्रबन्धसंग्रह,' पृ ३९

ढण्ढणकुमार

कृष्ण वासुदेवनो ढंढणा नामे राणीथी थयेलो पुत्र एने विशे आ प्रमाणे कथानक मळे छे: तेणे तीर्थंकर नेमिनाथनो उपदेश सांभळीने दीक्षा लीधी हती, पण पूर्वकर्मना उदयने कारणे एमने आहार प्राप्त थतो नहोतो आथी पोतानी लब्धिथी आहार मळे तो ज स्वीकारवो एवो अभिग्रह तेमणे लीधो हतो हवे, एक वार ढंढण मुनि द्वारकामां गोचरी माटे नीकळ्या त्यारे मार्गमा कृष्णे तेमने वंदन कर्युं, आथी 'आ कोई प्रभावशाळी मुनि छे' एम धारीने एक गृहस्थे तेमने लाडु वहोराव्या पछी ढढण मुनिए नेमिनाथ पासे जईने पोतानी लब्धिथी लाडु मळ्यानी वात करी, त्यारे नेमिनाथे कह्यु के 'ए आहार तो वासुदेवनी लब्धिनो छे' आथी कया पूर्वकर्मने कारणे पोताने आहारप्राप्ति थती नथी ए विशे ढंढण मुनिए नेमिनाथने प्रश्न करता तीर्थंकरे तेमनो पूर्वभव कह्यो अने अनेक खेडूतो अने बळदोने तेमणे आहारनो अतराय पाड्यो हतो ए वात करी आ सांभळी ढढणमुनिए लाडुने परठवी दीधा अने पश्चात्तापनी भावना भावता तेमने केवल-ज्ञान थयुं[1]

१ उषा, पृ ११८–१९.

तगरा

'अनुयोगद्वार सूत्र'मा 'समीप नाम'नां उदाहरण आपता कह्युं छे के गिरि पासेनु नगर ते गिरिनगर, विदिशानी पासेनुं नगर ते वैदिशनगर (विदिशा), वेणा पासेनुं नगर ते वेणातट अने तगरा पासेनु नगर ते तगरातट' आम तगरातट नगर तगरा नदीने किनारे आवेलुं हतुं. टीकाओमा एनो सक्षेप करीने मात्र 'तगरा' तरीके उल्लेख करवामा आव्यो छे राध आचार्य [illegible] मा

आव्या हता अने तेमना शिष्यो उज्जयिनीथी तगरामां तेमनी पासे आवी पहोंच्या हता[1] अरहमित्र नामे बीजा एक आचार्य पण तगरामां रहेता हता[2] एक तगरामसी आचार्य पास साठ शिष्यो हता, जेमांना आठ व्यवहारी (व्यवहारक्रिया-प्रवर्तक) अने बाकी अव्यवहारी हता ए आठ व्यवहारी शिष्योनां नाम पुष्यमित्र, वीर, शिवकोष्ठक, आर्यास, अर्हत्क, धर्मान्वग, स्कन्दिल अने गोपऋषभ ए प्रमाणे हतां[3]

तगरा नगर आभीर देशमां आवेलु हतु वि स ९८९=ई स ९३२ मां वढवाणमां रचायला, दिगंबर आचार्य हरिषेणना 'बृहत् कथाकोश'मां तरा' (तगरा>तयरा>तहरा>तेरा) नगरने 'आभीर-राज्य महादेश'मां बतावेलु छे दिगंबर कवि कनकामर मुनिए बारमा शतकमां रचेला अपभ्रंश काव्य 'करकंडचरिउ' (४-५)मां तेरापुरनुं तथा त्यांना गुफामन्दिरनुं वर्णन छे तथा ए ज काव्य जैन धार्मिक दृष्टिए तेरापुरनो केटलोक इतिहास पण आपे छे

हैदराबाद राज्यना उस्मानाबाद जिल्लामां तीर्णा नदीना किनारे आवेलुं तेरा नामनुं गामडुं आ ऐतिहासिक तगरा नगरीनो अवशेष छे एम मानवामां आवे छे अत्यारे पण त्यां प्राचीन जैन गुफाओना अवशेष विद्यमान छे

जुओ आभीर

१ ते कि सं उज्जेणाओ । १ गिरिउज्जेणीए नयरं गिरिगयरं गिरिगयसीसे नयरं तेगियं नयरं तेणाए उज्जेणीए नयरं तेणायएं तगराए उज्जेणि नगरं तगरउज्जं ते सं उज्जेणाओ । व्यव. पृ. १४९

२ व्यव पृ २

३ कथि व्य. १२ व्यव पृ. ९

४ व्यव. विभाग ४ वेध विभाग १ पृ. १०-७

५ आभीराख्यमहादेशे तेराख्यनगरं परम् ।
तदा नीलमहानीलौ प्रयातौ विजिगीषया ॥
'बृहत् कथाकोश,' ५६ ५२

६ 'करकण्डचरिउ,' प्रस्तावना, पृ ४१-४८.

तरङ्गवती कथा

पादलिप्ताचार्यकृत एक धर्मकथा.

जुओ **पादलिप्ताचार्य**

ताम्रलिप्ति

ताम्रलिप्तिने 'द्रोणमुख' कहेवामां आव्युं छे जल अने स्थल एम बन्ने मार्गोए ज्यां जई शकाय ते द्रोणमुख एना उदाहरण तरीके भरुकच्छ अने ताम्रलिप्तिनां नाम आपवामां आवे छे[1] सिन्धु, ताम्रलिप्ति आदि प्रदेशोमा मच्छर पुष्कळ होय छे एवो उल्लेख 'सूत्रकृतांग सूत्र'नी चूर्णिमां छे[2]

ताम्रलिप्तिने साधारण रीते बंगाळनु तामलुक गणवानो मत पुराविदोमां छे,[3] पण गुजरातना स्तंभतीर्थ—खभातने पण प्राचीन काळथी ताम्रलिप्ति तरीके ओळखवामा आवे छे एना मजबूत पुरावा छे,[4] अने जैन आगमग्रन्थो उपरनी टीकाचूर्णिओ गुर्जर देशमा रचायेली होई एमा बंगाळना ताम्रलिप्ति करतां गुजरातना ज मोटा वेपारी मथक ताम्रलिप्ति (खभात)नो द्रोणमुख तरीके निर्देश होय एम मानवुं वधारे सयुक्तिक छे

प्रभाचन्द्रसूरिना 'प्रभावकचरित' (ई स १२७८)ना 'हेमाचार्यचरित' (श्लो. ३२-४१) मा 'स्तभतीर्थ' अने 'ताम्रलिप्ति' ए बन्ने नामो पर्यायो तरीके वापरेला छे ए वस्तु पण अहीं नोंधवी जोईए

जुओ **सिन्धु**

१ दोहिं गम्मति जलेण वि थलेण वि दोणमुहं जहा भरुयच्छ तामलित्ती एवमादि, आसूचू, पृ २८२

द्रोण्यो मार्गो मुखमस्येति द्रोणमुखं-जलस्थलनिर्गम-प्रवेशं यथा भरुकच्छ ताम्रलिप्तिर्वा जुओ पृ १५.

द्रोणमुखं जलस्थलनिर्गमप्रवेश इवा मरुकच्छं ताम्रलिप्तिर्वा जुओ पृ. १५८ वळी जुओ प्रम पृ. ४८

जुओ भरुकच्छ

१ सूत्र पृ १ १

३ कोटि पृ २ १

४ जमातनो इतिहास पृ. १८-१९, तथा पृ जुओ स्तम्भतीर्थ.

तुम्बवनग्राम

अवन्ति जनपदमां तुम्बवनग्राममां धनगिरि अने सुनंदा ए दंपतीना पुत्र तरीके वज्रस्वामी जन्म्या हता ¹

जुओ वज्र आर्य

१ आव, पूर्व भाग पृ १९ जम पृ १८७

तोसलिपुत्राचार्य

तोसलिपुत्राचार्य दशपुरमां आव्या त्यारे तेमनी पासे आर्य रक्षिते दीक्षा लीधी हती. रक्षित विद्वान होई राजाना प्रीतिपात्र हता; तेथी राजा कदाच दीक्षा नहि लेवा दे एम धारीने आचार्य तेमने लईने अन्यत्र चाल्या गया हता जैन अनुश्रुति प्रमाणे आ पहेली शिष्यचोरी ('पढमा सेहनिप्फेडिआ') हती

१ जम पृ १९४-९५ अने पृ १४ वळी पृ १७२-७३ इत्यादि

थावच्चापुत्र

एने विशेनी कथा आ प्रमाणे छे द्वारका नगरनी समृद्ध सार्थवाही थावच्चानो ए पुत्र हतो युवावस्थामां आवतां इभ्यकुळनी बत्रीस कन्याओ साथे तेनुं लग्न थयुं हतुं एक वार अरिष्टनेमि तीर्थंकर द्वारकामां सुरप्रिय उद्यानमां समोसर्या हता कृष्ण वासुदेव प्रजाजनो साथे तेमने वंदन करवा माटे आव्या तेमनो उपदेश सांभळीने

थावच्चापुत्रने प्रव्रज्या लेवानी इच्छा थई. माताए तथा वासुदेवे घणुं समजाव्या छता ज्यारे एनो निश्चय चलायमान थयो नहि त्यारे वासुदेवे घोषणा करावी के 'जेओ मृत्युभयनो नाश करवा इच्छता होय छतां संबंधीओना योगक्षेमनी चिन्ताथी तेम करी शकता न होय तेओ थावच्चापुत्रनी साथे दीक्षा ले, एमना संबंधीओनो निर्वाह हुं करीश.' आथी केटलाक विचारक युवानोए थावच्चापुत्रनी साथे दीक्षा लीधी पछी थावच्चापुत्रे तीर्थंकरना स्थविरो पासे चौद पूर्वोनु अध्ययन कर्युं पोताना अंतेवासी बधा युवानोने तीर्थंकरे थावच्चापुत्रने एमना शिष्य तरीके सोंपी दीधा. पछी विहार करता थावच्चापुत्रे शैलकपुरना शैलक राजाने उपदेश आप्यो अने ५०० मत्रीओ सहित तेने श्रमणोपासक बनाव्यो सौगंधिका नगरीनो नगरशेठ सुदर्शन शुक नामे परिव्राजकना उपदेशथी तेना शौचमूलक प्रवचनमां मानतो हतो तेने पण थावच्चापुत्रे श्रमणोपासक बनाव्यो, एटलुं ज नहि, सुदर्शननो गुरु शुक पण थावच्चापुत्रनी वाणी सांभळी पोताना हजार तापसो सहित तेमनो शिष्य थयो. छेवटे थावच्चापुत्र पोताना परिवार सहित पुंडरीक (शत्रुंजय) पर्वत उपर गया अने अनशन करीने सिद्ध, बुद्ध अने मुक्त थया[1]

१ ज्ञाध, श्रु १, अध्य ५ (शैलकज्ञात)

दण्डकारण्य

जुओ **कुम्भकारकट**

दशपुर

माळवमा आवेलुं मंदसोर.[1]

दशपुरनी स्थापना केवी रीते थई एनो परंपरागत इतिहास आम आपवामा आवे छे वीतमय नगरना राजा उदायन पासे जीवंतस्वामी महावीरनी गोशीर्षचदननी सुन्दर काष्ठप्रतिमा हती ते उज्जयिनीनो

१ आचू, पूर्व भाग, पृ. ४७९, आम, पृ. ४६८.

दशार्ह

अंधकवृष्णिना दश पुत्रो, जेमां नेमिनाथना पिता समुद्रविजय सौथी मोटा हता तेओ दशार्ह अथवा दसार राजाओ तरीके जाणीता छे.[1] ए दशार्हो पैकी सौथी नाना वसुदेवना पुत्र कृष्ण वासुदेव हता. एमनां नाम–समुद्रविजय, अक्षोभ, स्तिमित, सागर, हिमवान, अचल, धरण, पूरण, अभिचंद्र, वसुदेव[2] कुन्ती अने माद्री ए दशार्होनी बहेनो हती

१ दवैचू, पृ ४१

२ अद, वर्ग १-२

देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

दूष्यगणिना शिष्य[1] परंपरानुसार तेओ 'नंदिसूत्र'ना कर्ता छे वीरनिर्वाण स ९८०=ई स. ४५४ (वि सं ५१०) अथवा ९९३=ई स ४६७ (वि सं ५२३)मा तेमनी अध्यक्षता नीचे वलभीमां एक परिषद् मळी हती अने तेमां जैन श्रुतनी छेवटनी संकलना करवामां आवी हती. एमां आर्य स्कन्दिले तैयार करेली जैन श्रुतनी माथुरी वाचना देवर्धिगणिए मुख्य वाचना तरीके सर्व-संमतिथी चालु राखी हती, अने आर्य नागार्जुननी वलभी वाचनाना मुख्य पाठभेदो 'वायणंतरे' अथवा एवा अर्थनी नोंध साथे स्वीकार्या हता वलभी वाचनाना विशेष भेदो टीकाकारोए 'नागार्जुनीयास्तु पटन्ति' एवा टिप्पण साथे टांक्या छे, एटले अध्ययन–अध्यापनमां वलभी वाचनानुं महत्त्व स्वीकारवामा आवतुं हतुं ए निश्चित छे[2] देवर्धिगणिए जैन श्रुतनी एक नवी वाचना तैयार करी एम न कहेवाय, पण तेमणे एक पूर्वकालीन वाचनाने सर्वमान्य बनाववानु तेम ज बीजी वाचनाना मुख्य पाठभेदो साचवी राखवानु महत्त्वनुं कार्य कर्युं. वळी

तमाम उपलब्ध आगमसाहित्यने तेमना नेतृत्व नीचे एक चोक्कस पद्धति अनुसार एक साथे लिपिबद्ध करवामां आव्या ए पण जैन इतिहासमां एक घणो महत्त्वनो बनाव गणाय

'नंदिसूत्र'ना प्रारंभमां देवर्धिगणिनी गुरुपरंपरा आपवामां आवी छे ए प्रमाणे तेओ महावीरथी बत्रीसमा युगप्रधान आचार्य छे ए पट्टावलि नीचे प्रमाणे छे महावीर पछी आर्य सुधर्मा, जंबुस्वामी, प्रभवस्वामी, शय्यंभव, यशोभद्र, संभूतिविजय, भद्रबाहु, स्थूलभद्र, महागिरि, सुहस्ती बलिस्सह स्वाति स्यामार्य, शांडिल्य समुद्र, मंगू आर्य धर्म, भद्रगुप्त वज्र रक्षित, नंदिल नागहस्ती, रेवतिनक्षत्र, ब्रह्मदीपक सिंह स्कन्दिलाचार्य, हिमवंत नागार्जुन गोविन्द, भूतदिन्न, लौहित्य, दूष्यगणि, देवर्धिगणि[1] 'कल्पसूत्र' अंतर्गत स्थविरावली अनुसार देवर्धिगणि महावीरथी ३२मा नहि, पण ३४मा पुरुष हता त्यां देवर्धिगणिनी गुरुपरंपरा नीचे मुजब आपेली छे—महावीर पछी सुधर्मा, जंबु, प्रभव शय्यंभव, यशोभद्र संभूतविजय—भद्रबाहु स्थूलभद्र सुहस्ती सुस्थित—सुप्रतिबुद्ध इन्द्रदिन्न, दिन्न सिंहगिरि, वज्र, रथ पुष्यगिरि, फल्गुमित्र, धनगिरि, शिवभूति भद्र, नक्षत्र, रक्ष नाग, जेहिल विष्णु, कालक संपलित—भद्र, वृद्ध संघपालित, हस्ती धर्म सिंह, धर्म, शांडिल्य देवर्धि

जुओ नागार्जुन, मल्लि आचार्य, मथुरा, वलभी

१ नंस पृ. ६९

२ कल्प पृ ११८–१९, कल्पकि. पृ १२९–३१ कसु., २ ५ ७८; ज्ञानी पृ १५९ कटि पृ. ११३–१९, स्थावि

३ नंसू स्थविरावली, गा. १–४१

४ विविध व्याख्याकारोमां आ देवर्धिगणिनी गुरुपरंपरानी मुद्रामा[illegible] अर्थ माटे जुओ मुनि कल्याणविजयजीकृत वीरनिर्वाण संवत् और

जैन कालगणना,' पृ ११९ थी आगळ

देविलासुत

उज्जयिनीनो राजा एनी कथा आ प्रमाणे छे' पोताना केशमां पळिया जोईने तेणे राणीनी साथे तापस तरीके दीक्षा लीधी हती राणी ए समये सगर्भा हती. यथासमये तेणे पुत्रीने जन्म आप्यो, पण प्रसूतिकाळे ते मरण पामी. पुत्रीने बीजी तापसीओए उछेरी. पछी समय जता युवावस्थामां आवेली पुत्रीने जोईने देविलासुत मोहित थयो अने तेने आश्लेष करवा जतां भोंय उपर पडी गयो पोताना दुर्वर्तननुं फळ अहीं ज प्राप्त थयु छे, एम समजीने तेणे पुत्री साध्वीओने आपी अने पोते विरक्त थईने सिद्धिमा गयो.[1]

१ आचू, उत्तर भाग, पृ २०२-३

देवेन्द्रसूरि

तपागच्छना स्थापक जगच्चंद्रसूरिना शिष्य अने पट्टधर. तेमणे 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र' उपर वृत्ति लखी छे, जे 'वंदारुवृत्ति' नामे प्रसिद्ध छे[1]

देवेन्द्रसूरि मत्री वस्तुपालना समकालीन होई ई स ना तेरमा शतकमां विद्यमान हता खंभातमां तेमनु व्याख्यान साभळनार श्रोताओमा वस्तुपाल पण एक हतो. देवेन्द्रसूरिए प्राचीन कर्मग्रन्थोनो उद्धार करीने 'कर्मविपाक,' 'कर्मस्तव,' 'बंधस्वामित्व,' 'षडशीति' अने 'शतक' नामे नव्य कर्मग्रन्थो तथा ते उपरनी स्वोपज्ञ टीकाओ रची आ सिवाय पण बीजा केटलाक ग्रन्थो तेमणे रचेला छे, जे पैकी प्राकृत 'सुदर्शनाचरित्र'ना सहकर्ता तेमना गुरुभाई विजयचंद्रसूरि हता देवेन्द्रसूरिनुं अवसान सं. १३२७=ई स १२७१मा थयुं हतुं[2]

१ मश्र, पृ ९६

२ जैसाइ, !

द्रोणाचार्य

'ओघनिर्युक्ति' ना टीकाकार नवांगीवृत्तिकार अभयदेवसूरि कृत वृत्तिओनुं संशोधन द्रोणाचार्य जेमां मुख्य हता एवी एक पण्डितपरिषदे कर्युं हतुं. द्रोणाचार्य पूर्वाश्रममां क्षत्रिय हता तथा अणहिल्लवाडना चौलुक्य राजा भीमदेव पहेलाना मामा हता. तेमनो समय विक्रमना १२मा शतकना पूर्वार्धमां अर्थात् ई स ना ११मा शतकना उत्तरार्धमां निश्चित छे. एमनुं मुख्य प्रवृत्तिक्षेत्र अणहिल्लवाड हतुं.

१ जुओ अभयदेवसूरि

२ प्रज्ञापनाद्युपाङ्गस्य कृपावर्णनकोऽपरः ।
श्रीभीमभूपतिस्तत्र भ्रातृकुलार्कभः ॥
तस्य शिक्षागुरुर्द्रोणाचार्यः श्वेताम्बराग्रणीः ।
अस्ति भ्रातृव्योऽस्मच्छ्रौ भीमभूपस्य मातुलः ॥
प्रभ १८-श्लो ५-६

३ जुओ अणहिलपाटक

द्वारका-द्वारवती

द्वारकाना स्थान विशे सविस्तर चर्चा माटे जुओ पुरवणीमां द्वारका.

साडीपचीस आर्य देशो पैकी सुराष्ट्रनी राजधानी तरीके द्वारवतीनो उल्लेख छे. आ नगरने नव योजन पहोळुं अने बार योजन लांबुं वर्णववामां आवेलुं छे. एनी आसपास पथ्थरनो प्राकार हतो ए दर्शावतो उल्लेख वस्तुस्थितिनो सूचक छे, जो के अन्यत्र एने सुवर्णना प्राकारवाळी वर्णवी छे. एनाथी ईशानमां रैवतक नामे पर्वत हतो. एमां नंदनवन नामे उद्यान हतुं अने त्यां सुरप्रिय यक्षनुं आयतन हतुं.

जुदे जुदे प्रसंगे अंधकवृष्णि, कृष्ण वासुदेव तथा बलदेवने द्वारकाना राजा तरीके वर्णव्या छे. वळी द्वारकाना विनाश

निवासीओमां समुद्रविजय प्रमुख दश दशारो, बलदेव प्रमुख पांच महावीरो, उग्रसेन प्रमुख सोळ हजार राजाओ, प्रद्युम्न प्रमुख साडात्रण करोड कुमारो, सांब प्रमुख साठ हजार दुर्दांत पुरुषो, वीरसेन प्रमुख एकवीस हजार वीर पुरुषो, रुक्मिणी प्रमुख सोळ हजार देवीओ, अनंगसेना प्रमुख अनेक गणिकाओ[७] तथा बीजा अनेक सार्थवाहो आदि हता.[८] आ उपरथी यादवोनी राजपद्धति वज्जी, लिच्छवी आदिनी जेम गणसत्ताक हती अने तेमां अनेक यादव-विशेषो राजा नाम धारण करी शकता हता एम अनुमान थाय छे.[९]

प्रतिवासुदेव जरासंधना भयथी यादवोनो समूह मथुराथी द्वारका आव्यो हतो[१०] द्वारकाना नाश माटे आगमसाहित्यमां नीचे प्रमाणे कथा आपवामां आवे छे यादवकुमारोए दारू पीने द्वैपायन ऋषिने मार्या हता आथी बालतप करीने, द्वारवतीविनाशनु निदान करीने मरण पामी द्वैपायन अग्निकुमार देव तरीके उत्पन्न थया हता. अग्निकुमारे द्वारवती बाळीने भस्म करी दीधी हती. मात्र बलराम अने कृष्ण बे ज जण बचीने नीकळया हता.[११]

१ प्र, पृ. ५५, सुकृशी, पृ १२३, बृकक्षे, भाग ३, पृ. ९१२–१४.

२ ज्ञाध, पृ ९९ तथा १०१, वृद, पृ. ३८–४१, -इत्यादि,

३ पाषाणमय प्राकारो यथा द्वारिकायाम्, बृकक्षे, भाग २, पृ २५१

४ दा त बारवई नाम नगरी होत्था चामीयरपवरपागारणाणा-मणिपचवन्नकविसीसकसोहिया, ज्ञाध, पृ ९९.

५ अद, पृ १, वृद, पृ ३८–४१, ज्ञाध, पृ ९९, आम, पृ. ३५६, इत्यादि

६ दा त तत्थ ण बारवतीनयरीए कण्हे णाम वासुदेवे राया परिवसति, अद, पृ २.

तत्थ ण बारवतीए नयरीए अधगवण्ही णाम राया परिवसति, ए ज, पृ. २

दीवमां चालतो मुख्य सिक्को 'साभरक' कहेवातो अने 'रूपक' कह्यो छे, एटले ते चादीनो होवो जोईए. बे साभरक बराबर उत्तरापथनो एक रूपक अने उत्तरापथना बे रूपक बराबर पाटलिपुत्रनो एक रूपक थतो. वळी आ ज कोष्ठक बीजी रीते आपेलुं छे के दक्षिणापथना बे रूपक बराबर द्राविड प्रदेशमा आवेल कांचीपुरनो 'नेलक' नामनो एक रूपक अने बे नेलक बराबर पाटलिपुत्रनो एक रूपक थाय छे[४]

१ पत्तन द्विधा–जलपत्तन च स्थलपत्तन च। यत्र जलपथेन नावादिवाहनारूढ भाण्डमुपैति तद् जलपत्तनं, यथा द्वीपम्। बृकसे, भाग २, पृ ३४२.

२ 'एन्श्यन्ट टाउन्स अेन्ड सिटीझ इन गुजरात अेन्ड काठियावाड,' पृ २६

३ दो साभरगा दीविच्चगाउ सो उत्तरापथे एक्को ।
दो उत्तरापथा पुण पाडलिपुत्ते हवति एक्को ॥
(भा. गा ९५२)

"साहरको" णाम रूपक, सो य दीविच्चिको। त दीव सुरट्ठाए दक्खिणेण जोयणमेत्त समुद्दमवगाहित्ता भवति, निचू, भाग २, पृ, २२५

४ निभा, गा ९५२–५३, निचू, भाग २, पृ २२५, बृकमा, गा ३८९१–९२, बृकसे, भाग ४, पृ १०६९

धनपाल पण्डित

ई स ना १० मा शतकमा थयेला माळवाना राजाओ मुंज अने भोज बन्नेनो मान्य कवि भोजना विनोद माटे धनपाले 'तिलकमंजरी' नामे कथाग्रन्थ रच्यो हतो

'श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र' उपरनी रत्नशेखरसूरिनी वृत्तिमा धनपाल विशेना बे उल्लेखो छे एक उल्लेख प्रमाणे, धनपाल वैदिक धर्मावलंबी हतो, पण पोताना बंधु शोभनना ससर्गथी तेणे जैन धर्मनो स्वीकार कर्यो हतो' बीजा उल्लेख प्रमाणे, प्रतिबोध पामेला धनपाले काव्य-

गाष्ठिमां भोजन विनोद करावनापूर्वक उपदेश आपीने तेनी पास मृगया तथा मनमां पशुवधनो त्याग कराव्यो हतो.[1]

१ प्राकृत पृ ११८

१ एज पृ. ४१ धनपाल तथा तेनी कृतिओ माटे जुओ 'जैन साहित्य संशोधक,' खंड १ अंक १ तथा ३ अमदावाद, पृ ९ –१ १

धनमित्र

आ विशेनी कथा नीचे प्रमाणे छे उज्जयिनीना धनमित्र नामे वणिके पुत्र धनशर्मा साथे दीक्षा लीधी हती तेओए एक वार मध्याह्नकाळे विहार कर्यो हतो. क्षुल्लक (बाळसाधु) धनशर्मा तृषातुर थतां पिताए मार्गमां आवती एक नदीमांथी पाणी पीवा कह्युं धनशर्माए पाणीनो अंजलि ऊंची करी पण विचार करीने पाणीने सचित्त जाणीने न पीधुं अने पिपासा परीषह सहन करीने मरण पाम्या[1]

१ कथा पृ ८७ जुओ पृ १८ आ बीजी कृतिमां कथानो केटलोक चमत्कारपूर्ण विस्तार आपवामां आव्यो छे.

धन्वन्तरि

द्वारकामां कृष्ण वासुदेवना बे वैद्यो हता—धन्वन्तरि अने वैतरणि धर्मानो धन्वन्तरि अभव्य–मुक्तिने अयोग्य हतो, ज्यारे वैतरणि भव्य–मुक्तियोग्य हता धन्वन्तरि साधुओने सावद्य औषध बतावतो ज्यारे वैतरणि प्रासुक–निर्दोष औषध सूचवतो धन्वन्तरिने आनुं कारण पूछवामां आवे त्यारे ते कहेतो के— में श्रमणोने माटे वैद्यकशास्त्रनु अध्ययन कर्युं नथी

१ आव. पूर्व भाग पृ ४६ –६१ भाग पृ ४६१

धर्मसागर उपाध्याय

तपागच्छाचार्य हीरविजयसूरिना शिष्य एमणे सं १६२८–ई स १५७२ मां राजधन्यपुर–राधनपुरमां कल्पसूत्र उपर 'किरणावली' नामे प्रमाणभूत टीका रची हती अमदावादनिवासी संघवी

कुंअरजीए ए टीकानी सेंकडो प्रतो लखावी हती[1]

१ कक्रि, प्रशस्ति, पृ २०३-४ धर्मसागरे बीजा पण अनेक ग्रन्थो रचेला छे एमनी खंडनप्रधान शैलीए तत्कालीन जैन समाजमां मोटो खळभळाट मचाव्यो हतो एमनी रचनाओ माटे जुओ जैसाई, पृ ५८२-८३.

ध्रुवसेन

ध्रुवसेन राजाने पुत्रमरणथी थयेलो शोक शमाववा माटे आनंदपुरमा सभा समक्ष 'कल्पसूत्र' वाचवामां आव्युं हतुं[1]

जुओ **आनन्दपुर**

१ कस, पृ ११८-१९, कसु, पृ. १५-१६, ३७५-७८, कक्रि, पृ ९, १६, ११०, कदी, पृ ११३-१५, कको, पृ ९

नटपिटक

भरुकच्छथी उज्जयिनी जवाना मार्गमां आवेलुं एक गाम

भरुकच्छथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिष्यने उज्जयिनी मोकल्यो हतो, पण मार्गमा कोई मादा साधुनी सारवार माटे एने रोकावुं पड्युं हतुं, अने एम समय वीती जता तेणे नटपिटक (प्रा नडपिडअ) गाममा नागगृहमां चातुर्मास कर्यो हतो[1]

१ आचू, उत्तर भाग, पृ २०९

नन्दन उद्यान

द्वारकाना ईशान खूणे रैवतकनी पासे आवेलुं उद्यान

जुओ **द्वारका, द्वारवती** अने **रैवतक**

नभोवाहन

भरुकच्छनो नभोवाहन राजा कोशसमृद्ध हतो प्रतिष्ठाननो सालवाहन बलसमृद्ध हतो दर वर्षे सालवाहन राजा भरुकच्छने घेरो घालतो अने वर्षाऋतु बेसे एटले पोताना नगरमां पाछो जतो नभोवाहन कोशसमृद्ध हतो, एटले घेरा

राज्य करतो हतो,[5] ए ज आगमसाहित्यमा जेनो 'सालवाहन–सातवाहन' एवो नामनिर्देश कर्यो छे ए संभवे सातवाहनो अने पश्चिम भारतना शक–क्षत्रपो वच्चे शत्रुवट चाली आवती हती ए इतिहाससिद्ध छे. शातकर्णिना उत्तराधिकारी वासिष्ठीपुत्र पुळुमायीना एक लेखमां[6] शातकर्णिने माटे 'खखरात–वस–निरवसेस–करस सातवाहन–कुल–यस–पतिथापन–करस' (=सं क्षहरातवंश–निरवशेषकरस्य शातवाहनकुलयश.प्रतिष्ठापनकरस्य) एवा शब्दो वापरीने एने क्षहरातवशनो उच्छेद करनार तरीके वर्णव्यो छे ए घणुं सूचक छे.

जुओ **सातवाहन, सालवाहन**

१ आचू, उत्तर भाग, पृ २००–२०१

२ जुओ **वज्रभूति आचार्य**

३ रायचौधरी, 'पोलिटिकल हिस्टरी ऑफ ऍन्श्यन्ट इन्डिया,' पृ २२१ थी आगळ

४ 'सिलेक्ट इन्सक्रिप्शन्स,' न ५८, टिप्पण १

५ एज, न ८३–८४.

६ एज, न. ८६

नर्मदा

नर्मदा नदी 'आवश्यक सूत्र'नी चूर्णिनी एक कथामा स्त्रीचरित्रविषयक एक प्राकृत श्लोकनो पूर्वार्ध नीचे प्रमाणे छे

दिया कागाण बीभेसि रत्तिं तरसि नंमदं ।[1]

'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी कोट्याचार्यनी वृत्तिमा नर्मदाना पूरनो उल्लेख छे[2]

१ आचू, उत्तर भाग, पृ ६१. एक सुप्रसिद्ध संस्कृत श्लोकार्ध–"दिवा काकरवाद् भीता रात्रौ तरति नर्मदाम्"–नु आ प्राकृत छे अथवा जनसमाजमा वहेती प्राकृत कहेवत उपरथी ज आ श्लोक बनाववामां आव्यो होय

२ विको, पृ १७०

धस्तो के कोई साल्वाहनना सैनिकोना हाथ अथवा माथा कापी लावे तेने हजारोनां इनाम आपतो हतो सालवाहन पोताना माणसाने पराक्रमना बदलामां कशुं आपतो नहोतो, आथी तनु सैन्य क्षीण थतुं अने तेने प्रतिष्ठान पाछा फरवुं पडतुं वळी वर्षे फरी पाछा ते सैन्य साथे आवीने घेरो घालतो आ प्रमाणे समय वीततो हतो एम करतां युक्तिथी विजय मेळववा माटे एक वार साल्वाहनने तेना अमात्ये कह्युं के मारो अपराध थयो छे एम जाहेर करीने मने देशवटो आपो' साल्वाहने एम कर्युं, पटले मंत्री भरूकच्छ गयो अने एक देवकुलमां रह्यो साल्वाहननो ए निर्वासित मंत्री छे ए वात समय जतां जाहेर थई नभोवाहन माणसो मोकलीने एने बोलाव्या, पण ज्यारे ए आव्यो नहि त्यारे राजा पोते त्यां आव्या अने पोताना मंत्री तरीके एनी नीमणूक करी पछी मंत्रीए नभोवाहनने सलाह आपी के 'पुण्यथी राज्य मळे छे माटे बीजा भव माटे पुण्य संचित करो.' पछी नभोवाहने एना कहेवा प्रमाणे देवकुलो अने स्तूपो तळावो अने वावो बंधाव्यां तथा नभोवाहन लाइ' नामनो खाई खोदावी एम द्रव्य वपराई गयुं, पटले मंत्रीए पोताना राजा साल्वाहनने बोलाव्या एक वारना कोशसमृद्ध नभोवाहन पासे हवे पोताना माणसोने प्रीतिदान-रूप आपवा पण कंई नहोतुं, आथी तेने नासी जवुं पड्युं अने भरूकच्छनो कबजो साल्वाहने लीधो

नभोवाहननी राणीनुं नाम पद्मावती हतुं वज्रभूति आचार्यनी कवि तरीकेनी ख्यातिथी आकर्षाईने ए आचार्यने मळवा गई हती.

१ पश्चिम भारतनो क्षहरातवंशीय शक-क्षत्रप नहपान ते ज आ नभोवाहन (प्रा णहवाहण णभवाहण) होई शके एनो समय इसवी सनना बीजा शतकना पूर्वार्धमां हतो ए सौथी वधु संमत छे ए समये महाराष्ट्रमां सातवाहन वंशनो गोतमीपुत्र शातकर्णि

सोमयशानो पुत्र. तेओ बाळकने अशोकवृक्ष नीचे मूकीने उछवृत्ति करतां हता त्यारे जृंभक देवताओए तेने लईने उछेर्यो हतो तथा प्रज्ञप्ति, आकाशगामिनी आदि विद्याओ आपी हती[1] नारद महासमर्थ परिव्राजक हता तेमनो स्वभाव झगडो कराववानो हतो कृष्ण अने तेमनो पत्नीओ रुक्मिणी आदि वच्चे तेओ कलह उत्पन्न करावता अने वळी शमावी देता

ब्राह्मण परपराना नारद मुनिने आम जैन परपरामां एक परिव्राजक तरीके वर्णवेला छे

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. १९४

नासिक्य

हालनुं नासिक 'नासिक्यपुर'[1] अने 'नासिक्यनगर'[2] तरीके पण एनो प्रयोग थयो छे नासीकनो नंद नामे वणिक पोतानी पत्नी सुन्दरीमां अत्यंत आसक्त होवाने कारणे 'सुन्दरीनंद' तरीके ओळखातो हतो[3]

बुद्धनो ओरमान भाई नंद पोतानी पत्नी सुन्दरीमां अत्यासक्त हतो, एने पराणे दीक्षा आपवामां आवी हती अने अनेक दृष्टान्तोथी वैराग्यमा स्थिर करवामा आव्यो हतो—एनी वार्ता वर्णवता अश्वघोषना 'सौन्दरानन्द' काव्यना वस्तुनु कोई स्वरूपान्तर उपर्युक्त उल्लेखमां रजू थयुं लागे छे

जुओ **सुन्दरीनन्द**

१ नम, पृ १६७.

२ वबृ, पृ ५२.

३ आचू, पूर्व भाग, पृ ५६६, आम, पृ ५३३

नेमिचन्द्रसूरि

बृहद्गच्छना आम्रदेव उपाध्यायना शिष्य तेमणे पोताना गुरुभाई

नागवल्लिका

आ कोई नगरनु नाम छे अने तेनो आनंदपुरनी साथे उल्लेख छे. आनंदपुरमा जेम महपूजा थती तेम नागवल्लिकामां नागपूजा थती.[1]

नागवल्लिकानु स्थान निश्चित थई शक्यु नथी.

१ इत्यसौ इतो अतो महासेनो इतो इत्यसौ, गुप्तो [illegible] मासा [illegible], [illegible] आनंदपुरे [illegible] [illegible] [illegible] पृ. २११

नागार्जुन आर्य

वीरनिर्वाण पछी नवमी शताब्दीमा (आशरे ईसुनी चोथी शताब्दीमां)[1] मथुरा अने वलभी एम बे स्थळे अनुक्रमे स्कन्दिलाचार्य अने नागार्जुन एम बे आचार्योए आगमवाचनानु कार्य कर्यु. दुर्भाग्ये आ बे आचार्यो परस्परने मळी शक्या नहि, तथी तेमनी वाचनाओमां केटलाक भेद रही गया. देवर्धिगणिए ईसानी पांचमी शताब्दीमां ज्यारे आगमो लिपिबद्ध कराव्यां त्यारे स्कन्दिलाचार्यनी माथुरी वाचनाने मुख्य वाचना तरीके स्वीकारी अने नागार्जुननी वालभी वाचनाना पाठोनो निर्देश 'वायणंतरे पुण'[2] एवी नोंध साथे कर्यो. पछीना समयनी टीकाचूर्णिओमा पण नागार्जुनीय वाचनानी स्कन्दिलाचार्यनी वाचनाथी भिन्नता 'नागार्जुनीयास्तु पठन्ति' (नागार्जुनना अनुयायीओने अनुमत पाठ आवो छे) एवा उल्लेख साथे नोंधवामां आवी छे[3]

१ वीरनिर्वाण संवत् और जैन कालगणना पृ. १४

२ जुओ [illegible] पाठ.

३ उदाहरण तरीके जुओ पृ. १६, तथा पृ. १८६, २६१, २९ आगळ पृ. १५, १६६, १८, २१६, २१२, ११८, २१२, १७४ इत्यादि.

नारद

शौरिपुर नगरमा यज्ञयश तापसना पुत्र यज्ञदत्त अने पुत्रवधू

३ अंट, वर्ग १–५

४ जिरको, पृ २१६–१९

पत्तन

वेपारनु केन्द्र होय एवु नगर. पत्तन बे प्रकारनां होय छे जलपत्तन अने स्थलपत्तन ज्यां जळमार्गे माल आवे ते जलपत्तन अने स्थलमार्गे आवे ते स्थलपत्तन. जलपत्तनना उदाहरण तरीके द्वीप (दीव) अने काननद्वीपना नाम अपाय छे, ज्यारे स्थलपत्तन तरीके मथुरा अने आनंदपुर आपवामा आवे छे.[1] केटलाक टीकाकारोए प्राकृत 'पट्टण' शब्दनां 'पट्टन अने 'पत्तन' एवां बे संस्कृत रूपो स्वीकारीने बेना जुदा अर्थ आप्या छे जेम के ज्यां नौकाओ मारफत जवाय ते पट्टन अने ज्या गाडामा के घोडे बेसीने तेम ज नौका मारफत जवाय ते पत्तन[2]

कालक्रमे 'पत्तन' सामान्य नाममांथी विशेष नाम बन्यु, अने गुजरातनु मध्यकालीन पाटनगर 'अणहिलपत्तन' मात्र 'पत्तन' एवा टूंका नामे जाणीतु थयुं 'कल्पसूत्र'नी 'कौमुदी' नामे टीकाना कर्ता शान्तिसागर पोते ए टीका 'पत्तनपत्तन'मा[3]–एटले के पाटण-नगरमा लखी होवानुं जणावे छे

१ उशा, पृ ६०५, आशी, पृ २५८, बृकमा, गा १०९०; बृकसे, भाग २, पृ ३४२, वळी जुओ क्षाधभ, पृ ५५, १४०.

२ जुओ भरुकच्छ

३ क्कौ, प्रशस्ति, श्लो ४

पाण्डुमथुरा

जुओ मथुरा

पादलिप्ताचार्य

एक प्रभावक आचार्य, जेमनुं नाम सौराष्ट्रना प्रसिद्ध जैन तीर्थ

मुनिचन्द्रना वचनथी सं ११२९–ई स १०७३मां अणहिल-पाटकमां दोहडि श्रेष्ठीनी वसतिमां रहीने 'उत्तराध्ययन सूत्र' उपर वृत्ति रची' ए ज नगरमां अने ए ज वसतिमां रहीने तेमणे सं ११४१–ई स १०८५ मां प्राकृत 'महावीरचरित' रच्युं हतुं'

नेमिचन्द्रनुं सूरिपदप्राप्ति पहेलांनुं नाम देवेन्द्रगणि हतुं'

१ उत्त प्रशस्ति

२ उत्त प्रस्तावना पृ २

३ जिरको पृ ४१ उत्त प्रस्तावना पृ १

नेमिनाथ

बावीसमा तीर्थंकर दश दशारो पैकी सौथी मोटा समुद्रविजय अने तेमनी राणी शिवादेवीना पुत्र तेमना जन्म पूर्वे माताए जननी रिष्ट–रत्नमय नेमि आकाशमां जोई हती, तेथी तेमनो 'अरिष्टनेमि' कहेवाया कृष्णे तेमनो विवाह उग्रसेन राजानी पुत्री राजिमती साथे नक्की कर्यो हतो पण लग्नमंडपमां भोजनमां माणसोने मांसनो खोराक आपवा माटे बांधेलां पशुओनो आर्तनाद सांभळीने नेमिनाथे वैराग्य पामीने रैवतक उद्यानमां दीक्षा लीधी हती यादवकुळना अनेक युवानोए नेमिनाथ पासे दीक्षा लीधी हती' नेमिनाथ गिरनार उपर निर्वाण पाम्या हता

चोवीस तीर्थंकरो पैकी ऋषभदेव, शान्तिनाथ पार्श्वनाथ नेमिनाथ अने महावीरनां चरित्रो साहित्यिक दृष्टिए सौथी वधारे लोकप्रिय थयां छे आगमेतर साहित्यमां नेमिनाथनां संस्कृत–प्राकृत चरित्रो, स्तोत्रो, एमना जीवन विशेनां काव्यो वगेरे मळीने कुडीबंध कृतिओ जाणवामां आवेली छे

१ [illegible], पृ ११६–२

२ [illegible] पृ ३११–४११ [illegible], पृ १६४ [illegible] पृ १६२–४ [illegible] पृ ११०–११ [illegible], पृ १४–१५ इत्यादि

३ अंद, वर्ग १–५

४- जिरको, पृ २१६–१९

पत्तन

वेपारनु केन्द्र होय एवु नगर. पत्तन बे प्रकारनां होय छे' जळपत्तन अने स्थलपत्तन ज्यां जळमार्गे माल आवे ते जलपत्तन अने स्थलमार्गे आवे ते स्थलपत्तन जलपत्तनना उदाहरण तरीके द्वीप (दीव) अने काननद्वीपनां नाम अपाय छे, ज्यारे स्थलपत्तन तरीके मथुरा अने आनंदपुर आपवामा आवे छे.' केटलाक टीकाकारोए प्राकृत 'पट्टण' शब्दना 'पट्टन अने 'पत्तन' एवां बे संस्कृत रूपो स्वीकारीने बेना जुदा अर्थ आप्या छे जेम के ज्या नौकाओ मारफत जवाय ते पट्टन अने ज्यां गाडामा के घोडे बेसीने तेम ज नौका मारफत जवाय ते पत्तन[२]

कालक्रमे 'पत्तन' सामान्य नाममांथी विशेष नाम बन्यु, अने गुजरातनु मध्यकालीन पाटनगर 'अणहिलपत्तन' मात्र 'पत्तन' एवा टूका नामे जाणीतु थयुं. 'कल्पसूत्र'नी 'कौमुदी' नामे टीकाना कर्ता शान्तिसागर पोते ए टीका 'पत्तनपत्तन'मा[३]–एटले के पाटण-नगरमा लखो होवानुं जणावे छे

१ उशा, पृ ६०५, आशी, पृ २५८, बृकभा, गा १०९०; बृकक्षे, भाग २, पृ ३४२, वळी जुओ ज्ञाधअ, पृ ५५, १४०

२ जुओ भरुकच्छ

३ कको, प्रशस्ति, श्लो. ४

पाण्डुमथुरा

जुओ मथुरा

पादलिप्ताचार्य

एक प्रभावक आचार्य, जेमनुं नाम सौराष्ट्रना प्रसिद्ध जैन तीर्थ

पाटलिपुर–पादलिप्तना साथे जोडायेलु छे –

पादलिप्ताचार्य पाटलिपुत्रमां मुरुंड राजाना दरबारमां हता एक वार मुरुंड राजा उपर मश्नोप मीणवाळु सूतर, कापीन सम्ली करेली लाकडी तथा सुवाळी मुद्रित डाबडी मोकली अन साथे संदेश कहाव्यो के 'सूत्रनो मत लाकडीनो आदिभाग अने समुद्गकनु द्वार बतावो ' पण आ कार्य कोइ करी शक्यु नहि तेमने पादलिप्ते सूतर ऊना पाणीमां नाख्यु एटले मीण आगळी गयुं अने छेडा देखाया लाकडी पण पाणीमां नाखी एटले मूळनो भाग भारे होवाथी अंदर डूब्यो अने डाबडी उपर लाख हता ते गरम पाणीमां बोळीने उघाडी

मुरुंड राजानी शिरोवेदना वैद्यो मटाडी शक्या नहोता, ते पादलिप्ताचार्ये मंत्रशक्तिथी मटाडी हती एवु कथानक मळे छे

पादलिप्ताचार्य यंत्रविद्यामां पण कुशळ हता तेमणे एक वार राजानी बहेनन बराबर मळती यंत्रप्रतिमा बनावी हती आ प्रतिमा उन्मेषनिमेष करती हाथमां पंखो लईने ऊभेली हती

पादलिप्ताचार्ये 'तरंगवती' नामनी एक विख्यात प्राकृत धर्मकथा रची हती जैना उल्लेखो आगमसाहित्यमां तेम ज अन्यत्र अनेक स्थळे प्राप्त थाय छे मूळ कथा तो सैकाओ पहेलां नाश पामी गई छे पण पादलिप्तनी पछी थयेला परन्तु जेनो चोक्कस समय अनिश्चित छे एवा आचार्य वीरभद्र के नेमिचन्द्रना शिष्य नेमिचन्द्रे १९०० प्राकृत गाथाओमां करेलो तेना संक्षेप मात्र हालमां उपलब्ध छे पादलिप्ताचार्ये 'ज्योतिष्करंडक' उपर वृत्ति रची हती एम आगम-साहित्यना सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य मलयगिरिना कथन उपरथी स्पष्ट छे आ वृत्ति नष्ट थई गई होवानुं मानवामां आवतुं हतु पण हमणां हस्तलिखित प्रति प्र मुनिश्री पुण्यविजयजीए जेसलमेरना जैन भंडारमांथी शोधी काढी छे

पादलिप्ते दीक्षा अने प्रतिष्ठाविधि विशे 'निर्वाणकलिका' नामे जाणीतो ग्रन्थ रच्यो छे. आ उपरांत 'प्रभावकचरित'ना 'पादलिप्तसूरिचरित'मां तेमण 'प्रश्नप्रकाश' नामे ज्योतिषग्रन्थनुं निर्माण कर्युं होवानो उल्लेख छे.[9] चूर्णिओमां 'कालज्ञान' नामे एक रचनानुं कर्तृत्व पण पादलिप्त उपर आरोपित करेलुं छे.[6] पादलिप्तनी प्राकृत गाथाओ हालकृत प्राकृत सुभाषितसंग्रह 'गाथासप्तशती'मां उद्धृत करेली छे.

'प्रभावकचरित' नोंधे छे के पादलिप्ताचार्य एक वार तीर्थयात्रा करता सौराष्ट्रमां ढंकापुरी (ढांक)मां गया हता. त्यां एमने सिद्ध नागार्जुननो समागम थयो पछी नागार्जुन पोताना ए गुरुना स्मरणरूपे शत्रुंजयनी तळेटीमां पादलिप्तपुर नामनुं नगर वसाव्युं, शत्रुंजय उपर जिनचैत्य कराव्यो त्यां महावीरनी प्रतिमा स्थापित करी अने त्यां ज पादलिप्तसूरिनी मूर्ति पण स्थापित करी[९]

पादलिप्ताचार्यनो समय विक्रम संवतनी प्रारंभिक शताब्दीओमां निश्चित करवामां आव्यो छे.[10] एमनुं परंपरागत विस्तृत चरित 'प्रभावकचरित'ना 'पादलिप्तसूरिचरित'मां मळे छे.

१ आचू, पूर्व भाग, पृ ५५४, आम, पृ ५२४-२५, नम, पृ १६२.

२ निचू, भाग ४, पृ. ८७२; पिनिम, पृ १४१-४२ पिनिम मां मुरुंडने प्रतिष्ठानपुरनो राजा कह्यो छे, ए मुद्रणदोष होवो जोईए, केम के ए ज कर्ताए रचेली अन्य कृतिओमां स्पष्ट रीते पाटलिपुत्रनो उल्लेख छे (जुओ उपर टिप्पण १)

३ बृकभा, गा ६३१५; बृकक्षे, भाग ५, पृ १३१५-१६ आ प्रकारनां 'स्त्रीरूपो' 'यवनविषय'मां पुष्कळ बने छे एम अहीं टीकाकार नोंधे छे

४ निचू, भाग ३, पृ ४७९, भाग ५, पृ १०२९, विको, पृ ४३३, बृकम, पृ १६४-१६५, बृकक्षे भाग ३. पृ ७२१ आम

२ जं रयणिं सिद्धिगओ अरहा तित्थकरो महावीरो ।
तं रयणिमवंतीए अहिसित्तो पालगो राया ॥
'अभिधान-राजेन्द्र,' भाग १, पृ. ८९४

प्रतिष्ठान

महाराष्ट्रमां गोदावरीने किनारे आवेलुं पैठण

प्रतिष्ठान गोदावरी नदीना तट उपर आवेलुं हतुं. त्यां सालवाहन राजा राज्य करतो हतो एनो अमात्य खरक नामे हतो.[1] सालवाहन दर वर्षे भरुकच्छ, ज्यां नभोवाहन राज्य करतो हतो त्यां आक्रमण करतो हतो[2]

प्रतिष्ठानमां जैनोनी मोटी वस्ती हती तथा राजानुं वलण पण जैनधर्मने अनुकूळ हतुं आ नगरना संघ तथा राजाना अनुमोदनथी कालकाचार्ये पर्युषण भादरवा सुद पांचमने बदले चोथे प्रवर्ताव्युं हतुं[3] निर्युक्तिकार भद्रबाहुस्वामी अने तेमना भाई वराहमिहिर आ नगरना ब्राह्मणकुमारो हता[4]

१ बृकभा, भाग ६, पृ. १६४७

२ जुओ **नभोवाहन**

३ जुओ **कालकाचार्य**

४ 'अभिधान-राजेन्द्र,' भाग ५, पृ. १३६९

प्रद्योत

उज्जयिनीनो राजा. ते उग्र स्वभावनो होवाथी चंडप्रद्योत तरीके ओळखातो हतो

तेने आठ राणीओ हती, जेमांनी शिवादेवी वैशालीना राजा चेटकनी पुत्री हती अने अंगारवती सुंसुमारपुरना राजा धुंधुमारनी पुत्री हती[1] एना मंत्रीनु नाम खंडकर्ण हतु (जुओ **खण्डकर्ण**) शकुन्त नामे एनो एक अन्य मंत्री पण हतो (जुओ **शकुन्त**) प्रद्योतना समयनुं

उज्जयिनी भारतमां सौथी समृद्ध नगरी पैकी एक हती. एना समयमां उज्जयिनीमां नव कुत्रिकापण—त्रिभुवनना सव वस्तु पैसा मळे एवा वस्तुभडारो हता.

प्रद्योतना जीवनना घणो भाग पोताना पडोशी राजाओ जे एना शत्रुओ थता हता एमनी साथे लडवामां गयो हतो. पडोशी राज्यो साथेना आ कलहनी परंपरागत दृष्टान्तो आगमसाहित्यमां मळे छे.

एक वार प्रद्योते राजगृह नगर घेर्युं. राजगृहना राजा श्रेणिकनो नंदा राणीथी थयेलो पुत्र अभयकुमार जे एनो मन्त्री पण हतो तेणे प्रद्योत आव्यो ते पहेलां एना स्कंधावारनिवेशनी जग्या जाणी लीधी हती अने त्यां धन दटाव्युं हतुं. पछी प्रद्योते आवीने पडाव नाख्यो एटले अभयकुमारे कहेवराव्युं के "तमारुं आखुं सैन्य मारा पिताए फोडी नाख्युं छे, आ वात उपर विश्वास न पडतो होय तो छावणीमां खोदीने जुओ." आ प्रमाणे खोदतां द्रव्य नीकळ्युं, एटले प्रद्योत डरीने नासी गयो. पण पाछळथी वस्तुस्थिति जाणवामां आवतां प्रद्योते अभयकुमार उपर रोष भराई तेम केद करवानो निश्चय कर्यो. तेणे एक गणिकाने राजगृह मोकली अने सहायक तरीके बीजी केटलीक गणिकाओ आपी. गणिकाए एक धर्मप्रेमी जैन विधवानो वेश धारण कर्यो. चैत्यपरिपाटीमां सौ अभयने घेर गयां त्यां तेणे धर्मप्रेमी अभयने पोताने घेर जमवानुं निमंत्रण आप्युं अने भोळवीने मद्यपान कराबी केद करीने अवंति मोकलो कर्यो. त्यां अभयकुमारे चातुर्यथी प्रद्योतने प्रसन्न कर्यो एटले प्रद्योते एने छोडी मूक्यो. पण ए समये अभयकुमारे प्रद्योतने कह्युं के "तमे मने कपटथी पकडी आण्यो हतो, पण हुं तो तमे पोकारो पाडता हशो अने नगरीनी वच्चे उपाडी जईश." थोडा समय पछी अभयकुमार राजगृहथी बे गणिकाओ लईने आवशे अने वेपारीने वेशे उज्जयिनीमां रहेवा आव्यो. तेणे

पोताना एक दासने गांडानो वेश धारण कराव्यो हतो अने तेने प्रद्योत नाम आप्युं हतुं एने दररोज खाटलामां बांधीने वैद्य पासे लई जवामां आवतो त्यारे ते 'हुं प्रद्योत छुं' एवी बूमो पाडतो हतो. हवे, पेली बे गणिकाओ जे अभयकुमार साथे रहेती हती तेमना सौन्दर्यथी आकर्षाईने एमनी कामना करतो प्रद्योत संकेत अनुसार त्यां आव्यो, एटले तेने अभयकुमारनी सूचनाथी पकडी लेवामां आव्यो, अने 'हुं प्रद्योत छुं' एवी बूमो ते पाडतो रह्यो अने एने उज्जयिनी वच्चेथी खाटलामां बांधीने उपाडी जवामां आव्यो नगरजनोए तेनी बूमो सांभळीने मान्युं के पेला प्रद्योतनामधारी गांडाने दररोजनी जेम वैद्यने त्यां लई जवामां आवे छे राजगृहमां श्रेणिके प्रद्योतनो वध करवानो विचार कर्यो, पण अभयकुमारे तेने एम करतां अटकाव्यो पाछळथी प्रद्योतने मुक्त करवामां आव्यो हतो.[3]

सिन्धु–सौवीरना राजा उदायन साथे पण प्रद्योतने युद्धनो प्रसंग आव्यो हतो. उदायन पासे जीवतस्वामी महावीरनी एक सुन्दर काष्ठ-प्रतिमा हती अने उदायननी देवदत्ता नामे एक कुब्जा दासी ए प्रतिमानुं संगोपन करती हती प्रतिमाने वंदन करवा माटे गांधारथी आवेला एक श्रावके आपेली गुटिका लेवाथी ए दासीनी काया कांचन-वर्णी बनी गई हती अने ते सुवर्णगुलिका तरीके प्रसिद्ध थई हती. नलगिरि हाथी उपर आवीने प्रद्योते ए दासीनुं हरण कर्युं हतुं अने एना आग्रहने कारणे पेली काष्ठप्रतिमा पण साथे लीधी हती आ खबर पडतां उदायन दश राजाओने सहायमां लईने[4] उज्जयिनी उपर चडी आव्यो अने प्रद्योतने पराजित कर्यो, प्रद्योत केद पकडायो अने उदायने एना कपाळ पर 'दासीपति' शब्द अंकित कर्यो प्रतिमाने लेवा माटे उदायने घणो प्रयास कर्यो, पण ए तो एना स्थानेथी चलित थई नहि एटले प्रद्योतने लईने उदायन पाछो सिन्धु–सौवीर तरफ चाल्यो. मार्गमां चालतां पर्युषणनो समय आव्यो अने तेमां प्रद्योते उपवास करवानी

इच्छा व्यक्त करतां उदायन पन धर्मबंधु जाणीने मुक्त कर्यो अने समीप्यो, अने कपाळमानो 'दासापति' शब्द न दखाय ए माटे त्यां सुवर्णपट्ट बांध्यो अने प्रद्योतनु राज्य एने पाछुं आप्युं कहेवाय छे के त्यारथी राजाओना मस्तक उपर मुकुटने स्थाने पट्ट बांधनारा थया

। । । ।

वत्स देशना राजा शतानीक उपर पण प्रद्योते आक्रमण कर्युं हतुं. प्रद्योतन आवतो सांभळीने शतानीक यमुनाना दक्षिण किनाराथी उत्तर किनारे चाल्यो गयो प्रद्योत यमुना ओळंगी शक्यो नहि, अने छेवटे केटलोक वेरानगति वेठी पाछो फर्यो " केटलाक समय पछी एक चित्रकारे शतानीक साथेना अणबनावने कारणे मनो स्वरूपवान राणी मृगावतीनुं चित्र चीतरीने प्रद्योतने बताव्युं मृगावतीना सौन्दर्यथी मोह पामीने प्रद्योते शतानीक पासे दूत मोकलीने मृगावतीनी मागणी करी पण शतानीके दूतनो तिरस्कार करीने एने पाछो काढ्यो आथी क्रोधे भरायेला प्रद्योत वत्सदेशनी राजधानी कौशांबी उपर चढी आव्यो तेने आवतो सांभळी अल्प बळवाळा शतानीक क्षोभ पाम्यो अने अतिसारथी मरण पाम्या आथी मृगावतीए विचार्युं के "मारो बाळक पुत्र नाश न पामे एम करवुं जोईए " आथी तेणे प्रद्योत पासे दूत मोकलीने कुशिमर्थक कहेवराव्युं के हुं तमारी पासे आवुं त्यार पछी मारा पुत्रने कोई पीडा करे एम थवु न जोईए. " पछी मृगावतीना कहेवाथी प्रद्योते उज्जयिनीमां ईंटोथी मृगावतीना नगरने दृढ कराव्युं, एमां धान्य वगेरे भराव्युं. आ प्रमाण प्रद्योतनं मूर्ख बनाव्या पछी मृगावती फरी गई ए अरसामां भगवान महावीर कौशांबीमां समोसर्या तेमनी देशना सांभळीने मृगावतीए प्रद्योतनी अनुज्ञा लईने दीक्षा लेवानी इच्छा व्यक्त करी. ए महान धर्मगामी सभाने कारणे प्रद्योत मृगावतीने वारी शक्यो नहि अने मृगावतीए पोतानो पुत्र उदयन प्रद्योतन सोंपीने दीक्षा लीधी ए समये प्रद्योतनी अंगारवती आदि

आठ राणीओए पण महावीर पासे दीक्षा लीधी[7] उदयन पाछळथी प्रद्योतनी पुत्री वासवदत्ताने परण्यो हतो[8]

प्रद्योतने बे पुत्रो हता–पालक अने गोपालक एमांथी गोपालके दीक्षा लीधी हती, एटले एनी पछी पालक गादी उपर आव्यो.[9]

१ आचू, उत्तर भाग, पृ. १९९–२००, विको, पृ ३३५

२ बृकभा, गा ४२१४, बृकक्षे, ग्रन्थ ४, पृ ११४४–४६ जुओ कुत्रिकापण

३ आचू, पूर्व भाग, पृ ५५७–५५८, उत्तर भाग, पृ. १५८–५९; आम, पृ ५२७–२८

४ जुओ दशपुर

५ आचू, पूर्वभाग, पृ ४००, आम, पृ २९२–९४

विविध दिव्य अने मानव पात्रोने माटे केवा प्रकारना मुकुटो, पट्टबधो अने शिरोभूषणो योग्य छे ए माटे जुओ भरतनु 'नाटयशास्त्र' (काशीनी आवृत्ति), अध्याय २३, श्लो १३२–४९, तथा 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण,' तृतीय खड, अध्याय २७, श्लो ३३ अने आगळ

६ आचू, उत्तर भाग, पृ १६७

७ आचू, पूर्व भाग, पृ ८८–९१, आम, पृ १०१–४

८ जुओ उदयन

९ आचू, उत्तर भाग, पृ १८९ प्रद्योत विषेना अन्य महत्त्वना कथारूप वृत्तान्तो अथवा उल्लेखो माटे जुओ नम, पृ १६३, बृकक्षे, भाग ?, पृ ५८७, कसु, पृ ५८७–८८; ककि, पृ. ९३ तथा १९९, कदी, पृ २३, कको, पृ २३४

प्रभास

सौराष्ट्रना दक्षिण किनारे आवेलु प्रभासतीर्थ ए तीर्थनी उत्पत्ति आ प्रमाणे आपवामा आवे छे पाडवोना वशमा पांडुसेन नामे राजा थयो हतो तेनी बे पुत्रीओ मति अने सुमति समुद्रमार्गे सुराष्ट्रमा आवती हती मार्गमा समुद्रनुं तोफान थता बीजा लोको

स्कन्द अने रुद्रने नमस्कार करवा लाग्या, त्यारे आ बे ब्राह्मणोए पोतानी जातने स्वयमर्मा ओळी छेवटे बह्माण मागी गयुं अने बन्ने पणीओ काळधर्म पामी मोक्षे गई श्रमणसमुद्रना अधिपति सुस्थित देवे तेमनो महिमा कर्यो त्यां देवोद्योत थयो, अने त्यारथी प्रभासतीर्थ थयु '

भरत चक्रवर्तीना दिग्विजयवर्णनमां पश्चिममां प्रभासतीर्थनो उल्लेख छे ' 'बृहत्कल्पसूत्र 'ना भाष्य चूर्णि अने वृत्तिमां प्रभास तीर्थमां यात्रामां थती सखडी-उजाणीनो निर्देश छे '

१ आव् उत्तर भाग पृ. १९७

२ आव पृ. ११ बळी जुओ वसुदेवहिंडि अनुवाद पृ. २४१

३ बृकमा, गा. ३१९ बृक्षे भाग ३ पृ. ८८३-८४

भिपग्रन्थसूरि

सुस्थित-सुप्रतिबुद्धना शिष्य प्रियग्रन्थसूरिए अजमेरु पासे आवेला हर्षपुरमां पोताना विद्याचमत्कारथी यज्ञमां थतो पशुवध अटकाव्यो हतो

जुओ अजमेरु

१ कवि, पृ १९९ कसु पृ ५ ९-१ कपी पृ १४८-४९

फलही

सोपारकना मात्स्यिक मल्लने पराजित करवा माटे उज्जयिनीवासी अट्टणमल्ले मरुकच्छ पासेना एक खेडूतने तालीम आपी तैयार कर्यो हतो जे फलही नामे प्रसिद्ध थयो हतो

जुओ अट्टण

बनासा

उत्तर गुजरातनो बनास नदी.

'बृहत् कल्पसूत्र 'ना वृत्तिकार कहे छे के कोई स्थळे मादि

पूरथी पण धान्य पाके छे, जेम के बनासामां ज्यारे खूब पूर आवे त्यारे ए पूरथी भावित थयेली क्षेत्रभूमिमां बीज वेरवामां आवे छे.[1]

१ बृकभे, भाग २, पृ. ३८३.

बलभद्र

कृष्ण वासुदेवना मोटा भाई अने नवमा बलदेव. तेओ अत्यंत स्वरूपवान हता द्वारका नगरीनुं दहन थयुं त्यारे बन्ने भाईओ जलदीथी त्यांथी नीकळीने दक्षिण तरफ जता हता त्यारे कोसुंबारण्य-मां[1] कृष्णनुं मरण थयु अने कृष्णना शरीरने अग्निसंस्कार करीने बलभद्रे दीक्षा लीधी. सुमुख, दुर्मुख, कूपदारक, निषढ, ढंढ वगेरे बलभद्रना पुत्रो हता

बलभद्रनुं संपूर्ण चरित्र आगमसाहित्यमां नथी, पण निषढ आदि तेमना बार पुत्रोए नेमिनाथ पासे दीक्षा लीधी हती तेनो वृत्तान्त[2] तथा बलभद्रना जीवनना केटलाक प्रसंगो अने तेमने विशेना उल्लेखो मळे छे.[3] कृष्णनी जेम बलभद्रनुं चरित्र पण नेमिनाथचरित्र साथे संकळायेलुं छे[4] अने 'त्रिषष्टि'-अंतर्गत तथा विविध लेखकोए रचेलां 'नेमिनाथचरित्रो'मां ते उपलब्ध थई शके

१ जुओ कोसुंबारण्य

२ वृद, तथा अद, वर्ग ४

३ उदाहरण तरीके–उशा, पृ ११७, मस, गा. ४९६–९७, कसु, पृ ३९९–४२४, ककि, पृ १३७–४२, इत्यादि.

बलमित्र-भानुमित्र

भरुकच्छना राजकर्ताओ तेओ बे भाईओ हता. तेमना भाणेज बलभानुने कालकाचार्ये दीक्षा आपी होवाने कारणे आचार्यने भरुकच्छ छोडीने प्रतिष्ठान चाल्या जवुं पड्युं हतुं एक परंपरा प्रमाणे, बलमित्र-भानुमित्र कालकाचार्यना भाणेज हता.

एमने माटे जुओ कालकाचार्य–२

बोधिक

एक अनार्य जाति जे लूटफाट करी त्रास वर्तावती हती. आगम साहित्यमां बोधिकोने मालवोथी अभिन्न गण्या छे जुओ मालव-१

पछी जुओ उज्जयिनी मथुरा

ब्रह्मद्वीप

आभीर देशमां कृष्णा अने वेणा नदीना संगम भागमां आवेलो एक द्वीप त्यां वसता पांचसो तापसोने आर्य वज्रना मामा आर्य समितसूरिए प्रतिबोध पमाड्या हता. ए प्रतिबोध पामेला साधुओथी जैन साधुओनी ब्रह्मद्वीपक शाखानो प्रारंभ थयो हतो.[1] 'नन्दिसूत्र'ना प्रारंभे आपेली देवर्द्धिगणिनी गुरुपरंपरामां सिंहसूरिने 'ब्रह्मद्वीपक सिंह' कह्या छे[2]

१ आवृ. पूर्व भाग पृ. ५४३ आवम पृ ५१५ कल्प पृ १११ कल्पसू. पृ ११४ कल्पकि पृ. १७१ कल्पी पृ. १४६-१५ मसू पृ ५१ नन्दिम पृ १४४

२ जुओ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण.

भट्टि आचार्य

दुष्यगणि क्षमाश्रमणना शिष्य भट्टि-आचार्यनो मत 'सूत्रकृतांग सूत्र'नी चूर्णिमां टांकेलो छे जैन परंपरा अनुसार मूळ आगमोने संकलित रूपे लिपिबद्ध करावनार देवर्द्धिगणि दुष्यगणिना शिष्य छे भट्टि आचार्य ए देवर्द्धिगणिनुं बीजुं नाम हशे के तेमने माटे भट्टि (सं. भर्तृ) आचार्य एटले मुख्य आचार्य कहेवामां आवता हता के पछी भट्टि आचार्य दुष्यगणिना बीजा ज कोई शिष्य छे अने जेने विशे अत्यार सुधीमां कंई जाणवामां आव्युं नथी एनुं नाम हशे ए निश्चितपणे कहेवुं मुश्केल छे

सुप्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणकाव्य ‘रावणवध’ जे सामान्य रीते ‘भट्टिकाव्य’ तरीके ओळखाय छे तेनो कर्ता ‘महाब्राह्मण महावैयाकरण स्वामिपुत्र भट्टि’ वलभीनो हतो, एटले वलभीमा भट्टि नाम प्रचलित हतु, अने देवर्द्धिगणिनो निवास पण वलभीमा हतो, एटले भट्टि ए देवर्धिगणिनुं अपर नाम होय ए कदाचित् सभवे छे.

१ अत्र दूष्यगणिक्षमाश्रमणशिष्या भट्टियाचार्या भवते सूकृच्, पृ ४०५

२ नम, पृ ६० जुओ **देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण**

भण्डीरवन

मथुरानी पासे आवेलु एक उद्यान त्या भंडीर यक्षनु आयतन हतु. लोको बळदगाडा जोडीने एनी यात्राए जता.

जुओ **कम्बल–सम्बल, मथुरा**

भद्रगुप्ताचार्य

उज्जयिनीवासी एक आचार्य

आर्य रक्षित दशपुरमा पोताना गुरु तोसलिपुत्राचार्य पासे अगियार अंग अने जेटलो दृष्टिवाद तेमने अवगत हतो तेटलो शीख्या पछी उज्जयिनीमा दृष्टिवादना ज्ञाता आर्य वज्र छे एम साभळीने तेओ उज्जयिनी गया त्या भद्रगुप्त नामे एक वृद्ध आचार्यनी संलेखना प्रसगे आर्य रक्षित निर्यामक तरीके रह्या अने तेमनी उत्तम शुश्रूषा करी भद्रगुप्ताचार्य कालधर्म पाम्या पछी रक्षिते वज्रस्वामी पासे साडानव पूर्वोनो अभ्यास कर्यो पोताना अतकाळे भद्रगुप्ताचार्ये आर्य रक्षितने कहुं हतु के “तमारे आर्य वज्रनी साथे रहेवुं नहि, कारण के जे तेमनी साथे रहेशे ते तेमनी साथे ज मरण पामशे.” आथी आर्य रक्षित वज्रस्वामीथी अलग रह्या हता.[1]

१ आचू, पूर्वभाग, पृ ४०३–४, उने, पृ २३; **कल्कि, पृ.** १७०–७३, कसी. पृ १४५

वाणिक

एक अनार्य जाति, जे लूटफाट करी त्रास पहोंचती हती आगम साहित्यमां वाणिकान मालवानी अभिन्न गणता छ जुओ मालव–१

घळी जुओ उज्जयिनी मथुरा

ब्रह्मद्वीप

आभीर देशमां कृष्णा अने वेणा नदीना संगम आगळ आवेलो एक द्वीप त्यां वसता पांचसा तापसाने आर्य वज्रना मामा आर्य समितसूरिए प्रतिबोध पमाड्यो हतो. ए प्रतिबोध पामेला साधुओथी जैन साधुओनी ब्रह्मदीपक शाखानो प्रारंभ थयो हतो 'नन्दिसूत्र'ना प्रारंभे आपेली देवर्द्धिगणिनी गुरुपरंपरामां सिंहसूरिने ब्रह्मदीपक सिंह कह्या छ

१ आव्. पूर्व भाग पृ. ५४३ भाष्य पृ ५१५ कर्प पृ १११ कल्प. पृ ११४ कर्ष, पृ. १७१ कल्पी पृ. १४९–१५ नद् पृ. ५१ पिंडनि पृ. १४४

२ नमो देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

भद्र आचार्य

दूष्यगणि क्षमाश्रमणना शिष्य भद्र आचार्यनो मत 'सूत्रकृतांग सूत्र'नी चूर्णिमां टांकेलो छे जैन परंपरा अनुसार मूळ आगमोने सकलित रूपे लिपिबद्ध करावनार देवर्द्धिगणि दूष्यगणिना शिष्य छ भद्र आचार्य ए देवर्द्धिगणिनुं बीजु नाम हशे के तेमना मातार्थे भद्र (सं भद्र) आचार्य एटले मुख्य आचार्य कहेवामां आवता हता के पछी भद्र आचार्य दूष्यगणिना बीजा ज कोई शिष्य जेमने विशे अत्यार सुधीमां कोई आगमोमां आव्युं नथी एमनुं नाम हशे ए निश्चितपणे कहेवुं मुश्केल छ

सुप्रसिद्ध संस्कृत व्याकरणकाव्य 'रावणवध' जे सामान्य रीते 'भट्टिकाव्य' तरीके ओळखाय छे तेनो कर्ता 'महाब्राह्मण महावैयाकरण स्वामिपुत्र भट्टि' वलभीनो हतो, एटले वलभीमा भट्टि नाम प्रचलित हतु, अने देवर्द्धिगणिनो निवास पण वलभीमा हतो, एटले भट्टि ए देवर्धिगणिनु अपर नाम होय ए कदाचित् संभवे छे

१ अत्र दूष्यगणिक्षमाश्रमणशिष्या भट्टिवाचार्या अवत सूकृचू, पृ ४०५

२ नस, पृ ६७ जुओ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

भण्डीरवन

मथुरानी पासे आवेलु एक उद्यान त्या भंडीर यक्षनु आयतन हतु. लोको वळदगाडा जोडीने एनी यात्राए जता

जुओ कम्बल–सम्बल, मथुरा

भद्रगुप्ताचार्य

उज्जयिनीवासी एक आचार्य

आर्य रक्षित दशपुरमा पोताना गुरु तोसलिपुत्राचार्य पासे अगियार अग अने जेटलो दृष्टिवाद तेमने अवगत हतो तेटलो शीख्या पछी उज्जयिनीमा दृष्टिवादना ज्ञाता आर्य वज्र छे एम साभळीने तेओ उज्जयिनी गया त्या भद्रगुप्त नामे एक वृद्ध आचार्यनी संलेखना प्रसगे आर्य रक्षित निर्यामक तरीके रह्या अने तेमनी उत्तम शुश्रूषा करी भद्रगुप्ताचार्य कालधर्म पाम्या पछी रक्षिते वज्रस्वामी पासे साडानव पूर्वोनो अभ्यास कर्यो पोताना अतकाळे भद्रगुप्ताचार्ये आर्य रक्षितने कह्युं हतु के "तमारे आर्य वज्रनी साथे रहेवु नहि, कारण के जे तेमनी साथे रहेशे ते तेमनी साथे ज मरण पामशे." आथी आर्य रक्षित वज्रस्वामीथी अलग रह्या हता.[1]

१ आचू, पूर्वभाग, पृ ४०३–४, उने, पृ २३; ककि, पृ. १७०–७३, कदी, पृ १४५

भरुकच्छ

भरूच, गुजरातनुं प्राचीन बंदर. आगमसाहित्यना प्राचीनतर अंशोमां मोटे भागे आ नगरनुं 'भरुकच्छ' नाम छे 'भृगुकच्छ'नो प्रयोग मुकाबले पाछळनी संस्कृत टीकाओमां छे ' 'भरूच'नी व्युत्पत्ति भरुकच्छ > भरुअच्छ > भरूच ए प्रमाणे साधी शकाय, पण 'भृगुकच्छ'मांथी सरळ नथी, ए वस्तु पण मूळ नाम 'भरुकच्छ' होवाना पक्षमां छे

केटलेक स्थळे भरुकच्छने 'द्रोणमुख' कह्युं छे जळ अने स्थळ एम बन्ने मार्गोए ज्यां जई शकाय ते द्रोणमुख एना उदाहरणमां तरीके भरुकच्छ अने ताम्रलिप्तिना नाम आपवामां आवे छे ' वळी केटलाक टीकाकारोए प्राकृत 'पट्टण' शब्दना 'पट्टन' अने 'पत्तन' एवां बे संस्कृत रूपो स्वीकारीने बन्नेना जुदा अर्थो आप्या छे ' ज्यां नौकाओ मारफत जवाय ते 'पट्टन', अने ज्यां गाडांमां के घोडे बेसीने तेम ज नौकाओ द्वारा जवाय ते 'पत्तन,' जेमके 'भरुकच्छ'

'आवश्यकचूर्णि' (उत्तर भाग, पृ १५२-५३)मां एक स्थळे 'भरुकच्छ' 'आहरणी' अर्थात् 'आहार' जेवुं वहीवटी एकम कहेल छे (जुओ लेख आहार)

भरुकच्छना ईशान खूणे कोरंटक नामे उद्यान हतुं अने तेमां मुनि सुव्रतस्वामीनुं चैत्य हतुं ' भरुकच्छमां जैनो तेम ज बौद्धोनी मोटी वस्ती हती अने बन्ने वच्चे घणी वार परस्पर स्पर्धा चालती हती. भरुकच्छमां जिनदेव नामे जैन आचार्ये भदंतमित्र अने कुणाल नामे बे बौद्ध साधुओ जेओ बे भाईओ हता तेमने वादमां पराजित कर्या हता अने ते बन्ने गोविन्दाचार्यनी जेम जिनदेवना शिष्यो थया हता एवो पण उल्लेख छे भरुकच्छनी पासे कुंडलमेण्ठ नामे व्यंतरनुं

स्थानक हतु अने एनी यात्रामां आसपासना प्रदेशना घणा लोको एकत्र थईने संखडि—उजाणी करता हता[७]

विक्रम पूर्वे पांचमी शताब्दीमा भरुकच्छ अवंतिना राजा प्रद्योत अथवा चंडप्रद्योतना आधिपत्यमां हतुं प्रद्योतनो दूत लोहजंघ एक दिवसमां पचीस योजननी सफर करी शकतो हतो अने ते प्रद्योतना हुकमो लईने वारंवार भरुकच्छ आवतो हतो आ प्रमाणे नवा नवा हुकमो लावतो एने बंध करवाने लोकोए तेने एक वार विषमिश्रित भाथु आप्यु हतु, पण मार्गमा मानशुकन थतां लोहजंघे ते खाधुं नहोतु[८]

भरुकच्छ अने उज्जयिनी वच्चे सारो संपर्क हतो. भरुकच्छमाथी एक आचार्ये पोताना विजय नामे शिष्यने उज्जयिनी मोकल्यो हतो, पण मार्गमां एक मांदा साधुनी सारवार माटे तेने रोकाई जवु पड्यु हतु, अने एथी नटपिटक गाममां नागगृहमां एने चोमासु गाळवुं पड्युं हतु.[९]

भरुकच्छमा नभोवाहन राजा राज्य करतो हतो त्यारे प्रतिष्ठान-नो राजा सालवाहन ए नगर उपर दर वर्षे आक्रमण करतो हतो[१०] कालकाचार्यना समयमां भरुकच्छमां बलमित्र अने भानुमित्र ए बे भाईओ राज्य करता हता[११] नभोवाहनना राज्यकाळमा वज्रभूति नामे एक आचार्य भरुकच्छमां वसता हता ए आचार्यने उत्तम कवि तरीके वर्णवेला छे[१२] अट्टण मल्लनो सहायक फलही मल्ल भरुकच्छ पासेना गामनो एक खेडूत हतो.[१३]

उपर कह्युं तेम, भरुकच्छ जळमार्गे तेम ज स्थळमार्गे वेपारनु मोटुं मथक हतुं मुख्यत्वे आ दृष्टिए प्रद्योत जेवा माळवाना राजाने भरुकच्छ उपर आधिपत्य जाळववानी जरूर लागी हशे भरुकच्छना वेपारीओ विशे केटलीक किंवदन्तीओ आगमसाहित्यमाथी मळे छे

भरुकच्छना कोई वेपारीए उज्जयिनीना [illegible][१४]

शार्दूलस्य घोटकनीमरेह च । नीमिरेव तु यद् गम्य यत्र तत्रकशते ॥
व्यम, भाग ३, पृ १२७

जुओ **पत्तन**

४ जुओ **कोरण्टक उद्यान**

५ जुओ **खपुटाचार्य**

६ आव, उत्तर भाग, पृ २०१

७ बृकभा, गा ३१५०, बृक्षे, भाग ३, पृ. ८८३-८४. जुओ **कुण्डलमेण्ठ**

८ आवृ, उत्तर भाग, पृ १६०-६१

९ आवृ, उत्तर भाग, पृ २०९

१० जुओ **नभोवाहन** अने **सातवाहन.**

११ जुओ **कालकाचार्य.**

१२ जुओ **वज्रभूति आचार्य**

१३ जुओ **अरुण** अने **फल्गश्री**

१४ जुओ **कुत्रिकापण**

१५ बृकभा, गा. ४२२०-२२, बृक्षे, पृ ११४५-४६.

१६ निचू, भाग ३, पृ ४९८, बृकभा, गा २०५४, बृक्षे, पृ ५९४

१७ जुओ **कोसुंबारण्य** तथा **भल्लीगृह**

भल्लीगृह

भल्लीगृह संबंधमा नीचेना भावार्थनु कथानक 'निशीथचूर्णि'मा छे: एक साधु सार्थनी साथे भरुकच्छथी दक्षिणापथ जतो हतो तेने कोई भागवते पूछ्युं, 'भल्लीगृह ए शुं छे?' एटले साधुए द्वारवतीना दहनथी मांडीने वासुदेव कोसुंबारण्यमा प्रवेश्या अने जराकुमारनुं बाण वागवाथी तेमनुं मरण थयुं त्यासुधीनी हकीकत कही संभळावी. आ प्रमाणे भल्लीगृहनी उत्पत्तिनो सर्व वृत्तान्त तेणे कह्यो आ सांभळीने भागवत द्वेषपूर्वक विचार करवा लाग्यो, "जो एम नहि होय तो आ

श्रमणना दुःख पात करीश पछी ते गयो, अने तेणे वासुदेवनो पग बाणथी वींधायेलो जोयो एटले आवीने साधुने खमाव्या अने कह्युं, में आ प्रमाणे चितव्युं हतुं माटे क्षमा करो '

आ कथानक उपरथी अनुमान थाय छे के कोसुंबारण्य[1] के ज्या जैन परंपरा अनुसार, जराकुमारनुं बाण पगमां वागवाथी कृष्ण वासुदेवे देहत्याग कर्यो त्यां पगमां मल्ली—बाणना घा होय एवा प्रकारनी वासुदेवनी मूर्ति हशे अे मन्दिरमां आवी मूर्ति हशे ते मल्लीगृह तरीके ओळखातुं हशे.

ब्राह्मण परंपरा अनुसार श्रीकृष्णनो देहोत्सर्ग प्रभासमां थयो हतो ज्यां कृष्णने बाण वाग्युं हतुं ते जग्या त्यां भोलकुं (भल्लकेश्वर) तरीके जाणीती छे तथा समुद्रकिनारे ज्यां तेमनुं अवसान थयुं हतुं त्यां देहोत्सर्गनुं तीर्थ छे

१ निशू, (भा गा. ३११ नी चूर्णि) भाग ३ पृ. ४७५

२ जुओ कोसुंबारण्य

मिल्लमाल

जुओ भीमाल

मूलेश्वर

एक व्यंतर गृह 'मूलेश्वर'

आनंदपुरमां एक दरिद्र ब्राह्मणे मूलेश्वर (मा मूलिस्सर)नी उपासना करी हती. व्यंतरे तेने कच्छमां अेक आभीरो श्रावक हतो त्यां मोकल्यो हतो.

जैन शास्त्रोमां घणी वार शिव ब्रह्मा आदि ब्राह्मण देवोने व्यंतर अथवा वानव्यंतर तरीके वर्णवेला होय छे एटले अहीं मूलेश्वर व्यंतर साथे मूलेश्वर महादेव उद्दिष्ट छे एम अनुमान करवु अघरे पडतुं नथी. मूलेश्वरनां मन्दिरो गुजरातमां छे तथा ईडर तरफना ब्राह्मणोमां

भूलेश्वर विशेष नाम पण होय छे अहीं, 'आवश्यकचूर्णि'मां 'भूलिस्सर'नो उल्लेख छे, एटले ए नाम ओछामां ओछु आठमा सैका जेटलुं जूनु छे वळी प्रस्तुत उल्लेख एम सूचवे छे के आनंदपुरमा 'भूलिस्सर'नुं मन्दिर होवुं जोईए

प्राकृत 'भुल्ल'–'भूल' (गुज 'भूल') अने 'भोल' (गुज. 'भोळो') ए देश्य शब्दो लागे छे जो के केटलाक एनो संबध स भद्र>प्रा भल्ल>गुज भलो इत्यादि साथे जोडे छे आ शब्दोने तेम ज 'भूलिस्सर' शब्दमाना 'भूल' अंगने महादेवना अर्थमां वपराता 'भोळानाथ,' 'भोळा शंभु' जेवा प्रयोगो साथे वाग्व्यापारगत सबध हशे एवी स्वाभाविक कल्पना थाय छे.

१ कच्छे आमीराणि सड्ढाणि, आणदपुरतो धिज्जातिओ दरिसो भूलिस्सरे उववासे ठितो, वर मग्गति, चाउवेज्जस्स भत्तमुल्ल देहि, वाणमंतरेण भण्णति–कच्छे सावगाणि भउजवतियाणि ताण मत्तं करेहि। आचू, उत्तर भाग, पृ २९१

भूततडाग

भरुकच्छथी बार योजन उत्तरे आवेलुं एक तळाव.

ए विशेनुं परपरापत कथानक आ प्रमाणे छे भरुकच्छना एक वणिके उज्जयिनीना कुत्रिकापणमाथी एक भूत खरीद्यो हतो ए भूत एवो हतो के एने सतत काम आपवामां न आवे तो खरीदनारने मारी नाखे वणिके जे काम सोंप्युं ते बधुं भूते क्षण वारमा करी दीधुं आथी छेवटे वणिके एने एक स्तंभ उपर चढवा ऊतरवानु काम सोंप्यु भूते पोतानो पराजय स्वीकारी लीधो अने पराजयनुं कंईक चिह्न मूकवानी इच्छा व्यक्त करीने कह्यु के 'घोडा उपर सवारी करीने चालता ज्या तुं पाछु वाळीने जोईश त्या हु एक तळाव बाधीश' वणिके बार योजन जईने पाछु वाळीने जोयुं अने त्यां भूते एक तळाव बाध्यु, जे भूततडाग नामथी प्रसिद्ध थयुं '

आ कथानकना काल्पनिक अंशो न स्वीकारीए तो पण मरु-कच्छनो उत्तर भारत भोगवन दूर आवेल एक तत्कालीन लोकप्रसिद्धिमां मूलस्रवणा नामे भणीतुं हतुं एटली वस्तु तो निश्चित छे

जुओ कुमिकापण

१ बृहत्क भा ४११–२१ क्षेमे भाग ४ पृ. ११४१ ४६

मरुकच्छ

जुओ मरुकच्छ

मङ्गू आर्य

एक प्रातीभ आचार्य तेमना आर्य समुद्रनी साथ विहार करता सोपारकमां गया हता तेमनुं शरीरस्वास्थ्य सारु हतुं, ज्यारे आर्य समुद्र दुर्बळ हता. वळी आर्य मङ्गू आचार्य बहुश्रुत घणा शिष्योना परिवारवाळा तथा उग्रविहारी हता. तेओ एक वार मथुरा गया हता. त्यांना श्रावको रागरोग पूर्ण हता, घी अने गोळमाळो खोराक वहोरावता हता घणा साधुओ त्यांथी चाल्या गया पण आर्य मङ्गू जिह्वारसना लोभथी विहार न कर्यो श्रामण्यनी विराधना करीने ते मरण पाम्या अने नगरनी निर्धमनी—नीकनां व्यन्तर थया पछी कोई साधु त्यांथी पसार थाय एटले व व्यन्तर प्रतिमामां प्रवेशीने मोटी जीभ बहार करता, अने साधुओ पूछ त्यारे कहेता के 'हुं जिह्वा दोषथी व्यन्तर थयो छुं अने तमारा प्रतिबोध माटे आव्यो छुं मारे मारा जेवुं वर्तन तमे करशो नहि ' वळी बीजो एक मत एवो छे के ज्यार साधुओ जमवा बेसता त्यार साधुओनी सामे ते पोतानो अलंकारसहित हाथ प्रसारतो, अने त्यार पूछ्यामां आवे त्यार उपर प्रमाणे कहेतो.

'नंदिसूत्र'नी स्थविरावलीमां आर्य समुद्रनी पछी आर्य मंगून वंदन कर्यां छ एटले आर्य मङ्गू आर्य समुद्रना शिष्य संभवे छ

प्रस्तुत स्थविरावलीमां आर्य मंगूने खूब आदरपूर्वक प्रणाम करेलां छे, ज्यारे उपर्युक्त कथानकनो ध्वनि एथी ऊलटो ज छे आथी एक ज नामवाळा बे जुदा जुदा आचार्योनो पछीना समयमा थयेला चूर्णिकारो अने टीकाकारोए संभ्रम कर्यो हशे एम अनुमान थाय छे[४]

१ व्यम (उद्दे० ६ उपरनी वृत्ति), पृ ४४. जुओ समुद्र आर्य

२ निचू, भाग ३, पृ ६५०–५१; वळी जुओ आचू, उत्तर भाग, पृ. ८०; बृकम, पृ. ४४, श्राप्र, पृ १९२

३ तिसमुद्दखायकित्ति दीवसमुद्देसु गहियपेयाल ।
वंदे अज्जसमुद्द अक्खुभियसमुद्दगंभीर ॥२७॥
भणग करगं झरग पभावग णाणदसणगुणाण ।
वदामि अज्जमगु सुयसागरपारग धीर ॥२८॥
नसू, पृ ४९–५०

४ 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'ना बे टीकाकारो देवेन्द्रसूरि (वत्र, पृ ९२) अने रत्नशेखरसूरि (श्राप्र, पृ १९२) आ रसगृद्धिनी वात करतां 'मथुरा-मगू' आचार्यनो उल्लेख करे छे ते शु सोपारकवाळा मगूथी भिन्नता दर्शाववा माटे हशे ?

मणिप्रभ

उज्जयिनीना राजा पालकना पुत्र राष्ट्रवर्धन (राज्यवर्धन)नो नानो पुत्र, जे पाछळथी कौशाम्बीनो राजा थयो हतो पालकना मोटा पुत्र अवन्तिवर्धने पोताना भाईनी स्त्रीने वश करवा माटे भाईने मारी नाख्यो हतो आथी तेना भाईनी स्त्री धारिणी पोतानु शील बचाववा माटे एक सार्थनी साथे कौशाम्बी चाली गई हती ए वखते ए सगर्भा हती कौशाम्बीमा राजानी यानशाळामा रहेती साध्वीओ पासे तेणे दीक्षा लीधी, पण पोताना गर्भनी वात करी नहि पण पाछळथी ए वातनी खबर पडतां एने गुप्त राखवामा आवी अने एने पुत्रनो जन्म थतां नाममुद्राथी अंकित करीने राजाना आगणामा मूकी देवामा आव्यो. ए पुत्र ते मणिप्रभ कौशाम्बीनो राजा अजितसेन पण अपुत्र हतो,

मैत्री तेणे मणिप्रभने पुत्र तरीके स्वीकार्यो पुत्रप्रेमने लीधे धारिणीए अजितसेननी राणी साथे मैत्री करी काळे करी अजितसेननी पछी मणिप्रभ गादी उपर आव्यो ए समय तेनो सगो भाई अवन्तिसेन के अवन्तिवर्धनना पछी उज्जयिनीनी गादीए बेठो हतो ते कौशांबी उपर चढी आव्यो, अने भग्न भाईओ वच्चे युद्ध थवानी तैयारी हती त्या माता धारिणीए बन्ने पासे आईने तेमनो साचो वृत्तान्त कही समजाव्यो, अने युद्ध रोकया बाद बन्ने उत्साहपूर्वक नगरीमा प्रवेश्या

१ णमो अवन्तिवर्धन

२ णमो अवन्तिवर्धन

१ आव , उत्तर भाग पृ १८९-९ पा, पृ १ -१२

मण्डन सूत्रधार

सूत्रधार मण्डनकृत वास्तुसार 'मांथी केटलाक श्लोको 'जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति उपरनी शान्तिचन्द्रनी वृत्तिमा उद्धृत थयेला छे'[1] मंडन ए नाम मध्यकाळमा गुजरात–राजस्थान अने माळवामां व्यापक विशेष नाम मांडण नु संस्कृतीकरण छे

मण्डन मेवाडना राजा कुंभकर्ण–कुंभराणा (ई स नो १५ मा सैको)नो आश्रित हतो. 'रूपमंडन' आदि शिल्प अने वास्तुशास्त्रना सत्यासंघ ग्रन्थो तेणे रचेला छे

विक्रमना पंदरमा शतकना अंतमां अने सोळमाना प्रारंभमां थयेल ईसुना पंदरमा शतकमां 'अलंकारमंडन' 'काव्यमंडन', 'चंपूमंडन' 'काव्यमनोहर' आदि ग्रन्थो रचनार मन्त्री मंडन अथवा मांडण माळवामां आवेला मंडपदुर्ग (मांडु)नो श्रीमन्त वणिक हतो सूत्रधार मण्डनथी भिन्न छे

१ एतल्लक्षणमत्र सूत्रधारमण्डनकृतवास्तुसारोक्तिरपि लिख्यते यथा ... अर्धस्या पर्यन्तेषु पुरे ... । एवमपीत्य पदे भाग्य ... इत्यादि ११ श्लोक ... पृ १ ४

२ जुओ 'देवतामूर्ति प्रकरण अने रूपमंडन,' प्रस्तावना, पृ १–४

३ जुओ हेमचन्द्राचार्य सभा प्रकाशित 'मंडनग्रन्थसंग्रह'

मण्डिक

वेणातट नगरनो एक चोर, जे दिवसे तूनारानो धंधो करतो अने रात्रे चोरी करतो ए ज नगरना राजा मूलदेवना हाथे ते पकडाई गयो हतो

जुओ **मूलदेव**

मत्स्यदेश

२५॥ आर्य देशो पैकी एक. एनुं पाटनगर वैराट नगरमां हतुं[१]

मत्स्य देशमां जयपुर राज्यनो केटलोक भाग तथा अल्वर राज्य आवी जाय छे[२]

१ सूकृशी, पृ १२३, बृकसे, भाग ३, पृ ९१२–१४

२ ज्योवि, पृ १२८–२९

मथुरा

२५॥ आर्य देशो पैकी शूरसेना जनपदनी राजधानी[१] मथुरा नगरी घणी प्राचीन छे, अने तेथी एने 'चिरकाल–प्रतिष्ठित'[२] कहेवामां आवी छे अने त्यां ना स्तूपने 'देवनिर्मित' कह्यो छे[३] मथुरानुं बीजुं नाम इन्द्रपुर हतुं[४]

प्राचीन भारतना महत्त्वना सार्थमार्गो उपर आवेलुं होई मथुरा एक महत्त्वनु वेपारी केन्द्र ('पत्तन') हतु, एथी ए 'स्थलपत्तन' तरीके वर्णवायुं छे[५]

मथुरामा भंडीर उद्यानमां सुदर्शन यक्षनु आयतन हतु.[६] केटलेक स्थळे यक्षनुं नाम पण भंडीर यक्ष आपेलुं छे.[७] लोको भारे उत्साहपूर्वक भंडीर यक्षनी यात्रामां गाडां जोडीने जता.

'आवश्यक सूत्र'नी वृत्तिमां आ यक्षायतननो परंपरागत इतिहास नीचे प्रमाणे आपवामां आव्यो छे : मथुरामां राजानी आज्ञाथी हुंडिक नामे एक चोरने शूळीए चढाववामां आव्यो हतो. चोरना बीजा साथीओ पकडाई जाय ए माटे तेनी आसपास राखवानी सूचना राजाए पोताना माणसोने करी हती. जिनदत्त नामे श्रावक त्यां थईने पसार थतो हतो. तेनी पासे चोरे पाणी माग्युं. जिनदत्ते एने नवकार भणवानुं कह्युं अने पोते पाणी लेवा गयो. आ बाजु नवकार बोलता चोरनो जीव नीकळी गयो अने ते यक्ष थयो. राजाना माणसोए जिनदत्तने पकड्यो अने राजाए एने शूळी उपर चढाववानी आज्ञा करी. यक्षे अवधिथी आ वात जाणी. तेणे पर्वत उपाडीने नगर उपर मूक्यो अने कह्युं के श्रावकने खमावो नहि तो नगरनो चूरो करी नाखीश. आ पछी जिनदत्तने खमावीने वैभवपूर्वक एनो नगरप्रवेश कराववामां आव्यो अने नगरनी पूर्व दिशाए यक्षनुं आयतन बंधाववामां आव्युं. आ वृत्तान्त उपरथी स्पष्ट छे के उपर्युक्त यक्षायतन मथुरानी पूर्व दिशाए होवुं जोईए.

राजकीय दृष्टिए मथुरा उत्तरापथनुं एक अगत्यनुं शहेर हतुं अने ९६ गाम एनी साथे जोडायेलां हतां. आ दृष्टिए 'मथुराहार'नो उल्लेख नोंधपात्र छे.

मथुरा जैन धर्मनुं एक मोटुं केन्द्र हतुं. मथुरामां घरना बारणानी भारवट उपर जो पहेलां अर्हत्-प्रतिमानुं स्थापन करवामां आवतुं, अने एम न थाय तो ए मकान पडी जाय एम मनातुं. आवी स्थापनने 'मंगलचैत्य' कहेता. मथुरा साथे संबंध धरावतां ९६ गामोमां पण मंगलचैत्यो हतां.

मथुरानो जैन स्तूप एटलो प्राचीन हतो के एने 'देवनिर्मित स्तूप' कहेता. कोई समये आ स्तूपनो कबजो बौद्धोए लई लीधो

હતો. આના નિર્ણય માટે રાજાની સંમતિથી એમ નક્કી થયું હતું કે 'જો સ્તૂપ ખરેખર રક્તપટોનો–બૌદ્ધોનો હોય તો તે ઉપર પ્રભાતમા રાતી પતાકા ફરકે અને જો જૈનોનો હોય તો ત પતાકા ફરકે.' રાત્રે દેવનાએ સ્તૂપ ઉપર શ્વેત પતાકા ફરકાવી તે પ્રભાતમા સૌએ જોયું, અને એ રીતે જૈન સંઘનો વિજય થયો'[૧૩] આ અનુશ્રુતિમાંથી ઐતિહાસિક દૃષ્ટિએ એવો નિષ્કર્ષ નાકળી શકે કે મથુરાના જૈન સ્તૂપ ઉપર બૌદ્ધોએ આધિપત્ય જમાવ્યુ હતુ, પણ મથુરાના રાજાએ એ સ્તૂપ જૈનોને પાછો સોંપ્યો હતો.

ઉપર્યુક્ત દેવનિર્મિત સ્તૂપનો મહિમા–ઉત્સવ પણ પર્વદિવસોએ થતો એક વાર સ્તૂપનો મહિમા કરવા માટે કેટલીક શ્રાવિકાઓ સાધ્વીઓની સાથે ગઈ હતી એ સમયે ત્યા એક સાધુ, જેઓ પૂર્વાશ્રમમા રાજપુત્ર હતા તેઓ આતાપના લેતા હતા બોધિક જાતિના લુટારુઓએ એ સ્ત્રીઓને પકડી અને સ્તૂપમાંથી તેઓ એમને બહાર લાવ્યા. સાધુને જોઈને સ્ત્રીઓએ ભારે આક્રંદ કર્યું, એ સાભળી ક્ષત્રિય સાધુએ બોધિકો સાથે યુદ્ધ કરીને તેમને છોડાવી.'[૧૪]

દેવનિર્મિત સ્તૂપ જેવા જૈનોના પ્રસિદ્ધ યાત્રાધામ પાસેથી આવી રીતે પૂજાર્થે આવેલી સ્ત્રીઓનુ લુટારુઓ હરણ કરે એ બતાવે છે કે આ ઘટનાના સમય સુધીમા મથુરામાંથી જૈનોનુ વર્ચસ ઠીકઠીક પ્રમાણમાં ઘટ્યું હશે અને સ્તૂપની આસપાસનો પ્રદેશ ઉજ્જડ જેવો બની ગયો હશે

'સૂત્રકૃતાગ સૂત્ર'ની ચૂર્ણિ અને વૃત્તિમાં એક પુરાતન ગાથા ઉતારેલી છે,[૧૫] એમા કુસુમપુર અને મથુરાનો એકી સાથે એવી રીતે ઉલ્લેખ છે, જે પ્રસ્તુત ગાથાના રચનાકાળે કુસુમપુર (પાટલિપુત્ર) અને મથુરાનુ એકસરખુ પ્રાધાન્ય સૂચવે છે પાટલિપુત્રમા જૈન શ્રુતની પહેલી વાચના થયા પછી કેટલીક શતાબ્દીઓ બાદ સ્કન્દિલાચાર્યે

'आवश्यक सूत्र'नी वृत्तिमां आ यक्षायतनना परंपरागत इतिहास
नोंध प्रमाण आपवामां आव्या छे मथुरामां राजानी आज्ञाथी कुंडिक
नामे एक चोरने शूळीए चडाववामां आव्यो हतो चोरना बीजा
साथीओ पकडाई जाय ए माटे तेनी तपास राखवानी सूचना राजाए
पोताना माणसोने करी हती जिनदत्त नामे श्रावक ए स्थळेथी पसार
थतो हतो तेनी पासे चोरे पाणी माग्युं जिनदत्ते एने नवकार भणवानुं
कह्युं अने पोते पाणी लेवा गयो आ बाजु नवकार बोलतां चोरनो जीव
नीकळी गयो अने ते यक्ष थयो. राजाना माणसोए जिनदत्तने
पकडयो अने राजाए एने शूळी उपर चडाववानी आज्ञा करी. यक्षे
अवधिथी आ वात जाणी तेणे पर्वत उपाडीने नगर उपर मूक्यो अने
कह्युं के श्रावकने खमावो, नहि तो नगरनो चूरो करी नाखीश आ
पछी जिनदत्तने समारोहथी वैभवपूर्वक एनो नगरप्रवेश कराववामां
आव्यो, अने नगरनी पूर्व दिशाए यक्षनुं आयतन बंधाववामां आव्युं
आ वृत्तान्त उपरथी स्पष्ट छे के उपर्युक्त यक्षायतन मथुरानी पूर्व
दिशाए होवुं जोईए.

राजकीय दृष्टिए मथुरा उत्तरापथनुं एक अगत्यनुं शहेर हतुं
अने ९६ गाम एनी साथे जोडायेलां हतां आ दृष्टिए 'मथुराहार'नो
उल्लेख नोंधपात्र छे

मथुरा जैन धर्मनुं एक मोटुं केन्द्र हतुं मथुरामां घरना बार
णानी ओतरंग उपर जो पहेलां अर्हत्-प्रतिमानुं स्थापन करवामां
आवतुं, अने एम न थाय तो ए मकान पडी जाय एम मनातुं. आवी
स्थापनाने मंगलचैत्य कहेता मथुरा साथे संबंध धरावतां ९६
गामोमां पण मंगलचैत्यो हतां

मथुरानो जैन स्तूप एटलो प्राचीन हतो के एम 'देवनिर्मित
स्तूप' कहेता कोई समय आ स्तूपनो कबजो बौद्धोए लई लीधो

१ मूकृशी, पृ १२३, बृकसे, भाग ३, पृ ९१२–१४

२ चिरकालपइट्ठियाए महुराए .. उशा, पृ १२५

३ जुओ टि १२

४ जुओ इन्द्रपुर.

५ उशा, पृ ६०५, आशी, पृ २५८

६ महुरा नाम नयरी, भडीरे उज्जाणे, सुदसणे जक्खे, विसूअ, पृ ७०

७ जुओ भण्डीर यक्ष.

८ आम, पृ ५५५

९ जुओ टि ११

१० जुओ खेट आहार

११ अरहत पइट्ठाए महुरानयरीए मगलाइ तु ।

गेहेसु चच्चरेसु य छन्नउईगामअद्धेसु ॥ (भा गा १७७६)

मथुरानगर्या गृहे कृते मङ्गलनिमित्तमुत्तरङ्गेषु प्रथममर्हत्प्रतिमा, प्रतिष्ठाप्यन्ते, अन्यथा तद् गृह पतति । तानि मङ्गलचैत्यानि । तानि च तस्या नगर्या गेहेषु चत्वरेषु च भवन्ति । न केवल तस्यामेव किन्तु तत्पुरीप्रतिबद्धा ये षण्णवतिसख्याका ग्रामार्द्धास्तेष्वपि भवन्ति । इहोत्तरापथानां ग्रामस्य ग्रामार्द्ध इति सज्ञा । आह च चूर्णिकृत्-ग्रामद्धेसु त्ति देसभणिती, छन्नउईगामेसु त्ति भणिय होइ, उत्तरावहाण एसा भणिइ त्ति । बृकसे, भाग २, पृ ५२४ उत्तरापथमा ग्रामने ग्रामार्ध कहेवानी रूढि छे, एवो आमांनो निर्देश नोंधपात्र छे

१२ निचू, भाग ३, पृ ५९०, बृकसे, भाग ६, १६५६, व्यम, भाग ४, पेटा वि १, पृ ४३

१३ व्यभा तथा व्यम (उद्दे० ५), पृ ८०

१४ निचू, भाग ३, पृ, ५९०, बृकसे, भाग ६, पृ १६५६, व्यम, भाग ४, पेटा वि १, पृ ४३ 'बोधिक' जातिनो उल्लेख 'महाभारत' अने 'रामायण' मां 'बोध' तरीके छे जुओ विमलाचरण लो–कृत 'ट्राइब्स इन ॲन्श्यन्ट इन्डिया', पृ ३९७ जैन आगमसाहित्यमां 'बोधिक' ने 'मालव' थी अभिन्न गणेला छे, जुओ मालव.

जैन श्रुतनी बीजी वाचना मथुरामां करी" अने पछी देवर्धिगणि क्षमाश्रमण पोतानी छेल्लटनी श्रुतसंकलनामां मुख्य वाचना तरीके सर्वसंमत रीते स्वीकारी, ए वस्तु जैन इतिहासमां घणा महत्त्वनी छे, अने माथुरी वाचना माटे मुनि कल्याणविजयजीए निश्चित करेलो समय (वीर निर्वाण सं ८२७ थी ८४०=ई स २०१ थी ३१४) मान्य राखीए तो एवुं विधान निःसंदेह थई शके के चोथी शताब्दीमां मथुरा जैन धर्मनुं एवुं मोटुं केन्द्र हतुं, जेनी बराबरी पश्चिम भारतनुं वलभी ज करी शके एम हतुं

भगवान महावीर मथुरामां आव्या हता एवो एक उल्लेख 'विपाक सूत्र'मां छे आर्य मंगू अने आर्य रक्षित जेवा आचार्योए मथुरामां विहार कर्यो हतो आर्य रक्षित मथुरामां भूतगुहा नामना व्यंतरगृह—यक्षायतनमां रह्या हता 'आवश्यक सूत्र'नी चूर्णिमां एक स्थळे मथुराने 'पासंडिगब्भ' (सं पाषण्डिगर्भ) कह्युं छे, ए बतावे छे के एमां बौद्धो अने अन्य संप्रदायना अनुयायीओनी वस्ती सारा प्रमाणमां हती

मथुराने लगता केटलाक प्रकीर्ण उल्लेखो मळे छे, जेम के—देवतापूजनमां उपवासी श्राद्धनुं एक वासण मथुरामां 'नैमित्तिक' तरीके सुपरिचित छे" धनी अने पुत्रने घेर मूकीने देशान्तरमां फरता मथुराना वणिकोनी कौतुकभरी कथाओ टीका-चूर्णिओमां छे उत्तर मथुराना वणिक वेपार अर्थे दक्षिणमथुरा (मदुरा) पण जाय छे" अपायबाह्य क्षेत्रनो त्याग करवा संबंधमां, जरासंधना उपद्रवने कारण दशार्होए मथुरानो त्याग कर्यो हतो ए उदाहरण अपाय छे आ उपरांत मथुराना अनेक प्रासंगिक उल्लेखो आगमसाहित्यमां छे जे आ प्राचीन नगरीनुं ब्राह्मण अने बौद्धनी जेम जैन इतिहासमां पण पण असाधारण महत्त्व छे ए बतावे छे

मरुविषयमां पाणीनी तंगी छे अने पाणी मेळववा माटे रात्रे दूर सुधी जवु पडे छे[3] जलविकलताने कारणे मरुस्थलमा धान्यसंपत् जोईए एवी थती नथी.[4] निष्पुण्यपिपासित मनुष्योने जेम पीयूष प्राप्त थतुं नथी तेम मरुभूमिमा कल्पवृक्षनो प्रादुर्भाव थतो नथी[5]

मरुमंडलनी केटलीक विशेषताओ पण नोंधवामा आवी छे 'यवनालक' (प्रा. जवणालओ) नामनो 'कन्याचोलक'—कन्या ओनो पहेरवेश मरुमंडलादिमा प्रसिद्ध होवानु कह्यु छे एमा चणियो—चोळी भेगा सीवी लेवामां आवता, जेथी वस्त्र खसी पडे नहि कन्याना माथेथी ते पहेरातो, एथी ए प्रकारना पहेरवेशने ऊपो 'सरकंचुक' पण कहेवामा आवतो[6]

आ उल्लेख विशिष्ट महत्त्वनो छे, केम के एमां कन्याओना खास पोशाकने निर्देश छे. वळी प्राचीन संस्कृत साहित्यमा स्त्रीओना पहेरवेशमा 'नीवि'नो निर्देश आवे छे ते वस्त्रनी गाठ छे, चणियानी दोरीनी गाठ नथी, ए दृष्टिए पण आ वस्तु विचारवा जेवी छे संभव छे के साडीनी नीचे चणियो पहेरवानुं कोई परदेशी जाति के जाति-ओनी असरथी दाखल थयुं होय, दक्षिण भारतमा चणियानो पहेरवेश नथी ए पण आ दृष्टिए सूचक छे उपर्युक्त उल्लेखमाना 'जवणालओ' शब्दनुं 'जवण' (सं यवन. ए शब्द शिथिल अर्थमा गमे ते परदेशी जाति माटे प्रयोजातो हतो ए जाणीतु छे) अंग पण घणुं करीने ए ज सूचवे छे. ए 'कन्याचोलक' मरुमडलादिमा प्रसिद्ध होवानु कह्युं छे, एटले मरुमंडल सिवायना बीजा केटलाक प्रदेशोमा पण एनो प्रचार होवो जोईए हेमचन्द्रना 'द्वयाश्रय' महाकाव्यमांथी एने लगतो एक रसिक उल्लेख प्राप्त थाय छे एमा लतागृहमां रहेली मयणल्लानो 'चोलक' जोईने एनो भावी पति कर्ण सोलंकी अनुमान करे छे के ए कन्या होवी जोईए—

कन्यानां चेप मस्तकप्रदेशेन प्रक्षिप्यते, अत एवायमूर्ध्व-सरकञ्चुक इति व्यपदिश्यते, तथा च तमादिव्याख्यान कुर्वन्नाह भाष्यकृत्–" × × जवना लउ त्ति भणिओ उब्भो सरकचुओ कुमारीए × × " इति। आम, पृ ६८

७ मरुतैल–मरुदेशे पर्वतादुत्पद्यते । वृक्षे भाग ५, पृ १५५१ वृकमा, गा ६०३१ मां 'मरुतेल्ल'नो उल्लेख छे जेनी टीकारूपे उपर्युक्त सस्कृत अवतरण छे, ए सूचवे छे के 'मरुतल' विशेनो उल्लेख मुकाबले घणो प्राचीन छे

८ 'कुलिक' लघुतर काष्ठ तृणादिच्छेदार्थ यत् क्षेत्रे वाह्यते तत् मरुमण्डलादिप्रसिद्ध कुलिकमुच्यते, ततश्च यदत्र हलकुलिकादिभि क्षेत्राण्युप क्रम्यन्ते . , अनुहे, पृ ४८

मलयगिरि आचार्य

आगमसाहित्यना सौथी मोटा संस्कृत टीकाकारोमा आचार्य मलयगिरिनुं स्थान छे. एमणे पोतानी अनेक कृतिओ पैकी एकेयमा रचनासंवत आप्यो नथी तेम ज पोताने विशे कशी माहिती आपी नथी पोते रचेलु 'शब्दानुशासन' जे 'मुष्टिव्याकरण' (मूठीमा माय एवुं संक्षिप्त व्याकरण) पण कहेवाय छे एमां तेमणे 'अरुणत् कुमारपालोऽरातीन्' एवुं उदाहरण आप्यु छे,' अने एमा क्रियापद अद्यतन भूतमां होई कर्ता थोडाक समय उपर बनेला बनावनी वात करे छे एवु अनुमान स्वाभाविक रीते थई शके आचार्य मलयगिरि गुजरातमा थई गया छे ए तो निश्चित छे, पण उपर्युक्त प्रमाणने आधारे तेओ ई स ना बारमा सैकामा थयेला राजा कुमारपाल (ई स ११४३–११७३) ना समकालीन हता के एनी पछी थोडाक समये थया हता एवुं अनुमान थई शके. वळी मलयगिरिए 'आवश्यक सूत्र' उपरनी पोतानी वृत्तिमा[२] 'आह च स्तुतिषु गुरवः' एवी नोंध साथे आचार्य हेमचन्द्रकृत 'अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका'माथी 'अन्योन्य-पक्षप्रतिपक्षभावात्०' (श्लो ३०) ए श्लोक उद्धृत कर्यो छे, त्या हेमचन्द्र माटे एमनुं नाम लीधा सिवाय 'गुरव.' एवो बहुमानसूचक

मलयगिरिए पोतानी 'आवश्यक वृत्ति'मां पूर्वकालीन वृत्तिओनो बहुवचनमां निर्देश कर्यो छे,[८] ए सूचक छे. हरिभद्र उपरांत बीजा एक आचार्य जिनभटनी टीका[९] ज जो तेमने उद्दिष्ट होत तो निर्देश द्विवचनमां होत. पण बहुवचननो प्रयोग बतावे छे के ए सिवाय पण बीजी एक अथवा वधारे टीकाओ 'आवश्यकसूत्र' उपर होवी जोईए 'विवृतय'' एवो स्पष्ट उल्लेख होवाथी उपर्युक्त बे विवरणोमा चूर्णिनो समावेश करीने बहुवचनना प्रयोगनुं समाधान करवुं ए दूराकृष्ट लागे छे.

'ज्योतिष्करंडक,'[१०] 'पिंडनिर्युक्ति,'[११] अने 'जीवाभिगम'नी[१२] वृत्तिओमां मलयगिरिए वारंवार ते ते ग्रन्थो उपरनी 'मूल टीका'नो उल्लेख कर्यो छे आ त्रणे सूत्रग्रन्थो उपर मलयगिरि पूर्वेनी कोई टीका आजे विद्यमान नथी 'जीवाभिगम'नी 'मूल टीका'ना उल्लेखो 'राजप्रश्नीय'नी वृत्तिमां पण छे[१२] 'प्रज्ञापना' तथा 'नंदिसूत्र' उपरनी हरिभद्रसूरिनी टीकाओनो उल्लेख तेमणे कर्यो छे[१४]

वळी पोतानी रचनाओमां मलयगिरिए पोतानी ज अन्यान्य वृत्तिओना उल्लेख कर्या छे, जे तेमनी कृतिओनी आनुपूर्वी नक्की करवामा सहायभूत थाय छे. 'नंदिसूत्र' अने 'पिंडनिर्युक्ति'नी वृत्तिओमा पोतानी 'धर्मसंग्रहणि टीका'नो उल्लेख[१५] तेमणे कर्यो छे ए ज रीते 'ज्योतिष्करंडक'नी वृत्तिमा 'क्षेत्रसमास'नी टीकानो उल्लेख कर्यो छे[१३] 'बृहत्कल्प सूत्र'नी पीठिकावृत्तिमा 'संस्कृत' शब्दनो अर्थ समजावता तेमणे पोताना व्याकरणनो निर्देश कर्यो छे[१७] ए ज प्रमाणे 'सूर्यप्रज्ञप्ति'नी वृत्तिमा पण तेमणे स्वरचित 'शब्दानुशासन'नो उल्लेख कर्यो छे[१८]

'तत्त्वार्थसूत्र' उपरनी स्वरचित टीकानो उल्लेख एमणे 'प्रज्ञापना सूत्र' तथा 'ज्योतिष्करंडक'नी वृत्तिओमा कर्यो छे[१९]

'जीवाभिगमसूत्र' उपरनी पोतानी वृत्तिमां 'देशीनाममाला'

मला परिचयप्रदर्शक भागम निर्देश कर्यो छे ए उपरथी पण तेओ हेमचन्द्रना लघुवयस्क समकालीन होवानुं अनुमान थाय छे

मलयगिरिए नीचेना आगमग्रन्थो उपर टीकाओ लखी छे 'आवश्यक' 'ओघनिर्युक्ति,' 'जीवाभिगम' 'ज्योतिष्करंडक,' 'नंदिसूत्र' 'पिंडनिर्युक्ति,' 'प्रज्ञापना,' 'भगवती' द्वितीय शतक, 'राजप्रश्नीय' 'व्यवहार सूत्र' 'सूर्यप्रज्ञप्ति,' अने 'विशेषावश्यक.' 'बृहत्कल्पसूत्र'नी पीठिका उपर मलयगिरिनी वृत्ति छे, पण त्यार पछीनी वृत्ति आचार्य क्षेमकीर्तिए पूरी करी छे," ए उपरथी अनुमान थाय छे के 'बृहत्कल्पसूत्र'नी वृत्ति लखतां लखतां ज मलयगिरिनुं अवसान थयुं हशे. 'जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति'नी मलयगिरिनी वृत्ति नाश पामी होवानुं विधान सत्तरमा सैकामां थयेला टीकाकारो पुण्यसागर अने शान्तिचन्द्रे कर्युं छे पण ए वृत्तिनी प्रत जेसलमेरना भंडारमांथी खोळवामां आवी छे आ टीकाकारोने एनी प्रतो अलभ्य होवी जोईए वळी 'तत्त्वार्थ सूत्र' उपर पण मलयगिरिए एक टीका रची हती, जे आजे उपलब्ध नथी (जुओ टि १९)

आगमग्रन्थोनी टीकाओ उपरांत मलयगिरिए केटलाक आगमेतर धर्मग्रन्थो उपर टीकाओ रची छे अने तेमांथी एमनो समय नक्की करवामां उपयोगी थाय एवो उल्लेख प्राप्त थाय छे ते उपर्युक्त 'मुष्टि व्याकरण' नामे शब्दानुशासन' पण रच्युं छे

मलयगिरिनी टीकाओमां उच्च कोटिनी विद्वत्ता साथे सरलतानो सुभग सम न्वय थयो छे अने परिणामे विद्वानो तेम ज विद्यार्थीओने ते एकसरखी उपयोगी थई छे एमां एमणे प्रसंगोपात्त पोतानां पूर्व कालना टीकाकारोनो उल्लेख कर्यो होवाने कारणे आगमसाहित्यना इतिहास माटे ए केटलीक अगत्यनी सामग्री पूरी पाडे छे जेम के— 'आवश्यक सूत्र' उपर हारिभद्रसूरिनी वृत्ति होवानुं प्रसिद्ध छे, पण

१० ज्योकम, पृ १२१, १८६

११ पिनिम, पृ ४२, ६२, ८१

१२ जीम, पृ ४, १५, १८५, १९४, २००, २०४, २०५, २०९, २१०, २१३, २१८, २३१, ३२१, ३४४, ४३८, ४४४, ४५०, ४५२, ४५७, इत्यादि.

१३ राप्रम, पृ ६२, ६४, ६८, ६९, ७०, ७१, ७५, ७९, ९३, इत्यादि

१४ प्रम, पृ ६११, नंम, पृ २५०

१५ नंम, पृ १९३, पिनिम, पृ २३

१६ ज्योकम, पृ ५६–५७, १०१, १०७

१७ मलयगिरिप्रभृतिव्याकरणप्रणीतेन लक्षणेन संस्कारमापादितं वचन संस्कृतम्, नृकम, पृ ३

१८ सूप्रम, २२३

१९ प्रम, पृ २९८, ज्योकम, पृ ८१

२० धाप्रर, पृ ३५

२१ जप्रशा, पृ. १२७, २२६

२२ जप्रशा, पृ. २२९, ३४८, ३५७

२३ जप्रशा, पृ ८७

मलयपट्टण

सोपारकनी पासे आवेलुं शहेर. ए वेपारनुं मथक हतुं. एक सार्थवाह हजार वृषभ उपर माल भरीने त्यां गयो हतो[१]

मुंबई पासेनुं मलाड आ कदाचित् होय एवो तर्क थई शके जो के एने माटे कशो ऐतिहासिक आधार नथी

१ वसहाण सहस्सेहिं सत्थवाहु व्व सो गओ ।
थलमग्गेण सोपारासन्न मलयपट्टण ॥ धाप्रर, पृ ६६

महाकाल

अवन्तिसुकुमालना पुत्रे उज्जयिनीमा पोताना पिताना मरणस्थान

उपर बंधावेल देवमंदिर 'महाकाळ' तरीके ओळखाय छे

जुओ अवन्तिसुकुमाल

महागिरि आर्य

स्थूलभद्रस्वामीना बे शिष्यो आर्य महागिरि अने आर्य सुहस्ती नामे हता एमां महागिरि सुहस्तीना उपाध्याय हता समय जतां महागिरिए साधुगण आर्य सुहस्तीने सोंप्या, अने ए काळे जिनकल्पनो विच्छेद थयो होवाथी गच्छनिश्रामा रहीने अभ्यो जिनकल्पनं पालन करीने विहार करवा लाग्या एक वार तेओ विहार करता पाटलिपुत्र गया ए समय आर्य सुहस्ती पण त्यां हता पाटलिपुत्रनो वसुभूति नामे एक श्रेष्ठी आर्य सुहस्तीना उपदेशथी श्रावक थयो हतो एनां कुटुंबीओने उपदेश आपवा माटे आर्य सुहस्ती एने घेर गया हता ए वखते आर्य महागिरि भिक्षान माटे त्यां आवी चडया आर्य सुहस्तीए एमने वंदन कर्युं आथी श्रेष्ठीए एमने विस्मे प्रश्न करतां सुहस्तीए कह्युं के 'तेओ मारा गुरु छे ' आ सांभळीने श्रेष्ठीए पोतानां माणसोने कह्युं के ज्यारे आ साधु आवे त्यारे-आ वस्तु त्याग करवा लायक मानवामां छे-एम कहीने तमारे तेमने वहोराववुं ' बीजे दिवसे आर्य महागिरि अम्हां आव्या, पण आम कृत्रिम रीते वहोराववामां आवतां अन्न-पाणीमांथी कशुं पण तेमने तेथा लायक लाग्युं नहि उपाश्रयमां पाछा आवीने तेमणे आर्य सुहस्तीने कह्युं के 'तमे गई काल मारो विनय करीने मारे माटे अनेषणा करी दीधी छे माटे फरी वार तमारे आवुं न करवुं ' सुहस्तीए महागिरिनी क्षमा मागी.

कठण आचारपालन माटेना आर्य महागिरिना आग्रहने लगतो बीजो एक प्रसंग पण मळ्‍ छे जे अनुसार तेमणे आर्य सुहस्ती साथे आहारपाणी लेवानुं बंध कर्युं हतुं

जीवतस्वामीनी प्रतिमाने वंदन करवा माटे आर्य सुहस्ती

उज्जयिनीमां आव्या हता ए समये त्यां संप्रति राजा हतो. जीवंत-स्वामीनो रथयात्रामा रथनी सामे आर्य सुहस्तीने जोईने राजाने जाति-स्मरण थयु अने पूर्वजन्ममां संप्रति पोतानो शिष्य होवानो वृत्तान्त आर्य सुहस्तीए तेने कह्यो तेमना उपदेशथी संप्रतिए श्रावक धर्मनो स्वीकार कर्यो पछी राजाए पोताना रसोयाओने आज्ञा करी के 'रसोडामा जे कंई वधे ते अकृत अने अकारितना अर्थी साधुओने तमारे आपवु ' वळी नगरना कदोईओ, तेलीओ, छाश वेचनाराओ, दोशीओ वगेरेने तेणे सूचना करी के 'साधुओने जे जोईए ते तमारे आपवु, एनुं मूल्य हु आपीश ' आ पछी साधुओने इच्छानुसार आहार अने वस्त्र मळवा मड्यां आथी आर्य महागिरिए आर्य सुहस्ती-ने कह्यु के 'प्रचुर आहार वस्त्रादि साधुओने मळे छे, माटे राजानी प्रेरणाथी तो लोको आपता नथी ने? ए बाबतमा तपास करो.' आर्य सुहस्ती बधुं जाणता हता, छतां पोताना शिष्यो प्रत्येना ममत्वथी तेओ बोल्या के 'राजधर्मनु अनुकरण करती प्रजा ज आ आहारादि आपे छे.' एटले आर्य महागिरिए कह्युं 'तमे बहुश्रुत होवा छतां पोताना शिष्यो प्रत्येना ममत्वथी आवुं बोलो छो, माटे हवेथी आपणे बन्ने जुदा आहार लईशुं ' पाछळथी आर्य सुहस्तीए पोताना अप-राधनी क्षमा मागी हती अने बन्ने आचार्यो फरी वार सामोगिक–साथे आहार लेता–थया हता [2]

आर्य महागिरि दशार्णपुरनी पासे आवेला गजाग्रपदमां अनशन करीने काळधर्म पाम्या हता.[3]

जुओ **सम्प्रति, सुहस्ती आर्य**

१ आचू, उत्तर भाग, पृ १५५–५७

२ बृकभा (गा २१४२) तथा बृकक्षे, भाग ३, पृ ६१७–२१, निचू, भाग २, पृ ४३७–३८ वळी निचू, भाग ५, पृ १७१४–१६ (भा गा ५६६४–५७०८ उपरनी चूर्णि) मा ए ज वृत्तान्त सक्षेपमा छे.

जीवन्तस्वामीनी प्रतिमा संबंधमां जुओ जरनल ओफ धी ओरिएन्टल इन्स्टिटयुट, ग्रन्थ १ पृ ७१-७९ मां श्री उमाकान्त शाहनो लेख ए युनिक इमेज ओफ जीवन्तस्वामी.

१ आव. उत्तर भाग पृ.१५७ आव पृ ४१८ जुओ गच्छाचारवृत्ति

महाराष्ट्र

पश्चिम भारतनो महाराष्ट्र प्रान्त महाराष्ट्रनी गणना जैन आगम साहित्यमां अनार्य देशोमां करेली छे महाराष्ट्र, कुडुक आदि अनार्य देशोमां जैन साधुओनो विहार राजा संप्रतिना प्रयत्नने लीधे शक्य बन्यो हतो.[1]

1 'प्रश्नव्याकरण सूत्र'मां महाराष्ट्र' (प्रा मरहट्ठ) जातिने म्लेच्छ जाति तरीके गणावेली छे

म्लेच्छ जाति तरीके 'मरहट्ठ'नो उल्लेख अन्यत्र पण मळे छे ए उपरथी आ नामपात्र छ अहीं 'म्लेच्छ' शब्द परदेशी के ते परदेशी जाति के के तो अहींना मूळ वतनी-जेमांथी एक उचित होय भारत मा बीजा अनेक प्रान्तोनां नाम जेम ते ते जातिओ उपरथी छे तेम महाराष्ट्रनुं नाम पण आ 'मरहट्ठ' जाति उपरथी पडेलुं छे

'अनुयोगद्वार सूत्र'मां मागध, मालव, सौराष्ट्र अने कोंकणनी साथे महाराष्ट्रनो उल्लेख छे महाराष्ट्रीओनी भाषाकला प्रसिद्ध हती. 'व्यवहार सूत्र'ना भाष्यमां कह्युं छे के-अक्रूर मलवाळो आंध्रवासी, अवाचाळ महाराष्ट्री, अने निष्पाप कोसलवासी सोमां एक पण देखातो नथी

महाराष्ट्रना विविध रिवाजो अने रूढिओमा उल्लेख आगम साहित्यमां छे 'महाराष्ट्र देशमां मधनी दुकानोमां मध होय के न होय पण तेनी उपर ध्वज फरकावामां आवे छे, जे जोईने भिक्षाचर आदि त्यां जता नथी महाराष्ट्र देशमां ठंडा पाणीमां बीजडा मूक-

वामा आवे छे[७] महाराष्ट्रमां प्रसिद्ध कोल्लुकचक्रपरपरा–शेरडी पीलवाना कोलुनां चक्रोनो पण निर्देश छे[८] पालंक (गुज पालख)नुं शाक महाराष्ट्र अने गोल्ल देशमा प्रसिद्ध छे[९] महाराष्ट्रमा नग्न साधुनु पुंश्चिह्न वींधीने एमां कडी नाखवानो रिवाज हतो[१०] महाराष्ट्रमा कल्पपाल–कलालने वहिष्कृत गणवामा आवतो नहोतो, एनी साथे बीजाओ भोजन लई शकता[१०] नीलकंबल आदि ऊननां वस्त्रो महाराष्ट्र देशमा घणा मोंघां होय छे, छता शियाळामा साधुओए ए धारण करवां, केम के ए सिवाय शीतनुं निवारण थतु नथी.[११] महाराष्ट्रमा भादरवा सुद पडवाना दिवसे 'श्रमणपूजा' नामे उत्सव थतो. एमां लोको साधुओने वहोरावीने अट्ठमना उपवासनु पारणुं करता[१२] कालकाचार्ये प्रतिष्ठानमां पर्युषण कर्युं त्यारथी आ उत्सवनो प्रारभ थयो हतो.[१३]

महाराष्ट्रनी भाषाने लगता पण केटलाक उल्लेखो छे मालव–महाराष्ट्रादि देशप्रसिद्ध विविध भाषाओ बोलवाथी सांभळनारने हास्य उत्पन्न थाय छे[१४] महाराष्ट्रनी भाषामां स्त्रीने 'माउग्गाम,'[१५] रूनी पूणीने 'पेलु,'[१६] तथा पूणो बनाववा माटेनी काष्ठशलाकाने 'पेलुकरण'[१७] कहे छे 'दशवैकालिक सूत्र'नी चूर्णि अनुसार, महाराष्ट्रमां संबोधनार्थे 'अण्ण' शब्द वपराय छे,[१८] ए बतावे छे के अर्वाचीन मराठी शब्द 'अण्णा'नो प्रयोग ओछामा ओछुं आठमा सैका जेटला प्राचीन काळमा जाय छे

'चोद्दिति' अथवा 'कुणिय' जेवा शब्दो बोलनार महाराष्ट्र प्रदेशमां हास्यपात्र थाय छे,[१९] एम 'निशीथचूर्णि' लखे छे एनो अर्थ ए थयो के 'निशीथचूर्णि' ज्यां रचाई ए प्राचीन गुर्जर देशमां लगभग आठमा सैका सुधी आ शब्दो अश्लील गणता नहोता.

१ जुओ सम्प्रति

२ प्रश्न (अधर्मद्वार), पृ १४ तेमांनु अवतरण– × × × इमे य बहवे बहवे मिलक्खुजाती, के ते ? सक–जवण–सबर–बब्बर–गाय–

चौलुक्ययुगना गुजरातना शिलालेखो अने साहित्यमां वणिकोनी एक 'गल्लक' जातिनो उल्लेख छे, एनो संबंध दक्षिण भारत साथे हशे ?

९ महाराष्ट्रविषये सागारिकं विद्ध्वा तत्र विण्टक. प्रक्षिप्यते, बृकभे, भाग ३, पृ ७३०

यद्वा कस्यापि महाराष्ट्रादिविषयोत्पन्नस्य साधोरज्ञादान वेण्टकविद्ध, ततस्तद् दृष्ट्वा ब्रुवते—कथ नु नामासौ साधुधर्मं न करिष्यति यस्येयन्त कर्णा विद्धा ? एज, भाग ३, पृ ७४१

१० एज, भाग २, पृ ३८३–८४

११ एज, भाग ४, पृ १०७४

१२ निचू, भाग २, पृ ६३३

१३ जुओ **कालकाचार्य–२.**

१३ बृकभे, भाग ६, पृ. १६७०

१५ निचू, भाग ३, पृ. ४४६

१६ विको, पृ. ९२२

१७ एज

१८ दवैचू, पृ २५०

१९ निचू, भाग ३, पृ ५५५

महिरावण

कोंकणनी कोई नदी.

जुओ **डिम्भरेलक**

मात्स्यिक मल्ल

सोपारकनो एक मल्ल, जेने उज्जयिनीना अट्टण मल्लने हाथे तालीम पामेला फलही मल्ले पराजित कर्यो हतो.

जुओ **अट्टण**

माध्यमिका

माध्यमिका नगरीनो उल्लेख 'विपाक सूत्र 'मां छे.

विशेषनी दक्षिण भागमां 'नागरी' नाम स्थान माध्यमिका छे एवो विद्वानोनो मत छे हाल पण माध्यमिकामां केटलाक विरल प्राचीन अवशेषो छे

१ विसू १-७

२ ज्योति पृ ११६

मालव-१

एक अनार्य जाति जेना नाम उपरथी अवन्ति जनपद मालव तरीके प्रसिद्ध थयो आगमसाहित्यमां 'मालव' जातिने 'म्लेच्छ जाति'[1] तथा 'मालव' देशने 'म्लेच्छ देश'[2] कह्यो छे आ मालव म्लेच्छो पर्वतमाळाओमां रहेता अने वस्तीमां आवीने माणसोनुं हरण करी जता[3] 'निशीथचूर्णि' कहे छे के तेओ मालव नामना पर्वत उपर विषम प्रदेशमां रहेता केटलाक ग्रन्थोमां 'मालव' तेम ज 'बोधिक'ने अभिन्न गण्या छे तथा तेमना आक्रमणनो भय भारी पडतो होई देशान्तर करवुं पडे सूचन करेलुं छे[4] 'मालव' 'स्तेन'-'चोर'[5] तेम ज 'उज्जयिनीतस्कर'[6] कह्या छे आ बीजा विशेषण उपरथी तेओ उज्जयिनी आसपासना प्रदेश उपर वारंवार आक्रमण करता ए हकीकत सूचित थाय छे उज्जयिनीना एक सार्थवाहपुत्रने चोर हरी गया हता अने तेने 'मालवक'-मालवदेशमां सूपकारने त्यां वेच्यो हतो, एवु कथानक मळे छे मालव जातिना आक्रमणकारोनी उज्जयिनीमां केटलो धाक हतो एनुं एक विशिष्ट दृष्टान्त 'ओघनियुक्ति'ना भाष्यमां छे जेनुं स्पष्टीकरण द्रोणाचार्यनी टीका करे छे ए दृष्टान्त वास्तविक न होय तो पण परिस्थितिनुं घोतक तो अवश्य छे द्रोणाचार्य लखे छे उज्जयिनीमां वारंवार मालवोनुं आक्रमण थतुं अने तेओ मनुष्योने हरी जता एक वार कूवामां रहेंटनो माळ पडी गई (माळा पडिता) कोई बोल्युं के 'माळ पडी' बीजो कोई एममां एम समज्यो के

—

'मालवो आव्या छे' (मालवा पतिता'), अने एम नासभाग थई रही[10] अणसमजुने भडकाववा माटे पण 'मालवस्तेन आव्या छे!' (मालवतेणा पडिया) एम कोई बोलतुं एवो निर्देश मळे छे.[11] आ उल्लेखो बतावे छे के बोलचालनी प्राकृतमा 'मालवाः' ने 'माला' पण कहेता हशे 'ओघनिर्युक्ति' (गा २६) मा 'सुभिए मालुज्जेणी पलायणे जो जओ तुरियं' ए प्रमाणे 'मालव' ने बदले 'माल' नो उल्लेख छे, ते पण आ अनुमाननु समर्थन करे छे हवे बीजी तरफ जोईए तो, सस्कृतमां (अने केटलीक अर्वाचीन भारतीय भाषाओमां) 'माल' शब्दनो अर्थ 'घरनो उपरनो भाग' थाय छे बगाळीमा 'मालभूमि'नो अर्थ 'पार्वत्य भूमि, उच्च प्रदेश' थाय छे, अने पश्चिम बंगाळना 'मालभूम' नामना डुंगराळ जिल्लामां रहेती एक आदिवासी जाति पण 'माल' जाति कहेवाय छे प्राचीन गुर्जर देशना पाटनगर 'भिल्लमाल'ना उत्तर अंगमा 'माल'नो संबंध पण ए माल जाति साथे होय ए शक्य छे

कोई वार समयसूचकतावाळा माणसो हिंमत करीने आ लुटाराने केवी रीते पराजित करता एना पण उल्लेख छे कोई गाम उपर मालव-शबरोना सैन्ये आक्रमण कर्युं हतुं एमाना केटलाक बोधिकोए केटलीक साध्वीओनुं तथा एक क्षुल्लक—नाना साधुनुं अपहरण कर्युं ए चोरो पोतानामाथी एकने साध्वीओ तथा क्षुल्लकनी सोंपणी करीने बीजानुं हरण करवा माटे गया हवे, ए एक चोर तरस्यो थता पाणी पीवा माटे कूवामा ऊतर्यो क्षुल्लके विचार कर्यो के 'अमने आटलां बधांने आ एक चोर शु करी शकवानो छे?' तेणे साध्वीओने कह्युं के 'आपणे आ चोर उपर पाषाणपुज नाखीए.' साध्वीओए गभराईने ना पाडी, परन्तु क्षुल्लके तो एक मोटो पत्थर पेला चोर उपर नाख्यो, एटले बधी साध्वीओए पण एक साथे पथ्थरो नाख्या. एनाथी चोर मरण पाम्यो, अने क्षुल्लक साध्वीओने लईने सुरक्षित स्थळे गयो[12]

धोरैरायिकाणामेकस्य च क्षुल्लकस्य हरण कृतम्। व्यम (उद्दे० ७ उपरनी वृत्ति), पृ ७१

बोधिक अने मालवनी अभिन्नता सबधमां वळी जुओ टि ४

७ जीकभा, गा ९३३

८ माल्वा—उज्जयिनीतस्करा । जीकचूर्ण्या, पृ ४३

९ उज्जेणीए सावगस्स सुतो चोरेहिं हरिउ मालवके सूत्रगारस्स हत्थे विक्कीतो, उचू, पृ १७४

उज्जेणीए सावगसुतो चोरेहिं हरिउ मालवके सूयगारस्स हत्थे विक्कीतो, उशा, पृ २९४ आचू (उत्तर भाग, पृ २८३) मां मालव देशनो उल्लेख नथी, पण उज्जयिनीमाथी छोकराओने मालवो उपाडी गया हता अने एमाथी श्रावकना छोकराने रसोयाए खरीद्यो हतो, एम कह्यु छे

१० ओनिभा गा २६, ओनिद्रो, पृ १९

११ निचू, भाग २, पृ २९०

१२ व्यभा, गा. ४११, व्यम (उद्दे० ७ उपरनी वृत्ति), पृ ७१

१३ प्रायेण णिगलबधो हडिबधणादिणा विवरेण करेति, जहा मालवाण, सूकृचू, पृ ३६४

१४ द्रन्यतो नाम—न दुष्टभावतया परुष भणन्ति किन्तु तत्स्वाभाव्यात्, यथा मालवा परुषवाक्या भवन्ति । बृकक्षे, भाग ६, पृ १६१९

१५ ज्योडि, पृ १२२. जैन आगमसाहित्य सिवायनां साधनोमाथी प्राप्त थता मालव जातिना वृत्तान्त माटे जुओ 'ट्राइब्स इन ॲन्स्यन्ट इन्डिया,' पृ ६०–६५

मालव–२

मध्य भारतनो माळवा प्रान्त 'अनुयोगद्वार सूत्र'मां क्षेत्रसंयोगनी वात करता मागध, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र अने कोंकणनी साथे मालवकनो उल्लेख कर्यो छे[१] स्पष्ट छे के अहा 'मालवक' कहेतां जंगली मालव-जातिना मूळ पहाडी वतननो नहि, पण संभवत अत्यारना माळवा प्रान्तनो निर्देश छे (जुओ मालव–१) ए रीते 'अनुयोगद्वार सूत्र'ना

श्चौरैरायिकाणामेकस्य च क्षुल्लकस्य हरण कृतम । व्यम (उद्दे० ७ उपरनी वृत्ति), पृ ७१

बोधिक अने मालवनी अभिन्नता सबधमां वळी जुओ टि ४

७ जीकभा, गा ९३३

८ मालवा–उज्जयिनीतस्करा । जीकचूर्या, पृ ४३

९ उज्जेणीए सावगस्स सुतो चोरेहिं हरिउ मालवके सूयगारस्स हत्ये विक्कीतो, उचू, पृ १७४

उज्जेणीए सावगसुतो चोरेहिं हरिउ मालवके सूयगारस्स हत्ये विक्कीतो, उशा, पृ २९४ आचू (उत्तर भाग, पृ २८३) मां मालव देशनो उल्लेख नथी, पण उज्जयिनीमाथी छोकराओने मालवो उपाडी गया हता अने एमाथी श्रावकना छोकराने रसोयाए खरीद्यो हतो, एम कह्यु छे

१० ओनिभा गा २६, ओनिद्रो, पृ १९

११ निचू, भाग २, पृ २९०

१२ व्यभा, गा ४११, व्यम (उद्दे० ७ उपरनी वृत्ति), पृ ७१

१३ प्रायेण णिगलबधो हडिबधणादिणा विवरेण करेति, जहा मालवाण, सूकृचू, पृ ३६४

१४ द्रव्यतो नाम–न दुष्टभावतया परुष भणन्ति किन्तु तत्स्वाभाव्यात्, यथा मालवा परुषवाक्या भवन्ति । बृक्षे, भाग ६, पृ १६१९

१५ ज्योडि, पृ १२२ जैन आगमसाहित्य सिवायनां साधनोमाथी प्राप्त थता मालव जातिना वृत्तान्त माटे जुओ 'ट्राइब्स इन अेन्श्यन्ट इन्डिया,' पृ ६०–६५

माळव–२

मध्य भारतनो माळवा प्रान्त 'अनुयोगद्वार सूत्र'मां क्षेत्रसंयोगनी वात करता मागध, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र अने कोंकणनी साथे मालवकनो उल्लेख कर्यो छे[१] स्पष्ट छे के अहीं 'मालवक' वडे जंगली मालव-जातिना मूळ पहाडी वतननो नहि, पण संभवत अत्यारना माळवा प्रान्तनो निर्देश छे (जुओ [illegible]

९ कसु, पृ ३९९, कदी, पृ १०४

माहेश्वर

जुओ माहेश्वरी

माहेश्वरी

माहेश्वरीनी स्थापना विशेनी कथा आ प्रमाणे छे

पोतनपुरना राजा प्रजापतिने भद्रा नामे राणीथी अचल नामे पुत्र थयो हतो अचल बलदेव हतो प्रजापतिए पोतानी मृगावती नामे पुत्री साथे गान्धर्वविवाह कर्यो हतो, आथी भद्रा पोताना पुत्र अचल साथे दक्षिणापथ चाली गई हती अने त्यां तेणे माहेश्वरी नामे नगरी वसावी हती. ए नगरी मोटा ऐश्वर्यवाळी होवाथी माहेश्वरी (प्रा माहेस्सरी) कहेवाती हती. अचल पोतानी माताने ए नगर सोंपीने पाछो पितानी पासे गयो हतो.[१]

माहेश्वर, श्रीमाल अने उज्जयिनीमा लोको समूहमां एकत्र थईने सुरापान करे छे एवो उल्लेख मळे छे[२] पुरिकापुरीना बौद्ध राजाए पर्युषण पर्वमां जिनपूजामां पुष्पोनो निषेध कर्यो हतो, तेथी वज्रस्वामी आकाशमार्गे माहेश्वरी जईने पोताना पिताना मित्र एक माळी पासेथी पुष्पो लाव्या हता[३]

माहेश्वरी ए ज कार्तवीर्यनी माहिष्मती छे अने ते इन्दोरनी दक्षिणे चाळीस माईल दूर नर्मदाकिनारे आवेल महेश्वर अथवा महेश छे, एवो सामान्य मत छे.[४] पण नर्मदातटे आवेल मान्धाताने पण माहिष्मती गणवामा आवे छे,[५] ज्यारे श्री क मा मुनशीना मत प्रमाणे हालनु भरूच ते ज कार्तवीर्यनी माहिष्मती छे[६]

१ आचू, पूर्व भाग, पृ २३२

२ आसूचू, पृ ३३३ वळी जुओ **उज्जयिनी**

३ कसु, पृ. ५११-१३, ककि, पृ १७०-७१

४ ज्योति पृ. ११

५ कुम्म पृ. १६

६ ऐतिहासिक संशोधन पृ. ५६१

मूलदेव

एक प्रसिद्ध [illegible] अने धूर्त जे पाछळथी वेणातट नगरनो राजा थयो हतो 'उत्तराध्ययन सूत्र'नी चूर्णि तथा ते उपरनी शान्तिसूरि अने नमि चन्द्रनी वृत्तिओमां मूलदेवनो वृत्तान्त प्रमाणमां विस्तारथी अने विगतथी आपेलो छे चूर्णि अने शान्तिसूरि अनुसार मूलदेव उज्जयिनीनो [illegible] हतो (नेमिचन्द्रना कथन मुजब, मूलदेव पाटलिपुत्रनो राजकुमार हतो अने पोताना पिताथी रिसाईने उज्जयिनीमां आवीने रह्यो हतो.) ते एक मोटो [illegible] होवा उपरांत गीतकला अने मर्दनकलामां पण निपुण हतो उज्जयिनीनी एक सुप्रसिद्ध गणिका देवदत्ता तेनी साथे प्रेममां पडी हती, परन्तु गणिकानी माता अचल नामे बीजा एक धनिक वणिकनो पक्ष करती होवाने कारणे मूलदेवने उज्जयिनी छोडीने चाल्या जवुं पड्युं हतुं पछी ए दक्षिणमां आवेला वेणातट नगरमां जईने रह्यो. त्यां कोईना घरमां खातर पाडतो हतो त्यारे नगररक्षकोए एने पकडी लीधो अने वधस्थान उपर लई जवा मांड्यो ए दिवसे नगरनो राजा अपुत्र मरण पाम्यो हतो मंत्रीओ नवा राजानी शोधमां हता ए माटे अधिवासित करेलो अश्व मूलदेव पासे आवी ऊभो (नेमिचन्द्रना कथन मुजब मूल-देवने जोईने हाथीए गर्जना करी, अश्वे हेषारव कर्यो, भृंगारे अभिषेक कर्यो चामर वीजन कर्युं, अने छत्र एनी उपर आवी रह्युं; ए प्रमाणे पांच दिव्य थयां) एटले तेनो राजा तरीके अभिषेक थयो. पछी मूलदेवे उज्जयिनीना विक्रम राजा उपर पत्र लखीने तथा अनेक प्रकारनी भेट मोकलीने देवदत्ता गणिका पोताने सोंपवानी विनंति करी, अने विक्रम राजाए देवदत्तानी इच्छा जाण्या पछी ते कबूल राखी मूलदेव देवदत्तानी साथे सुखपूर्वक रहेवा लाग्या ए समये मंडिक नामे एक

चोर दिवसे लगडा तूनारा तरीके रहेतो ने रात्रे शहेरमां खातर पाडीने लोकोने त्रास आपतो एक वारना चोर मूळदेवे युक्तिप्रयुक्तिथी मंडिकने पकड्यो अने तेनी पासेनु बधु द्रव्य लई लीधा पछी एने शळीए चढाव्यो.'

'व्यवहारसूत्र'नां भाष्य तथा वृत्तिमा मूळदेवना राज्याभिषेकनो वृत्तान्त संक्षेपमां अने सहेज जुदी रीते आप्यो छे वळी त्यां नगरनु नाम पण नथी चोरी करतां पकडायेला मूळदेवनो वध करवानी राजाए आज्ञा करी हती, पण ए पछी तुरत ज राजा एकाएक मरण पाम्यो राजा अपुत्र हतो, तेथी एनी पछी कोनो राज्याभिषेक करवो ए प्रश्न उपस्थित थयो वैद्य अने मंत्रीए राजाना मरणनी वात गुप्त राखीने तथा राजा बोली शकता नथी एम जणावी, पडदामांथी राजानो हाथ लांबो करावी तेओ मूळदेवना अभिषेकनी सूचना करता होवानुं जणाव्युं. पछी एक वारनो आ चोर राजा थयो होवाथी सामंतो तेनुं योग्य सन्मान करता नहोता राजदरबारमां पोतानी उपेक्षा करता सामंतोने जोईने मूळदेव बोल्यो के 'मारी आज्ञा पाळनार कोई छे के नहि?' ए समये तेना पुण्यप्रभावथी राज्यदेवता वडे अधिष्ठित थयेला चित्रमय प्रतीहारोए केटला ये सामंतोनां माथां कापी नाख्यां आथी बाकीना सामंतो तावे थई गया[2]

आचार्य हरिभद्रसूरिए (वि सं ७५७-८२७=ई स. ७०१-७७१) नर्म अने कटाक्षथी भरेलु 'धूर्ताख्यान' नामे एक प्राकृत कथानक रच्युं छे, जेमा मूळदेव एक पात्र तरीके आवे छे आ धूर्ताख्याननुं वस्तु 'निशीथ सूत्र'ना भाष्य अने चूर्णिमा मळे छे एमा मूळदेव, एलाषाढ, अने शश ए त्रण धूर्तो[3] तथा खडपाना नामे धूर्तानी वात छे एमांना प्रत्येक धूर्तनी साथे बीजा पाचसो धूर्तो अने खंडपानानी साथे पाचसो धूर्ताओ हती. एक वार भरचोमासामा उज्जयिनीनी उत्तरे आवेला जीर्णोद्यानमा ए बधां ठडीथी थरथरता भखे मरता बेठा हतां त्यारे मळदेवे पद तर्कां के

४ ज्योति पृ ११

५ पुष्प पृ ११

६ ऐतिहासिक संशोधन पृ. ५६१

मूलदेव

एक प्रसिद्ध विट अने धूर्त जे पाछळथी वेणातट नगरनो राजा थयो हतो. 'उत्तराध्ययन सूत्र'नी चूर्णि तथा ते उपरनी शान्तिसूरि अने नेमिचन्द्रनी वृत्तिओमां मूलदेवनो वृत्तान्त प्रसंगमां विस्तारथी अने विगतथी आपेलो छे. चूर्णि अने शान्तिसूरि अनुसार, मूलदेव उज्जयिनीनो विट हतो (नेमिचन्द्रना कथन मुजब, मूलदेव पाटलिपुत्रनो राजकुमार हतो अने पोताना पिताथी रिसाईने उज्जयिनीमां आवीने रह्यो हतो.) ते एक मोटो कलाकार होवा उपरांत गीतकला अने मर्दनकलामां पण निपुण हतो. उज्जयिनीमां एक सुप्रसिद्ध गणिका देवदत्ता तेनी साथे प्रेममां पडी हती, परन्तु गणिकानी माता अचल नामे बीजा एक धनिक वणिकनो पक्ष करती होवाने कारणे मूलदेवने उज्जयिनी छोडीने जवुं पड्युं हतुं. पछी ए दक्षिणमां आवेला वेणातट नगरमां आवीने रह्यो. त्यां एकवेळा भरमां स्वप्न पाम्यो हतो त्यार नगरमां कोइए एमे एकदी धीयो अने अश्वस्थान उपर छाई अवा मांडयो. ए दिवसे नगरनो राजा अपुत्र मरण पाम्यो हतो. मंत्रीओ नवा राजानी शोधमां हता. ए माट अधिवासित करेलो अश्व मूलदेव पासे आवी ऊभो (नेमिचन्द्रना कथन मुजब मूलदेवने जोईने हाथीए गर्जना करी, अश्वे हेषारव कर्यो, भृंगारे अभिषेक कर्यो, चामर वीजवा मांड्युं, अने कमळ तेनी उपर आवी रह्युं. ए प्रमाणे पांच दिव्य थयां) एटले तेनो राजा तरीके अभिषेक थयो. पछी मूलदेवे उज्जयिनीना विक्रम राजा उपर पत्र लखीने तथा अनेक प्रकारनी भेट मोकलीने देवदत्ता गणिका पोताने सोंपवानी विनंति करी, अने विक्रम राजाए देवदत्तानी इच्छा जाण्या पछी ते कबूल राखी. मूलदेव देवदत्तानी साथे सुखपूर्वक रहेवा लाग्यो. ए समये मंडिक नामे एक

चोर दिवसे लंगडा तूनारा तरीके रहेतो ने रात्रे शहेरमां खातर पाडीने लोकोने त्रास आपतो. एक वारना चोर मूलदेवे युक्तिप्रयुक्तिथी मंडिकने पकडयो अने तेनी पासेनुं बधुं द्रव्य लई लीधा पछी एने शूळोए चढाव्यो.[1]

'व्यवहारसूत्र'नां भाष्य तथा वृत्तिमां मूलदेवना राज्याभिषेकनो वृत्तान्त संक्षेपमां अने सहेज जुदी रीते आप्यो छे वळी त्यां नगरनुं नाम पण नथी चोरी करतां पकडायेला मूलदेवनो वध करवानी राजाए आज्ञा करी हती, पण ए पछी तुरत ज राजा एकाएक मरण पाम्यो. राजा अपुत्र हतो, तेथी एनी पछी कोनो राज्याभिषेक करवो ए प्रश्न उपस्थित थयो वैद्य अने मंत्रीए राजाना मरणनी वात गुप्त राखीने तथा राजा बोली शकता नथी एम जणावी, पडदामांथी राजानो हाथ लांबो करावी तेओ मूलदेवना अभिषेकनी सूचना करता होवानुं जणाव्युं. पछी एक वारनो आ चोर राजा थयो होवाथी सामंतो तेनुं योग्य सन्मान करता नहोता राजदरबारमां पोतानी उपेक्षा करता सामंतोने जोईने मूलदेव बोल्यो के 'मारी आज्ञा पाळनार कोई छे के नहि ?' ए समये तेना पुण्यप्रभावथी राज्यदेवता वडे अधिष्ठित थयेला चित्रमय प्रतीहारोए केटला ये सामंतोनां माथां कापी नाख्यां आथी बाकीना सामंतो तावे थई गया[2]

आचार्य हरिभद्रसूरिए (वि सं ७५७–८२७=ई स. ७०१–७७१) नर्म अने कटाक्षथी भरेलु 'धूर्ताख्यान' नामे एक प्राकृत कथानक रच्युं छे, जेमा मूलदेव एक पात्र तरीके आवे छे आ धूर्ताख्याननुं वस्तु 'निशीथ सूत्र'ना भाष्य अने चूर्णिमा मळे छे एमा मूलदेव, एलाषाढ, अने शश ए त्रण धूर्तो[3] तथा खडपाना नामे धूर्तानी वात छे एमांना प्रत्येक धूर्तनी साथे बीजा पांचसो धूर्तो अने खंडपानानी साथे पांचसो धूर्ताओ हती. एक वार भरचोमासामा उज्जयिनीनी उत्तरे आवेला जीर्णोद्यानमा ए बधा ठंडीथी थरथरता भूखे मरता बेठा हता त्यार मूलदेवे एम कह्यं के

'आपणे दरेके पोतपोताना अनुभवो कहेवा, अने जेना अनुभवो खोटा पुरवार थाय तेणे आ धूर्तमंडळीने भोजन आपवुं ' एमां प्रथम धूर्तोनी न मानी शकाय एवी वातोने पण मौखिक भारत शास्त्रपुराणोमांनी ए प्रकारनी कथाओ रजू करी समर्थन आप्युं आ पछी हरिभद्रसूरिना 'धूर्ताख्यान 'मां एम आवे छे के—खंडपानानी वातने कोई साची के खोटी कही शक्युं नहि; सर्वेए हार स्वीकारी अने पछी तेनी निर्मळ खंडपानाए पोते भोजन पण आप्युं. पण ए बधुं नहि वर्णवतां 'निशीथ चूर्णि ' तो 'शेष धूर्ताख्यानानुसारेण ज्ञेयं (बाकीनुं 'धूर्ताख्यान' प्रमाणे जाणी लेवुं) एम कहीने वात पूरी करी द छे ' 'निशीथ चूर्णि 'नो समय पण ईसवी सनना सातमा सैकाथी अर्वाचीन नथी एटले ते जे 'धूर्ताख्यान 'नो उल्लेख कर छ ते हरिभद्रसूरिकृत होवानो संभव नथी कां तो चूर्णिकार पासे बीजुं कोई प्राचीनतर प्राकृत 'धूर्ताख्यान ' होय अथवा आ धूर्तोनी लोकप्रचलित कथा जे पण 'धूर्ताख्यान ' कहेवाती होय एनो उल्लेख तेमणे कर्यो होय

'आवश्यक सूत्र 'नी चूर्णि अने वृत्तिमां मूळदेवना मित्र तरीके कंडरीकनुं नाम छे जे हरिभद्रसूरिना 'धूर्ताख्यान 'मां एक पात्र तरीके छे मूळदेवनां विदग्धता धूर्तता अने बुद्धिचातुर्यनी कथाओ पण आगमसाहित्यमां अनेक स्थळे छे एक ठेकाणे बुद्धिमान पुरुषने मूळदेव जेवो कह्यो छ

प्राचीन भारतनी लोककथामां अमर बनेलो आ मूळदेव खरेखर ऐतिहासिक व्यक्ति हशे एवो डॉ विन्टरनित्सनो मत छे; जो के मूळदेव विशेनी बधी वार्ताओ ऐतिहासिक हशे एवुं कंई एमांथी फलित थतुं नथी आगमेतर तेम ज जैनेतर संस्कृत—प्राकृत साहित्यमां मूळदेव विशेनां कथानको तथा एना मित्रोने लगता उल्लेखो सम्पन्नपणे छे शूद्रक कविना पद्मप्राभृतक भाण मां मूळदेव अने देवसेना (देव

दत्ता)नी प्रणयकथा आवे छे तथा ए भागनो प्रवक्ता मूलदेवनो मित्र शश छे मूलदेवनुं 'कर्णीसुत' एवुं नाम पण एमां छे महाकवि बाणनी 'कादबरी'मां विन्ध्याटवीना वर्णनमा एक श्लिष्ट वाक्यखंडमां कर्णीसुत (मूलदेव) अने तेना त्रण मित्रो–विपुल, अचल अने शशनो उल्लेख छे काश्मीरी सोमदेव भट्टकृत 'कथासरित्सागर'ना 'विषमशील लंबक'नी छेल्ली वार्तामा–'स्त्रीमात्र कई नठारी होती नथी बधे कई विषवल्लीओ होती नथी, अतिमुक्तलता जेवी आम्रने वळगनारी वेलोओ पण होय छे'–ए सूत्र पुरवार करवा माटे मूलदेव पोताना ज रंगीला जीवननो एक प्रसंग राजा विक्रमादित्यने कही सभळावे छे, एमां पण मूलदेवनी साथे एनो मित्र शश छे सं १२५५=ई स ११९९ मा रचायेलुं पूर्णभद्र मुनिनुं 'पंचाख्यान', जे 'पंचतंत्र'नु ज एक अलंकृत संस्करण छे तेमां (तंत्र १, कथा १०) मूलदेव विशेनो एक रसप्रद उल्लेख छे एक राजानी पथारीमा जू रहेती हती त्या आवीने एक माकणे पण पोताने रहेवा देवानी विनति करी "जूए दाक्षिण्यथी माकणनी विनंति स्वीकारी, कारण के एक वार राजाने मूलदेवनुं कथानक कहेवामा आवतुं हतुं त्यारे चादरना एक भागमा रहेली जूए ते साभळ्युं हतु एमा मूलदेवे देवदत्ता गणिकाने कह्यु हतु के 'पगमां पडीने करेली विनंति पण जे मानतो नथी तेना उपर ब्रह्मा, विष्णु अने महादेव त्रणे कोपायमान थाय छे' ए वचन संभारीने जूए माकणनी विनंति स्वीकारी"

एक प्रकारनी गुप्त साकेतिक भाषा मूलदेवप्रणीत होवाने कारणे 'मूलदेवी' नामथी ओळखाती (जुओ कोऊहल–कृत 'लीलावई-कहा'नुं संस्कृत टिप्पण, पृ २८)

वळी मूलदेवने स्तेयशास्त्र अथवा चोरशास्त्रनो प्रवर्तक मानवामां आवे छे[10] एने मूलश्री, मूलभद्र, करटक, कलांकुर, खरपट, कर्णीसुत आदि नामोथी संस्कृत साहित्यमा ओळखवामा आवे छे [illegible] सनना

सातमा शतकना पूर्वार्धमां थयेला महेन्द्रविक्रमवर्माकृत 'मत्तविलास प्रहसन' (पृ. १८)मां खरपटने नमस्कार एम कह्यो, जेण चोर शास्त्र रच्युं!' एवो उल्लेख छे दंडीना 'दशकुमारचरित' (उच्छ्वास २)मां चोरीनो धंधो स्वीकारनार एक पात्र 'कर्णीसुते उपदेशेला मार्गोमां में बुद्धि चलावी!' एम कहे छे

आ प्रासंगिक उदाहरणोथी ए स्पष्ट थशे के जेनी आसपास लोकप्रिय वार्ताओ रचाया छे एवा थोडांक विचित्र अने विलक्षण पात्रो पैकीनो एक मूळदेव छे साहस विदग्धता अने मुक्त प्रणयमां राचती जे सृष्टि 'दशकुमारचरित' जेवी प्राचीन कथाओना मानसो रजू करे छे तेनो ज एक विशिष्ट प्रतिनिधि आ मूळदेव पण छे एनी अने एना मित्रोनी कथाओ जेम जैन साहित्यमां छे तेम जैनेतर साहित्यमां पण छे ए बतावे छे के वत्सराज उदयननी जीवनकथानी जेम मूळदेव विशेनी वातो पण प्राचीन भारतीय कथासाहित्यनुं एक जीवंत अंग हतु

१ बृह, पृ. ११८-२१ वळी पृ २१८-२२ उत्त पृ. ५६-६१

२ व्यवहा भा. ११८-१९, व्यव (उद्दे ४)नी वृत्ति पृ ३१

३ हरिभद्रसूरिकृत धूर्ताख्यान पण आ प्रश्न उपरांत अन्यत्र आमे जोवी घटे छ.

४ निशी भा. ११४ निशू भाग १ पृ. १२-१५

५ आव् पूर्व भाग पृ ५४१

६ आव पृ ५२१

७ आव्, पूर्व भाग पृ. ५४५ आव पृ ५११ दशवै पृ ५५-५६ दशैहा पृ. ५७-५८ इत्यादि.

८ उत्त ना एणे मूळदेवचरित्र मजुस्ती आपेलु दशैचू, पृ. ५८

९ हिस्टरी ओफ इन्डियन लिटरेचर भाग २ पृ ४८८

१ आ विशे वधु विस्तार माटे जुओ कुमार वर्ष १ मा

अकमा मारो लेख प्राचीन साहित्यमा चोरशास्त्र'

मेदपाट

मेवाड सूचक नामे तृणविशेष मेवाडमा प्रसिद्ध छे[1]

१ प्रव्याअ, पृ १२७

मोढेरक

उत्तर गुजरातनु मोढेरा. मोढेरक आहारनो उल्लेख 'सूत्रकृतांग-सूत्र'नी वृत्तिमा छे.[1] ए ज सूत्रनी चूर्णिमा मोढेरकनो ए प्रकारनो उल्लेख छे, जेथी ए एक महत्त्वनु स्थळ होवानु सिद्ध थाय छे.[2]

पुराणोमा आ नगरनुं 'मोहेरक' एवु नाम मळे छे[3]

१ सूकृशी, पृ ३४३. जुओ खेट आहार

२ जहा पुट्ठो वेणइ-कैसि तुम मोढेरगातो आगतो भवान्? सो भणइ-णाह मोढेरगातो, भवद्ग्रामायातो- । सूकृचू, पृ ३४८

३ जुओ पुगुमां मोहेरक मोढेराना इतिहास माटे जुओ श्री मणिलाल मू. मिस्त्रीकृत पुस्तिका 'मोढेरा'

यमुन

जुओ **यवन**

यवन

मथुरानो एक राजा. प्राकृतमा एनु नाम जउण, जवुण अथवा जउणसेण मळे छे एना मंत्रीनुं नाम चित्तप्रिय हतुं[1] ए राजा विशे आवी कथा छे 'जउणावंक,' नामे उद्यानमा आतापना लेता दंड नामे अणगारनो ए राजाए वध कर्यो हतो दंड अणगार काळ करीने सिद्धिमा गया तेमनो महिमा करवा आवेला इन्द्रे राजाने कह्युं के 'तु दीक्षा लईश तो ज आ पापथी मुक्त थईश.' पछी राजाए स्थविरो पासे दीक्षा लीधी[2]

जउण, जवुण आदिनुं[3] संस्कृत रूप 'अभिधानराजेन्द्र' (ग्रन्थ

४) तथा ' पाइअ-सद्द-महण्णवो 'ए सूचव्युं छे ते प्रमाणे 'यवन' पर्छु पण वो के आपी शकाय तथा मथुरा नगर यमुना नदीना कांठे वसेलु होइ त्याना राजाने पण 'यमुन' नाम आपवामां आवे एमां एक प्रकारनु कथोचित सारल्य जणाय छे खरुं, परंतु मने तो 'यवन' एवो छाया वधार उचित लागे छे मथुरामां एक काळे यवन अर्थात् ग्रीक राजाओनुं राज्य हतुं ए इतिहाससिद्ध छे एवो कोइ परदेशी राजा धार्मिक असहिष्णुताथी प्रेराई जैन साधुनो वध करे ए पण संभवित छे आगमसाहित्यमां आ राजाने 'परपक्ष' नो कह्यो छे, एथी एनुं परदेशीपणु सूचवाय छे एम समजवुं।

१ जिओ पृ १९४

२ भाष्य, उत्तर भाग पृ १५५. विविध तीर्थकल्प (पृ १९) मां आ प्रसंगनो निर्देश छे त्यां राजानुं नाम शंकवरण आप्युं छे अने राजाए साधु उपर बा करतां साधुने केवळ ज्ञान थयुं एम कह्युं छे

३ परपक्खो य सपक्खे भद्दो बह होइ महुरराया य।
तं पुण जत्तिसयचाली दिसावरविमरणं मार्ह ॥

निशा भा. २६४२

परपक्खो सपक्खे हतो यहा महुराए जवणराया जिव (वर्ष ११) पृ ७४१

महुरा नगरी जमुणो राया बहुयाबके उज्जाणं भाष्य उत्तर भाग पृ. १५५

महुराए जवणरायो राया जियसत्तुणो य से धेणी जिओ पृ १९४

यशोदेवसूरि

चंद्रगच्छना वीरगणिना शिष्य श्रीचन्द्रसूरिना शिष्य एमणे सं ११८० -८१ सं ११२४ मां जयसिंहना राज्यमां अणहिलवाडमां सोवर्णिक नेमिचन्द्रनी पौषधशाळामां रहीने 'पाक्षिक सूत्र'

उपर 'सुखावबोधा' नामे वृत्ति रची हती[1] यशोदेवसूरिए संख्याबंध आगमेतर धार्मिक ग्रन्थो उपर पण टीकाओ लखी छे[2]

१ पाय, प्रशस्ति

२ जसाइ, पृ २४४

यादव

यदुना वंशजो,[1] जेओ प्रथम शौरिपुरमां अने पछी द्वारकामा वसता हता

१ जैन साहित्य अनुसार यदुना वंशवृक्ष माटे जुओ जैन, 'अेन्श्यन्ट इन्डिया,' पृ ३७६

यौगन्धरायण

वत्सराज उदयननो मंत्री अवंतिना राजा प्रद्योते उदयनने कैद पकड्यो हतो, एने छोडाववानो प्रयत्न करतो यौगंधरायण उज्जयिनी आव्यो हतो उदयन अने वासवदत्ताने हाथणी उपर वेसाडीने नसाडवानी योजना तेणे विचारी, अने पछी ए योजना परत्वे पोताना बुद्धिवैभवनु अभिमान नहि जीरवी शकायाथी मार्गे जता ते एक श्लोक बोल्यो के—

यदि तां चैव तां चैव तां चैवायतलोचनाम् ।
न हरामि नृपस्यार्थे नाहं यौगन्धरायणः ॥

ए ज समये नगरमां फरवा नीकळेला प्रद्योत राजाए आ शब्दो सांभळ्या अने क्रुद्ध दृष्टिथी एनी सामे जोयु पण यौगंधरायणे गांडपणनो देखाव कर्यो, एटले प्रद्योत पोताना कोपनो निग्रह करीने चाल्यो गयो थोडा समय पछी वत्सराज अने वासवदत्ता उज्जयिनीथी कौशाम्बी चाल्या गया अने घणो प्रयत्न करवा छता प्रद्योत एमने पकडी शक्यो नहि.[1]

अहीं ए मोंघमु रसप्रद अर्थ के उपर टांकेलो "यदि तां चैव०" ए श्लोक नजीवा पाठांतर साथे, भासना 'प्रतिज्ञायौगंधरायण' नाटक (अंक २, श्लो ८) मां यौगंधरायणना मुखमां मुकायेलो छे एक ज श्लोक, लोकप्रिय वस्तुनो जुदी जुदी परंपराओमां केवा रीते विनियोग थयो एनु आ पण एक रसिक उदाहरण छे

जुओ उदयन, प्रद्योत

१ भाष्य उत्तर भाग पृ. १६१-६२ अन्य परंपरा अनुसार आ कथा के प्रसंगना विस्तृत वर्णन माटे जुओ हेमचन्द्रकृत त्रिषष्टिशलाका-पुरुषचरित्र पर्व १ सर्ग ११

रक्षित आर्य

आर्य रक्षित अथवा रक्षितसूरिनी स्तुति 'नंदिसूत्र'नी स्थविरा वलीमां अनुयोगोना रक्षक तरीके करेली छे आर्य रक्षित दशपुरना राजाना पुरोहित सोमदेवना पुत्र हता एमनी मातानुं नाम रुद्रसोमा हतुं तोसलिपुत्र नामे आचार्य पेमो दशपुर आव्या हता तेमनी पासे एमणे दीक्षा लीधी हती उज्जयिनीमां वज्रस्वामी पासे जईने तेमणे साडानव पूर्वनो अभ्यास कर्यो हतो तथा ते पहेलां उज्जयिनीमां एक वृद्ध आचार्य भद्रगुप्तसूरिने अनशननी आराधना करावी हती आर्य रक्षिते एमना पिता सोमदेव अने भाई फल्गुरक्षित सुद्धां आखा कुटुंबने दीक्षित कर्युं हतुं तेमना पिता सोमदेव एक याज्ञिक ब्राह्मण होई, पोताने बीजाओ वंदन करे के न करे, पण वस्त्रनो त्याग करवानी विरुद्ध हता एथी तेमणे कटिवस्त्रने बदले चोलपट्ट धारण कर्यो हतो आ के 'प्रभावकचरित' आदि ग्रन्थो कहे छे के स्वर्गवास पामेला एक मुनिनो मृतदेह ज्यारे सोमदेवे उपाड्यो हतो त्यारे एमनु चोलपट्ट खेंची लेवामां आव्युं अने त्यार पछी एमणे वस्त्र धारण कर्युं नहि

पूर्वकाळमां साधुओने मात्र एक ज पात्र राखवानी छूट हती

आर्य रक्षितसूरिए चोमासाना चार मास माटे पात्र उपरात एक मात्रक (नानु पात्र) राखवानी छूट आपी हतो.[7] आर्य रक्षितसूरिना समय पूर्वे साध्वीओ साध्वीओनी पासे आलोचना लेती, पण एमना समयथी साध्वीओए साधुओनी पासे आलोचना लेवानु ठर्युं[8]

आर्य रक्षिते पोतानी पछी गच्छनुं आधिपत्य दुर्बल पुष्पमित्र नामे साधुने सोंप्यु हतुं. आथी गोष्ठामाहिल[9] नामे बीजा विद्वान मुनि जेओ एमना मामा थता हता तेमने माठु लाग्यु गोष्ठामाहिल सातमा निह्नव बन्या एमनो मत 'अबद्धिक' तरीके जाणीतो छे

आर्य रक्षितनो जन्म वि सं ५२=ई स. पूर्वे ४ मां, दीक्षा सं. ७४=ई. स. १८ मां, युगप्रधानपद सं. ११४=ई. स ५८ मां अने अवसान स १२७=ई स. ७१ मां थयां हतां.[10]

१ 'अभिधान राजेन्द्र,' भाग १, पृ. ११२

२ जुओ **दशपुर**

३ जुओ **तोसलिपुत्राचार्य**

४ जुओ **भद्रगुप्ताचार्य** तथा **वज्र आर्य**

५ उशा, पृ. ९८, उने, पृ २३–२५

६ जुओ 'परिशिष्ट पर्व' मां तेरमो सर्ग तथा 'प्रभावकचरित' मा 'आर्यरक्षितसूरिचरित' आर्य रक्षितना वृत्तान्त माटे जुओ उनि, गा ९४–९७, उशा, पृ ९६–९८, उने, पृ २३–२५, इत्यादि. एमने विशेना प्रासगिक उल्लेखो पण आगमसाहित्यमां अनेक स्थळे छे, जेमके— मस, गा ४८९, जीकमा, पृ ५३, ककि, पृ १७२–७३, कधी, पृ १११, इत्यादि

७ निभा, गा ४५१४, निचू, भाग ४, पृ ८८७, व्यम (उद्दे० ८ उपरनी वृत्ति), पृ ४१–४२

८ व्यम (उद्दे० ५ उपरनी वृत्ति), पृ १६

९ जुओ **गोष्ठामाहिल.**

१० प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ. २१

जईने अनशनपूर्वक देहत्याग कर्यो हतो. एमना देहत्याग पछी इन्द्रे त्यां आवीने पोताना रथ साथे ए स्थाननी प्रदक्षिणा करी हती, अने ए कारणथी पर्वतनुं नाम 'रथावर्त' पडयुं हतुं[1]

रथावर्तगिरि कुंजरावर्तनी पासे आवेलो हतो[2] बीजी एक परंपरा प्रमाणे, वज्रस्वामी पांचसो साधुओनी साथे रथावर्त पर्वत उपर आव्या हता त्यां एक क्षुल्लक—नाना साधुने मूकीने तेओ बीजा पर्वत उपर गया हता. क्षुल्लकना कालधर्म पाम्या पछी लोकपालोए रथमां आवीने एमनी शरीरपूजा करी हती, आथी ए गिरि रथावर्तगिरि तरीके लोकमां प्रसिद्ध थयो बीजा पर्वत उपर वज्रस्वामी मरण पाम्या. इन्द्रे हाथी उपर त्यां आवीने ए स्थाननी प्रदक्षिणा करी त्यारथी ए गिरि 'कुंजरावर्त' तरीके ओळखायो[3]

रथावर्त ए जैनोनुं एक प्रसिद्ध तीर्थ हतुं. मुनि कल्याणविजयजीना मत प्रमाणे ते माळवामां विदिशानी पासे आवेलुं हतुं.[4]

१ आम, पृ. ३९६

२ जुओ कुञ्जरावर्त, वळी मुनि कल्याणविजयजीकृत 'वीरनिर्वाण सवत् और जैन कालगणना,' पृ ९०.

३ मस, गा. ४६७–४७३

४ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ १७. बीजा उल्लेखो माटे जुओ कपु, पृ. ५११–१३, कवी, पृ. १४५.

राजधन्यपुर

राधनपुर उपाध्याय धर्मसागरे 'राजधन्यपुर 'मां सं १६२८= ई स १५७२मा 'कल्पसूत्र' उपर 'किरणावली' नामे प्रमाणमूत टीका रची हती.

जुओ धर्मसागर उपाध्याय

राष्ट्रवर्धन

उज्जयिनीना पालक राजानो पुत्र

विशेष माटे जुओ **अवन्तिवर्धन, पालक, णम**

रिष्टपुर

दशमा तीर्थंकर शीतलनाथने प्रथम भिक्षा रिष्टपुरमा मळी हती[1]

जुओ **अरिष्टपुर**

१ आनि, पृ ३२४

रैवतक

उज्जयंत अर्थात् गिरनारनुं बीजुं नाम रैवतक छे[1] रैवतक पर्वत द्वारकानी ईशाने आवेलो हतो रैवतकमा नंदनवन नामे उद्यान हतुं अने सुरप्रिय नामे यक्षनुं आयतन हतुं[2] सामान्य रीते रैवतकनो उल्लेख पर्वत तरीके छे मूळसूत्रो जेवा के 'अंतकृत्दशा', 'वृष्णिदशा,' 'ज्ञाताधर्मकथा' आदिमां रैवतकने पर्वत कह्यो छे, ज्यारे पछीना समयनी केटलीक टीकाओ आदिमा रैवतकनो उल्लेख उद्यान तरीके छे[3]

रैवतकना परंपरागत वृत्तान्त माटे जुओ 'विविधतीर्थकल्प'मां 'रैवतकल्प', वळी जुओ **उज्जयंत, द्वारका.**

१ 'निष्क्रम्य' निर्गम्य द्वारकात द्वारकापुर्या 'रैवतके' उज्जयते 'स्थित' गमनान्निवृत्त, उशा, पृ. ४९२

२ जुओ **द्वारका**

३ बृकम, भाग १, पृ. ५६–५७, कसु, पृ ३९९–४२४, कको, पृ १६२–६८, इत्यादि.

रोहक

उज्जयिनी पासेना नटोना एक गामडामां वसतो नटपुत्र. एनी औत्पत्तिकी बुद्धिनी चतुराईभरी कथाओ आगमसाहित्यमा जाणीती छे.[1]

एक महाराष्ट्री मळ्यो तेणे लाटवासीने पूछ्युं के 'लाटवासीओ कपटी' कहेवाय छे ते केवा ?' लाटवासीए कह्युं, 'पछीथी बतावीश' मार्गमां सवारनो समय वीती जतां पोते ओढेलुं वस्त्र महाराष्ट्रीए गाडा उपर मूक्युं. लाटवासीए एनी दसीओ (लटकता छेडा) गणी लीधी पछी नगरमा पहोंच्या पछी महाराष्ट्रीए पोतानुं वस्त्र लेवा मांड्युं, एटले लाटवासी बोल्यो के 'आ तो मारुं वस्त्र छे' महाराष्ट्री एने राजदरबारमां लई गयो त्यां विवाद थतां लाटवासी बोल्यो, 'महाराष्ट्रीने पूछो के वस्त्रनी दसीओ केटली छे' महाराष्ट्री ए कही शक्यो नहि अने लाटवासीए ते कही, एटले वस्त्र लाटवासीने मळ्युं राजदरबारमांथी बहार नीकळया पछी लाटवासीए महाराष्ट्रीने बोलावीने वस्त्र पाछुं आप्युं अने कह्यु के-'मित्र ! तें पूछ्युं हतुं एनो आ जवाब छे लाटवासीओ आवा होय छे'[२]

लाटवासीओ जेने 'क्षीर' कहे छे तेने कुडुक्क (घणे भागे कूर्ग)ना वतनीओ 'पील्ल' कहे छे.[३] लाटदेशमां 'दवरक-वलनक'-दोराना गूंचळाने मांगलिक गणवामा आवे छे[४] आ 'दवरक-वलनक' ए नाडाछडी होय ए संभवित छे.

लाटदेशमा धान्य भरवानी कोठी 'पल्लग' अथवा 'पल्लक' (सर० गुज 'पाल्लुं'=कोठी) कहेवाय छे ते ऊचे अने नीचे पहोळी, पण छेक उपर कईक सांकडी होय छे[५] लाटदेशनी 'रूतपोणिका'-रूनी पूणी महाराष्ट्रमा 'पेलु' कहेवाय छे[६]

लाटदेशमां समान वयनी सखीओने 'हलि' (गुज 'अली') अने नणंदने 'भट्टा' कहीने संबोधवामां आवे छे[७] कणसलांमांथी अनाज छूटुं करवानी क्रिया 'जोवण,'[८] चोखानुं धोवण 'काजिय' के 'काजिक'[९] (गुज 'कांजी') कहेवाय छे लाटवासीओ जेने 'अड्डपल्लाण' (घोडानुं पलाण, एनु गुजराती रूप 'आडपलाण'

ए कथाओ प्रमाणे रोहक छवटे उज्जयिनीना राजाने प्रसन्न करीने एनो मंत्री थयो हतो लोकवार्ताना तुलनात्मक अभ्यासमां रोहकना संबंधमां मळती कथाओ घणी महत्त्वनी छे, केम के एनी ए कथाओ सहेज फेरफार साथे भोज अने कालिदास तथा अकबर अने बीरबलने विशे पण प्रचलित छे रोहक नामे घडेली कथाओनो निर्देश 'नंदिसूत्र 'ना भाष्यमां छे—जो के एनो विस्तार तो टीकाचूर्णिओमां छे—ए उपरथी लोककथा तरीके पण एमनी प्राचीनतानु'सहेजे अनुमान थई शके छे

१ आम पृ. ५१७–१८ नंम पृ १४५–४९.

१ रोहकना बुद्धिचातुर्यनी कथाओ माटे जुओ प्रजाबंधु–गुजरात–समाचार दीपोत्सवी अंक, ई. १९३९ मां मारो लेख 'बटुक रोहक'—ना काका.

लाट

लाटदेश 'कल्पसूत्र'नी टीकाओमां 'राज्यदेशनाम' आप्यां छे त्यां लाटनो पण उल्लेख छे लाटदेश वडे सामान्यतः आजनो दक्षिण गुजरात उद्दिष्ट छे जेनुं पाटनगर भरुकच्छ हतुं पण एक काळे लाट पडे उत्तर सिन्धना अखवाणा (आरसामा)थी मांडी पश्चिम भारतनो समुद्रकिनारानो आखो प्रदेश उद्दिष्ट हतो ए विषयनी विगतवार चर्चा माटे तथा लाटनी व्युत्पत्ति माटे जुओ 'पुगु'मां लाट.

जैन आगमसाहित्यमा उल्लेखोमां 'लाट' वडे महाजनो दक्षिण गुजरात ज उद्दिष्ट होय एम जणाय छे एमांथी लाट तथा त्यांना वतनीओ विशे केटलीक प्रकीर्ण पण रसिक सामग्री मळे छे लाट विषयमां वरसादना पाणीथी धान्य नीपजे छे लाटना वतनीओने 'मुंठ'—कपटी कह्या छे तथा एने अंगेनी एक रसिक वार्ता आपी छे एक लाटवासी गाममां बेसीने कोई नगरभ्रमरक जतो हतो. मार्गमां

लाटदेशनी स्त्रीओना कच्छ-बन्धादि नेपथ्यनी प्रशंसा माटे औदीच्य देशनी स्त्रीओना वस्त्र-परिधाननी निन्दा करतो श्लोक पण एक स्थळे उद्धृत थयेलो छे ²¹

१ मुरा, भाग २, पृ ३८३-८४

२ व्यभा गा २४५, व्यम, भाग ४, पत्र भाग २, पृ ६९-७०

३ आचू, पूर्वभाग, पृ २७

४ आम, पृ ६, विशे, पृ १८

५ आम, प ६८, ११३, नम, पृ ८८, प्रम, पृ. ५४२

६ विशे, पृ ९२२ जुओ महाराष्ट्र

७ दर्वचू, पृ २५० अहीं चूर्णिकार एवो शब्दभेद पाडे छे के लाटमा वर्षाने 'कुलि' कहे छे, ज्यारे वरदातट (वर्धा नदीना किनाराना प्रदेश) मा तेने 'हलि' तरीके संबोधाय छे.

८ ओनिद्रो, पृ ७५

९ बृक्षे, भाग ३, पृ. ८७१

१० ओसूअ, पृ ५९, जीम, पृ २८२; शाघअ, पृ ४३

११ निचू, पृ २१४

१२ दवचू, पृ. २३६

१३ निचू, भाग १, पृ ४६, आचू, उत्तर भाग, पृ ८१, आम (उत्तर भाग, पृ ८१) एटलु ज कहे छे के लाटमा मामानी दीकरी गम्य छे, आचू वधारामा एम पण नोंधे छे के गोल्ल देशमा भगिनी गम्य छे, 'विच्चो' ने ('विच्चाण'-अर्थात् वचमां रहेनाराओने ? मध्य प्रदेशमा रहेनाराने ?) माताना सपत्नीओ गम्य छे

१४ स्यासूअ, पृ २११ छन्दो-गम्यागम्यविभागो यथा-लाटदेशे मातुलभगिनी गम्या अन्यत्रागम्येति ।

१५ संभव छे के 'मातुलभागिनेया'-माशीनी पुत्री होय

१६ णेवत्थ भोयडादीय भवति । "भोयडा" णाम जा लाडाणं कच्छा सा मरहट्ठयाण भोयडा भण्णति । त च बालप्पभिति इत्थिया ताव बधन्ति जाव परिणीया जाव य आवण्णसत्ता जाया ततो भोयणं कज्जति,

एवु थई शके) कहे छे ते बीजा प्रदेशोमां 'थिल्लि' सरीके ओळखाय छे' एक खास प्रकारनी वनस्पति लाटवासीओमां 'इकडा' (अर्वाचीन गुज 'ईकड') नामे प्रसिद्ध छे'' लाट अने महाराष्ट्रना वतनी चोखाने 'कूर' कहे छे, एने ज पूर्वदेशना वासीओ 'ओदन,' द्राविडो 'चोर' अने आन्ध्रो 'कनायु' कहे छे'

लाटनी केटलीक रूढिओनो पण निर्देश छे 'निशीथचूर्णि' प्रमाणे, लाटमां मामानी दीकरी गम्य छे, पण माशीनी दीकरी अगम्य छे' 'स्थानांगसूत्र'नी अभयदेवसूरिनी वृत्ति प्रमाणे लाटदेशमां 'मातुलभगिनी'–मासी गम्य छे पण अन्यत्र ते अगम्य छे''

आ लेखो उल्लेख विस्मय लागे छे केम के सामान्य रीते आवुं बने नहि वळी के टीकानो पाठ आ बाबतमां स्पष्ट छे तो पण अर्थनी स्पष्टता होवा छतां पाठमां कोई प्रकारनी भ्रष्टता प्रवेशी हशे?''

'निशीथचूर्णि'मां प्राकृत शब्द 'ओयवा'नो समजूती आ प्रमाणे आपी छे लाटवासीओ जेने 'कच्छ' कहे छे ते महाराष्ट्रमां 'ओयवा' कहेवाय छे बीओ बाळपणथी मांडीने लग्न थया बाद सगर्भा थतां सुधी कच्छ बांधे छे सगर्भा थाय त्यारे ओहम करवामां आवे छे, स्वजनोने भोजन पण पाथरवामां आवे छे, अने ए समयथी कच्छ बांधवानुं बंध थाय छे'

लाटदेशमां वर्षाऋतुमां गिरियज्ञ अथवा मत्तवाल–सखडि नामे उत्सव थाय छ भूमिदाह ए पण एनुं बीजुं नाम छे' लाटवासीओ श्रावणपूर्णिमाने दिवसे आषाढी पूर्णिमा करे छे एम 'आवश्यक चूर्णि' नोंधे छ दक्षिणापथमां लोहकार अने कलाल वारयथस गणाय ए तेम लाटमां चर्मकार अधम गणाय छे'

लाटदेशनी स्त्रीओनां रूप अने विदग्धतानुं वर्णन करतो एक श्लोक आगमसाहित्यमां केटलेक स्थळे उ त करायामां आव्यो छे''

१ बृकभा, गा ३५३१, बृकक्षे, भाग ४, पृ. ९८३, निभा, गा ११३९; निचू, भाग २, पृ. २५५

लोहजङ्घ

उज्जयिनीना राजा प्रद्योतनो दूत. ते एक दिवसमां पचीस योजननी सफर करी शकतो हतो

जुओ भरुकच्छ.

वज्र आर्य

एमने विषेनी कथा आ प्रमाणे छे

आर्य वज्र अथवा वज्रस्वामी अवंति जनपदमां तुंबवन ग्राममां वसतां धनगिरि अने सुनन्दा ए दंपतीना पुत्र हता. वज्रस्वामी माताना गर्भमां ज हता, अने धनगिरिए सिंहगिरि गुरु पासे दीक्षा लीधी हती. जन्म पछी वज्रस्वामी पोताना जृंभक देव तरीकेना पूर्वजन्मनुं स्मरण करीने रोया करता हता, अने एना आ सतत रुदनथी माता खूब कंटाळी गई हती आ बाळक एना दीक्षित पिता धनगिरिने सोंपवामा आव्यो त्यारे ज छानो रह्यो वज्र जेवो शक्तिशाळी होवाथी आ बाळक वज्र नामथी ओळखायो केटलाक समय पछी सुनंदाए आ बाळकने साधुओ पासेथी पाछो मेळववा प्रयत्न कर्यो, पण ज्यारे ते न आव्यो त्यारे माताए पोते ज जैन साध्वी तरीके दीक्षा लीधी.

बाळक वज्रस्वामीने शय्यातर स्त्रीओए उछेर्या तथा साध्वीओना उपाश्रयमां रहीने तेओ अगियार अंग भण्या बाल्यावस्थामां ज एमनी असाधारण विद्वत्ताथी प्रसन्न थईने गुरुए एमने वाचनाचार्य बनाव्या हता एक वार गुरु सहित वज्रस्वामीनी दशपुरमां स्थिति हती त्यांथी उज्जयिनीमां दश पूर्वधर भद्रगुप्ताचार्य पासे जइने तेमणे दश पूर्वोनो अभ्यास कर्यो ए पछी वज्रस्वामीने गच्छ सोंपीने सिंहगिरि आचार्य अनशनपूर्वक कालधर्म पाम्या.

स्पर्श मेहेकरूण पढमो दिवसदि तप्पभिई पिंडहू मोयणा । निशू. भाग १ पृ ४६

१७ विशेषचूर्णिकारः पुनराह गिरिकम्मो त्ति मततमास्तवकी मन्नाह, ता कायविसए वरिसारत्ते मतह त्ति [गिरि(च)=अति भूमियादो त्ति भणितं होइ] बृहत्से भाग १, पृ. ८ ७

१८ आणाती–आवाढपुण्णिमा पृ, कसाल पुण असाढपुण्णिमाए भवति भाषू, उत्तर भाग पृ. २२१

१९ निशू भाग ५ पृ ११३७

२ स्यासूत्र पृ २१ ४४६ प्रमाण पृ. ११९, पाम पृ ४८ गुथी यथा अत्रीप्रसूतीशामन्यतमाया चक्रपंचादि दा करणा.

कन्द्रमता सषेमाझी सदगिः पीतमनस्तनी ।
किं मादी यो मता सास्य वेतनायपि दुर्लभा ॥
स्यासूत्र पृ. २१

२१ तासामेवान्यतमाया कम्बलवादिनेपन्नस्य चक्रपंचादि वा नैवन्धका यथा—

बिना काठौपैरम्या बहुवकाचकातिदकातिचकात् ।
वर्तौमान न भूर्यं चतुर्मोतम भवति सपेति ॥ पाम पृ. ४८

काठाचार्य

एक आचार्य पमना नाम उपरथी ठेणो काठना हशे एवुं अनुमान थाय छे

जैन साधनु सामान्य विधान एवुं छे के शय्यातर—वसति आपनारना गृहेथी साधुए पिंड न लेवा हवे, एक ज गुरुना शिष्यो शय्यानी संकडाशने कारणे बे जुदी वसतिमां रहेता होय तो शय्यातर कोने गणवा ? बीजे स्थळे रहेला साधुओ सवारे सूत्रपौरुषी कर्या पछी मूळ उपाश्रयमां आवे तो बन्ने स्थानना मालिको शय्यातर गणाय अने जो मूळ उपाश्रयमां आवीने सूत्रपौरुषी करे तो एक ज शय्यातर गणाय. आ बाबतमां काठाचार्यनो मत एवो छे के ज्यां आचार्य वसता होय ते वसतिनो मालिक शय्यातर गणाय, बीजी वसतिना मालिक शय्यातर गणाय नहि

१ बृकभा, गा ३५३१; बृकक्षे, भाग ४, पृ ९८३, निभा, गा ११३९, निचू, भाग २, पृ २५५

लोहजङ्घ

उज्जयिनीना राजा प्रद्योतनो दूत ते एक दिवसमां पचीस योजननी सफर करी शकतो हतो.

जुओ भरुकच्छ.

वज्र आर्य

एमने विषेनी कथा आ प्रमाणे छे

आर्य वज्र अथवा वज्रस्वामी अवंति जनपदमां तुंबवन ग्राममां वसतां धनगिरि अने सुनन्दा ए दंपतीना पुत्र हता. वज्रस्वामी माताना गर्भमां ज हता, अने धनगिरिए सिंहगिरि गुरु पासे दीक्षा लीधी हती. जन्म पछी वज्रस्वामी पोताना जृंभक देव तरीकेना पूर्वजन्मनुं स्मरण करीने रोया करता हता, अने एना आ सतत रुदनथी माता खूब कंटाळी गई हती आ बाळक एना दीक्षित पिता धनगिरिने सोंपवामा आव्यो त्यारे ज छानो रह्यो वज्र जेवो शक्तिशाळी होवाथी आ बाळक वज्र नामथी ओळखायो केटलाक समय पछी सुनंदाए आ बाळकने साधुओ पासेथी पाछो मेळववा प्रयत्न कर्यो, पण ज्यारे ते न आव्यो त्यारे माताए पोते ज जैन साध्वी तरीके दीक्षा लीधी

बाळक वज्रस्वामीने शय्यातर स्त्रीओए उछेर्या तथा साध्वीओना उपाश्रयमां रहीने तेओ अगियार अग भण्या बाल्यावस्थामां ज एमनी असाधारण विद्वत्ताथी प्रसन्न थईने गुरुए एमने वाचनाचार्य बनाव्या हता एक वार गुरु सहित वज्रस्वामीनी दशपुरमां स्थिति हती त्यांथी उज्जयिनीमां दश पूर्वधर भद्रगुप्ताचार्य पासे जइने तेमणे दश पूर्वोनो अभ्यास कर्यो ए पछी वज्रस्वामीने गच्छ सोंपीने सिंहगिरि आचार्य अनशनपूर्वक कालधर्म पाम्या

दुष्काळथी पीडा पामता जैन संघने तेओ पाटलिपुत्रथी पुरिका-पुरी[1] नामे नगरीमां लई गया हता आ नगरनो राजा बौद्ध हतो, अने तेणे जैनोने पर्युषण पर्वमां पुष्पो आपवानो निषेध कर्यो हतो, तथी वज्रस्वामी आकाशगामिनी विद्याथी माहेश्वरी नगरीमां जईने जिनपूजा माटे पुष्पो लाव्या हता आ आकाशगामिनी विद्या तेमणे आचारांगसूत्र 'ना 'महापरिज्ञा' अध्ययनमांथी उद्धरी हती एम कहेवाय छे

बार वर्षना एक मोटा दुष्काळना समयमां वज्रस्वामी एक पर्वत उपर अनशन करीने कालधर्म पाम्या, जे पर्वत पाछळथी 'रथावर्त' तरीके प्रसिद्ध थयो

वज्रस्वामी एक प्रभावक जैन आचार्य हता तेमनो विहार मुख्यत्वे माळवा, मगध अने कलिंगना प्रदेशमां थयो हतो. जो के तेमना शिष्योए कोंकणमां विहार करेलो छे, एटले संभव छे के तेओ पण क्यारेक कोंकणमां आव्या होय आर्य रक्षितसूरिए साडानव पूर्वोनु अध्ययन वज्रस्वामी पास कर्यु हतुं वज्रस्वामीना नामथी साधुओनी वज्रशाखा प्रवर्तमान थई हती

युगप्रधान पट्टावलीओने आधारे मुनिश्री कल्याणविजयजीए वज्रस्वामीना समय विषे एवो निर्णय कर्यो छे के तेमनो जन्म सं २६ =ई स पूर्वे ३०मां दीक्षा स ३४=ई स पूर्वे २२मां, युगप्रधानपद स. ७८=ई स २२मां अने स्वर्गवास सं ११४=ई स ५८मां थयो हतो.

वज्रस्वामीना जीवनना प्रासंगिक उल्लेखो पण आगमसाहित्यमां अनेक स्थळे छे

१ जुओ भद्रगुप्ताचार्य

[1] पुरिकापुरी ए कदाच जगन्नाथपुरी (जगन्नाथपुरी) होय

संभव छे जुओ 'लाइफ इन एन्श्यन्ट-इन्डिया,' पृ ३२५

३ जुओ माहेश्वरी

४ जुओ रथावर्त

५ आचू, पूर्व भाग, पृ ३९० थी आगळ, आम, पृ ३८७–९१ तथा ५३२, विभा, गा २७७५–८३ तथा ते उपरनी कोट्याचार्यनी वृत्ति आगमेतर साहित्यमां वज्रस्वामीना वृत्तान्त माटे जुओ हेमचन्द्रना 'परिशिष्टपर्व' मां सर्ग १२ तथा प्रभाचन्द्रसूरिना 'प्रभावकचरित' मा 'वज्रस्वामिचरित'

६ जुओ वज्रसेन

७ जुओ भद्रगुप्ताचार्य, रक्षित आर्य.

८ कसं, पृ १३०

९ प्रच (अनुवाद), प्रस्तावना, पृ १७

१० जुओ आनि, गा २६४, आशी, पृ २३७, ३८६, जीकभा, गा ६१०–१२, जीकचूव्या, पृ ३५, वृकम, पृ ११९, नम, पृ १६७, इत्यादि 'कल्पसूत्र' नी विविध टीकाओमा वज्रस्वामीनु चरित्र ठीक ठीक विस्तारथी आपेलुं छे, जेम के ककि, पृ १७०–७३, कसु, पृ ५११–१४, कदी, पृ १४५, इत्यादि

वज्रभूति आचार्य

भरुकच्छवासी एक आचार्य

भरुकच्छमा नभोवाहन राजा हतो.[१] तेनी पद्मावती देवी हती ए नगरमा वज्रभूति नामे आचार्य रहेता हता तेओ मोटा कवि हता, पण रूपहीन अने अत्यंत कृश हता एमने शिष्यादि परिवार पण नहोतो एमनां काव्यो राजाना अंतःपुरमा गवाता हतां ए काव्योथी पद्मावती देवीनुं चित्त आकर्षायुं हतुं अने ए रचनाओना कर्ताने जोवाने ते उत्सुक बनी हती एक वार राजानी अनुज्ञा लईने तथा योग्य भेटणुं साथे लईने अनेक दासीओ सहित ते वज्रभूतिनी वसति तरफ गई पद्मावतीने वसतिना बारणामा ऊभेली जोईने वज्रभूति पोते ज परि-

दुष्काळथी पीडा पामता जैन संघने तेओ पाटलिपुत्रथी पुरिका-
पुरी नामे नगरीमां लई गया हता आ नगरनो राजा बौद्ध हतो,
अने तेणे जैनोने पर्युषण पर्वमां पुष्पो मळवानो निषेध कर्यो हतो,
तेथी वज्रस्वामी आकाशगामिनी विद्याथी माहेश्वरी नगरीमां जईने
जिनपूजा माटे पुष्पो लाव्या हता[१] आ आकाशगामिनी विद्या तेमणे
आचारांगसूत्र'ना 'महापरिज्ञा' अध्ययनमांथी उद्धरी हती एम
कहेवाय छे

बार वर्षना एक मोटा दुष्काळना समयमां वज्रस्वामी एक पर्वत
उपर अनशन करीने कालधर्म पाम्या, ए पर्वत पाछळथी 'रथावर्त'[२]
तरीके प्रसिद्ध थयो[३]

वज्रस्वामी एक प्रभावक जैन आचार्य हता तेमनो विहार मुख्यत्वे
माळवा, मगध अंग कलिंगना प्रदेशमां थयो हतो. जो के तेमना
शिष्योए कोंकणमां विहार कर्यो छे, एटले संभव छे के तेओ पण
कदाच कोंकणमां आव्या होय आर्य रक्षितसूरिए साडानव पूर्वनुं
अध्ययन वज्रस्वामी पासे कर्युं हतुं वज्रस्वामीना नामथी साधुओनी
वज्रशाखा प्रवर्तमान थई हती

युगप्रधान पट्टावलीओने आधारे मुनिश्री कल्याणविजयजीए वज्र
स्वामीना समय विशे एवो निर्णय कर्यो छे के तेमनो जन्म सं २६
=ई स पूर्वे ३०मां, दीक्षा स ३४=ई स पूर्वे २२मां, युग
प्रधानपद स. ७८=ई स २२मां अने स्वर्गवास सं ११४=ई स
५८मां थया हता

वज्रस्वामीना जीवनना प्रासंगिक उल्लेखो पण आगमसाहित्यमां
अनेक स्थळे छे

१ जुओ मलयगिर्याचार्य

१ पुरिकापुरी ए प्राचीन जगन्नाथ पुरी (जगन्नाथपुरी) हशे

कर्यो. आ प्रमाणे लक्षमूल्य पाक रांधीने ईश्वरी एमा विष नाखवा जती हती एटलामा वज्रसेन मुनि त्यां आवी पहोंच्या. ईश्वरीए हर्षित थईने मुनिने ए पाक भिक्षा तरीके आप्यो अने बधी वात करी पोताना गुरुए भाखेला भविष्य उपरथी वज्रसेने तेओने कह्युं के 'हवे तमारे चिन्ता करवानी जरूर नथी, केम के आवती काले सुभिक्ष थशे' बीजे दिवसे अनाजथी भरेलां वहाणो सोपारक बंदरे आव्यां अने लोकसमुदाय निश्चिन्त थयो. जिनदत्त अने तेना कुटुंबीजनोए वज्रसेन पासे दीक्षा लीधी.[३]

१ जुओ **रथावर्त्त**

२ जुओ **जिनदत्त.**

३ आम, पृ, २९५–९६, वळी कसु, पृ. ५१३, ककि, पृ १७०–७१, इत्यादि

वत्सका

एक नदी

आ नदी उज्जयिनी अने कौशांबीनी वचमां आवेली छे ए नदीने किनारे पर्वतकंदरामां धर्मयशमुनिए तपश्चर्या करी हती[१]

१ बितिओ धम्मजसो विभूस नेच्छतो कोसबीए उज्जेणीए अतरा वत्थकातीरे पव्वतकंदराए एकत्थ भत्त पच्चक्खाति । आचू, उत्तर भाग, पृ १९० वळी जुओ वत्र, पृ ९०–९२

वलभी

सौराष्ट्रनुं वळा अथवा वलभीपुर, जे वलभी वंशना राजाओनी राजधानी हतुं. जैन आगमनो नागार्जुनी वाचना जे 'वालभी' वाचना नामथी ओळखाय छे ते तथा जैन श्रुतनु लिखित स्वरूपे संकलन वलभीमा थया हता

जुओ **देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, नागार्जुन, स्कन्दिल आर्य.**

પાસ્ય અમાત્યે દ્વારમાં આસન રાખ્યું બહાર નીકળતા પદ્માવતીએ પૂછ્યું, 'વજ્રભૂતિ આચાર્ય ક્યાં છે ?' વજ્રભૂતિએ ઉત્તર આપ્યો 'બહાર ગયા છે' પણ દાસીએ રાણીને નિશાનીથી સમજાવ્યું કે 'આ જ વજ્રભૂતિ છે' આથી પદ્માવતી વિરાગ પામીને, વિચાર કરીને બોલી કે- હે કસેરુમતી નદી ! તને જોઈ મન તારું પાણી પીધું ! તારું નામ સારું છે, પણ દર્શન સારું નથી.' પછી પોતે આણેલ ભેટણું રાણીએ વજ્રભૂતિને સોંપ્યું અને પોતે એમને ઓળખતી જ નથી એવો દેખાવ રાખી ગયી, 'આ આચાર્યને આપજો,' એમ કહીને પાછી ગઈ.[3]

અગાઉ સૂચવ્યું છે તેમ, નભોવાહનનો સમય ઈસવી સનના બીજા સૈકાના પૂર્વાર્ધમાં માનીએ[4] તો વજ્રભૂતિનો સમય પણ એ જ ગણવો જોઈએ.

1 જુઓ નભોવાહન

2 જુઓ કસેરુમતી

3 વ્યવ ભા. ૫૮-૫૯, વ્યવ વિભાગ ૪ પેરા વિ ૬, પૃ. ૧૪-૧૫

4 જુઓ નભોવાહન

વજ્રસેન [ ]

વજ્રસ્વામીના શિષ્ય

એક વખત દુર્ભિક્ષને કારણે સાધુઓને ભિક્ષા મળવામુ મુશ્કેલ બન્યું ત્યારે વજ્રસ્વામી અનશન કરવા માટે રથાવર્તગિરિ તરફ ગયા ત્યાર પહેલાં એમણે પોતાના શિષ્ય વજ્રસેનને કહ્યું હતું કે 'જે દિવસે તને લક્ષમૂલ્યની ભિક્ષા મળે તેને બીજે દિવસે સુભિક્ષ થશે' આ પછી કેટલાક સમય વજ્રસેન વિહાર કરતા સોપારકમાં આવ્યા ત્યાં જિનદત્ત નામે શ્રાવક અને તેની ઈશ્વરી નામે પત્ની હતી. તેમનું આખું કુટુંબ આ વખતે દુઃખાકુળ બની ગયું હતું આથી લક્ષનો અમૂલ્ય પાક રાંધી, તેમાં વિષ નાખીને મરણને ભેટવાનો નિશ્ચય તેમણે

कर्यो. आ प्रमाणे लक्षमूल्य पाक रांधीने ईश्वरी एमां विष नाखवा जती हती एटलामां वज्रसेन मुनि त्यां आवी पहोंच्या. ईश्वरीए हर्षित थईने मुनिने ए पाक भिक्षा तरीके आप्यो अने बधी वात करी पोताना गुरुए भाखेला भविष्य उपरथी वज्रसेने तेओने कह्युं के 'हवे तमारे चिन्ता करवानी जरूर नथी, केम के आवती काले सुभिक्ष थशे.' बीजे दिवसे अनाजथी भरेलां वहाणो सोपारक बंदरे आव्यां अने लोकसमुदाय निश्चिन्त थयो. जिनदत्त अने तेनां कुटुम्बीजनोए वज्रसेन पासे दीक्षा लीधी[3]

१ जुओ **रथावर्त्त**

२ जुओ **जिनदत्त.**

३ आम, पृ, ३९५–९६, वळी कसु, पृ. ५१३, ककि, पृ १७०–७१, इत्यादि

वत्सका

एक नदी

आ नदी उज्जयिनी अने कौशांबीनी वचमां आवेली छे ए नदीने किनारे पर्वतकंदरामां धर्मयशमुनिए तपश्चर्या करी हती[1]

१ बितिओ धम्मजसो विभूस नेच्छतो कोसबीए उज्जेणीए अंतरा वत्थकातीरे पव्वतकंदराए एकन्थ भत्त पच्चक्खाति । आचू, उत्तर भाग, पृ १९० वळी जुओ वव्व, पृ ९०–९२

वलभी

सौराष्ट्रनुं वळा अथवा वलभीपुर, जे वलभी वंशना राजाओनी राजधानी हतुं. जैन आगमनो नागार्जुनी वाचना जे 'वालभी' वाचना नामथी ओळखाय छे ते तथा जैन श्रुतनु लिखित स्वरूपे संकलन वलभीमां थयां हतां

जुओ **देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण, नागार्जुन, स्कन्दिल आर्य.**

वसुदेवचरित

वसुदेव-हिंडी 'नु सर्व नाम, अ एना कर्तानि उदिष्ट हतुं

जुओ संघदासगणि वाचक

वासुदेव

जुओ कृष्ण वासुदेव

विजयसिंहसूरि

'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र' उपर विजयसिंहसूरिए सं ११८३=ई स ११२७ मां रचेली चूर्णिनो उल्लेख रत्नशेखरसूरिए 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'नी वृत्तिमां कर्यो छे अने साथसाथ रत्नशेखरे ए ज ग्रन्थ उपरना जिनदेवसूरिकृत भाष्यनो निर्देश कर्यो छे, पण एवु कोई भाष्य हजी सुधी जाणवामां आव्यु नथी

१ श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रस्य च विक्रम ११८३ वर्षे श्रीविजयसिंहसूरि - श्रीजिनदेवसूरिकृते चूर्णिभाष्ये अपि स्त तदनुसारेण वक्ष्ये भाषा, पृ. २ १

२ जुओ विरको पृ १५

विदिशा

माळवामां भोपालथी आशरे २४ माइल ईशान खूणे बेटवा अथवा वेत्रवतीने किनारे आवेलुं भिलसा

'अनुयोगद्वार सूत्र'मां 'समीप नाम'नां उदाहरण आपतां कह्युं छे के गिरि पासेनुं नगर ते गिरिनगर, विदिशानी पासेनु नगर ते वैदिशनगर (विदिशा) वेणा पासेनु नगर ते वेणातट अने तगरा पासेनु नगर ते तगरातट आ उल्लेखमांनो 'विदिशा' ते वेस अथवा बसली नदी छे अने भिलसा पास बेटवाने मळे छे भिलसानुं बेसनगर एवुं नाम ए नदी साथे संबंध धरावे छे अने मूळ 'वैदिशनगर' (प्रा वेदिसणयर)मां छे

आर्य महागिरि विदिशामा जिनप्रतिमाने वंदन करीने गजाग्रपद तीर्थनी यात्रा माटे एलकच्छपुर गया हता, एवो उल्लेख 'आवश्यक-सूत्र'नी चूर्णिमा छे[3]

जुओ एलकच्छपुर, गजाग्रपद, वेत्रवती

१ से कि त समीवनामे ? २ गिरिसमीवे णयर गिरिणयर विदिसा-समीवे णयर वेदिस णयर वेन्नाए समीवे णयर वेन्नायड तगराए समीवे णयर तगरायड, से त समीवनामे । अनु, पृ १४९

२ ज्योढि, पृ ३५

३ दो वि जणा वइदिसं गता, तत्थ जिणपडिम वदिऊण अज्जमहागिरि एलकच्छ गता गयग्गपद वदका। आचू, उत्तर भाग, पृ १५६-५७

विनयविजय उपाध्याय

हीरविजयसूरिना शिष्य कीर्त्तिविजयना शिष्य. एमणे रामविजय पडितना शिष्य विजयगणिनी अभ्यर्थनाथी स १६९६=ई. स. १६४० मां 'कल्पसूत्र' उपर 'सुबोधिका' नामे प्रमाणभूत टीका रची हती, अने ते विमलहर्ष वाचकना शिष्य भावविजये शोधी हती[1]

विनयविजये सं १७०८=ई. स १६५२ मा जूनागढमां जैन विश्वविद्याविषयक महान ग्रन्थ 'लोकप्रकाश' रच्यो हतो न्याय, व्याकरण, काव्य, स्तोत्र आदि विविध विषयो उपर तेमणे रचनाओ करेली छे[2]

१ कसु, प्रशस्ति

२ जुओ जैसाइ, पृ ६४७-४९

विराटनगर

साडीपचीश आर्यदेशो पैकी मत्स्यदेशनु पाटनगर[1]

जयपुर राज्यमा आवेलुं वैराट ए ज विराट के वैराट नगर होय ए संभवे छे

कवि कालिदासना 'मेघदूत' (पूर्वमेघ, २४)मां माळवाना वर्णनमां वेत्रवतीना ऊछळता पूरनो निर्देश छे. एना तटे विदिशा आवेलुं हतुं एवुं सूचन पण त्यां छे.

गुजरातनी वात्रक नदीनो पण पुराणोमां वेत्रवती तरीके उल्लेख छे ए अहीं नोंधवुं जोईए.[3]

माळवामां वहेती बेटवा नदी ए आगमोक्त वेत्रवती होवानुं मानवामां आवे छे.[4]

जुओ **विदिशा**

१ वेत्रमार्गो यत्र वेत्रलतोपष्टम्भेन जलादौ गम्यते इति, तद्यथा–चारुदत्तो वेत्रलतोपष्टम्भेन वेत्रवतीं नदीमुत्तीर्य परकूलं गत.। सुकृशी, पृ १९६ वळी जुओ सूकृचू, पृ. २३९.

२ 'वसुदेव–हिंडी' (भाषान्तर), पृ. १९२

३ पुगुमा **वेत्रवती**

४ एज, तथा ज्योढि, पृ ३५, जैन, 'लाइफ इन एन्श्यन्ट इन्डिया,' पृ ३५४

वेणातट

आभीरदेशमां[1] वेणानदीना किनारे आवेलुं नगर[2] एनां प्राकृत रूपो वेणातड, वेण्णायड, बेन्नायड, एवां थाय छे. राजगृहना राजा प्रसेनजितनो पुत्र श्रेणिक ज्यारे कुमारावस्थामां हतो त्यारे वेणातटमां गयो हतो त्यां एक वणिकनी नंदा नामे पुत्रीथी तेने अभयकुमार नामे पुत्र थयो हतो, जे मोटो थतां राजगृह आवीने पोतानी चतुराईथी श्रेणिकने प्रसन्न करीने तेनो मंत्री थयो हतो[3] एक वारनो चोर मूलदेव भाग्ययोगे वेणातट नगरनो राजा बन्यो हतो एवी कथा छे[4]

वेणातटमां बौद्धो तेम ज जैनोनी वस्ती हती तथा आ बन्ने संप्रदायो वच्चे स्पर्धा चालती हती. एम केवळ लोककथाना ...

एक टुकडो 'नंदिसूत्र'नी वृत्तिमां आप्यो छे ते उपरथी अनुमान थाय छे "वेणातट नगरमां कोई बौद्ध भिक्षुए श्वेतांबर क्षुल्लक—नाना साधुने पूछ्युं 'अरे क्षुल्लक! तमारा अर्हता सर्वज्ञ छे अने तमे एमना दीकराओ छो, माटे कहे के आ नगरमां केटला कागडा छे?'" क्षुल्लके चातुर्यथी उत्तर आप्या—

'सट्ठिं कागसहस्सा इह(य) विन्नायडे परिवसंति।
जइ ऊणगा पवसिया अब्भहिया पाहुणा आया॥

(आ वेणातट नगरमां साठ हजार कागडा वसे छे ए करतां जो ओछा होय तो ते प्रवासे गया छे अने वधारे होय तो परोणा तरीके आव्या छे)

आ सांभळीने बौद्ध भिक्षु मायुं खणतो चूप थई गयो'

हरिषेणाचार्यना 'बृहत्कथाकोश'मां कह्युं छे के विन्यासपुर वराट विषयमां विन्या (वेणा) नदीना किनारे आवेलुं छे

१ जुओ आभीर

२ से किं तं उप्पत्तिया? १ भरहसिल २ पणिय ३ रुक्खे ४ खुड्डग ५ पड ६ सरड ७ काय ८ उच्चारे ९ गय १० घयण ११ गोल १२ खंभे १३ खुड्डग १४ मग्गि १५ त्थि १६ पइ १७ पुत्ते १८ ... उप्पत्तियाए।

३ आनू, पूर्वभाग पृ ५४७ भाग पृ. ५११

४ जुओ मूलदेव

५ जंम पृ. १५९, बधी आ कथा माटे जुओ आनू, पूर्व भाग पृ. ५४७ भाग पृ ५१

६ आभीरविषये रम्ये विन्यानद्यास्तु पश्चिमे।
वैराकरस्य यातस्य अनयस्यविभाविका॥
विन्यासपुरमित्यस्य नगरं नगराजितम्।
विहरन् च मुनिः क्वापि प्राप विन्यासपुरं पुरम्॥
बृहत्कथाकोश पृ. ११६

वैतरणि

कृष्ण वासुदेवनो एक वैद्य.

जुओ धन्वन्तरि

शकुन्त

अवन्तिपति प्रद्योतनो अंध मंत्री

वासवदत्ताए उदयननी साथे उज्जयिनीथी कौशाम्बी चाल्या जवा माटे हाथणी सज्ज करवानी आज्ञा करी हाथणीने ज्यारे तंग बांधवा मांड्यो त्यारे हाथणीए गर्जना करी ए सांभळीने शकुन्त नामे अंध मंत्रीए कह्युं के 'तंग बांधती वखते आ हाथणी गर्जना करे छे, माटे सो योजन जईने ते मरण पामशे '[1] मार्गना श्रमथी थाकेली हाथणी सो योजन जेटलो प्रवास करीने कौशाम्बीमां प्रवेशतां मरण पामी हती

जुओ **उदयन, प्रद्योत**

१ कक्षायां बध्यमानाया यथा रसति हस्तिनी ।
योजनानां शतं गत्वा प्राणत्यागं करिष्यति ॥
आचू, पृ १६२

शङ्खपुर

'उत्तराध्ययन सूत्र'नी नेमिचन्द्रनी टीका प्रमाणे, अगडदत्त शंखपुरना राजानो पुत्र हतो[1]

'विविधतीर्थकल्प' अनुसार, राजगृहनो राजा प्रतिवासुदेव जरासंध, वासुदेव कृष्ण साथे युद्ध करवा माटे पश्चिम दिशा तरफ नीकळ्यो कृष्ण पण बधी सामग्री साथे द्वारवतीथी नीकळीने पोताना प्रदेशनी सीमा सुधी आव्या ए स्थळे अरिष्टनेमि कुमारे शंखनाद कर्यो अने त्यां जरासंध उपर विजय प्राप्त थया पछी शंखपुर अथवा शंखेश्वर नामे नगर वसाववामां आव्युं, तथा त्यां पार्श्वनाथनी प्रतिमा स्थापित करवाम ---[2]

वैतरणि

कृष्ण वासुदेवनो एक वैद्य.

जुओ धन्वन्तरि

शकुन्त

अवन्तिपति प्रद्योतनो अंध मंत्री

वासवदत्ताए उदयननी साथे उज्जयिनीथी कौशाम्बी चाल्या जवा माटे हाथणी सज्ज करवानी आज्ञा करी हाथणीने ज्यारे तग बाधवा मांड्यो त्यारे हाथणीए गर्जना करी ए साभळीने शकुन्त नामे अंध मंत्रीए कह्यु के 'तंग बांधती वखते आ हाथणी गर्जना करे छे, माटे सो योजन जईने ते मरण पामशे'[1] मार्गना श्रमथी थाकेली हाथणी सो योजन जेटलो प्रवास करीने कौशाबीमा प्रवेशतां मरण पामी हती

जुओ **उदयन, प्रद्योत**

[1] कक्षाया बध्यमानाया यथा रसति हस्तिनी ।
योजनाना शत गत्वा प्राणत्याग करिष्यति ॥
आचू, पृ १६२

शङ्खपुर

'उत्तराध्ययन सूत्र'नी नेमिचन्द्रनी टीका प्रमाणे, अगडदत्त शंखपुरना राजानो पुत्र हतो.[1]

'विविधतीर्थकल्प' अनुसार, राजगृहनो राजा प्रतिवासुदेव जरासंध, वासुदेव कृष्ण साथे युद्ध करवा माटे पश्चिम दिशा तरफ नीकळ्यो कृष्ण पण बधी सामग्री साथे द्वारवतीथी नीकळीने पोताना प्रदेशनी सीमा सुधी आव्या ए स्थळे अरिष्टनेमि कुमारे शखनाद कर्यो अने त्या जरासघ उपर विजय प्राप्त थया पछी शंखपुर अथवा शंखेश्वर नामे नगर वसाववामा आव्युं, तथा त्या पार्श्वनाथनी प्रतिमा स्थापित करवामा आवी[2]

शान्तिचन्द्र वाचक

तपागच्छना सकलचन्द्र वाचकना शिष्य एमणे ‘ जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति ’ उपर ‘ प्रमेयरत्नमंजुषा ’ नामे टीका रची छे. ए टीकाने अंते आपेली ५१ श्लोकनी विस्तृत प्रशस्ति[1] प्रमाणे, एनी रचना सं १६५१= ई स १५९५ मां थई हती (श्लो १९). स १६१०= ई स. १६०४मा राजधन्यपुर—राधनपुरमा केटलाक समकालीन जैन विद्वानोने हस्ते विजयसेनसूरिनी समक्ष एनु संशोधन थयु हतुं (श्लो ३४–४०). एना लेखन अने शोधनमां कर्तानां शिष्य तेजचन्द्रे सहाय करी हती (श्लो. ४२) रत्नचंद्रे गुरुभक्तिथी एना अनेक आदर्शो तैयार कर्या हता (श्लो. ४९) अने लिपिकलामां चतुर धनचन्द्रे एनो प्रथमादर्श लख्यो हतो (श्लो ५१)

१ जप्रशा, पृ. ५४३–४६ शान्तिचन्द्र अने तेमना अन्य ग्रन्थो माटे जुओ जैसाइ, पृ. ५४८-५५

शान्तिसागर उपाध्याय

तपागच्छना उपाध्याय धर्मसागरना शिष्य श्रुतसागरना शिष्य. एमणे स १७०७=ई स १६५१मां पाटणमा ‘ कल्पसूत्र ’ उपर ‘ कौमुदी ’ नामे वृत्ति रची छे[1]

१ कको, प्रशस्ति

शान्तिसूरि

शान्तिसूरि थारापद्रीय गच्छना आचार्य हता. एमणे ‘उत्तराध्ययन सूत्र’ उपर ‘ पाइअ टीका ’ नामे प्रसिद्ध प्रमाणभूत टीकानी रचना करी हती[1]

‘ प्रभावकचरित ’ना १६ मा ‘ वादिवेताल शान्तिसूरिचरित ’मा आ आचार्यनुं चरित विस्तारथी आपेलु छे तेओ पाटण पासेना उन्नतायु—ऊण गामना वतनी हता (श्लो ९–१८) एमना गुरुनुं नाम विजयसिंह हतुं (श्लो ७). भोज राजाना आश्रित कवि

उत्तर गुजरातमां वढियारमां आवेलुं जैन तीर्थ शंखेश्वर ए आ शङ्खपुर होवा संभव छे

१ जुओ अगडदत्त

२ विविधतीर्थकल्प मां शङ्खपुरपार्श्वकल्प वळी जुओ मुनि जयन्तविजयजीनुं महातीर्थ शंखेश्वर पृ ११–२५

शत्रुंजय

सौराष्ट्रनो एक पर्वत ज्यां अर्वाचीन काळमां जैनोनुं सौथी वधु प्रसिद्ध तीर्थधाम छे

गौतमकुमार अरिष्टनेमि पासे दीक्षा लईने शत्रुंजय उपर निर्वाण पाम्या हता[१] बीजा केटलाक साधुओनी पण ए निर्वाणभूमि छे थावच्चापुत्रनुं निर्वाण पण शत्रुंजय उपर थयुं हतुं

पांच पांडवो कृष्णना मरणथी संवेग पामीने, सुस्थित स्थविरनी पासे दीक्षा लईने शत्रुंजयना शिखर उपर पादपोपगमन (वृक्षनी जेम स्थिर रहीने अनशन करे ते) करीने कालधर्म पाम्या हता

विविधतीर्थकल्प 'मां शत्रुंजयना नीचे प्रमाणे एकवीस नाम आपेलां छे सिद्धिक्षेत्र तीर्थराज मरुदेव, भगीरथ विमलाद्रि, बाहुबली, सहस्रकमल तालध्वज, कदम्ब, शतपत्र नगाधिराज अष्टोत्तर शतकूट, सहस्रपत्र ढंक, लौहित्य कपर्दिनिवास, सिद्धिशेखर, शत्रुंजय, मुक्तिनिलय सिद्धिपर्वत, पुंडरीक[३]

१ अंत १

२ अंत ३ तथा ४

३ मत, गा. ४५७–४६४ आदि उत्तर भाग पृ. १७ प्रबन्धमां अर्वाचीन एवी उपलब्ध एवा कल्पित तीर्थकल्पोमां शत्रुंजयना केटलाक प्राचीन उल्लेखो माटे जुओ कल्प पृ. ११–१४ वळी, पृ ४ वळी पृ. ८ वळी पृ. ८ इत्यादि.

सूरिना समकालीन होई ईसवी सनना आठमा सैकामां थया हशे एवो अजमायशी निर्णय आचार्य श्रीजिनविजयजीए कर्यो छे[3]

'प्रभावकचरित'ना कर्ता प्रभाचन्द्रसूरिए शीलांक अने कोटयाचार्यने अभिन्न गण्या छे[4] 'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी वृत्तिना कर्ता कोटयाचार्य ज 'प्रभावकचरित'ने उद्दिष्ट हशे एवु अनुमान सहेजे थई शके छे

शीलाचार्यनी पूर्वे 'सूत्रकृतांग सूत्र' उपर टीका अथवा टीकाओ होवी जोईए एम एमना ज विधान उपरथी जणाय छे[5] वळी एक स्थळे तो तेओ लखे छे के–जुदा जुदा सूत्रादर्शोमां नानाविध सूत्रो देखाय छे, अने टीकासंवादी एक पण आदर्श मळी शक्यो नथी, आथी अमुक एक ज आदर्शने अनुसरीने विवरण कर्यु छे, ए वस्तु वचारीने कोई स्थळे सूत्रथी विसंवाद जणाय तो चित्तव्यामोह न करवो.[6]

१ जुओ गम्भूता

२ निर्वृतिकुलीनश्रीशीलाचार्येण तत्त्वादित्यापरनाम्ना वाहरिसाधुसहायेन कृता टीका परिसमाप्तेति । आशी, पृ. २८८

समाप्ता चेय सूत्रकृतद्वितीयाङ्गस्य टीका । कृता चेय शीलाचार्येण वाहरिगणिसहायेन । यदवाप्तमत्र पुण्य टीकाकरणे मया समाधिभृता, तेनापेततमस्को भव्य कल्याणभाग् भवतु ।। सूकृशी, पृ ४२७

३ 'जीतकल्पसूत्र,' प्रस्तावना, पृ ११–१५, वळी जुओ 'वस्तुपालनु साहित्यमडळ अने सस्कृत साहित्यमा तेनो फाळो,' पेरा १९.

४ जुओ अभयदेवसूरि, कोटयाचार्य.

५ व्याख्यातमङ्गमिह यद्यपि सूरिमुख्यै–
भक्त्या तथापि विवरीतुमह यतिष्ये ।
किं पक्षिराजगतमित्यवगम्य सम्यक्
यनैव वाञ्छति पथा शलभो न गन्तुम् ।। सूकृशी, पृ. १

६ इह च प्राय सूत्रादर्शेषु

धनपालकृत 'तिलकमंजरी' कथानुं संशोधन तमणे कर्युं हतुं तथा भोजे तमने 'वादिवेताल'नुं बिरुद आप्युं हतुं (श्लो २४–५९) शान्तिसूरिनुं अवसान सं. १०९६=ई स १०४०मां थयुं हतुं (श्लो १३०)

आगमसाहित्यमां केटलेक स्थळे शान्तिसूरिना 'वादिवेताल' तरीके उल्लेख छे

शान्तिसूरि नामना अनेक आचार्यो थई गया छे एमने माटे जुओ 'न्यायावतारवार्तिक वृत्ति,' प्रस्तावना, पृ १४६–१४९

१. प्रभा प्रशस्ति.

२ एजं पृ. ११९–१ अने पृ. ११५ इत्यादि

सामवाहन

जुओ सालवाहन

शीलाचार्य

आचारांग सूत्र' अने 'सूत्रकृतांग सूत्र'ना टीकाकार 'आचारांगसूत्र'नी टीका गंभूता (गांभू) गाममां रचाई हतो' आ बन्ने टीकाओनी रचनामां शीलाचार्यने वाहरिगणिए सहाय करी हती.

आचारांग सूत्र'नी टीकानी जुदी जुदी प्रतोनी पुष्पिकाओमां तेनो रचनासमय जुदो जुदो आप्यो छे कोईमां शक सं ७८८, कोईमां शक सं ७९८, कोईमां गुप्त सं ७७२, तो कोईमां शक सं ७७२ छे आ आंकडाओमां कई सत्य साची ए नक्की करवानो कोई चोक्कस पुरावो नथी. उद्योतनसूरिनी कुवलयमाला'नी प्रशस्तिमां जमनो उल्लेख छे ते तत्त्वाचार्य ए ज शीलांक अथवा शीलाचार्य एवो एक मत छे, अने आ शीलांक अणहिलवाडना स्थापक वनराजना गुरु हता एवी पण एक परंपरा छे आ सर्व उपरथी, शीलाचार्य हरिभद्र

सूरिना समकालीन होई ईसवी सनना आठमा सैकामा थया हशे एवो अन्दाजथी निर्णय आचार्य श्रीजिनविजयजीए कर्यो छे[3]

'प्रभावकचरित'ना कर्ता प्रभाचन्द्रसूरिए शीलाक अने कोट्याचार्यने अभिन्न गण्या छे[4] 'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी वृत्तिना कर्ता कोट्याचार्य ज 'प्रभावकचरित'ने उद्दिष्ट हशे एवु अनुमान सहेजे थई शके छे

शीलाचार्यनी पूर्वे 'सूत्रकृताग सूत्र' उपर टीका अथवा टीकाओ होवी जोईए एम एमना ज विधान उपरथी जणाय छे[5] वळी एक स्थळे तो तेओ लखे छे के–जुदा जुदा सूत्रादर्शोमा नानाविध सूत्रो देखाय छे, अने टीकासंवादी एक पण आदर्श मळी शक्यो नथी, आथी अमुक एक ज आदर्शने अनुसरीन विवरण कर्यु छे, ए वस्तु विचारीने कोई स्थळे सूत्रथी विसंवाद जणाय तो चित्तव्यामोह न करवो.[6]

१ जुओ गम्भूता

२ निर्वृतिकुलीनश्रीशीलाचार्येण तत्त्वादित्यापरनाम्ना वाहरिसाधु-सहायेन कृता टीका परिसमाप्तेति । आशी, पृ २८८

समाप्ता चेय सूत्रकृतद्वितीयाङ्गस्य टीका । कृता चेय शीलाचार्येण वाहरिगणिसहायेन । यदवाप्तमत्र पुण्य टीकाकरणे मया समाधिभृता, तेनापततमस्को भव्य कल्याणभाग् भवतु ॥ सूकृशी, पृ ४२७

३ 'जीतकल्पसूत्र,' प्रस्तावना, पृ ११–१५, वळी जुओ 'वस्तुपालनु साहित्यमडळ अने सस्कृत साहित्यमा तेनो फाळो,' पेरा १९

४ जुओ **अभयदेवसूरि, कोट्याचार्य.**

५ व्याख्यातमङ्गमिह यद्यपि सूरिमुख्यै–
भक्त्या तथापि विवरीतुमह यतिष्ये ।
किं पक्षिराजगतमित्यवगम्य सम्यक्
तेनैव वाञ्छति पथा शलभो न गन्तुम् ॥ सूकृशी, पृ १

६ इह च प्राय· सूत्रादर्शेषु नानाविधानि सूत्राणि दृश्यन्ते न न

दंसपर्वतासोकोऽप्यमलमिताद्ये प्रमुखमपोऽस्व एकम दर्शमतीस्यास्यामिर्विरच विजयो प्रयतरवगम्य सुप्रसिद्धैमादर्शमाविचरमामोहो न विवेच इति।

सुरवी पृ ११९

आ अवतरणमां स्पष्ट रीते टीका नो निर्देश छे एटले टीकाकार्य अहीं सुत्रकृतांग सूत्र नी प्राचीनतर चूर्णिनो उल्लेख करता नथी—प्राचीनतर कोई टीकानो करे छे—ए ऐवोवि छे

शैलकपुर

थावच्चापुत्र अणगार द्वारमतीथी शैलकपुर आव्या हता अने त्योना शैलक राजाने उपदेश आपीने श्रमणोपासक बनाव्यो हतो.

वर्णन उपरथी शैलकपुर सौराष्ट्रना प्रदेशमां होय एवुं अनुमान थाय छे 'शैलकपुर' ए नाम जोतां सौराष्ट्रना पार्वतीय प्रदेशमां ते आवेलु हशे

जुओ थावच्चापुत्र

शोभन

कवि धनपालनो भाई 'शोभनस्तुति' नामे एमे रचेलुं स्तोत्र प्रसिद्ध छे

जुओ धनपाल

शौरिपुर

साडीपचीस आर्य देशो पैकी कुशावर्तनुं पाटनगर द्वारकानी पहेलां ए यादवोनी राजधानी हतुं महावीर शौरिपुरमां आव्या हता एमना समयमां शौरिपुरना राजानुं नाम सौर्यदत्त हतुं त्यांना सोर्यव तंसक उद्यानमां एक माछीमारना पूर्वभवनुं महावीरे वर्णन कर्युं हतुं

आग्रा जिल्लामां यमुना नदीना किनारे बटेश्वरनी पासे आवेल सूर्यपुर अथवा सूरजपुर ए प्राचीन काळनुं शौरिपुर मनाय छे

जुओ कुशावर्त

१ आचू, गा १२८९, आचू, उत्तर भाग, पृ. १९३

२ मुनि कल्याणविजय, 'श्रमण भगवान महावीर,' पृ. ३९६-९७

३ जैन, 'लाइफ इन एन्श्यन्ट इन्डिया,' पृ. ३३७

श्याम आर्य

परंपरानुसार, आर्य श्याम 'प्रज्ञापना सूत्र'ना कर्ता गणाय छे[1]

आर्य श्याम तथा आर्य कालक के कालकाचार्य एक होवा संभव छे एवो केटलाक विद्वानोनो मत छे,[2] पण कालकाचार्य एक करतां वधु थया छे जेमाथी कोने आर्य श्याम गणवा एनो निर्णय सरल नथी एम तेओए ज स्वीकार्यु छे बीजा केटलाक एम माने छे के पहेला कालकाचार्य जेओ 'निगोदव्याख्याता' तरीके प्रसिद्ध छे तेओ ज आर्य श्याम छे.[3]

१ विको, पृ. १४२; नम, पृ. १०५, ११५, ११८; आम, पृ. ५३६, श्राप्रर, पृ. १३३, इत्यादि

२ प. वेचरदासकृत 'भगवती सूत्र,' अनुवाद, भाग २, पृ. १३९-४०, टिप्पण

३ 'कालककथासंग्रह,' उपोद्घात, पृ ५२ जुओ कालकाचार्य-१

श्रीचन्द्रसूरि

चंद्रकुलना शीलभद्रसूरिना शिष्य धनेश्वरसूरिना शिष्य. एमणे स. १२२७=ई स ११७१ मां अणहिलवाडमां 'जीतकल्प सूत्र'नी बृहच्चूर्णि उपर विषमपदव्याख्या रची छे[1]

१ जीकचूव्या, प्रशस्ति श्रीचन्द्रसूरिना अन्य ग्रन्थो माटे जुओ जैसाइ, पृ २४३.

श्रीमाल

'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां 'राज्यदेशनाम' आप्यां छे तेमा श्रीमाल पण छे[1]

श्रीमालनुं बीजुं नाम भिन्नमाल के भिनमाल छे भिन्नमालमां ब्रह्म नामनुं स्थानानुं नामनुं हतुं ' मन्त्री निशीथचूर्णि अनुसार, भिन्नमालमां चालतो रुपानो एक सिक्को 'चम्मलात'–(सं 'चर्मलात') कहेवातो महेश्वर उज्जयिनी, धानाक नगर नगरोमां ओछा असंग प्रसंगाए एकम थईने सुरापान करता हता

भिन्नमालमां चालता एक सिक्काने 'चम्मलत'–'चमलात' कह्यो छे ए वस्तु अरा विचारवा जेवी छ सिक्कानुं ए नाम अविलक्षण अने अर्थरहित लागे छ निशीथचूर्णि'ना टाईप करेलो माइक्रोफिल्म सपादनमां अनेक अशुद्धिओ छ अने अहीं पण मूळ प्रतना 'च' न बदले भूलथी 'च' वंचाया होय अथवा मूळ प्रतना लहियाओए 'ब' नो 'च' कर्यो नाख्यो होय एम बनवुं असंभवित नथी. आ रीते 'चम्मलत'ने स्थाने 'बम्मलात' (=सं 'वर्मलात') वांचवामां आवे तो ए नामनुं श्रीमालना इतिहास साथे अनुसंधान थई शके तेम छ श्रीमालना राजा वर्मलातनो उल्लेख 'प्रभावकचरित'मां छ गुजरातना सुप्रसिद्ध संस्कृत कवि माघे पोताना शिशुपालवध नी प्रशस्तिमां प वर्मलातनो निर्देश कर्यो छे स स आ होय एम बने माघनो दादो सुप्रभदेव आ वर्मलातनो मंत्री हतो ' वर्मलात राजाना नामथी चहेर पोतेना सिक्का वर्मलात' नामथी ओळखाता होय ए सहज शक्य छे—जेम मध्यकालना केटलाक राजाओना सिक्काओनो निर्देश ' 'भीमप्रिय,' 'वीसल प्रिय' आदि वडे करेलो छे तेम कदाच वर्मलात' ए वर्मलात-प्रिय'नुं संक्षिप्त रूप पण होय

श्रीमालना पौराणिक वृत्तान्त माटे जुओ 'पुगु'मां श्रीमाल एना इतिहास माटे जुओ बॉम्बे गेझेटियर,' पु. १ भाग १मां 'भिन्नमाल' विशेनुं परिशिष्ट तथा काव्यानुशासन प्रस्तावना पृ ८२ १०२

१ जुओ पुष्कर

२ रूपमय वा नाणक भवति, यथा–भिल्लमाले द्रम्म । बृकक्षे, भाग २, पृ ५१८ श्रीमालना द्रम्मने 'पारोपथ द्रम्म' कहेता. 'श्रीमालनी टकशाळमा पाडेला, त्रण चार परखेला, बजारना व्यवहारमा आवता, चालु, भेळसेळ विनाना, रोकडा' पारोपथ द्रम्मनु चलण गुजरातमा ओछामा ओछु, विक्रमना तेरमा शतकना अंत सुधी हतु एम 'लेखपद्धति' (पृ २०, ३३, ३५, ३७, ३९ ४२, ५५ इत्यादि) उपरथी जणाय छे

३ चवदृगा से दिज्जति, ताम्रमय वा ज णाणग ववहरति त दिज्जति । जहा दक्खिणावहे कागणी, रुप्पमय जहा भिल्लमाले चम्मलातो, निचू, भाग ३, पृ ६१६–१७

४ आसूचू, पृ. ३३३

५ हेमचन्द्रकृत 'काव्यानुशासन,' प्रस्तावना (प्रो र छो परीख), पृ. ९५

श्रीस्थलक

श्रीस्थलक नगरमा भानु राजा हतो. एना सुरूप नामे पुत्रने मोदक भावता होवाथी ते 'मोदकप्रिय' नामे प्रसिद्ध थयो हतो सुरूपने एक वार वैराग्य पेदा थता सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य साधड्या हतां अने छेवट ते केवलज्ञान पाम्यो हतो, एनी कथा छे [1]

गुजरातनु सिद्धपुर प्राचीन काळथी 'श्रीस्थल' तरीके जाणीतु छे. ते आ श्रीस्थलक हशे [2]

१ पिनिम, पृ ३३.

श्रीहर्ष

ईसवी सनना बारमा सैकाना उत्तरार्धमा थई गयेलो 'नैषधीय-चरित'नो कर्ता 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'नी रत्नशेखरसूरिनी वृत्तिमा 'नैषध'[1] अने श्रीहर्षनो[2] नामोल्लेख करीने ए काव्यना श्लोको टांकेला छे मंत्री वस्तुपालना समयमा 'नैषध'नी नकल गुजरातमां आवी त्यार पछी ए काव्यनुं अध्ययन–अध्यापन अहीं चालतु रह्यु हतुं एनो आ एक विशेष पुरावो छे [3]

उल्लेख कर्यो छे,[3] ते उपरथी कथानुयोगना ग्रन्थ तरीके एनुं केटलुं महत्त्व गणातुं एनी कल्पना थई शके छे जैन साहित्यना सर्व उपलब्ध आगमेतर कथाग्रन्थोमां 'वसुदेव-हिंडी' प्राचीनतम छे[4]

जुओ सङ्घदासगणि क्षमाश्रमण

१ 'वसुदेव-हिंडी' (अनुवाद), उपोद्घात, पृ. १-२

२ एज, पृ ३-५

३ आचू, पूर्वभाग, पृ १६४, ३२४, ४६० आगमसाहित्यमां 'वसुदेव-हिंडी'ना अन्य आधारो तथा उल्लेखो माटे जुओ आम, पृ २१८, व्यम (उद्दे ५ उपरनी वृत्ति), पृ ६, श्राप्र, पृ. १६५, वग्र, पृ १६५; कफि, पृ ३५

४ नम, पृ ११७, वृकशे भाग ३ पृ ७२२

५ न च तेषामिष्टसिद्धिभवन सन्दिग्धमिति वाच्य, ज्ञाताधर्मकथाङ्ग-वसुदेवहिण्डिप्रभृत्यागमे साक्षादुक्तत्वात्। श्राप्र, पृ १६५

६ सघदासगणिनो समय, 'वसुदेव-हिंडी' अने 'बृहत्कथा'नो संबध, 'वसुदेव-हिंडी'नी भाषा, एमांथी प्राप्त थती सांस्कृतिक-सामाजिक माहिती अने बीजा आनुषगिक मुद्दाओनी चर्चा माटे जुओ 'वसुदेव-हिंडी' (अनुवाद), उपोद्घात

सपादलक्ष

राजपूतानामां आवेल शाकंभरी-साभरनी आसपासनो प्रदेश. सांभर ए प्रदेशनुं मुख्य नगर हतु.[1]

सपादलक्ष आदिमां 'वरट्टी'-बंटी नामनु धान्य प्रसिद्ध छे[2]

जुओ साम्भरि

१ ज्योडि, पृ. १७४ तथा १७८

२ 'वरग'त्ति वरट्टी धान्यविशेष सपादलक्षादिषु प्रसिद्ध । जप्रशा, पृ १२४

समयसुन्दर

खरतरगच्छना जिनचन्द्रसूरिना शिष्य सकलचन्द्रना शिष्य.

तेमणे रतनसीमां सं १६९१=१६३५ मां 'दशवैकालिक सूत्र' उपर 'दीपिका' नामे टीका रची हती. आ उपरांत 'कल्पसूत्र' उपर पण 'कल्पलता' नामे एमनी टीका जाणीती छे. समयसुन्दर संस्कृतना एक उत्तम विद्वान हता अने तेमणे अनेक ग्रन्थो रचेला छे. जैन गुर्जर साहित्यना पण तेओ एक सुप्रसिद्ध कवि छे. तेमनी साहित्य प्रवृत्ति सं. १६४२=ई. स. १५८५ ('भावशतक' रच्युं)थी मोडी सं. १६९८=ई. स. १६४२ ('जीवविचार,' 'नवतत्त्व' अने दंडक' उपरनी टीकाओ) सुधीना अर्धी शताब्दी करतां ये लांबा समयपट उपर विस्तरेली छे.

१ जुओ पृ. ११७ (प्रशस्ति)

२ समयसुन्दरना जीवन अने तेमना ग्रन्थो माटे जुओ पैराग्राफ, पृ. ५७६ तथा ५८८–८९. तेमनां गुजराती काव्यो माटे जुओ पांचमी गुजराती साहित्य परिषद्मां स्व. श्री. मोहनलाल द. देसाईनो निबंध 'कविवर समयसुन्दर'

समिताचार्य

समिताचार्य अथवा आर्य समित वज्रस्वामीना मामा हता. जैन साधुओनी ब्रह्मद्वीपक शाखा तेमना कर्तृत्वथी केवी रीते प्रवर्तमान थई ए विशे नीचेनो वृत्तान्त मळे छे. आभीरदेशमां कृष्णा अने बेणा नदीओना संगमस्थाने ब्रह्मद्वीपमां पांचसो तापसो रहेता हता. एमांनो एक तापस पोताना पग उपर अमुक प्रकारनो लेप करीने पाणी उपर फरतो हतो. आ चमत्कारथी लोको आश्चर्य पामता हता अने श्रावकोनी हेलना थती हती. वज्रस्वामीना मामा आर्य समित एक वार विहार करता त्यां आव्या. श्रावकोए तेमने बधी वात करी. 'आ तापस कोई प्रयोगथी नदीने उतरतो हशे' एवुं अनुमान करीने आर्य समिते तेमने कह्युं के 'तापसने तमारे घेर आमंत्रणथी बोलावीने चरणप्रक्षालन आ विधिथी एना पग बराबर धोई नाखजो.' पछी एक श्रावके तापसने

आमत्रण आपीने तेना पग धोई नाख्या, एटले पेलो लेप पण धोवाई गयो तापस नदीकिनारे आवी पाणीमा ऊतर्यो, एटले डूबी गयो पछी आचार्य त्यांथी नीकळ्या तेमणे नदीकिनारे आवी वासक्षेप नाखी कह्युं, ' आव, पुत्रि ! मारे सामे किनारे जवुं छे. ' एटले नदीना बन्ने तट मळी गया, अने आचार्य सामे किनारे चाल्या गया. आथी बधा तापसोए चमत्कृत थईने आर्य समित पासे जैन दीक्षा लीधी. तेओ सर्वे ब्रह्मद्वीपमा रहेता हता, तेथी ' ब्रह्मदीपक ' तरीके प्रसिद्ध थया.[1]

वसन्तपुरना निलय श्रेष्ठीना पुत्र क्षेमंकरे समितिसूरि पासे दीक्षा लीधी हती.[2] हरन्त नामे संनिवेशमा समितिसूरि आव्या त्यारे त्यांनो जिनदत्त नामे श्रावक साधुओ प्रत्येनी भक्तिथी खास तेमने निमित्ते आहार तैयार करावतो हतो, तेथी आचार्ये पोताना साधुओने ए वहोरवानो निषेध कर्यो हतो, एवो वृत्तान्त पण मळे छे[3]

जुओ अचलपुर, ब्रह्मद्वीप, वज्र आर्य

१ आचू, पूर्वभाग, पृ ५१४–१५; निभा, गा. ४४४८–५०; निचू, भाग ४, पृ ८७४–७५. वळी जुओ जीकभा, गा १४६३; कस, पृ १३२, कसु, पृ ५१३–१४. ककि, पृ १७१; कदी, पृ. १४९–५०, इत्यादि

२ विनिम, पृ १००.

३ पिनिम, पृ ३१

समुद्र आर्य

आर्य समुद्र ए आर्य मगूना गुरु होय एम जणाय छे.[1] एमनुं शरीर घणुं दुर्बळ हतु आथी एमने माटे आहारनी वानीओ जुदां जुदा मात्रक आदिमां जुदा जुदी लेवामा आवती हती, ज्यारे आर्य मंगू तो बधी चीजो एक ज पात्रमा लेता हता, जुदां जुदां पात्रमां लावेली चीजो तेओ खाता नहोता एक वार ए बन्ने आचार्यो विहार करता सोपारकमा गया. त्याना बे श्रावकोमानो एक गाडां चलावतो हतो,

दक्षिणापथ,[२] सुराष्ट्र तथा आंध्र, द्राविड आदि देशो[३] तावे कर्या हता.

जैन कथा अनुसार, सप्रति पूर्वजन्ममां कौशांबीमां भिखारी हतो अने मरती वखते आर्य सुहस्तीनो शिष्य थयो हतो. बीजा जन्ममा ते राजा थयो, ए वखते आर्य सुहस्ती उज्जयिनीमा जीवन्तस्वामीनी प्रतिमानु वंदन करवा माटे आव्या त्यारे रथयात्रामां एमने जोईने संप्रतिने पूर्वजन्मनुं स्मरण थयुं अने ते आचार्यनो शिष्य अने मोटो प्रवचनभक्त थयो. संप्रतिनो राजपिंड आर्य सुहस्तीना शिष्यो वापरता हता ए निमित्ते महागिरि अने सुहस्ती ए बन्ने आचार्यो वच्चे मतभेद थयो हतो, जेमां छेवटे सुहस्तीए क्षमा मागी हती.[४]

ए समये साडीपचीश आर्यदेशो सिवायना प्रदेशोमां जैन साधुओनो विहार थतो नहोतो. आथी संप्रतिए पोताना सरहदी माडलिकोने बोलावी तेमने जैन धर्मनो उपदेश आप्यो, अने साधुओ ज्यारे एओना देशमां विहार करे त्यारे एमनी प्रत्ये केवा प्रकारनु प्रवचनोचित वर्तन थवुं जोईए एनुं सूचन कर्युं. पछी संप्रतिए राजपुरुषोने साधुवेश धारण करावी ए देशोमा मोकल्या, अने ए रीते त्यांनी प्रजाने साधुओ साथे केवी रीते वर्तवुं एनी विधिथी परिचित बनावी पछीथी साधुओ पण त्यां जवा लाग्या, अने सरहदी देशो 'भद्रक'—विहार योग्य बन्या आ प्रमाणे संप्रतिए आन्ध्र, द्रविड, महाराष्ट्र, कुडुक्क आदि सरहदी प्रदेशो, जे अनेक अपायोथी भरेला हता तेमा साधुओनो सुखविहार प्रवर्ताव्यो[५]

संप्रति राजा ए जैन इतिहासमा मोटो प्रवचनभक्त राजा गणाय छे तेणे सवा करोड जिनचैत्य, सवा करोड जिनबिंब, छत्रीस हजार जीर्ण जिनचैत्योनो उद्धार, पचाणु हजार पित्तळना बिंब तथा हजारो उपाश्रयो कराव्या होवानी अनुश्रुति छे[६] आजे पण कोई स्थळे भूगर्भमां दटायेली प्रतिमा मळे छे एने श्रद्धाळु जैनो संप्रति राजाना समयनी माने छे.

स्वती पुराण'

१ वृस्से, भाग ३, पृ ८८३–८४ जुओ आनन्दपुर

२ तत्थ ताओ मरुडीओ एगदेवसियाओ जहा सरस्सईजत्ता, आसूचू, पृ ३६२

३ नूनमस्या [सरस्वत्या] सिद्धपुरपरिसरे प्राचीमुखप्रस्रमर पयःप्रवाहनविवमन् सुचिरविरञ्चिशिर कर्त्तनसञ्जातपातकविशुद्ध्यर्थमिव भगवान् भद्रमहाकालः, हम्मीरमदमर्दन, पृ ४७

सहस्राम्रवन

उज्जयतगिरि उपरनुं ए वन, ज्या नेमिनाथने केवलज्ञान थयुं हतुं.'

१ फको, पृ. १६९–७०

सह्यपर्वत

पश्चिमघाटनो उत्तर तरफनो भाग. एनो उल्लेख 'आवश्यकसूत्र'-नी निर्युक्तिमा छे' एक दुर्गमा वसता कोंकण देशना पुरुषो सह्य नामे पर्वत उपरथी घउं, गोळ, घी, तेल आदि उतारवानु अने त्या चढाववानुं काम करे छे,² एवो पण निर्देश छे

१ आनि, गा ९२५

२ एकस्मिन् दुर्गे निवसन्त कुङ्कुणदेशोद्भवा पुरुषा सह्यनाम्न पर्वताद् गोधूमगुडघृततैलादिभाण्डमवतारयन्त्यारोहयन्ति च । आहेहा, पृ ५५

कोङ्कणे एगम्मि दुग्गे सज्झस्स भड आरुहति विलयति य, आम, पृ ५१२

सातवाहन

जुओ सालवाहन

साम्ब

जाबवतीथी थयेलो कृष्णनो तोफानी पुत्र. एना अडपलांनी कथाओ अनेक स्थळे छे, अने ते पुराणादिमा वर्णवेली कृष्णनी क्रीडाओ साथे

१ जुओ कुमार

२ गुवे, भाग १ पृ ११७-१८

३ मिनू भाग १ पृ ४१८

४ जुओ महागिरि आर्य सुहस्ती आर्य

५ गुवे भाग १, पृ ११७-२१

६ अचि, पृ ११४-१५ अने पृ ११६

सरस्वती

उत्तर गुजरातनी सरस्वती नदी, जेना किनारे पाटण, सिद्धपुर वगेरे ऐतिहासिक स्थानो आवेलां छे

सरस्वती नदीनो पूर्वदिशाभिमुख प्रवाह ज्यां छे त्यां वसे आनंदपुरवासी लोको शरदऋतुमां यथाविभव संखडि-उजाणी करे छे[१] वळी अन्यत्र, एक दिवसनी संखडि माटे सरस्वतीप्राप्तनु उदा-हरण आपेलुं छे

सरस्वतीनो प्रवाह पूर्वथी पश्चिमे वहे छे आथी जे थोडा प्रदेश-मां पण ए पूर्वाभिमुख वाय छे ए प्रदेश पवित्र गणाय छे सर-स्वतीनो आ 'प्राचीनवाह' प्रवाह सिद्धपुर पास छे अने त्यां जूना समयथी कार्तिकी पूर्णिमाने दिवस मोटो मेळो भराय छे, ज्यां आस पासना प्रदेशमांथी हजारो माणसो एकत्र थाय छे 'आनंदपुरवासी लोको'नो अर्थ 'प्राचीन आनंदपुरनी आसपासना विस्तारमां वसता लोको' एवो करीए तो एनी ऐतिहासिक औचित्य जळवाय

सरस्वतीना पूर्वाभिमुख प्रवाहनो उल्लेख जयसिंहसूरिना 'हम्मीर मदमर्दन' नाटक (ई स ना १३मा शतकनो पूर्वार्ध) मां सिद्धपुरना रुद्रमहालयना वर्णनप्रसंगमां पण छे[२]

सरस्वतीना इतिहास माटे जुओ 'गुजरातना इतिहास'नो परि शिष्ट १, पुगु मां सरस्वती तथा श्री. कनैयालाल दवे संपादित 'सर

स्वती पुराण'

१ बृकशे, भाग ३, पृ ८८३-८४ जुओ आनन्दपुर

२ तत्थ ताओ सरुडीओ एगदेवसियाओ जहा सरस्सईजत्ता, आसूचू, पृ ३,२

३ नूनमस्या [सरस्वत्या.] सिद्धपुरपरिसरे प्राचीमुखप्रसृमर पय-प्रवाहमधिवसन् सुचिरविरञ्चिशिर कर्त्तनसञ्जातपातकविशुद्ध्यर्थमिव भगवान् भद्रमहाकाल., हम्मीरमदमर्दन, पृ. ४७

सहस्राम्रवन

उज्जयतगिरि उपरनुं ए वन, ज्यां नेमिनाथने केवलज्ञान थयुं हतुं.[१]

१ कको, पृ १६९-७०

सह्यपर्वत

पश्चिमघाटनो उत्तर तरफनो भाग. एनो उल्लेख 'आवश्यकसूत्र'-नी निर्युक्तिमां छे[१] एक दुर्गमां वसता कोंकण देशना पुरुषो सह्य नामे पर्वत उपरथी घउं, गोळ, घी, तेल आदि उतारवानुं अने त्या चढाववानुं काम करे छे,[२] एवो पण निर्देश छे

१ आनि, गा ९२५

२ एकस्मिन् दुर्गे निवसन्त कुङ्कुणदेशोद्भवा पुरुषा सह्यनाम्न पर्वताद् गोधूमगुडघृततैलादिभाण्डमवतारयन्त्यारोहयन्ति च । आहेहा, पृ ५५

कोङ्कणे एगम्मि दुग्गे सज्झस्स भंड आरुहति विलयति य, आम, पृ. ५१२

सातवाहन

जुओ सालवाहन

साम्ब

जाबवतीथी थयेलो कृष्णनो तोफानी पुत्र. एना अडपलांनी कथाओ अनेक स्थळे छे, अने ते पुराणादिमां वर्णवेली कृष्णनी क्रीडाओ जाणे

केटलाक अंशो मळी आवे छे. केटलीक उदाहरणरूप कथाओनो संक्षेप अहीं आप्यो छे :

द्वारकामां बलदेवना पुत्र निषधनो पुत्र सागरचन्द्र खूब रूपाळो हतो अने साम्ब वगेरे सर्वने ते प्रिय हतो. द्वारकामां वसता बीजा एक राजाने कमलमेला नामनी एक अति रूपवान पुत्री हती. उग्रसेनना भाणेज धनदेव साथे एनुं सगपण करेलुं हतुं. एक वार नारद मुनि सागरचन्द्र पासे आव्या अने तेनी आगळ कमलमेलानी प्रशंसा करी. आथी सागरचन्द्र कमलमेलामां आसक्त थयो, अने ते कन्यानी आकृति चीतरतो तथा एनुं नाम रटतो रहेवा लाग्यो. पछी नारद कमलमेला पासे गया, अने एनी आगळ तेमणे सागरचन्द्रनी प्रशंसा करी अने धनदेवनी निन्दा करी. आथी कमलमेला पण सागरचन्द्रमां आसक्त थई. नारदे आ वात जईने सागरचन्द्रने करी. पछी सागरचन्द्रे साम्बने कमल-मेला साथे पोतानो मेळाप करी आपवानी विनंति करी. बीजा कुमारोए साम्बने मद्य पिवरावीने तेनी पासे आ विनंती स्वीकारावी, पण मद्यनुं घेन उतरी गया पछी साम्बने आ कामनी मुश्केलीनुं भान थयुं. विचार करीने तेणे प्रद्युम्न पासे प्रज्ञप्तिविद्यानी मागणी करी. प्रज्ञप्तिनी सहायथी तेणे कमलमेलानुं प्रतिरूप विकुर्व्युं तथा कमलमेलानी जगाए गोठवी दीधुं अने जे दिवसे कमलमेलानुं धनदेव साथे लग्न थवानुं हतुं ते दिवसे एनुं हरण करीने रैवतक उद्यानमां एने सागरचन्द्र साथे परणावी दीधी. पछी धनदेव साथेना लग्न समये विद्याप्रतिरूप तो अट्टहास करीने आकाशमां ऊडी गयुं. कमलमेला विशे नारदने पूछवामां आवतां तेमणे कह्युं के 'कमलमेलाने में रैवतक उद्यानमां जोई हती. कोई विद्याधर एने हरी गयो छे.' आ सांभळी कृष्ण सैन्य सहित नगरनी बहार नीकळ्या. साम्ब पण विद्या-धरनुं रूप धारण करीने लडवा माटे सामे आव्यो. सर्व राजाओने तेणे पराजय कर्यो, पण ज्यारे एणे जोयुं के पिता कोपायमान थया छे त्यारे ए कृष्णने पगे पड्यो, अने कह्युं, 'आ कमलमेला आपघात

फरवा माटे गोखमांथी पडतुं मूकती हती, तेने बचावीने अमे अहीं लाव्या छीए ' पछी कृष्णे उग्रसेननुं सान्त्वन कर्युं अने बधा सुखपूर्वक रहेवा लाग्या

एक वार भगवान अरिष्टनेमि द्वारवतीमा समोसर्या एमनो उपदेश सांभळीने सागरचन्द्रे एमनी पासे दीक्षा लीधी ए पछी एक वार सागरचन्द्र शून्यगृहमां एकरात्रिकी प्रतिमोमां रहेला हता त्यारे धनदेवे एमना वीसे नखमां त्रांबानी सोयो ठोकी दीधी आथी सागरचन्द्र मरण पाम्या. बीजे दिवसे तपास करतां त्रांबाना कारीगर पासेथी माछम पड्युं के आ सोयो धनदेवे घडावी हती क्रोधायमान थयेला सांब आदि कुमारोए धनदेव पोताने सोंपी देवामां आवे एवी मागणी करी. परिणामे यादवोना बे पक्षो वच्चे युद्ध थयुं, परन्तु देव थयेला सागरचन्द्रे बन्नेने शान्त कर्या. पछी कमलमेलाए पण भगवान अरिष्ट-नेमि पासे दीक्षा लीधी

एक वार जांबवतीए कृष्णने कह्युं के 'मारा पुत्रनुं कोई तोफान हजी जोवामां आव्युं नथी,' त्यारे कृष्णे कह्युं के 'कोई वार बतावीश.' पछी कृष्ण पोते आभीर थया अने जांबवतीए आभीरीनु रूप लीधुं, अने तेओ द्वारवतीमां दहीं वेचता फरवा लाग्या. साबे जांबवतीने जोईने दहीं लेवा बोलावी, अने पछी तेने एकलीने पराणे एक देवकुळमां खेंचो जवा लाग्यो. पाछळथी आभीरना रूपमा कृष्ण आव्या, अने बन्ने वच्चे युद्ध थयु आभीर कृष्ण वासुदेव थया अने आभीरी जांबवतीरूपे प्रकट थई, एटले माबापथी शरमायेलो साब अवगुंठन करीने नासी गयो. बीजे दिवसे यादवोनी सभामां एने पराणे बोलाववामा आव्यो त्यारे ते लाकडानो एक खीलो घडतो घडतो आव्यो. कृष्णे एनुं कारण पूछतां ते बोल्यो, 'जे गई कालनी वात कहेशे एना मुखमां आ ठोकवानो छे.'

१ आम, पृ. १

मथुरा तेम ज दक्षिण मथुरा बन्ने उपर विजय कर्यो. पछी जईने राजाने विजयनी वधामणी आपी ए ज समये बीजा कोई दूते राजाने जईने कह्यु के 'अग्रमहिषीने पुत्र जन्म्या छे' त्यारे वळी त्रीजाए खबर आपी के 'अमुक स्थळे विपुल निधि प्रकट थयो छे.' आ प्रमाणे एक साथे अनेक मंगळ समाचारो आववाथी अतिहर्षने कारणे सालवाहन दीप्तचित्त थई गयो ते पलगो तोडवा लाग्यो, स्तंभो उपर प्रहार करवा लाग्यो, अने अनेक प्रकारे असमंजस बोलवा लाग्यो एना प्रलापमा नीचेनी गाथाओ पण हती ·

सच्च भण गोदावरि ! पुव्वसमुद्देण साविया संती ।
साताहणकुलसरिस, जति ते कूले कुलं अत्थि ॥६२४६॥
उत्तरतो हिमवंतो, दाहिणत सालिवाहणो राया ।
समभारभरक्कंता, तेण न पल्हत्थए पुहवी ॥ ६२४७ ॥

[अर्थात् हे गोदावरी ! पूर्व समुद्रना सोगन खाईने साचुं कहे : सातवाहनना जेवुं बीजुं कोई कुळ तारा कूल—किनारा उपर छे ?

उत्तरमां हिमालय अने दक्षिणमां शालिवाहन राजा—एम (बन्ने दिशामां) सरखा भारथी आक्रान्त थयेली पृथ्वी चलायमान थती नथी]

पछी राजाने भानमां लाववा माटे खरक मंत्रीए एक उपाय कर्यो अनेक स्तंभो अने भींतो तेणे तोडी नाख्या राजाए पूछ्युं : 'आ कोणे कर्युं ?' एटले मंत्रीए उत्तर आप्यो 'आपे.' पछी 'आ मारी आगळ मिथ्या भाषण करे छे' एम मानीने राजाए तेने लात मारी. सकेत प्रमाणे बीजा माणसोए अमात्यने अन्यत्र छुपावी दीधो. पछी कंईक जरूर पडतां राजाए पूछ्युं 'अमात्य क्यां छे ?' पेला माणसोए कह्युं 'आपनी आगळ अविनय कर्यो, तेथी एमनो वध करवामा आव्यो छे.' त्यारे राजा सोरवा मांड्यो के 'में आ सारु न कर्युं, ए समये मने कंई भान न रह्युं' पछी पेला राजपुरुषो बोल्या के

सिद्धराज जयसिंह

सं. ११४९ थी ११९९=ई. स. १०९३ थी ११४३ सुधी अणहिलवाडनी गादी भोगवनार गुजरातनो चौलुक्यवंशीय राजा

अभिलषित धन होय छता एनी रक्षा, प्रतिष्ठाप्राप्ति अने अभीष्ट स्रीनी कामना करता मनुष्य दु:खी थाय, अने स्रीनी प्राप्ति थाय छतां मनुष्य पुत्रादिनी आशाथी दु:खी थाय–ए संबंधमां राजा सिद्धराज जयसिंहनुं उदाहरण 'श्राद्धप्रतिक्रमण सूत्र'नो रत्नशेखरनी वृत्ति (ई स. १४४०) मां आपेलुं छे.[1]

सिद्धराज विशेनी आ प्रकारनी किंवदंती लोकप्रसिद्ध हशे, ते उपरथी आ उदाहरण लेवायुं लागे छे.

१ एवमभिलषितधनत्वेऽपि तद्रक्षास्त्रप्रतिष्ठाप्राप्त्यभीष्ट–स्त्रीसंयोगकामितकामभोगाद्याशया तत्प्राप्तावपि सिद्धराज–जयसिंहनृपादिवत् पुत्राद्यपत्याशया . .सर्वदापि दु:खिन एव,...श्राप्र, पृ १०१

सिद्धसाधु

तेओ हरिभद्रसूरिना शिष्य हता. बुद्धधर्मनो मर्म जाणवा माटे तेओ बौद्धो पासे गया हता, त्या बौद्ध मतथी तेओ भावित थया, पण गुरुने वचन आप्युं हतुं, एटले तेमनी विदाय लेवा माटे आव्या गुरुए तेमने प्रतिबोध कर्यो, पण बौद्धोने पण वचन आप्युं हतुं एटले पाछा तेमनी विदाय लेवा माटे गया. आम एकवीस वार थयु. छेवटे हरिभद्रसूरिए तेमना प्रतिबोध माटे 'ललितविस्तरा' वृत्ति रची, त्यारपछी तेओ गुरु पासे स्थिर थईने रह्या[1]

'प्रभावकचरित' अनुसार आ सिद्ध साधु ते 'उपमितिभवप्रपंच कथा'ना कर्ता सिद्धर्षि छे.[2] पण ऐतिहासिक प्रमाणो आपणने निश्चितपणे एम मानवा प्रेरे छे के सिद्धर्षि ए हरिभद्रसूरिना प्रत्यक्ष शिष्य नहोता, केम के सिद्धर्षिना पोताना ज कथन मुजब, तेमनी उपर्युक्त कथा

सं ९६२=ई स ९०६मां रचाई छे, ज्यारे हरिभद्रसूरि ए विक्रमना आठमा सैकाना उत्तरार्धमां अने नवमा सैकाना पूर्वार्धमां थई गया[१] सिद्धर्षिए पोताना 'धर्मबोधकर गुरु' तरीके हरिभद्रनो उल्लेख कर्यो छे अने तेमणे 'ललितविस्तरा' वृत्ति अनागतनो विचार करीने पोताने माटे ज निर्मी होवानु बहुमानपूर्वक नोंध्युं छे 'ललितविस्तरा' वृत्ति जाणे के अनागत—भविष्यनो विचार करीने पोताने माटे हरिभद्रे रची ए सिद्धर्षिना शब्दोना वास्तविक अर्थ तो ए थई शके के बन्ने प्रत्यक्ष समकालीनो नथी पण तो एक पूर्व कालीन विद्वाने पोतानी आध्यात्मिक दृष्टिने बराबर रुचे एवी कृति रची ए माटेना सिद्धर्षिना प्रशंसाना उद्गारो छे सिद्धर्षिने बौद्धमतनु आकर्षण हतो पण 'ललितविस्तरा'नु अध्ययन करीने तेओ जैन मतमां स्थिर थया एवो अर्थ पण उपर टांकेली अनुश्रुतिनो करी शकाय

१ भामर पृ. १९

२ प्रभ सिद्धर्षिचरित श्लो ११-१४७

३ पूनानी ओरिएन्टल कॉन्फरन्समां आचार्य जिनविजयजीनो निबंध हरिभद्राचार्यस्य समयनिर्णयः

सिद्धसेनगणि

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकृत जीतकल्पसूत्र उपरनी चूर्णिना[१] कर्ता आ सिद्धसेनगणि जिनभद्रगणिनी पछी अर्थात् ई स ९०९थी अर्वाचीन काळमां थया एटलुं तो नक्की छे पण तेमना समय विशे तथा तेओ कोण हता ए विशे निश्चयपूर्वक कही शकाय एम नथी.[२]

१ जीतकल्पचूर्णिः समाप्ता। सिद्धसेनकृतिरेषा। जीतसू पृ २

२ जीतसू प्रस्तावना पृ. १७

सिद्धसेन दिवाकर

आदि जैन तार्किक कवि अने स्तुतिकार तेमने परंपरा राजा

विक्रमादित्यना समकालीन गणवामां आवे छे, तथा विक्रमने जेमणे जैनधर्मी कर्यो होवानु मनाय छे

एमने विशेना केटलाक प्रकीर्ण उल्लेखो आगमसाहित्यमा छे एमा सौथी महत्त्वनो उल्लेख केवलीने केवलज्ञान अने केवलदर्शन युगपत थतु होवा विशेनो तेमनो मत छे आगमिक मत एवो छे के केवलीने केवलज्ञान अने केवलदर्शन युगपत्—एक साथे थतु नथी, पण एक समये केवलज्ञान अने बीजे समये केवलदर्शन एम वारवार थया करे छे सिद्धसेन आ मतने तर्कथी असिद्ध गणे छे जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण जेवा पछीना आचार्योए सिद्धसेनना आ मतनुं खंडन कर्यु छे. आगमसाहित्यमा सिद्धसेन अने जिनभद्रना आ मतांतरोनी वारवार नोंध लेवामां आवी छे.[१]

सिद्धसेनकृत 'द्वात्रिंशिकाओ' माथी कवचित् अवतरण आपवामा आवेलु छे[२] 'निशीथसूत्र' उपर सिद्धसेने एक टीका रची हती, एम 'निशीथचूर्णि' मांना उल्लेखो उपरथी जणाय छे[३] पण आजे ए टीका विद्यमान नथी 'योनिप्राभृत' शास्त्रथी सिद्धसेनाचार्ये घोडा बनाव्या होवानो उल्लेख पण छे[४] एमना सुप्रसिद्ध न्यायग्रन्थ 'सन्मतितर्क-'नो उल्लेख प्राचीन चूर्णिओमां 'दर्शनप्रभावक शास्त्र' तरीके करेलो छे[५]

'न्यायावतार सूत्र' अने 'कल्याणमन्दिरस्तोत्र' ए सिद्धसेननी अन्य कृतिओ छे

सिद्धसेनना समय विशे विद्वानोमा जबरो मतभेद छे अने ईसवी सननी पहेली शताब्दीथी माडी सातमी शताब्दी सुधी जुदा जुदा विद्वानोए एमनो समय गण्यो छे[६] 'सन्मतितर्क'नी प्रस्तावना (पृ. ३५–४३)मा तेमनो समय विक्रमनो पांचमो सैको गणेलो छे. मिस शार्लोट क्रौझेए सिद्धसेनने समुद्रगुप्तना समकालीन गण्या छे.[७]

सिद्धसेन विशेना परंपरागत वृत्तान्त माटे जुओ 'प्रभावकचरित'मां 'वृद्धवादिचरित' तथा 'प्रबन्धकोश' मां 'वृद्धवादि–सिद्धसेन सूरिप्रबन्ध,' तथा एमना जीवन विशे ऐतिहासिक चर्चा माटे जुओ 'सन्मतिप्रकरण,' प्रस्तावना, पृ ३५-८२ सिद्धसेननी विशिष्टताओना संक्षिप्त, पण समर्थ निरूपण माटे जुओ 'भारतीय विद्या,' पु. ३, सिंघी स्मृतिग्रन्थमां प सुखलालजीनो लेख 'प्रतिभामूर्ति सिद्धसेन दिवाकर.'

जुओ गन्धहस्ती

१ मसूल (कडक १ उ ३), मडा पृ. ५१ बंध पृ. ११४ ११५ ११८ १७५, कर्म पृ. ११५, धर्मि पृ. १२७ इत्यादि

२ बृहत् भाग १ पृ. १५५

३ एतस्य विशालमहामतस्य सिद्धसेनाचार्यः स्पष्टेनाभिधानेनाभ्य- भिधत्ते । विशे॰ भाग १ पृ ७८

अस्यार्थस्य स्पष्टतरं व्याख्यानं सिद्धसेनाचार्यो करोति–सुबद्ध पञ्च- कल्पार्थं (भा गा. १ ३) पृ ब पृ. ९६

भा. गा ५ ४ (एकस्मिं तं सुत्ते) सिद्धसेनकृत छे केम के एनी चूर्णि वस्तु छे इत्येवार्थं सिद्धसेनाचार्यो स्वसुखम इत्यत्र, ए व पृ १५२

४ तत्र योगिप्रत्यक्षादिवा अतीन्द्रियार्थपरीक्षाणि निर्वर्तयन्ति तथा सिद्धसेनाचार्यैर्व्याख्याताः ।

बृहत्॰ भाग १ पृ ७५१

निशीथचूर्णि मां पण आ प्रमाणो आवेल छे ('सन्मतिप्रकरण प्रस्तावना पृ १७).

५ प्रभ (अनुवाद) प्रस्तावना पृ. ७९

६ विन्टरनित्स हिस्ट्री ओफ इन्डियन लिटरेचर, भाग २ पृ. ४७५ टिप्पण

७ विक्रम वोल्युम (पृ २१३-२८) मां तेमनो लेख 'सिद्धसेन दिवाकर ओन्ड विक्रमादित्य.'

सिनवल्ली

सिनवल्ली रण जेवी जगा हती[1] कुंभकारप्रक्षेप नगर त्या आवेलुं हतु

'सिनवल्ली'नुं 'सिन' अग 'सिन्ध' शब्दनुं अपभ्रष्ट रूप हशे?

जुओ **कुम्भकारप्रक्षेप, वीतभयनगर**

१ आचू, उत्तर भाग, पृ ३४-३७

सिन्धु

[१] सिन्धु नदी. गंगा, सिन्धु वगेरेने महानदीओ कही छे अने तेमना जळने 'महासलिलाजल' कह्युं छे[1]

[२] सिन्ध देश सिन्ध आदि देशो 'असंयम विषय' (ज्या संयम पाळवो कठण पडे एवा प्रदेश) होवाथी त्यां वारंवार विहार करवानो निषेध करेलो छे.[2] सिन्धु, ताम्रलिप्त (खंभात) आदि प्रदेशोमां मच्छर पुष्कळ होय छे[3] सिन्धना ऊटनु चर्म घणुं मृदु होय छे.[4] सिन्धमां गोरसनो खोराक व्यापक प्रचारमा होवाथी जे सिन्धवासीए दीक्षा लीधी होय ते गोरस विना रही शकतो नथी.[5] सिन्ध देशमा अग्निने मंगल गणेलो छे,[6] तथा त्या धोबीओने अपवित्र गणवामां आवता नथी.[7] सिन्धु विषयमां वगर फाडेला, आखां वस्त्रो पहेरवानो रिवाज छे.[8] दुर्भिक्षना समयमा मांसभक्षण सामान्य छे, पण सिन्धमां सुभिक्षना समयमा पण लोको मास खाय छे[9] त्यां नदीनां पाणीथी धान्य नीपजे छे[10] सिन्धमां दारू राखवाना पात्रमां पण भोजन गर्हित गणातु नथी, एवो देशाचार छे[11]

१ बृक्षे, भाग ४, पृ ९५७

२ ए ज, भाग ३, पृ ८१६

३ सूकृचू, पृ. १०१. जुओ ताम्रलिप्ति.

४ आसूचु, पृ २६४

सिप्रा

माळवानी एक नदी, जेना किनारे उज्जयिनी आवेलु छे.

रोहकने सिप्रा नदीना किनारे बेसाडीने एनो पिता कोई वीसरायेली वस्तु लेवा माटे पाछो उज्जयिनीमां गयो, त्यारे रोहके नदीनी रेतीमां प्राकार सहित आखी उज्जयिनीनुं आलेखन कर्युं हतुं एवी वार्ता छे.[1]

१ नम, पृ १४५. जुओ **रोहक.**

सिंहपुर

अगियारमा तीर्थंकर श्रेयांसनाथना जन्मस्थान तरीके सिंहपुरनो उल्लेख छे,[1] ते बनारस पासेनुं जैन तीर्थ सिंहपुरी मानवामां आवे छे.[2]

पण 'सूत्रकृतांग सूत्र'नी शीलांकदेवनी वृत्तिमां उद्धृत थयेला एक हालरडामां नक्रपुर, हस्तकल्प, गिरिपत्तन, कुक्षिपुर, पितामहमुख अने शौरिपुर ए नगरोनी साथे सिंहपुरनो उल्लेख छे.[3] आ सिंहपुर ते बनारस पासेनुं सिंहपुरी के सौराष्ट्रनुं सिंहपुर—सीहोर ए प्रश्न विचारवा जेवो छे ए हालरडामां निर्देशेलां हस्तकल्प[4] अने गिरिपत्तन[5] ए बे नगरो निःशंकपणे गुजरातनां छे ए पण साथोसाथ याद राखवु जोईए.

१ आनि, ३८३

२ 'प्राचीन तीर्थमाला,' पृ ४

३ सूकृशी, पृ ११९; अवतरण माटे जुओ **कान्यकुब्ज**

४ जुओ **हस्तिकल्प**

५ जुओ **गिरिनगर**

सुन्दरीनन्द

एने विशेनी कथानो साराश आ प्रमाणे छे नासिक्य—नासीकमा नद नामे वणिक हतो, एनी सुन्दरी नामे पत्नी हती सुन्दरीमां नंद अत्यंत आसक्त होवाने कारणे लोकोए एनु नाम 'सुन्दरीनन्द' पाड्युं हतुं. एना भाईए दीक्षा लीधी हती. ए नंदने प्रतिबोध पमाडवा माटे आव्यो

सुन्दरीनंदे तेने भोजन वहोराव्युं पछी साधुए तेनी पासे पात्र उपडाव्युं अने पोतानी साथे चलाव्यो. सुन्दरीनन्दना मनमां हतुं के 'हमणां भाई मने रजा आपशे ' पण साधु तो तने पोताना निवास ज्यां हतो त उद्यान सुधी लई गया लोकोए हाथमां पात्र सहित नंदने जोयो, अने कहेवा लाग्या के 'सुन्दरीनंदे दीक्षा लीधी छे!' पटलामां तो उद्यान-मां साधुए नंदने देशना आपी, पण उत्कट रागवाळो होवाने कारणे तेने प्रतिबोध पमाडी शकायो नहि साधु वैक्रिय लब्धिवाळा-इच्छा मुजबनां रूपो उत्पन्न करवानी शक्तिवाळा हता तेमणे वानरयुगल विकुर्व्युं, अने नंदने पूछ्युं के, 'सुन्दरी अने वानरी वच्चे केटलुं अंतर?' नंदे उत्तर आप्यो, 'भगवन्! सरसव अने मेरु जेटलुं ' पछी साधुए विद्याधरमिथुन विकुर्व्युं अने नंदने पूछ्युं एटले तेणे उत्तर आप्यो के 'विद्याधरी अने सुन्दरी तुल्य रूपवाळी छे' पछी साधुए देवमिथुन विकुर्व्युं एटले ए देवांगनाने जोईने नंद बोल्यो के 'भगवन्! आनी आगळ सुन्दरी वानरी जेवी छे ' साधुए कह्युं के 'आ तो थोडा धर्मनी प्राप्तिनुं फळ छे ' आ पछी साचा धर्मनुं फळ विचारीने सुन्दरीनन्दे दीक्षा लीधी

बुद्धनो ओरमान भाई नंद पोतानी पत्नी सुन्दरीमां आसक्त हतो एने पराणे दीक्षा आपवामां आवी हती अने दृष्टान्तोथी वैराग्यमां स्थिर करवामां आव्यो हतो–एनो कथा वर्णवता अश्वघोषना 'सौन्दरानन्द काव्य'ना वस्तुनुं कोई रूपान्तर उपर्युक्त कथामां रजू थयुं छे एम जणाय छे

एक भाई दीक्षित होय अने ते गृहस्थ भाईने त्यां भिक्षा माटे आवी पात्र उपडावी एने पोतानी साथे लई जाय अने पछी दीक्षा आपे ए प्रसंग उपर्युक्त कथानो जेम जंबुस्वामीनी पूर्वभवकथामां भवदत्त अने भवदेवना संबंधमां मळे छे जे एना प्राचीनतम रूपे 'वसुदेव-हिंडी' (भाषान्तर, पृ २५–२७)मां प्राप्त थाय छे

जुओ नासिक्य

१ आव्, पूर्व भाग, पृ ५६६, आम, पृ, ५३३

सुरप्रिय

एक यक्ष. एनुं आयतन द्वारवती पासेना नंदनवन उद्यानमा हतुं

जुओ द्वारवती, रैवतक

सुराम्बर

एक यक्ष. एनुं आयतन शौरिपुरमां हतुं.[1]

१ प्राय, पृ ६७

सुराष्ट्र

साडीपचीस आर्य देशो पैकी एक, जेनी राजधानो द्वारवती–द्वारकामा हती[1]

'अनुयोगद्वार सूत्र'मां क्षेत्रनी वात करतां, मगध, मालव, महाराष्ट्र अने कोंकणनी साथे सुराष्ट्रनो उल्लेख कर्यो छे[2] 'कल्पसूत्र'नी विविध टीकाओमां आपेला 'राज्यदेशनाम'मां 'सौराष्ट्र' पण छे[3] 'सुरट्ठा' अथवा सुराष्ट्र छन्नु मंडलमां वहेंचायेलो हतो[4]

एक माणस 'सौराष्ट्र' एटले के 'सुराष्ट्रनो' केवी रीते कहेवाय ए नीचे प्रमाणे समजाव्युं छे· गिरिनगरमां निवास करवानी इच्छाथी कोई माणस मगधमांथी सुराष्ट्र तरफ जवा नीकळे अने सुराष्ट्रना सीमाडे आवेला गाममा पहोंची जाय, पछी एनो निर्देश करवानो प्रसंग उपस्थित थतां एने माटे 'सौराष्ट्र'–अर्थात् 'सुराष्ट्रनो'–एवा शब्दनो व्यवहार थाय छे.[5] वळी 'सूत्रकृतांगचूर्णि'मा मगधना श्रावक साथे सुराष्ट्रना श्रावकनो उल्लेख छे ('खेत्ते जो जत्थ खेत्ते पुरिसो, जहा सोरट्ठो सावगो मागधो वा एवमादि,' पृ. १२७), ए वस्तु सूचवे छे के चूर्णिकारना समयमा जैनधर्मना केन्द्रोमा मगध अने सुराष्ट्र पण हतां.

एक संनिवेशमां बे दरिद्र भाईओ हता, तेओए सुराष्ट्रमां जईने एक हजार रूपक उपार्जित कर्या हता एवुं एक प्राचीन कथानक छे ते उपरथी समुद्रथी वींटायेला सुराष्ट्रमां बहोळो वेपार चालतो हतो एवुं अनुमान स्वाभाविक रीते ज थाय छे

'वसुदेव-हिंडी' (ई स ना पांचमा सैका आसपास) ना 'गन्धर्वदत्ता लम्भक'मांथी सुराष्ट्रनी वेपारी आढोमणलीनुं समर्थन करतो पुरावो प्राप्त थाय छे एमां चारुदत्त नामे वणिकपुत्र चीनस्थान, सुवर्णभूमि, कमलपुर, यवद्वीप सिंहल तथा पश्चिमे बर्बर अने यवन देशनो जळप्रवास खेडीने पाछा फरतां सुराष्ट्रना किनारे प्रवास करतो हतो अने किनारो दृष्टिमर्यादामां हतो त्यारे एनुं वहाण भांगी गयुं अने सात रात्रिओ एक पाटियाने आधारे समुद्रमां गाळ्या पछी 'उंबरावतीवेला' ए नामथी ओळखाता तीरप्रदेश उपर ते फेंकाई गया हतो ('वसुदेव-हिंडी,' मूळ पृ १४९ भाषान्तर, पृ. १८९)

कुणालना पुत्र संप्रतिए उज्जयिनीमां रहीने सुरा॰ विषय स्वाधीन कर्यो हतो सुरा॰-ए नेमिनाथनी जन्मभूमि अने विहारभूमि होई त्यां जैन धर्मनुं जोर होय अने जैन साधुओ ए प्रदेशमां विचरता होय ए स्वाभाविक छे पण संप्रतिनुं आधिपत्य त्यां स्थपाया पछी जैन धर्मनी प्रवृत्तिने वेग मळ्यो हशे आ अनुमानने समर्थन आपतां प्रमाणरूप कथानको आगमसाहित्यमां मळे छे सुराष्ट्र विषयमां बे आचार्यो हता एक आचार्य कायम त्यां ज रहेता हता तेमणे आर्यखुक आचार्यने सुगमदुर्गम मार्गो तथा सुखविहार करी शकाय एवां क्षेत्रो वगेरे बधुं समजाव्यां हतां जुदा जुदा प्रदेशोना जननी साधुओना वैराग्य विसे आम कह्युं छे एक साधु सुराष्ट्रनी प्रशंसा करे छे के 'सुराष्ट्र विषय रमणीय छे' बीजो साधु बोल्यो के ए कूपमंडूक छे तमे शी खबर छे? सारा देश तो दक्षिणापथ छे' आम वैराग्यथी चाल्या उत्तर-प्रत्युत्तरोमांथी कलह उत्पन्न थाय छ

सुराष्ट्रमां जैन साधुओनो विहार घणा प्राचीन काळथी व्यापक हतो एम सूचवतुं एक लोकप्रचलित पद्य, ई. स. ना पाचमा सैका आसपास रचायेल प्राकृत गद्यकथाग्रन्थ 'वसुदेव-हिंडी'ना 'गंधर्वदत्ता लभक'मा मळे छे जुओ—

अट्ठ णियंठा सुरट्ठं पविट्ठा, कविट्ठस्स हेट्ठा अह सन्निविट्ठा ।
पडियं कविट्ठं फुट्टं च सीसं, अव्वो ! अव्वो ! वाहरति हसंति सीसा ॥

(मूल, पृ १२७)

अर्थात् आठ निर्ग्रन्थो सुराष्ट्रमा प्रवेश्या, अने त्या एक कोठना झाडनी नीचे बेठा, कोठ पड्युं अने (निर्ग्रन्थनुं) माथुं फूटी गयुं, 'अव्वो !' 'अव्वो !' एम बोलता शिष्यो हसवा लाग्या (भाषान्तर, पृ. १६२)

सुराष्ट्रनो एक श्रावक उज्जयिनी जतो हतो. दुष्काळनो समय हतो एने बौद्ध साधुओनो सगाथ थयो मार्गमा चालता एनुं माथुं खूटी गयु बौद्धोए कह्युं के 'अमारो धर्म स्वीकारे तो तने खावानुं आपीए' पछी श्रावकने पेटमां दर्द थयुं, बौद्धोए अनुकपाथी तेना उपर चीवर ओराढ्युं, पण ते तो नमस्कारमंत्रनो जाप करता काळधर्म पाम्यो[११]

सुराष्ट्र अने उज्जयिनी वच्चेनो व्यवहार, सुराष्ट्र तथा आसपासना प्रदेशोमा बौद्धोनी वस्ती वगेरे बाबतो उपर आ कथानक केटलोक प्रकाश पाडे छे.

तेल भरवा माटेनुं विशिष्ट प्रकारनु माटीनुं पात्र सौराष्ट्रमा 'तैलकेला' नामथी प्रसिद्ध हतुं. ए तूटी न जाय तेम ज चोराई न जाय ए माटे एनुं सारी रीते संगोपन करवामां आवतु हतु.[१२]

'कंगु'–काग नामे धान्य सुराष्ट्रमा सारा प्रमाणमा थतुं हतुं.[१३]

आगमसाहित्यना प्राचीनतर अशोमा 'सौराष्ट्र' ...

वच्चे मतभेद थयो हतो, जेमां छेवटे सुहस्तीए पोतानी भूलनो स्वीकार कर्यो हतो.[1]

आर्य महागिरिए गजाग्रपदमां[2] अनशन कर्युं त्यारपछी आर्य सुहस्ती पोताना शिष्यो साथे उज्जयिनी गया अने त्यां भद्रा नामे शेठाणीनी यानशाला—वाहनशालामां निवास कर्यो त्या भद्रानो अवति-सुकुमाल नामे पुत्र एमनो शिष्य थयो हतो[3]

आर्य सुहस्तीना नीचे प्रमाणे बार शिष्यो हताः आर्य रोहण, भद्रयश, मेघ, कालर्षि, सुस्थित, सुप्रतिबुद्ध, रक्षित, रोहगुप्त, ऋषिगुप्त, श्रीगुप्त, ब्रह्म अने सोम.[4]

१ जुओ **महागिरि आर्य, सम्प्रति.**

२ जुओ **गजाग्रपद**

३ जुओ **अवन्तिसुकुमाल.**

४ कल्पसू, पृ १६८

सोपारक

मुंबईनी उत्तरे थाणा जिल्लामां दरियाकिनारे आवेलुं सोपारा.

आगमसाहित्यना उल्लेखो पण सोपारक समुद्र किनारे आवेलु होवानु कहे छे[1] त्यांनो सिंहगिरि राजा मल्लविद्यानो शोखीन हतो.[2]

सोपारक जैन धर्मनुं एक केन्द्र हतु आर्य समुद्र,[3] आर्य मगू[4] अने वज्रस्वामीना शिष्य वज्रसेन[5] जेवा आचार्योनी ए विहारभूमि हतुं, तथा नागेन्द्र, चन्द्र, निर्वृति अने विद्याधर—ए साधुओनी चार शाखाओ सोपारकथी प्रवर्ती हती.[6]

प्रसिद्ध शिल्पी कोकास सोपारकनो वतनी हतो अने त्याथी पोतानुं नसीब अजमाववा माटे उज्जयिनी आव्यो हतो[7]

सोपारकमा कलालो बहिष्कृत गणाता नहि होय, केम के आर्य समुद्रना श्रावकोमा एक वैकटिक—दारू गाळनार पण हतो एवो

१ इओ य समुद्दतडे सोपारय नाम नगर। उने, पृ. ७९. वळी जुओ आचू, उत्तरभाग, पृ १५२

२ जुओ अट्टण.

३ जुओ समुद्र आर्य

४ जुओ मङ्गू आर्य

५ जुओ वज्रसेन

६ जुओ जिनदत्त

७ जुओ कोक्कास

८ जुओ समुद्र आर्य.

९ जुओ महाराष्ट्र

१० निभा, गा ५१३३–३४, निचू, भाग ५, पृ. १०२०. वळी वृकभे, भाग ३, पृ ७०८

सौर्यपुर

जुओ शौरिपुर

सौराष्ट्र

जुओ सुराष्ट्र

सौराष्ट्रिका

सौराष्ट्रमां थती एक खास प्रकारनी माटीने 'सौराष्ट्रिका' (प्रा. सोरट्ठिआ)कहेवामां आवे छे एनो जूनामा जूनो उल्लेख 'दशवैकालिक सूत्र'मां छे.[१] एमांना 'सोरट्ठिआ' शब्दनो अर्थ टीकाकार समयसुन्दर 'तुवरिका' एवो पर्याय आपीने समजावे छे,[२] परन्तु ते पण आजे तो अपरिचित छे सिद्धसेननी 'जीतकल्पचूर्णि'मां पृथ्वीकायना भेदोमां 'सोरट्ठिया'नो उल्लेख कर्यो छे[३] तथा ते उपरनी वृत्तिमा श्रीचन्द्रसूरिए 'तूवरिका' नाम आप्युं छे.[४] 'व्यवहार सूत्र'नी मलयगिरिनी वृत्तिमां पण 'सौराष्ट्रिकी' शब्द छे[५] श्रीचन्द्रसूरिए एने 'वर्णिका' कही छे ते उपरथी ए कदाच गोपीचंदन जेवी रंगीन माटी होय एवो तर्क थाय छे.

स्थानक

मुंबईनी उत्तरे आवेलुं थाणा.

कोंकण देशना स्थानकपुरनो उल्लेख 'द्रोणमुख'—अर्थात् जळ अने स्थळ एम बन्ने मार्गे जई शकाय एवा स्थान—तरीके करेलो छे[1]

'स्थान' पदान्तवाळा स्थळनामो—पंजाबनुं मूलस्थान (मुलतान), सौराष्ट्रनु थान तथा आ थाणानो संबंध भाषाशास्त्र तेम ज सामाजिक इतिहासनी दृष्टिए विचारवा जेवो छे मूलस्थान अने थान तो सूर्यपूजानां प्राचीन केन्द्रो छे, थाणा विशे वधु संशोधन अपेक्षित छे

1 तस्य वा द्रोणमुखं जल[स्थल]निर्गमप्रवेशम्। यथा कोङ्कण-देशे स्थानक नामक पुरम्। व्यम, भाग ३, पृ. १२७

अहीं कौंसमा मूकेलो 'स्थल' शब्द मुद्रित प्रतमां नथी व्यम नु ए संपादन हजारो अशुद्धिओथी भरेलु छे बीजी तरफ 'द्रोणमुख'नो उपर्युक्त अर्थ निश्चित छे (जुओ भरुकच्छमां टि २, तथा 'अभिधानराजेन्द्र मा दोणमुह), एटले आटलो सुधारो आवश्यक छे

स्नपन

उज्जयिनीनुं एक उद्यान त्या साधुओ ऊतरता हता[1]

स्नपन शब्दनुं प्राकृत रूप 'ण्हवण' छे, ए उपरथी त्या कोई जाहेर स्नानागार अथवा नाहवाधोवानी जग्या हशे एवुं अनुमान करी शकाय।

1 अवतीजणवए उज्जेणीगयरीए ण्हवणुज्जाणे साहुणो समोसरिया, उशा, पृ ४९–५०

हरन्त-संनिवेश

समिताचार्य विहार करता एक वार हरंत सनिवेशमा गया हता.[1]

हरंत संनिवेशनुं स्थान निश्चित थई शक्युं नथी, पण समिताचार्यनी विहारभूमि मुख्यत्वे माळवा अने कृष्णा तथा वेणा ...

પ્રદેશ જે એ સમયે આભીર દેશ તરીકે ઓળખાતો હતો ત્યાં હતો, પરંતુ હંસ સંનિવેશ પણ એ જ પ્રદેશમાં ક્યાંક હોવા સંભવ છે

જુઓ આભીર, બ્રહ્મદ્વીપ, સમિયાચાર્ય

१ पिंडम पृ. ११

હરિભદ્રસૂરિ

યાકિની મહત્તરાસૂનુ (યાકિની નામે સાધ્વીના ધર્મપુત્ર) હરિભદ્રસૂરિ આગમોના પહેલા સંસ્કૃત ટીકાકાર છે એમનો સમય આચાર્ય જિનવિજયજીએ સ. ૭૫૭ થી ૮૨૭=ઈ સ. ૭૦૧ થી ૭૭૧ સુધીનો નિશ્ચિત કર્યો છે હરિભદ્રસૂરિ પૂર્વાશ્રમમાં ચિત્રકૂટના સમર્થ વિદ્વાન બ્રાહ્મણ હતા. એમના પરંપરાગત વૃત્તાન્ત માટે જુઓ પ્રભાવકચરિત'માં 'હરિભદ્રસૂરિચરિત '

આગમો ઉપરની હરિભદ્રસૂરિની સંસ્કૃત ટીકાઓમાં 'આવશ્યક' દશવૈકાલિક,' 'અનુયોગદ્વાર,' તથા 'નંદિસૂત્ર' ઉપરની ટીકાઓ મુખ્ય છે એમની ટીકાઓના ઉલ્લેખ અને આધાર પછીના સમયની આગમટીકાઓમાં અનેક સ્થળે આપવામાં આવ્યા છે જેમ કે— 'તત્ત્વાર્થ સૂત્ર' ઉપરની હરિભદ્રસૂરિની વૃત્તિનું ઉદ્ધરણ મલયગિરિએ જીવાભિગમ સૂત્ર' ઉપરની વૃત્તિમાં આપ્યું છે હરિભદ્રની 'અનુયોગદ્વાર' ટીકાનો આધાર પણ મલયગિરિએ જ્યોતિષ્કરંડક' વૃત્તિમાં આપ્યો છે વળી બૃહત્કલ્પસૂત્ર'ના ટીકાકાર ક્ષેમકીર્તિએ હરિભદ્રસૂરિકૃત 'પંચવસ્તુક'માંથી, શ્રાદ્ધપ્રતિક્રમણ સૂત્ર'ના વૃત્તિકાર રત્નશેખરસૂરિએ 'દશવૈકાલિક'ની હરિભદ્રકૃત વૃત્તિમાંથી, તથા 'કલ્પ સૂત્ર'ના ટીકાકાર ધર્મસાગરે હરિભદ્રકૃત પંચાશક'માંથી, અવતરણ આપ્યાં છે અને કલ્પસૂત્ર'ના બીજા ટીકાકાર વિનયવિજયે 'પંચાશક' ઉપરના નવાંગવૃત્તિકાર અભયદેવસૂરિની ટીકાનો પણ આધાર આપ્યો છે હરિભદ્રકૃત કથાનક ધૂર્તાખ્યાન'નું વસ્તુ પણ પ્રાચીનતર આગમસાહિત્યમાં પ્રાપ્ત થાય છે હરિભદ્રની પછી થયેલા

'बृहत्कल्पसूत्र'ना टीकाकारे कर्तानुं नाम लीधा सिवाय 'धूर्ताख्यान'नो उल्लेख कर्यो छे संभव छे के तेमने हरिभद्रनी कृति उद्दिष्ट होय

जैन साहित्यना इतिहासमां हरिभद्रसूरि एक असामान्य व्यक्ति छे आगमोनी टीकाओ ए तो तेमनी साहित्यप्रवृत्तिनो एक अंशमात्र छे. न्याय, योग, धर्मकथा, औपदेशिक साहित्य आदि अनेक विषयोनी एमनी रचनाओ छे, अने 'षड्दर्शनसमुच्चय' जेवी कृतिमा—जे भारतीय साहित्यमां ए प्रकारनो पहेलो ज संग्रहग्रंथ छे—तमाम भारतीय दर्शनोनो सार समर्थ रीते तेमणे आप्यो छे परंपरा तो एमना उपर १४०० ग्रन्थोना कर्तृत्वनुं आरोपण करे छे एमनी रचनाओनी समालोचना माटे जुओ 'समराइच्चकहा'नी डॉ याकोबीकृत प्रस्तावना तथा 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास,' पृ. १५३—१७०.

१ पहेली ओरियेन्टल कॉन्फरन्समा आचार्य जिनविजयजीना लेख 'हरिभद्राचार्यस्य समयनिर्णय'

२ जुओ जिनभटाचार्य.

३ महत्तराया याकिन्या धर्मपुत्रेण चिन्तिता ।
आचार्यहरिभद्रेण टीकेयं शिष्यबोधिनी ॥

दवैह्, पृ. २८६ (अंते)

४ समाप्तेयं शिष्यहिता नामानुयोगद्वारटीका, कृतिः सिताम्बराऽऽचार्य-हरिभद्रस्य ।

कृत्वा विवरणमेतत्प्राप्तं यत्किञ्चिदिह मया कुशलम् ।
अनुयोगपुरस्सरत्व लभतां भव्यो जनस्तेन ॥ अनुह्, पृ १२८

५ आ टीकानो उल्लेख मलयगिरिए 'नंदिसूत्र' उपरनी वृत्तिमां कर्यो छे. जुओ जिरको, पृ २०१.

६ आह च तत्त्वार्थटीकाकारो हरिभद्रसूरि—"नात्यन्तं शीताश्चन्द्रमस नात्यन्तोष्णाः सूर्याः किन्तु साधारणा द्वयोरपी"ति, जीम, पृ ३४१ आ टीकानो उल्लेख 'प्रवचनसारोद्धार'ना टीकाकार सिद्धसेने (पृ ३३७) पण कर्यो छे प सुखलालजीना मत प्रमाणे ('तत्त्वार्थसूत्र', बीजी आवृत्ति, प्रस्तावना, पृ ५५—६५) तत्त्वार्थटीकाकार हरिभद्रसूरि ए याकिनी महत्तरासूनु ज छे, बीजा कोई हरिभद्र होवा संभव नथी.

७ व्योकम पृ ४६

८ बृध्धे भाग १ पृ. ३६६ ४८५

९ धायर पृ. १

१० कवि, पृ ६ १२

११ कप्र पृ. १ -११ जुओ अभयदेवसूरि

१२ जुओ मूळदेव

हर्षपुर

अजमेर पासेनुं एक नगर, ज्यां सुभटपाल राजा राज्य करतो हतो. हर्षपुरमां ब्राह्मणो यज्ञमां बकरानो वध करता हता त्यारे प्रियग्रंथसूरिए पोतानी मंत्रशक्तिथी बकराने वाचा आपी, ब्राह्मणोने बोध आप्यो हतो, एवी कथा छे [१]

विक्रमना अगियारमा सैकामां थयेला मेवाडना राजा अल्लू अथवा अल्लटनी राणी हरियदेवीए हर्षपुर वसाव्युं हतुं जैनोनो हर्षपुरीय गच्छ ने पाछळथी मलधार गच्छ तरीके ओळखायो ते आ हर्षपुर उपरथी थयो छे [२] ए गच्छना जयसिंहसूरिना शिष्य अभयदेवसूरि वस्त्रमां मात्र एक ज चादर अने पछेडी राखता हता तेमना मलिन वस्त्र अने देहमाळ जोईने सिद्धराजे (मतांतरे कर्णदेवे) 'मलधारी' बिरुद आप्युं अने त्यारथी एमनो गच्छ 'मलधार गच्छ' कहेवायो [३]

१ कप्र, पृ. ५ १ १ कवि, पृ. ११६, कथी पृ १४८-४९

२ राजपूतानेका इतिहास भाग १ पृ. ४२६-२८

३ जैनम, पृ. १५१ २१७

हस्तकल्प

जुओ हस्तिकल्प

हस्तिकल्प

द्वारवतीनुं दहन थया पछी बलराम अने कृष्ण त्यांथी पूर्व तरफ नीकळीने हस्तिकल्प (प्रा हत्थिकप्प, हत्थकप्प) नगरमां आव्या

हता त्याना राजा अच्छदंतने हरावी पछी दक्षिण तरफ जतां तेओ कोसुंबारण्य नामे अरण्यमां आवी पहोंच्या हता[1] दक्षिण मथुरामां वसता पांच पांडवो अरिष्टनेमि अरिहंत सुराष्ट्र जनपदमां विहार करे छे एम सांभळीने सुराष्ट्र आव्या. त्यां हस्तकल्प नगर पासे एमणे सांभळ्युं के अरिष्टनेमि गिरनार उपर निर्वाण पाम्या छे.[2]

आ उल्लेखो उपरथी स्पष्ट छे के हस्तकल्प के हस्तिकल्प नगर सुराष्ट्रथी दक्षिण तरफ जवाना मार्गमां, पण सुराष्ट्रनी भूमि उपर ज आवेलुं हतुं.

'पिंडनिर्युक्ति' उपरनी मलयगिरिनी वृत्तिमा क्रोधपिंडना उदाहरणमा हस्तकल्प नगरमा एक ब्राह्मणना घरमा भिक्षार्थे गयेला जैन साधुनु कथानक छे[3] 'सूत्रकृतांग सूत्र' उपरनी शीलाचार्यनी वृत्तिमा उदाहृत करवामा आवेला एक हालरडामां बीजा नगरोनी साथे हस्तकल्पनो पण उल्लेख छे.[4] 'जीतकल्प भाष्य'मा हस्तकल्प (प्रा. हत्थप्प, हत्थकप्प)नो निर्देश छे[5]

भावनगर पासेनु कोळियाक तालुकानु 'हाथव' गाम ए ज आ हस्तकल्प होई शके. 'जीतकल्पभाष्य'मानु एनुं 'हत्थप्प' नाम एना अर्वाचीन उच्चारणने मळतुं ज छे. वलभीना दानपत्रोमां तेनुं 'हस्तवप्र' एवुं नाम मळे छे.[6]

१ उने, पृ ४० जुओ **कोसुंबारण्य**

२ आध, पृ २२६, आचू, उत्तर भाग, पृ १९७

३ पिनिम, पृ १३४

४ सूकृशी, पृ ११९, अवतरण माटे जुओ **कान्यकुब्ज**

५ जीकभा, गा १३९४–९५

६ 'गुजरातना ऐतिहासिक लेखो,' न २५, ६१, अहीं तळ हस्तवप्रनो उल्लेख छे वलभीना अन्य लेखोमां हस्तवप्रनो उल्लेख ए नामना आहार अथवा आहरणीना मुख्य शहेर तरीके छे ('गुजरातना ऐतिहासिक लेखो,' न १६, १७, १९, २०, २१, २२, २३, ४१, ४५, २६ अ तथा ६१, ७८, ७९, ८०)

अलबत्त, पट्टावलीओ प्रमाणे एक हारिल नामे युगप्रधान आचार्य वीर स. १०५५ (वि स ५८५=ई. स ५२९)मां स्वर्गवासी थया हता ('प्रभावकचरित,' भाषान्तर, प्रस्तावना पृ ५४), तेमने आ हारिल वाचकथी अभिन्न गणवामां आवे तो हारिल वाचक ईसवी सनना पांचमा शतकना उत्तरार्धमां अने छट्ठा शतकना प्रारंभमा विद्यमान हता एम गणी शकाय

१ प्रस्तुत उद्धरणो नीचे प्रमाणे छे:

तथा च हारिलवाचक —

"चल राज्यैश्वर्यं धनकनकसार परिजनो
नृपाद् वाल्लभ्य च चलममरसौख्य च विपुलम्।
चल रूपारोग्य चलमिह चर जीवितमिद
जनो दृष्टो यो वै जनयति सुखं सोऽपि हि चल ॥"

उशा, पृ. २८९, उने, पृ. १२६

तथा च हारिल —

वातोद्धतो दहति हुतभुग्देहमेक नराणां
मत्तो नाग. कुपितभुजगश्चैकदेह तथैव।
ज्ञान शील विनयविभवौदार्यविज्ञानदेहान्
सर्वानर्थान् दहति वनिताऽऽमुष्मिकानैहिकाश्च ॥

उशा, पृ २९७

बीजा एक अवतरण साथे जो के हारिल वाचकनु नाम आप्युं नथी, पण एनी रचनाशैली जोतां ए पण हारिलनु होय ए असंभवित नथी खास करीने एना शिखरिणीनी तुलना उपर टांकेला पहेला अवतरण साथे करवा जेवी छे

तथा चाहु —

भवित्रीं भूतानां परिणतिमनालोच्य नियता
पुरा यत्किञ्चिद्विहितमशुभ यौवनमदात्।
पुन. प्रत्यासन्ने महति परलोकैकगमने
तदेवैक पुसा व्यथयति जराजीर्णवपुषाम् ॥

उशा, पृ २४६

१ हेमचन्द्रकृत 'प्राकृत व्याकरण' जप्रशा, पृ. १३, २४, २६, ४१, १७७,

'देशीनाममाला'. जप्रशा, पृ. १२४

'अनेकार्थकोश.' श्राप्रर, पृ. १७५

'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' अंतर्गत 'ऋषभदेवचरित्र' जप्रशा, पृ. १२७, १३४, १३६, 'शान्तिनाथचरित' जप्रशा, पृ १९७, 'महावीरचरित' कक्ति, पृ. १२५; 'परिशिष्टपर्व' जप्रशा, पृ. २८८

'द्वात्रिंशिका' कक्ति, पृ १२५ 'अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका'-माथी मलयगिरिए पण अवतरण आप्युं छे, जे मलयगिरिनो समय नक्की करवामां उपयोगी थाय छे (जुओ **मलयगिरि**)

'योगशास्त्र.' श्राप्रर, पृ. २०२

ग्रन्थनो नामोल्लेख कर्या विना हेमचन्द्रमांथी अवतरण श्राप्रर, पृ. ७, ६२, १४९, इत्यादि

हेमचन्द्र मलधारी

हर्षपुरीय (मलधार) गच्छना मुनिचन्द्रसूरिना शिष्य अभयदेवसूरिना शिष्य मलधारी राजशेखरसूरि सं १३८७=ई. स १३३१मां रचायेलो पोतानी प्राकृत 'द्वयाश्रय' वृत्तिमां जणावे छे तेम, हेमचन्द्र पूर्वाश्रममां प्रद्युम्न नामे राजसचिव हता अने तेमणे चार स्त्रीओ त्यजीने अभयदेवसूरिना उपदेशथी तेमनी पासे दीक्षा लीधी हती मलधारी हेमचन्द्रकृत 'जीवसमास' विवरण सं.११६४=ई. स ११०८ मां, 'भवभावनासूत्र' सं ११७०=ई. स. १११४ मां अने 'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी बृहद्वृत्ति सं ११७५=ई स १११९ मां रचायेल होई तेओ ईसवी बारमा शतकना पूर्वार्धमां विद्यमान हता ए निश्चित छे हेमचन्द्रना शिष्य श्रीचंद्रसूरि पोताना 'मुनिसुव्रतचरित'नी प्रशस्तिमां जणावे छे ते प्रमाणे, राजा सिद्धराज जयसिंह आ आचार्य प्रत्ये खूब भक्तिभाव राखतो हतो अने घणी वार तेमना दर्शन करवा माटे पोते ज तेमना उपाश्रयमां आवतो हतो.

आगमोना नामांकित टीकाकारोमां मलधारी हेमचन्द्रनी पण गणना थाय छे 'आवश्यक सूत्र' अने 'नंदिसूत्र' उपर टिप्पण तथा 'अनुयोगद्वार सूत्र' अने 'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी वृत्तिमां ए आ क्षेत्रमां एमनो मुख्य फाळो छे[1] 'विशेषावश्यक भाष्य'नी वृत्तिनी रचनामां तेमणे पोताना सात सहायकोनां नाम आप्यां छे, जे एमना शिष्यसमुदायनी व्यक्तिओ हशे एम जणाय छे अभयकुमारगणि, धनदेवगणि, जिनभद्रगणि, लक्ष्मणगणि,[2] विबुधचन्द्रमुनि, तथा आर्नंदश्री महत्तरा अने वीरमती गणिनी ए बे साध्वीओ.

मलधारी हेमचन्द्रे 'विशेषावश्यक भाष्य' उपरनी वृत्तिमां जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणनी स्वोपज्ञ टीकानो उल्लेख कर्यो छे,[3] एटले ए टीका ओछामां ओछुं बारमा सैका सुधी तो विद्यमान हती ज वळी आ सिवायनी पण बीजी बे प्राचीन टीकाओना हवाला तेमणे आप्या छे

उपर्युक्त 'जीवसमास' वृत्तिनी मलधारी हेमचन्द्रना हस्ताक्षरमां लखायेली ताडपत्रीय प्रत खंभातमां शान्तिनाथना भंडारमां छे एटले मंत्री वस्तुपालनो जेम आ प्रकारे विद्वानना हस्ताक्षर पण अनेक शताब्दीओनां अंतर पछी आपणने जोवा मळे छे मंत्री वस्तुपालना हस्ताक्षरोमां सं १२९०मां सं १२३४ मां लखायेली 'धर्माभ्युदय' महाकाव्यनी ताडपत्रीय प्रति पण खंभातमां ए ज भंडारमां छे

१ जुओ टर्नपुट.
२ जैसाइ, पृ. २४६-४०
३ ए ज. एमना अन्य ग्रन्थो माटे पण जुओ एज
४ आ लक्ष्मणगणि ते प्राकृत 'सुपासनाहचरिय'ना कर्ता छे.
५ जैसाइ, पृ. २४७
६ विशेषावश्यक भाष्य मीतायगानंदसूरिनी प्रस्तावना, पृ. ३
७ ए ज.

सूचि

[संस्कृत–प्राकृत अवतरणोमां आवतां विशेषनामोनो समावेश आ सूचिमां कर्यो नथी]